

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट

अंक संख्या 22



भारतीय रिज़र्व बैंक
जनवरी 2021

© भारतीय रिज़र्व बैंक

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस सामग्री के उद्धरण की अनुमति है, बशर्ते स्रोत को दर्शाया जाए।

यह प्रकाशन इंटरनेट <http://www.rbi.org.in> पर भी उपलब्ध है।

इस रिपोर्ट के फीडबैक fsu@rbi.org.in को भेजें।

वित्तीय स्थिरता इकाई, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुंबई 400001 द्वारा प्रकाशित तथा ऐक्मे पैक्स और प्रिंट(1)प्रा.लि., ए विंग,
गाला नं.73, विरवानी इंड्रस्ट्रियल इस्टेट, गोरेगाँव ईस्ट, मुंबई – 400063 द्वारा अभिकल्पित एवं मुद्रित।

प्राक्कथन

मानव और आर्थिक स्थितियों पर कोविड -19 महामारी के विनाशकारी प्रभाव ने दुनिया को बदल दिया है। सभी देशों की सरकारों, केंद्रीय बैंकों और उनकी अन्य सार्वजनिक एजेंसियों ने इसके प्रभाव को कम करने के लिए अभूतपूर्व काम किया है। यह आशाजनक बात है कि विभिन्न संस्थागत स्तरों पर सामान्य स्थिति बहाल करने का काम गति में है जिसे टीका विकसित करने में होने वाली प्रगति से जुड़ी खबरों से और भी बल मिला है। इसके बाद भी संक्रमण की एक दूसरी लहर और वायरस के नए रूपांतरण ने अनिश्चितता को बढ़ा दिया है। इससे स्थिति में धीरे-धीरे होने वाले सुधार के समक्ष एक चुनौती पेश हुई है।

भारत की बैंकिंग प्रणाली ने अपेक्षाकृत सुदृढ़ पूंजी और चलनिधि बफर्स के साथ महामारी का सामना किया, जिसे वैश्विक वित्तीय संकट के बाद बहुत प्रयासों से सृजित किया गया था और नियामक और विवेकपूर्ण उपायों द्वारा पोषित है किया गया था। इन प्रयासों के होते हुए भी महामारी के कारण तुलन पत्र को नुकसान पहुँचाने और पूंजी का संकट पैदा होने का खतरा है, विशेष रूप से तब जब नियामक राहतें वापस ली जा रही हों। इसके अतिरिक्त, बैंकों को अर्थव्यवस्था की वित्तपोषण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कहा जाएगा क्योंकि यही अर्थव्यवस्था को महामारी से उबारने का मार्ग होगा। इसके परिणामस्वरूप बैंकिंग क्षेत्र की सुदृढ़ता बनाए रखना एक नीतिगत प्राथमिकता बनी रहेगी क्योंकि वित्तीय प्रणाली की स्थिरता का संरक्षण सर्वोपरि लक्ष्य है।

अनुकूल चलनिधि और वित्तपोषण से बैंकों के वित्तीय मापदंडों को संबल प्राप्त हुआ है, लेकिन यह माना जाता है कि उपलब्ध लेखांकन संख्याएं दबाव की सच्ची पहचान की एक धुंधली तस्वीर ही प्रकट करती हैं। इस संदर्भ में यह कहना उचित होगा कि बैंकों को ऐसे बिजनेस मॉडल्स, जो भविष्य के विस्तार की उभरती चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हों, में पूंजी में वृद्धि और परिवर्तनों की योजना के लिए अनुकूल वित्तीय स्थितियों और नीतिगत स्तर पर समुचित वातावरण का उपयोग सुनिश्चित करें और उनकी क्षमता को इतना मजबूत करें कि वे आघातों को सह सकें तथा अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार में सहायक हों।

महामारी के प्रभाव को कम करने के लिए बढ़ती सार्वजनिक प्रतिबद्धताओं के बावजूद, राजकोषीय प्राधिकारी भी राजस्व में कमी का सामना कर रहे हैं। इसके फलस्वरूप सरकार के बाजार उधार कार्यक्रम होने वाले विस्तार के कारण बैंकों पर अतिरिक्त दबाव पड़ा है। उधार कार्यक्रम का प्रबंधन अब तक सुचारु रूप से हुआ है, जिसमें 16 वर्षों में उधार लेने की लागत सबसे कम और परिपक्वता अवधि सबसे अधिक रही है। आसान वित्त स्थितियों के बीच कॉर्पोरेट क्षेत्र ने वित्तीय बाजारों से भी पर्याप्त धन जुटाया है, जिसका उपयोग मुख्य रूप से अपने ऋणों के बोझ को हल्का करने और एहतियाती बफर्स निर्माण के लिए किया गया है। जैसे-जैसे विकास की गति बढ़ती है, निजी क्षेत्र के कैपेक्स (पूंजी व्यय) चक्र को पुनर्जीवित होना चाहिए क्योंकि मौजूदा क्षमता का उपयोग हो चुका होता है और नई क्षमताएं इसमें जुड़ जाती हैं। इसके लिए वित्तीय प्रणाली से यह अपेक्षित होगा कि वह भारतीय व्यापार की विस्तारित विकास आवश्यकताओं को पूरा करे। हाल के दिनों में वित्तीय बाजारों के कुछ क्षेत्रों और वास्तविक अर्थव्यवस्था के बीच की बढ़ती जा रही असंबद्धता, विश्व स्तर पर भी एवं भारत में भी, दोनों जगहों में उभर कर सामने प्रकट होता रहा है। वित्तीय आस्तियों का विस्तारित मूल्यन वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम पैदा करता है। बैंकों और वित्तीय बिचौलियों को पारस्परिक संबद्धतावाली वित्तीय प्रणाली में इन जोखिमों और स्पिलओवर के प्रति सचेत रहना चाहिए।

सूचना प्रौद्योगिकी प्लेटफार्मों और डिजिटल भुगतान प्रणालियों से महामारी के दौरान कारोबार की निरंतरता और सुचारु कामकाज को काफी सहायता मिली है। परिचालन उद्देश्यों के साथ-साथ डिजिटल बैंकिंग में जनता के विश्वास को मजबूत करने के लिए मजबूत आईटी प्लेटफार्मों और प्रौद्योगिकियों के निर्माण के लिए सभी हितधारकों द्वारा अधिक निवेश की आवश्यकता है, खासकर जब वित्तीय परिदृश्य नई प्रौद्योगिकियों को तेजी से अंगीकार कर रहा है। वास्तव में, डिजिटल प्रौद्योगिकियों को भारत की आर्थिक संभावनाओं में एक उज्ज्वल सितारे के रूप में पहचाना गया है।

दुनिया कोविड-19 महामारी से छिन्न-भिन्न हो गई है और हमारा आगे का काम आर्थिक विकास और आजीविका को बहाल करना है। इस मिशन को आगे बढ़ाने के लिए वित्तीय स्थिरता एक पूर्व शर्त है। वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट का यह अंक आगे की नीतिगत कार्रवाई के लिए एक स्प्रिंगबोर्ड के रूप में कार्य करेगा। जब हम इन चुनौतियों को स्वीकार करते हैं तो हमें भारत को एक नए भविष्य की ओर ले जाने के लिए बिना विचलित हुए अपने प्रयासों में लगे रहना होगा।

शक्तिकांत दास

गवर्नर

11 जनवरी 2021

विषय-सूची

	पृष्ठ सं.
प्रस्तावना	
चयनित संक्षिप्ताक्षरों की सूची	i-iii
विहंगावलोकन	1
अध्याय I : समष्टि-वित्तीय जोखिम	3
प्रस्तावना	3
वैश्विक पृष्ठभूमि	3
पूँजी प्रवाह और विनिमय-दर उतार-चढ़ाव	3
पूँजी प्रवाह और विनिमय-दर उतार-चढ़ाव	9
कोविड-19 और बैंक पूँजी	9
कमोडिटी बाज़ार स्पिलओवर	11
घरेलू समष्टि-वित्तीय गतिविधियां	12
हाल की समष्टि-आर्थिक प्रगति	13
कॉरपोरेट क्षेत्र	17
बैंकिंग प्रणाली – चलनिधि प्रोफ़ाइल	19
बैंकिंग प्रणाली – थोक ऋण	20
उपभोक्ता ऋण	23
एमएसएमई क्षेत्र के लिए बैंक ऋण	24
बैंकिंग स्थिरता संकेतक	25
गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता में गतिविधियां	25
आवास बाज़ार	29
प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण	29
अध्याय II : वित्तीय संस्थाएं : सुदृढ़ता और समुत्थानशक्ति	31
प्रस्तावना	31
अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक	31
आस्ति गुणवत्ता और पूँजी पर्याप्तता	33
क्षेत्रवार आस्ति गुणवत्ता	35
बड़े उधारकर्ताओं की ऋण गुणवत्ता	36
आघात सहनीयता – समष्टि तनाव परीक्षण	37
संवेदनशीलता विश्लेषण	41
उपरिगामी दबाव परीक्षण : डेरिवेटिव पोर्टफोलियो	47
अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक	48
दबाव परीक्षण – क्रेडिट जोखिम	48
दबाव परीक्षण – चलनिधि जोखिम	48
गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां	49
दबाव परीक्षण	49
परस्पर संबद्धता	49
वित्तीय प्रणाली का नेटवर्क	49
संक्रमण विश्लेषण	57

	पृष्ठ सं.
अध्याय III : वित्तीय क्षेत्र में विनियामकीय पहल	60
परिचय	60
वैश्विक घटनाक्रम	60
पूंजी	60
चलनिधि	61
प्रत्याशित ऋण हानि (ईसीएल) प्रावधान	61
बैंकों में परिचालनगत जोखिम	61
कोविड-19 और बीमा क्षेत्र	62
बैंकिंग क्षेत्र में अन्य अंतरराष्ट्रीय विनियामकीय गतिविधियां	62
मार्च 2020 में बाजार उथल-पुथल की समग्र समीक्षा	62
गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता पर वैश्विक निगरानी रिपोर्ट	63
जलवायु परिवर्तन जोखिम	63
आउटसोर्सिंग और तृतीय पक्ष संबंधों से जोखिम	63
उभरते बाजारों में पूंजी बाजार का विकास	63
घरेलू घटनाक्रम	64
विनियामकों/प्राधिकरणों की ओर से पहल	64
क्रेडिट से संबंधित उपाय	64
एनबीएफसी क्षेत्र के लिए सहायता	65
बीमा क्षेत्र	65
ग्राहक संरक्षण	65
समाधान और वसूली	66
अन्य विनियामकीय गतिविधियां	66
संविदाओं की द्विपक्षीय नेटिंग	66
आरटीजीएस 24x7 का शुभारंभ	66
भारतीय भुगतान प्रणालियों के माध्यम से विप्रेषण	66
डिजिटल लेनदेन – क्वीक रिस्पॉस (क्यूआर) कोड संरचना को कारगर बनाना	67
वित्तीय बाजार संरचना (एफएमआई) और खुदरा भुगतान प्रणाली (आरपीएस) के लिए निगरानी ढांचा	67
भारतीय संदर्भ में लंदन अंतर-बैंक प्रस्तावित दर का ट्रैन्जिशन	67
साइबर सुरक्षा	68
जोखिम न्यूनीकरण उपाय	68
जमा बीमा	69
कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया (सीआईआरपी)	69
म्युचुअल फंड	71
पूंजी संग्रहण- इक्विटी और कॉर्पोरेट बॉन्ड	72
क्रेडिट रेटिंग	72
पण्य डेरिवेटिव बाजार	73
बीमा क्षेत्र	75
पेंशन निधि	76
अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण	77
अनुबंध 1: प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण	78
अनुबंध 2: कार्यप्रणालियाँ	84
अनुबंध 3 : महत्वपूर्ण विनियामकीय उपाय	97

बॉक्सों की सूची

1.1	कॉरपोरेट क्षेत्र का पुनरुत्थान और इसकी पुनः संरचना	8
2.1	महामारी काल में दबाव परीक्षण: कतिपय राष्ट्रों के अनुभव	38

चार्ट की सूची

1.1	प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में जीडीपी संवृद्धि	4
1.2	प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के लिए विकास अनुमान	4
1.3	कोविड-19 के लिए नीति प्रतिक्रिया	4
1.4	अमेरिकी फेडरल रिजर्व (फेड) और यूरोपीय सेंट्रल बैंक (उनके संबंधित जीडीपी के अनुपात) का तुलन पत्र	5
1.5	वित्तीय स्ट्रेस सूचकांक	5
1.6	उत्तर अमेरिकी निवेश ग्रेड (आईजी) सीडीएस	5
1.7	उत्तर अमेरिकी उच्च प्रतिफल (HY) सीडीएस	6
1.8	अमेरिका और यूरोजोन में प्रमुख ब्याज दरों में मूवमेंट	6
1.9	अमेरिका और यूरोजोन में मनी मार्केट म्यूचुअल फंड आस्तियों में संवृद्धि	6
1.10	यूएस: लिबोर-ओआईएस स्प्रेड (3 महीने का परिपक्वता काल)	7
1.11	यूएस: ओआईएस-ट्रेजरी बिल स्प्रेड (3 महीने का परिपक्वता काल)	7
1.12	12 महीने का प्रति शेयर वायदा अर्जन (ईपीएस) अनुमान-प्रमुख वैश्विक इक्विटी सूचकांक	7
1.13	प्रमुख वैश्विक सूचकांकों के कीमत अर्जन गुणज	8
1.14	ईएम दैनिक प्रवाह (28 दिवसीय चल औसत)	9
1.15	विदेशों में उभरते बाजार के बॉण्डों का निवल निर्गम	9
1.16	उभरते बाजार के बॉण्ड पर प्रतिलाभ (वार्षिकीकृत)	9
1.17	उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और उभरते बाजारों में विनिमय दर	10
1.18	अमेरिकी और यूरोपीय आकस्मिक संपरिवर्तनीय अतिरिक्त टियर-1 (एटी-1) सूचकांक	10
1.19	बहुराष्ट्रीय कुल ऋण	10
1.20	कुल ऋण हानि संबंधी आरक्षित निधि में संचलन	10
1.21	कुल सीईटी-1 अनुपात	11
1.22	ब्रेंट कच्चा तेल हाजिर एवं वायदा मूल्य	11
1.23	पण्य सूचकांकों में संचलन	11
1.24	खाद्य मूल्य सूचकांक	12
1.25	निवल उधारियां (केंद्र और राज्य सरकारें) और 10-वर्षीय बेंचमार्क वाले जी-सेक प्रतिफल	13
1.26	भारत के पण्य व्यापार में वृद्धि	14
1.27	बाजार रेपो की तुलना में नीतिगत दर और स्प्रेड	14
1.28	परिचालन एकदिवसीय दर की तुलना में मियादी-जोखिम रहित दर और अरक्षित दर का स्प्रेड	14
1.29	सरकारी प्रतिफल वक्र की प्रवणता (अल्पावधिक) : 3-माह से 3-वर्ष	15
1.30	ओआईएस एवं सरकारी प्रतिभूति वक्र की प्रवणता (3 वर्ष-7वर्ष)	15
1.31	विदेशी संविभाग निवेश का प्रवाह	15
1.32	इक्विटी कैश खंड में विदेशी एवं घरेलू निवेश की प्रवृत्ति	16

1.33	विनिमय दर में परिवर्तन और संपादित उतार-चढ़ाव	16
1.34	1-वर्ष एवं 3-वर्ष का एमआईएफओआर-ओआईएस स्प्रेड	17
1.35	गैर-वित्तीय कंपनियों के संबंध में पीबीआईडीटीए एवं ओए की तुलना में ब्याज का अनुपात (स्वामित्व-वार)	17
1.36	पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय कंपनियों के संबंध में पीबीआईडीटीए एवं ओए की तुलना में ब्याज का अनुपात (आकार-वार)	18
1.37	पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय कंपनियों के संबंध में पीबीआईडीटीए एवं ओए की तुलना में ब्याज का अनुपात (रेटिंग-वार)	18
1.38	तुलन-पत्र का विस्तार एवं बैंकिंग क्षेत्र का एक्सपोजर – सूचीबद्ध पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय कंपनियां	18
1.39	दीर्घावधिक रेटिंग एवं बाध्यताधारियों की संख्या	19
1.40	एससीबी द्वारा ऋण – प्रकारानुसार वार्षिक वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)	20
1.41	सीपीएसई एवं ऋण उठाव के बाजार में पूंजीकरण	21
1.42	पीएसयू से इतर गैर वित्तीय बाध्यताधारकों के एक्सपोजर का संवितरण	21
1.43	अगस्त और नवंबर 2020 के बीच पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय बाध्यताधारकों के थोक संविभाग का एसएमए संवितरण	22
1.44	उधारदाता श्रेणी द्वारा मंजूरी दरें	23
1.45	जोखिम टियर के अनुसार इन्क्वायरी परिमाण	24
1.46	बैंकिंग स्थिरता मानचित्र	25
1.47	तीन स्कीमों के पुनःआधारित निवल आस्ति मूल्यों में बदलाव	25
1.48	ऋण-प्रबंधन स्कीमों के अंतर्गत औसत आस्तियां और औसत दैनिक बकाया प्रणालीगत चलनिधि	26
1.49	चलनिधि प्रतिलाभ सूचकांक	26
1.50	जी-सेक/टी-बिल/सीबीएलओ में निवेश और स्प्रेड उत्पाद गतिशीलता	26
1.51	वाणिज्यिक पत्रों और गैर-परिवर्तनीय डिबेंचरों का निर्गम – गैर-पीएसयू ओब्लिगर्स	27
1.52	बकाया वाणिज्यिक पत्र और गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर – गैर-पीएसयू ओब्लिगर्स	27
1.53	सीपी निर्गम – गैर-पीएसयू गैर-वित्तीय ओब्लिगर्स – रेटिंग-वार	27
1.54	एनसीडी निर्गम – गैर-पीएसयू गैर-वित्तीय ओब्लिगर्स – रेटिंग-वार	28
1.55	अल्पावधि मुद्रा बाजार दरें	28
1.56	आवास लॉन्च और बिक्री	29
1.57	अनबिकी इनवेंटरी और इनवेंटरी ओवरहैंग	29
1.58	प्रमुख आवास बाजारों में कीमत बढ़ोतरी के रुझान	29
2.1	चुनिंदा कार्य निष्पादन संकेतक	32
2.2	चुनिंदा परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक	34
2.3	क्षेत्रवार परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक	35
2.4	बड़े उधारकर्ताओं के चुनिंदा परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक	36
2.5	छ2: विव20-21 और छ1: विव21-22 के लिए समष्टि आर्थिक परिदृश्य मूल्यांकन	38
2.6	एससीबी के जीएनपीए अनुपातों का अनुमान	40
2.7	सीआरएआर पूर्वानुमान	40
2.8	सीईटी 1 पूंजी अनुपात का अनुमान	41

	पृष्ठ सं.
2.9 ऋण जोखिम - आघात और परिणाम	42
2.10 ऋण संकेंद्रण जोखिम: वैयक्तिक उधारकर्ता – एक्सपोजर	43
2.11 ऋण संकेंद्रण जोखिम: समूह उधारकर्ता – एक्सपोजर	43
2.12 ऋण संकेंद्रण जोखिम: वैयक्तिक उधारकर्ता – दबावग्रस्त अग्रिम	44
2.13 व्यापार बही पोर्टफोलियो: बैंक समूहवार	45
2.14 प्रतिफल कर्व और सभी अवधियों के प्रतिफलों में परिवर्तन	45
2.15 एचटीएम पोर्टफोलियो – प्रकार के आधार पर अलग-अलग किया हुआ	46
2.16 ईक्विटी कीमत जोखिम	47
2.17 चलनिधि जोखिम - आघात और परिणाम	47
2.18 कुल डेरिवेटिव पोर्टफोलियो का मार्क-टू-मार्केट (एमटीएम) – चुनिंदा बैंक, सितंबर 2020	48
2.19 चुनिंदा बैंकों के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो पर आघातों का प्रभाव (आघात करने पर निवल एमटीएम में बदलाव)	48
2.20 एनबीएफसी में क्रेडिट जोखिम – प्रणालीगत स्तर	50
2.21 वित्तीय प्रणाली में संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय एक्सपोजर	50
2.22 वित्तीय प्रणाली का नेटवर्क प्लॉट, सितंबर 2020	51
2.23 संस्थानों की निवल प्राप्य राशियां (+) / देय राशियां (-)	51
2.24 अंतर-बैंक बाजार	52
2.25 अंतर-बैंक बाजार में विभिन्न बैंक समूह सितंबर 2020	52
2.26 निधि आधारित अंतर-बैंक बाजार की संरचना	52
2.27 भारतीय बैंकिंग प्रणाली का नेटवर्क ढांचा (एससीबी + एसयूसीबी) – सितंबर 2020	53
2.28 बैंकिंग प्रणाली (एससीबी) की संबद्धता सांख्यिकी	54
2.29 वित्तीय प्रणाली से एएमसी-एमएफ की सकल प्राप्तियां	54
2.30 वित्तीय प्रणाली से बीमा कंपनियों को सकल प्राप्तियां	55
2.31 वित्तीय प्रणाली को एनबीएफसी की सकल देयता	55
2.32 वित्तीय प्रणाली को एनबीएफसी की सकल देयताएं	56
2.33 वित्तीय प्रणाली को एचएफसी को सकल देयताएं	56
2.34 समष्टि आर्थिक आघातों का संक्रामक प्रभाव (ऋण-शोधन क्षमता संक्रामकता)	59
3.1 म्यूचुअल फंड और एयूएम द्वारा संसाधनों का अभिनियोजन	71
3.2 प्राथमिक बाजार में जुटाई गयी निधि	72
3.3 इक्विटी और ऋण निर्गमों के माध्यम से पूंजी उगाही	72
3.4 सूचीबद्ध कंपनियों के ऋण निर्गम- रेटिंग कार्रवाई के अनुसार	73
3.5 रेटिंग डाउनग्रेड का वितरण – क्षेत्रवार	73
3.6 वैश्विक पण्य मूल्य सूचकांकों की गतिविधि	73
3.7 घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय पण्य फ्यूचर्स सूचकांक	74
3.8 सेक्टरोल सूचकांकों का चयन	74
3.9 सूचकांक में पण्य डेरिवेटिव्स कारोबार (फ्यूचर्स और ऑप्शंस)	74
3.10 न्यू लाइफ इंश्योरेंस बिजनेस प्रिमियम्स-वृद्धि (माह-दर-माह)	75

सारणियों की सूची

1.1	2020 और 2021 के संवृद्धि अनुमान	4
1.2	जीडीपी के प्रतिशत के रूप में राजकोषीय घाटा - प्रमुख क्षेत्र	7
1.3	निम्न आय वाले क्षेत्रों की जीडीपी के प्रतिशत के रूप में राजकोषीय घाटा	12
1.4	सभी बैंक समूहों का एलसीआर प्रोफाइल	19
1.5	थोक ऋण में हुई वृद्धि (ति-दर-ति, जब तक विशिष्टरूप से उल्लेख न किया जाए, प्रतिशत)	20
1.6	स्वामित्व के आधार पर असमग्र थोक ऋण वृद्धि (ति-दर-ति, जब तक विशिष्टरूप से उल्लेख न किया जाए)	20
1.7	पीएसयू से इतर बाध्यताधारकों की असमग्र थोक ऋण वृद्धि (तिमाही-दर-तिमाही)	21
1.8	अगस्त एवं सितंबर 2020 के बीच पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय बाध्यताधारकों के स्थिर नमूने के थोक संविभाग से संबंधित एसएमए परिवर्तन की माप (प्रतिशत में)	22
1.9	अगस्त एवं सितंबर 2020 के बीच पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय बाध्यताधारकों के स्थिर नमूने के थोक संविभाग से संबंधित एसएमए परिवर्तन की माप (प्रतिशत में)	22
1.10	क्षेत्रगत ऋण वृद्धि	23
1.11	इन्क्वायरी परिमाण में वृद्धि (वर्ष दर वर्ष, प्रतिशत)	23
1.12	उपभोक्ता ऋण में वृद्धि (वर्ष दर वर्ष, प्रतिशत)	24
1.13	एमएसएमई ऋण के इन्क्वायरी परिमाण (वर्ष दर वर्ष, प्रतिशत)	24
1.14	एमएसएमई क्षेत्र में गतिविधि (वर्ष दर वर्ष, प्रतिशत)	24
1.15	म्यूचुअल फंड द्वारा संसाधन जुटाने के रुझान	25
1.16	गैर-पीएसयू गैर वित्तीय ओब्लिगर्स के सीपी और एनसीडी के निर्गम और अल्पावधि परिपक्वताएं	28
2.1	एससीबी द्वारा क्षेत्रवार नए ऋण*	32
2.2	प्रणालीगत स्तर सीआरएआर में गिरावट	44
2.3	एफएस पोर्टफोलियो का अवधि-वार पीवी01 वितरण	45
2.4	ओओआई – प्रतिभूति कारोबार में लाभ/(हानि)	45
2.5	एचएफटी पोर्टफोलियो का अवधि-वार पीवी01 वितरण	46
2.6	ब्याज दर जोखिम - बैंक समूह - आघात और प्रभाव	46
2.7	बैंक की विफलता के कारण संक्रमण हानियाँ – सितंबर 2020	57
2.8	एनबीएफसी की विफलता के कारण संक्रामक हानियाँ – सितंबर 2020	58
2.9	एचएफसी की विफलता के कारण संक्रामक हानियाँ – सितंबर 2020	58
3.1	भारत के विभिन्न वित्तीय अनुबंधों का लंदन अंतर-बैंक प्रस्तावित दर लिंकड एक्सपोजर	67
3.2	सहकारी बैंकों की बीमाकृत जमा	69
3.3	कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया	69
3.4	30 सितम्बर 2020 तक सीआईआरपी का क्षेत्रवार वितरण	70
3.5	30 सितम्बर 2020 की स्थिति के अनुसार हितधारक वार सीआईआरपी पहल का परिणाम	70
3.6	30 सितम्बर 2020 तक परिसमापन के आदेश के साथ सीआईआरपी की समाप्ति होना	71
3.7	2020-21 में एसआईपी	71
3.8	पण्य डेरिवेटिव में खंड-वार कारोबार (फ्यूचर्स और ऑप्शंस)	75
3.9	स्वास्थ्य बीमा क्षेत्र में वृद्धि	76
3.10	कोविड विशिष्ट बीमा उत्पादों में व्यवसाय	76
3.11	अभिदाता और एयूएम: एनपीएस और एपीवाई	77

चयनित संक्षिप्ताक्षरों की सूची

एई	उन्नत अर्थव्यवस्थाएँ	एई	उन्नत अर्थव्यवस्थाएँ
एएफएस	बिक्री के लिए उपलब्ध	एएफएस	बिक्री के लिए उपलब्ध
एपीवाई	अटल पेंशन योजना	एपीवाई	अटल पेंशन योजना
एआरआर	वैकल्पिक संदर्भ दर	एआरआर	वैकल्पिक संदर्भ दर
एयूएम	प्रबंधनाधीन आस्तियां	एयूएम	प्रबंधनाधीन आस्तियां
बीसीबीएस	बैंक पर्यवेक्षण संबंधी बासेल समिति	बीसीबीएस	बैंक पर्यवेक्षण संबंधी बासेल समिति
बीआईएस	बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट	बीआईएस	बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट
बीओई	बैंक ऑफ इंग्लैंड	बीओई	बैंक ऑफ इंग्लैंड
बीओजे	बैंक ऑफ जापान	बीओजे	बैंक ऑफ जापान
बीएसआई	बैंकिंग स्थिरता संकेतक	बीएसआई	बैंकिंग स्थिरता संकेतक
सीसी	कैश क्रेडिट	सीसी	कैश क्रेडिट
सीसीआईएल	भारतीय समाशोधन निगम लिमिटेड	सीसीआईएल	भारतीय समाशोधन निगम लिमिटेड
सीडी	कॉर्पोरेट देनदार	सीडी	कॉर्पोरेट देनदार
सीडीडी	ग्राहक समुचित सावधानी	सीडीडी	ग्राहक समुचित सावधानी
सीडीएस	ऋण चूक अदला बदली	सीडीएस	ऋण चूक अदला बदली
सीईटी	सामान्य इक्विटी टियर	सीईटी	सामान्य इक्विटी टियर
सीआईआरपी	कॉर्पोरेट शोधन-अक्षमता समाधान प्रक्रिया	सीआईआरपी	कॉर्पोरेट शोधन-अक्षमता समाधान प्रक्रिया
सीएलएम	सह उधार मॉडल	सीएलएम	सह उधार मॉडल
सीएम	क्लीयरिंग मेंबर	सीएम	क्लीयरिंग मेंबर
सीओसी	आकस्मिकता संपरिवर्तनीय	सीओसी	आकस्मिकता संपरिवर्तनीय
कोविड-19	कोरोना वायरस रोग 2019	कोविड-19	कोरोना वायरस रोग 2019
सीपी	वाणिज्यिक पत्र	सीपी	वाणिज्यिक पत्र
सीपीएसई	केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम	सीपीएसई	केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम
सीआरएआर	जोखिम भारत आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात	सीआरएआर	जोखिम भारत आस्तियों की तुलना में पूंजी अनुपात
सीएसएफ	समेकित ऋण-शोधन निधि	सीएसएफ	समेकित ऋण-शोधन निधि
सीवीए	ऋण मूल्यांकन समायोजन	सीवीए	ऋण मूल्यांकन समायोजन
डीसीसीबी	जिला सहकारी केंद्रीय बैंक	डीसीसीबी	जिला सहकारी केंद्रीय बैंक
डीपीडी	दिनों बाद बकाया	डीपीडी	दिनों बाद बकाया

जीएफसी	वैशुविक वित्तीय संकट	एमसीएलआर	निधियों की सीमांत लागत आधारित उधार दरें
एफएसआर	वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट	एमएफ	म्यूचुअल फंड
जीएनपीए	सकल अनरुक्त आस्तियां	एमआईएफओआर	मुंबई अंतर बैंक फॉरवर्ड प्रस्तावित दर
जी-सेक	सरकारी प्रतिभूतियाँ	एमएल	धन-शोधन
जीवीए	सकल मूल्य वर्धित	एमएमएमएफ	मुद्रा बाजार म्यूचुअल निधि
एचएफसी	आवास वित्त कंपनियां	एमपीआर	मौद्रिक नीति रिपोर्ट
एचएफटी	व्यापार के लिए धारित	एमएसएफ	सीमांत स्थायी सुविधा
एचक्यूएलए	उच्च गुणवत्ता वाली चलनिधि आस्तियां	एमएसएमई	सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम
एचटीएम	परिपक्वता तक धारित	एमटीएम	बाजार भाव पर दर्शाना
आईएआईएस	अंतरराष्ट्रीय बीमा पर्यवेक्षक संघ	एनएवी	निवल आस्ति मूल्य
आईएसबी	अंतरराष्ट्रीय लेखा मानक बोर्ड	एनबीएफसी	गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ
आईबीए	भारतीय बैंक संघ	एनसीसीडी	गैर-केंद्रित रूप से मंजूरी प्राप्त ओटीसी डेरिवेटिव्स
आईबीसी	दिवाला और शोधन कोड	एनसीडी	अपरिवर्तनीय डिबेंचर
आईसीएआई	भारतीय चार्टेड लेखांकन संस्था	एनसीएफई	राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षा केंद्र
आईसीआर	ब्याज कवरेज अनुपात	एनईएफटी	राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक निधि अंतरण
आईए	अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी	एनआईआई	निवल ब्याज आय
आईएफएससीए	अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण	एनआईएम	निवल ब्याज मार्जिन(निम)
आईएमएफ	अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष	एनएनपीए	निवल अनरुक्त आस्तियां
आईआईटी	इन्फ्रास्ट्रक्चर निवेश न्यास	एनपीसीआई	भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम
आईओएससीओ	अंतरराष्ट्रीय प्रतिभूति आयोग संगठन	एनपीएस	नई पेंशन प्रणाली
आईपीडीआई	नवोन्मेषी बेमियादी ऋण लिखत	ओडी	ओवरड्राफ्ट
आईपीई	दिवाला पेशेवर इकाइयों	ओएफआरएफ	वित्तीय शोध कार्यालय का वित्तीय दबाव
आईआरडीआई	भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण	एसआई	सूचकांक
एलएएफ	चलनिधि समायोजन सुविधा	ओएमओ	खुले बाजार के परिचालन
एलसीआर	चलनिधि कवरेज अनुपात	ओओआई	अन्य परिचालन आय
एलआईबीओआर	लंदन अंतर बैंक प्रस्तावित दर (लिबोर)	ओटीआर	ऑर्डर-टू-ट्रेड
एलटी	दीर्घावधि	पीसीजी	आंशिक क्रेडिट गारंटी
एलटीवी	मूल्य की तुलना में ऋण		

पीसीआर	प्रावधान कवरेज अनुपात	सेबी	भारतीय प्रतभूत विनियम बोर्ड
पीडीआई	बेमियादी ऋण लिखत	एसएफटी	प्रतिभूति वित्तपोषण लेनदेन
पीईपीपी	महामारी आपातकालीन क्रय कार्यक्रम	एसआईसीआर	क्रेडिट जोखिम में महत्वपूर्ण वृद्धि
पीएफएमआई	वित्तीय बाजार संरचना के सिद्धांत	एसआईपी	व्यवस्थित निवेश योजनाएं
पीएम	कार्य-निष्पादन मैट्रिक्स	एसएलसीसी	राज्य स्तरीय समन्वय समिति
पीएनसीपीएस	शाश्वत गैर-संचयी अधिमानी शेयर	एसएमएस	संक्षिप्त संदेश सेवा
पीओए	आगमन स्थल	एसओपी	मानक प्रचालनिक प्रक्रिया
पीएसबी	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	एसपीवी	विशेष प्रयोजन माध्यम
पीएसएमओआर	परिचालनगत जोखिम के मजबूत प्रबंधन के लिए सिद्धांत	एसआरएस	प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण
पीएसयू	सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम	एसटी	अल्पावधि
पीवीबी	निजी क्षेत्र के बैंक	एससीबी	राज्य सहकारी बैंक
क्यूआर	त्वरित प्रतिक्रिया	एसयूसीबी	अनुसूचित शहरी सहकारी बैंक
आरबीएनजेड	न्यूजीलैंड रिजर्व बैंक	टी- बिल	ट्रेजरी-बिल
आरईआईटी	स्थावर संपदा निवेश न्यास	टीएफ	आतंकवाद का वित्तपोषण
आरओए	आस्तियों पर प्रतिलाभ	टीएलटीआरओ	लक्षित दीर्घकालिक रेपो परिचालन
आरओई	इक्विटी पर प्रतिलाभ	टीएम	ट्रेडिंग मेंबर
आरपीएस	खुदरा भुगतान प्रणाली	यूसीबी	शहरी सहकारी बैंक
आरआरबी	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक	यूएनसीटीएडी	अंकटाड
आरटीजीएस	तत्काल सकल निपटान	यूपीआई	एकीकृत भुगतान इंटरफेस
एसए	मानकीकृत दृष्टिकोण	यूएस –एफईडी	यूएस फेडरल रिजर्व बोर्ड
एससीबी	अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक	वीसीआईपी	वीडियो आधारित ग्राहक पहचान प्रक्रिया
एसडी	मानक विचलन	वीआरआर	स्वैच्छक धारिता मार्ग
एसडीएल	राज्य विकास ऋण	डबल्यूटीओ	विश्व व्यापार संघ

विहगावलोकन

वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट को छमाही आधार पर प्रकाशित किया जाता है और इसमें सभी वित्तीय क्षेत्र के नियामकों का योगदान शामिल होता है। तदनुसार, यह वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिमों पर वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफएसडीसी-एससी) की उप-समिति के सामूहिक मूल्यांकन को दर्शाता है।

समष्टि-आर्थिक जोखिम

यह वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट, वर्ष 2020-21 की दूसरी छमाही का प्रकाशन, ऐसे समय में जारी किया जा रहा है जबकि वैश्विक अर्थव्यवस्था अभी भी कोविड-19 महामारी के दंश से पीड़ित है। यद्यपि सभी देश सामान्य स्थिति बहाल करने की दिशा में फूक-फूक कर कदम बढ़ा रहे हैं, तथापि, इसे गति देने में बहुत सारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इतना ही नहीं बल्कि वायरस की दूसरी लहर की मार, जिसमें अधिक तीव्रतावाले संक्रमण का डर शामिल है, भी इस पर बुरी तरह पड़ी है। नीतिगत स्तर पर जिन कार्रवाईयों का जोर महामारी के प्रारंभिक चरण में सामान्य कामकाज को बहाल करने और तनाव को कम करने था अब उत्तरोत्तर बहाली का समर्थन करने और व्यवसायों और हाउसहोल्ड्स की ऋण चुकाने की क्षमता को संरक्षित करने की दिशा में उन्मुख हैं। उभरती अर्थव्यवस्थाओं में पूंजी प्रवाह में पहले जैसी तेजी देखी जा रही है, इसमें भी भारत एक सर्वाधिक पसंदीदा अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है। यद्यपि वैकसीन के विकास पर सकारात्मक खबरों से हावी परिदृश्य पर एक नई आशा जगी है लेकिन पूर्व में संदर्भित प्रतिकूल घटनाक्रमों, जिनके कारण विशेष रूप से यूरोप, अमेरिका और कुछ अन्य देशों में समष्टिगत आर्थिक और वित्तीय संभावनाओं पर खतरा मंडरा रहा है, के कारण इन आशाओं को जबरदस्त चोट पहुंची है।

घरेलू अर्थव्यवस्था और बाज़ार

घरेलू मोर्चे पर यद्यपि नीतिगत उपायों ने बाजारों और वित्तीय संस्थानों के सुचारू कामकाज को सुनिश्चित किया है, लेकिन बढ़ते हुए स्पिलओवर के बीच बाजार की उथल-पुथल को

नियंत्रित करना चुनौतीपूर्ण कार्य हो गया है। वित्तीय बाजारों के कुछ सेगमेंट की घटनाएं वास्तविक क्षेत्र की ताजा गतिविधियों के अनुरूप नहीं हैं। सकल बैंकिंग क्षेत्र के ऋण में मंदी रही जो लेश मात्र भी जोखिम न उठाने का संकेत है। यद्यपि अर्थव्यवस्था की सकल मांग में सुधार हो रहा है और वे पुनर्जीवित हो रही हैं। विशेष रूप से, विनिर्माण क्षेत्र को ऋण प्रवाह ऐसे समय में सुस्त रहा है जब इस क्षेत्र का उत्पादन एक लंबे समय तक संकुचन में रहने के बाद उबर रहा है। नीतिगत प्रयासों का ध्यान तरलता एवं गारंटी के प्रावधान से हटकर संवृद्धि को समर्थन देने की तरफ रहा है जिसमें उपभोग एवं केन्द्रित निवेश शामिल हैं। यद्यपि मार्च और अप्रैल 2020 में आर्थिक गतिविधियों में आई गिरावट में सुधार हो रहा है, तथापि यह हकीकत से कोसों दूर है और उत्पादन का स्तर महामारी पूर्व के स्तर से नीचे बना हुआ है। सुधार को बल प्रदान करने के लिए अनुकूल वित्तीय उपाय किए गए हैं। इसका व्यापक और परिपूर्ण उद्देश्य कोविड-19 के प्रभाव को कम करना और समष्टिगत आर्थिक और वित्तीय स्थिरता के साथ स्थायी और समावेशी विकास के मार्ग पर मजबूत कदमों से वापस लौटना है।

वित्तीय संस्थाएं: सुदृढ़ता और आघातसहनीयता

बैंक ऋण वृद्धि (वर्षानुवर्ष) जो 2019-20 में घटकर 5.7 प्रतिशत रह गई थी, अभी भी सुस्त बनी हुई है; दूसरी ओर जमा वृद्धि दोहरे अंकों में दमदार मजबूती लिए हुए है, जो अनिश्चितता की भयावह स्थिति में एहतियाती बचत को दर्शाती है।

अनुसूचित वाणिज्य बैंकों के लिए आस्तियों (आरओई) और इक्विटी (आरओई) पर लाभ में वृद्धि सभी बैंक समूहों में हुआ है और जोखिम आधारित आस्ति अनुपात (सीआरएआर) पूंजी में मार्च 2020 के मुकाबले सितंबर 2020 में 110 आधार अंकों का सुधार होकर अब यह 15.8 प्रतिशत पर है। सकल अनर्जक आस्तियों (जीएनपीए) और शुद्ध अनर्जक आस्ति (एनएनपीए) अनुपात जो सितंबर 2019 के स्तर से लगातार नीचे गिरता जा रहा था, सितंबर 2020 तक और भी गिरकर क्रमशः 7.5

¹ एफएसआर का पिछला अंक 24 जुलाई, 2020 को जारी किया गया था।

प्रतिशत और 2.1 प्रतिशत हो गया था। समग्र प्रावधान कवरेज अनुपात (पीसीआर) में तोस सुधार हुआ जो इस अवधि में 66.2 प्रतिशत से बढ़कर 72.4 प्रतिशत हो गया था। कोविड-19 महामारी से निपटने के लिए जो विनियमकीय उपाय किए गए उनसे इन सुधारों को महत्वपूर्ण रूप से सहायता प्राप्त हुई।

क्रेडिट रिस्क के लिए मैक्रो-स्ट्रेस टेस्ट 2 दर्शाते हैं कि बेसलाइन परिदृश्य में एससीबी का जीएनपीए अनुपात सितंबर 2020 में 7.5 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर 2021 में 13.5 प्रतिशत हो सकता है। यदि समष्टिगत आर्थिक वातावरण बिगड़ता है तब गंभीर तनावपूर्ण दबाव परिदृश्य में यह अनुपात बढ़कर 14.8 प्रतिशत हो सकता है। ये अनुमान बैंकों के संविभागों में छिपी आर्थिक हानि की ओर संकेत करते हैं। तनाव परीक्षणों से यह भी संकेत मिलता है कि यदि गंभीर दबाव परिदृश्य की सीमा तक तनाव बढ़ता है तो एससीबी के पास समग्र स्तर पर पर्याप्त पूंजी होते हुए भी एकल बैंक स्तर पर कई बैंकों की पूंजी विनियामक द्वारा विनिर्दिष्ट न्यूनतम से नीचे जा सकती है। समय की मांग है कि बैंकों को अपने संबंधित तनाव की स्थितियों का आकलन करना चाहिए और पूंजी जुटाने के उपाय सक्रियतापूर्वक रहना चाहिए।

समग्र स्तर पर अनुसूचित शहरी सहकारी बैंकों (एसयूसीबी) का सीआरएआर मार्च 2020 से सितंबर 2020 के बीच 9.70 प्रतिशत से घटकर 9.24 प्रतिशत हो गया। एनबीएफसी का ऋण वार्षिक आधार पर एक वर्ष पहले 22 प्रतिशत की वृद्धि की तुलना में कच्छप गति से बढ़ता हुआ 4.4 प्रतिशत (वर्षानुवर्ष) रहा।

नेटवर्क विश्लेषण से संकेत मिलता है कि वित्तीय प्रणाली के घटकों के बीच का कुल बकाया द्विपक्षीय एक्सपोजर में जून 2020 के अंत में तेज गिरावट के बाद मामूली रूप से बढ़ोतरी हुई है। सितंबर 2020 में भारतीय वित्तीय प्रणाली में एससीबी का सर्वाधिक बड़ा द्विपक्षीय एक्सपोजर बना रहा। जहां तक अंतर

-क्षेत्रीय निवेश का प्रश्न है, आस्ति प्रबंधन कंपनियां / म्यूचुअल फंड (एमसी-एमएफ) और इनके पश्चात बीमा कंपनियां, वित्तीय प्रणाली में सर्वाधिक प्रमुख निधि प्रदाता बने रहे, जबकि निधियों के सबसे बड़े प्राप्तकर्ता के रूप में एनबीएफसी पहले स्थान पर और उसके बाद हाउसिंग फाइनेंस कंपनियों (एचएफसी) दूसरे स्थान पर रहीं।

अंतर-बैंक बाजार के निरंतर संकुचन और बैंकों की बेहतर होती पूंजी स्थिति संक्रमण प्रभावों के कारण होनेवाले जोखिम स्तर को कम कर दिया।

विनियामकीय पहल और वित्तीय क्षेत्र में अन्य विकास

रिजर्व बैंक, अन्य वित्तीय क्षेत्र के विनियामकों और सरकार के द्वारा महामारी के प्रभाव को कम करने के लिए असाधारण उपाय किए गए हैं। उधारकर्ताओं और ऋण देने वाली संस्थाओं के लिए तुलनपत्रों के तनाव को कम करने के लिए कई अभिनव उपाय किए गए। महामारी प्रेरित इन कार्रवाइयों के साथ-साथ प्रणालीगत कमियों को समाप्त करने और वित्तीय प्रणाली के विभिन्न हिस्सों को विकसित और मजबूत करने के लिए चल रहे प्रयासों की गति धीमी नहीं पड़ने दी गई।

प्रणालीगत जोखिम का आकलन

नवीनतम प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (एसआरएस) में, उत्तरदाताओं ने संस्थागत जोखिमों, जिसमें अन्य जोखिमों के साथ आस्ति की गुणवत्ता में गिरावट, अतिरिक्त पूंजी की आवश्यकताएं, ऋण वृद्धि का स्तर और साइबर जोखिम सम्मिलित हैं, का मूल्यांकन 'उच्च' जोखिम के रूप में किया।

अन्य सभी प्रमुख जोखिम समूह जैसे वैश्विक जोखिम, वृहद आर्थिक जोखिम और वित्तीय बाजार जोखिम को प्रभाव की दृष्टि से 'मध्यम' माना गया यह अप्रैल / मई 2020 के सर्वेक्षण परिणामों से हटकर बदलाव का संकेत देता है जिसमें उपरोक्त सभी समूहों को 'उच्च' जोखिम के रूप में मूल्यांकित किया गया था।

2 मध्य वर्ष की एफएसआर अगले मार्च के लिए स्ट्रेस टेस्ट अनुमान प्रस्तुत करती है और अगले साल के अंत तक की एफएसआर अगले सितंबर के लिए अनुमान प्रस्तुत करती है।

अध्याय I समष्टि-वित्तीय जोखिम

आर्थिक गतिविधि ने कोविड -19 महामारी के फलस्वरूप आई अभूतपूर्व गिरावट से धीरे- धीरे अनेक उतार- चढ़ाव के साथ उबारना प्रारंभ कर दिया है। केंद्रीय बैंकों और राजकोषीय प्राधिकारियों द्वारा सक्रिय हस्तक्षेप वित्तीय बाजारों को स्थिर करने में सक्षम रहा है, लेकिन वित्तीय बाजारों और वास्तविक क्षेत्र की गतिविधियों के कुछ क्षेत्रों के बीच असंबद्धता के कारण उत्पन्न होने वाले समष्टिगत वित्तीय दुष्प्रभाव से जुड़े स्पिलओवर के जोखिम मौजूद हैं। निरंतर अनिश्चितता के दौरान इसके दुष्प्रभाव बैंकिंग क्षेत्र पर भी पड़ सकते हैं क्योंकि इसके तुलन पत्र का संबंध कॉर्पोरेट और हाउसहोल्ड्स की भेद्यता से है।

परिचय

1.1 चूंकि मौद्रिक, राजकोषीय और विनियामक प्राधिकारियों द्वारा किए गए असाधारण नीतिगत उपायों की बदौलत वैश्विक आर्थिक गतिविधि धीरे-धीरे संभलते हुए और असमान कदमों से अभूतपूर्व कोविड-19 महामारी से निकलकर पटरी पर लौट रही है, अतः हानिग्रस्त क्षेत्रों को पुनः सुदृढ़ करने और उन्हें सामान्य स्थिति में लाने के लिए नीतियाँ और रणनीतियाँ विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है। सरकारी प्राधिकारियों का सामना अवश्यभावी रूप से ट्रेड-ऑफ (दो बेहतर विकल्पों के बीच संतुलन रखना) के साथ होगा और वीएच आगे तीव्रतर भी होता जाएगा। दरअसल यह ट्रेडऑफ क्लीफ प्रभावों तथा रैम्प प्रभावों के बीच संतुलन और चुनाव का है जिसका तात्पर्य अभूतपूर्व नीतिगत उपायों को समाप्त करने एवं अब तक स्थिति में हुए सुधार और उपचार को खराब करने का जोखिम मोल लेने के क्लीफ प्रभाव तथा नीतिगत प्रोत्साहन पर निर्भर बनाने एवं अंततः प्राधिकारियों को लंबे समय तक नीतिगत स्तर पर नरम रुख बनाए रखने एवं चलनिही के जाल में उलझाए रखने के बीच कोई विकल्प चुनना है।

1.2 कुल मिलाकर महामारी की विनाशकारी समष्टिगत वित्तीय फ्रीडबैक लूप से संबंधित तात्कालिक जोखिमों को नियंत्रित करने में नीति प्राधिकारी सक्षम रहे हैं, लेकिन महामारी-पूर्व की भेद्यताएं तेज होने के प्रारम्भिक लक्षण दिखने लगे हैं जो पूर्ण रिकवरी के मार्ग में बाधक बन रहे हैं। इसके अलावा, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, समर्थन उपायों के अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं, उदाहरण के लिए, इक्विटी का उच्च मूल्यांकन जो

उनके आर्थिक निष्पादन से संबंधित नहीं है। इन प्रमुख वित्तीय आधारों से इस प्रकार के विचलन, यदि बने रहते हैं, तो वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम पैदा करते हैं, विशेष रूप से तब जब रिकवरी में देरी हो रही हो।

1.3 इस पृष्ठभूमि में यह अध्याय वैश्विक और घरेलू समष्टि आर्थिक और वित्तीय बाजार के विकास के विहगावलोकन से शुरू होता है। खंड 1.1 वैश्विक समष्टि वित्तीय घटनाक्रम और दृष्टिकोण पर चर्चा करता है। खंड 1.2 घरेलू समष्टि वित्तीय घटनाक्रम, उभरते राजकोषीय और कॉर्पोरेट क्षेत्र के जोखिम, और बैंक और गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता की उभरती गतिशीलता से संबंधित है। यह अध्याय रिजर्व बैंक के छमाही प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण की प्रतिक्रियाओं पर चर्चा के साथ समाप्त होता है।

1.1 वैश्विक परिदृश्य

1.1.1 समष्टि वित्तीय घटनाक्रम और भावी परिदृश्य

1.4 वैश्विक आर्थिक गतिविधियाँ कोविड-19 महामारी के कारण ठप्प रहीं, बल्कि हाल ही में दूसरी लहर के कारण पूरे यूरोप में फिर से लॉकडाउन लगा और अमेरिका पुनः संक्रमण की चपेट में आ गया है। इसके कारण 2020 की तीसरी तिमाही में मजबूत आर्थिक गतिविधियों के पुनरुद्धार पर ग्रहण लगा दिया है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने 2020 में वैश्विक विकास दर (-) 4.4 प्रतिशत रहने और इसके बाद 2021 में 5.2 प्रतिशत की रिकवरी का अनुमान जताया है, जो ऊंट के मुंह में जीरा है और उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं

सारणी 1.1 : 2020 और 2021 के संवृद्धि अनुमान

(प्रतिशत में)

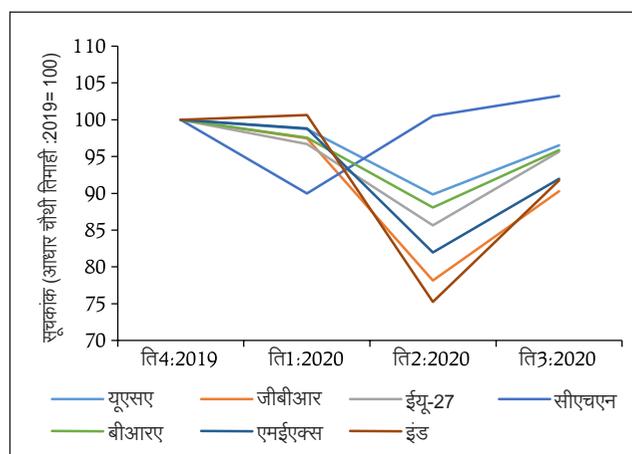
जारी करने की अवधि	विकसित अर्थव्यवस्थाएँ		ईएमडीईज		विश्व	
	2020	2021	2020	2021	2020	2021
जनवरी 2020	1.6	1.6	4.4	4.6	3.3	3.4
अप्रैल 2020	-6.1	4.5	-1.0	6.6	-3.0	5.8
जून 2020	-8.0	4.8	-3.0	5.9	-4.9	5.4
अक्तूबर 2020	-5.8	3.9	-3.3	6.0	-4.4	5.2

स्रोत: वर्ल्ड इकॉनॉमिक आउटलुक, आईएमएफ

(ईएमडीई) के 2019 के स्तर, चीन को छोड़कर, से ऊपर उठाने के लिए अपर्याप्त है (तालिका 1.1 और चार्ट 1.1)। वैक्सीन रोल-आउट के परिप्रेक्ष्य में 2021 में वैश्विक विकास के बारे में आशावादिता (चार्ट 1.2) में अब इस बोध से कमी आई है कि उत्पादन और वितरण की बाधाओं के चलते सामूहिक टीकाकरण चरणों में ही किया जा सकेगा।

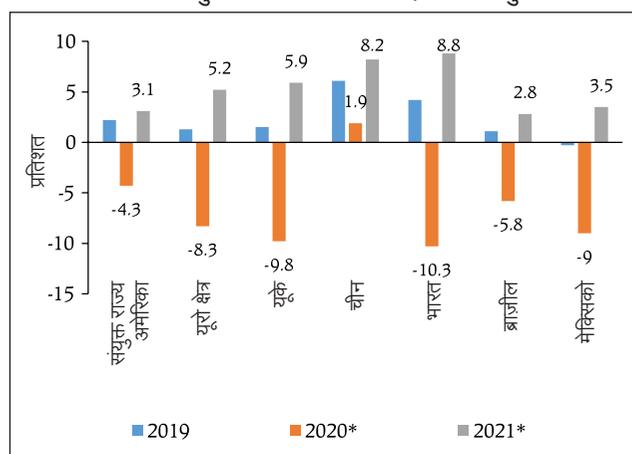
1.5 महामारी के प्रति सरकारी प्राधिकारियों की तैयारियां और उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (ईई) और उभरते बाजार और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (ईएमडीई) (चार्ट 1.3) की तैयारियां भिन्न भिन्न रही हैं। जुलाई 2020 से, नीतिगत उपाय फाइन-ट्यूनिंग की ओर अग्रसर हुए हैं और गंभीर रूप से प्रभावित क्षेत्रों को पोषित करने की नीति पर काम किया जा रहा है। शोधन संकट के बड़े खतरे, जो कारोबार क्षेत्र की क्षमता को नुकसान पहुँचाते हैं, को देखते हुए प्राधिकारियों ने कारोबार के पुनर्निर्माण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने की ओर फिर से रुख किया है। यूरोपीय संघ (ईयू) ने अपने दीर्घकालिक बजट और अन्य पहलों के माध्यम से 1.8 ट्रिलियन यूरो का एक राजकोषीय पैकेज तैयार किया है, जो बजट के माध्यम से वित्त पोषित किया जाने वाला अब तक का सबसे बड़ा प्रोत्साहन पैकेज है। जापान में, राजकोषीय अधिकारियों ने लगभग 73.6 ट्रिलियन येन का एक ताजा प्रोत्साहन पैकेज लाया गया है, जिसमें से 40 ट्रिलियन येन ऋण, निवेश और अन्य उपायों पर राजकोषीय खर्च के लिए समर्पित है। अमेरिका ने महामारी की दूसरी लहर और घटती जा रही रोजगार की संख्या के मद्देनजर नवंबर 2020 में 2.3 ट्रिलियन कोरोनोवायरस राहत और सरकारी खर्च पैकेज को मंजूरी दे दी है।

चार्ट 1.1: प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में जीडीपी संवृद्धि



स्रोत: ब्लूमबर्ग

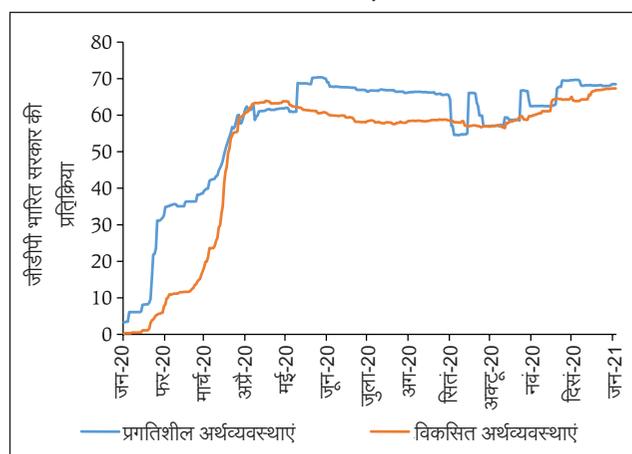
चार्ट 1.2: प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं के लिए विकास अनुमान



नोट: * - अनुमानित।

स्रोत: वर्ल्ड इकॉनॉमिक आउटलुक (WEO) -अक्तूबर 2020 अपडेट, आईएमएफ.

चार्ट 1.3: कोविड-19 के लिए नीति प्रतिक्रिया



नोट: 1. 3 जनवरी, 2021 तक अपडेट किया गया।

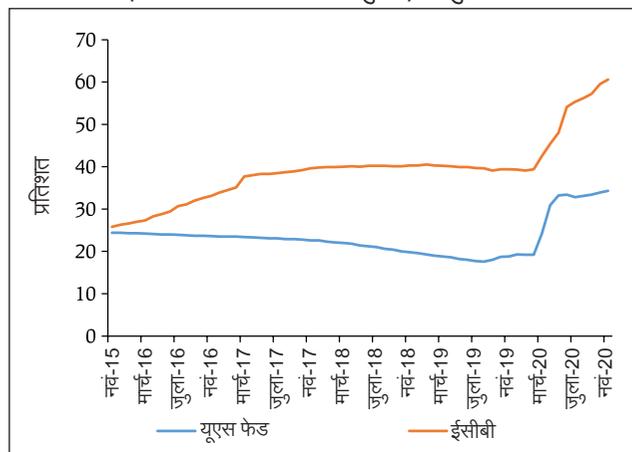
2. सरकार की प्रतिक्रिया को और अधिक प्रतिबंधात्मक बताते हुए उच्च स्कोर।

स्रोत: ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के कोरोनावायरस सरकारी रिस्पांस ट्रैकर।

1.6 संकट की अभूतपूर्व प्रकृति को देखते हुए, केंद्रीय बैंक के हस्तक्षेपों ने ब्याज दर में कटौती, चलनिधि और बाजार की चलनिधि के विस्तार का निधीयन, परिसंपत्ति की खरीद करना, ऋण देने में ढील, मैक्रोप्रोडेन्शियल नीतियों और स्वैप लाइनों को प्रारंभ किया। इन उपायों को जारी रखा गया है और जुलाई 2020 से इन उपायों को तेज किया गया है। उदाहरण के लिए, कई उपायों में, यूरोपीय सेंट्रल बैंक (ईसीबी) ने सरकारी बांड की खरीद के लिए कॉर्पस को और बढ़ा कर लिया है (मूल राशि के पुनर्भुगतान सहित), ऐसे क्रय का दायरा बढ़ाया और लक्षित लंबी अवधि के पुनर्वित्त परिचालन की शर्तों का पुनर्गठन किया। परिणामस्वरूप, नीतिगत दरें ऐतिहासिक रूप से घटी हैं और घटते-घटते कि वे ऋणात्मक स्तर पर जा पहुंची हैं और तुलनपत्र का विस्तार इतना हुआ, जो पहले कभी देखा नहीं गया (चार्ट 1.4)।

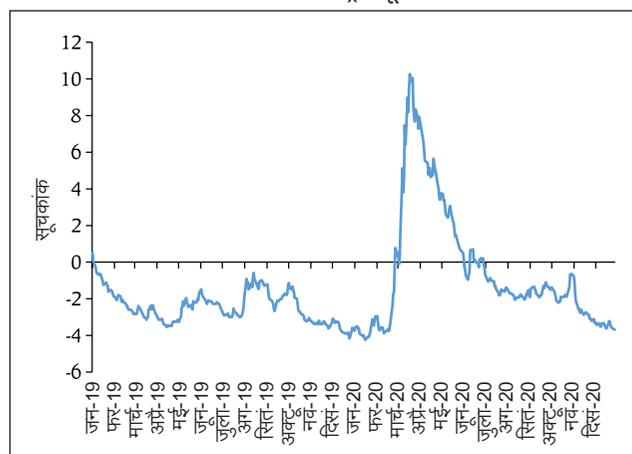
1.7 इन उपायों ने कोविड-पूर्व- स्तरों पर दुनिया भर में वित्तीय स्थितियों को आसान बना दिया है। वित्तीय अनुसंधान के वित्तीय तनाव सूचकांक 1 (ओएफआर एफएसआई) का कार्यालय जुलाई 2020 से नकारात्मक क्षेत्र में आगे बढ़ गया, जो औसत तनाव के स्तर से नीचे है (चार्ट 1.5)। सुगम होती वित्तीय स्थितियों ने कॉर्पोरेट क्रेडिट के बीमा को सीधे प्रभावित किया है, जिसके चलते यूएस में उच्च-ग्रेड और उच्च-प्रतिफल क्रेडिट डिफॉल्ट स्वैप (सीडीएस) पुनः अपने कोविड-पूर्व स्तरों पर लौट आया है और कोविड-19 की चपेट में आने के बाद 5-वर्षीय सीडीएस स्प्रेड की तुलना में 3 वर्षीय स्प्रेड को अपनाया जा रहा है है प्रेरित प्रतिलोम (चार्ट 1.6 और 1.7)। यूरोपीय सीडीएस

चार्ट 1.4: अमेरिकी फेडरल रिजर्व (फेड) और यूरोपीय सेंट्रल बैंक (उनके संबंधित जीडीपी के अनुपात) का तुलन पत्र



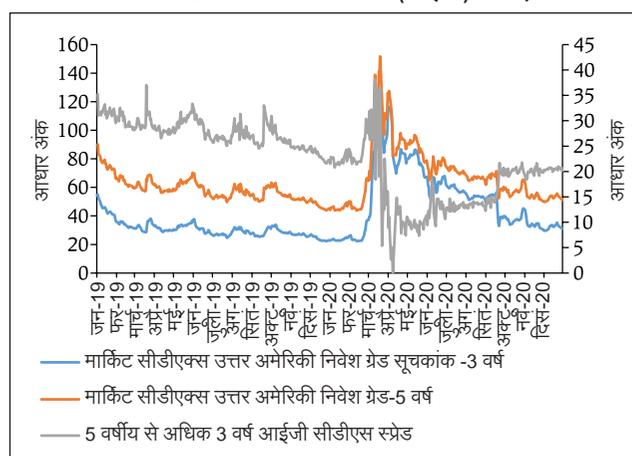
स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.5: वित्तीय स्ट्रेस सूचकांक¹



स्रोत: ब्लूमबर्ग

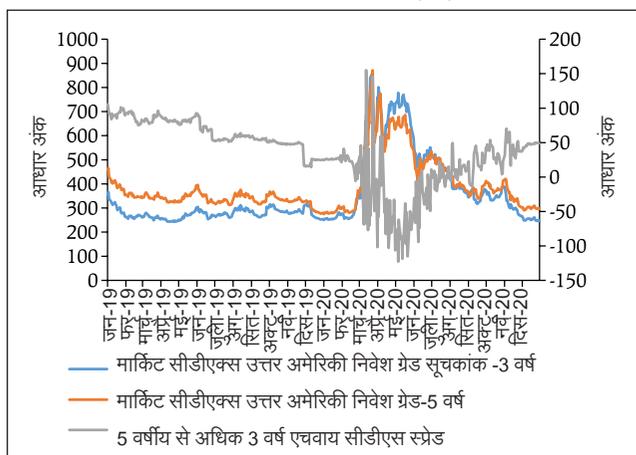
चार्ट 1.6: उत्तर अमेरिकी निवेश ग्रेड (आईजी) सीडीएस



स्रोत: ब्लूमबर्ग

¹ ऑफिस ऑफ फ़ाइनेंशियल रिसर्च द्वारा प्रकाशित ओएफआर एफएसआई, यूनाइटेड स्टेट्स डिपार्टमेंट ऑफ ट्रेजरी के भीतर एक स्वतंत्र ब्यूरो है, जिसमें संकेतक की पांच श्रेणियां शामिल हैं: क्रेडिट, इक्विटी वैल्यूएशन, फंडिंग, सुरक्षित संपत्ति और अस्थिरता। एफएसआई तीन क्षेत्रों: संयुक्त राज्य अमेरिका, अन्य उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और उभरते बाजारों द्वारा स्ट्रेस योगदान को दर्शाता है।

चार्ट 1.7: उत्तर अमेरिकी उच्च प्रतिफल (HY) सीडीएस

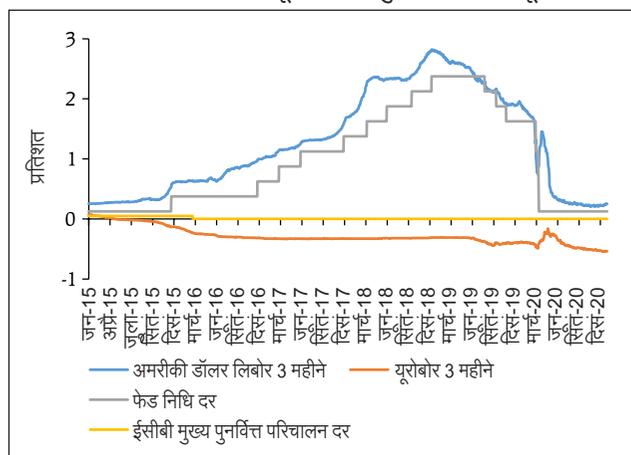


स्रोत: ब्लूमबर्ग

समान थे, जो कोविड-पूर्व स्तर के निकट आ रहे थे। यद्यपि आसान वित्तीय परिस्थितियां अल्पकालिक विकास की संभावनाओं का समर्थन करती हैं, लेकिन दीर्घकालिक प्रभाव के रूप में ये लीवरेज को प्रोत्साहित करती हैं और आस्तियों की कीमतों को उंचाई पर ले जाती हैं जो वित्तीय स्थिरता की चिंताओं को बढ़ाती हैं।

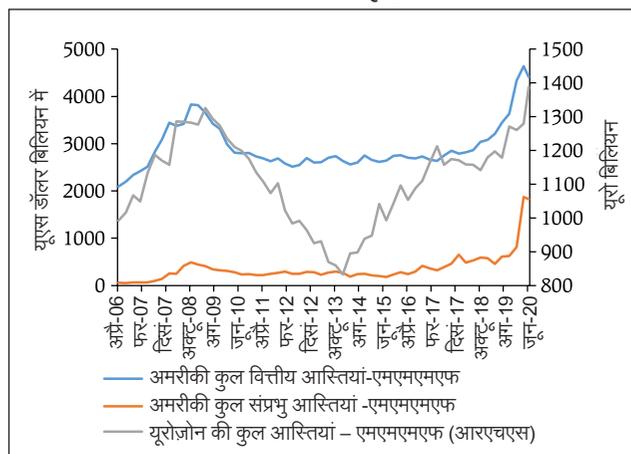
1.8 महामारी के मद्देनजर केंद्रीय बैंक की चलनिधि बड़े पैमाने पर उपलब्ध होने से सावधि जमा की दरों (चार्ट 1.8) में तेजी से गिरावट आई है, जिससे उधार लेने की लागत में भारी कमी आई है, लेकिन इसके कारण बैंकों की शुद्ध ब्याज दर मार्जिन भी सिकुड़ गया है, जिससे उनकी लाभप्रदता घट गई है। लाभप्रदता² भले ही जमा प्रतिफल में गिरावट आई है, मनी मार्केट म्यूचुअल फंड (एमएमएमएफ) के तहत आस्तियां बढ़ी है, ऐसा होना प्रतिफल की खोज का संकेत है (चार्ट 1.9)। संस्थागत निवेशकों द्वारा इस तरह का जोखिम लेना, विशेष रूप से लक्षित रिटर्न कमाने के लिए अचलनिधि में निवेश करना, वित्तीय भेद्यता को जन्म दे सकता है जिसके परिणामस्वरूप वित्तीय स्थिरता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।

चार्ट 1.8: अमेरिका और यूरोजोन में प्रमुख ब्याज दरों में मूवमेंट



स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.9: अमेरिका और यूरोजोन में मनी मार्केट म्यूचुअल फंड आस्तियों में संवृद्धि



स्रोत: सेंट लुइस के फेडरल रिजर्व बैंक के आर्थिक अनुसंधान और यूरोपीय सेंट्रल बैंक सांख्यिकीय डाटा वेयरहाउस।

² बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स (2020): "बॉक्स ए: कोविड -19 के माध्यम से बैंक", बीआईएस त्रैमासिक समीक्षा, सितंबर

सारणी 1.2 जीडीपी के प्रतिशत के रूप में राजकोषीय घाटा - प्रमुख क्षेत्र

	2019	2020*
उन्नत अर्थव्यवस्थाएं	-3.01	-14.39
उभरता हुआ एवं मध्यम आय एशिया	-6.00	-11.40
उभरता हुआ एवं मध्यम आय यूरोप	-0.65	-7.18
उभरता हुआ एवं मध्यम आय लातिन अमेरिका	-4.00	-11.09
उभरता बाजार एवं मध्यम आय अर्थव्यवस्थाएं	-4.83	-10.72

नोट: अनुमानित

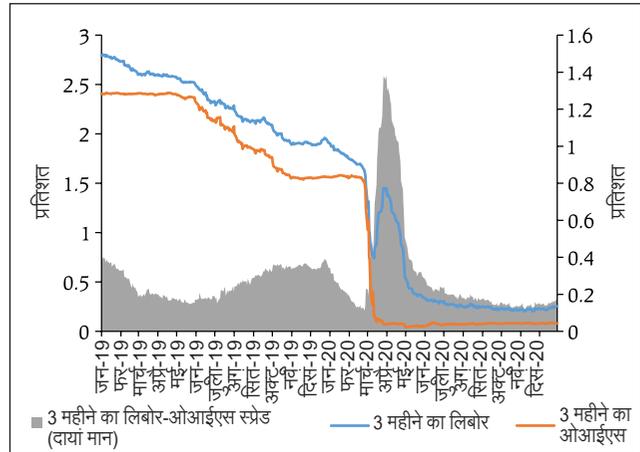
स्रोत: आईएमएफ फिस्कल मॉनिटर

1.9 कोविड-19 महामारी से उत्पन्न आर्थिक बाधाओं के परिणामस्वरूप अन्य गड़बड़ियां भी उभर कर आई हैं। सबसे पहली, महामारी ने सरकारी राजस्व प्राप्तियों को बुरी तरह प्रभावित किया है जिसके कारण सभी देशों में, विशेषकर उन्नत अर्थव्यवस्थाओं में (सारणी 1.2) तीव्र गति से बढ़े राजकोषीय घाटे की भरपाई के लिए निधि की व्यवस्था करने के कारण सरकारी उधार में वृद्धि हुई है। इससे वैश्विक ऋण संबंधी जोखिम बढ़ गए हैं।

1.10 दूसरी, इसने ट्रेजरी बाजार की कमजोरियों को उजागर किया है। महामारी शुरू होने के बाद 3 महीने का एकदिवसीय इंडेक्स स्वैप (ओआईएस)- यूएस ट्रेजरी बिल (टी-बिल) का कीमत-लागत अंतर (स्प्रेड) लगातार ऋणात्मक रहा, जो अमरीकी मुद्रा बाजार में अभूतपूर्व नकदी की कमी की ओर इशारा करता है जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक जोखिम-वहन क्षमता पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा और उसके कारण उधार दर और प्रवाह (चार्ट- 1.12 और 1.13) पर असर हुआ। एकदिवसीय इंडेक्स स्वैप (ओआईएस) दर और अप्रत्याभूत दरों के बीच का अंतर (स्प्रेड) भी तेजी से बढ़ गया है। हालांकि ये स्प्रेड हाल ही में धनात्मक क्षेत्र में लौट आए हैं लेकिन इनके कारण हुए परिवर्तनों से उभरते बाजारों पर पड़ने वाले प्रभावों को तेजी से राहत मिली है बशर्ते अमेरिकी ट्रेजरी बाजार की कमजोरियों ए गैर-अमेरिकी बाजारों में अमेरिकी डॉलर की कमियों में बढ़तरी हो।

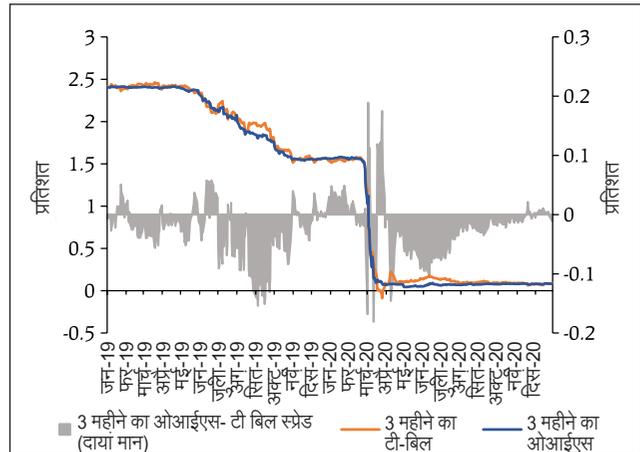
1.11 तीसरी, कोविड-19 महामारी ने फर्मों और हाउसहोल्ड्स के ऋण जोखिम की तरफ प्रमुख रूप से ध्यान खींचा है जिसका प्रभाव अल्पावधि कॉरपोरेट अर्जन पर पड़ रहा है। फिर भी, इक्विटी कीमतों में वृद्धि की उम्मीदें मजबूती के साथ बनी हुई हैं (चार्ट 1.12 और 1.13)। आगे चलकर, कॉरपोरेट अर्जन की संभावनाओं के पुनर्मूल्यांकन के कारक घटनाक्रमों का वैश्विक प्रवाह पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा।

चार्ट 1.10: यूएस: लिबोर-ओआईएस स्प्रेड (3 महीने का परिपक्वता काल)



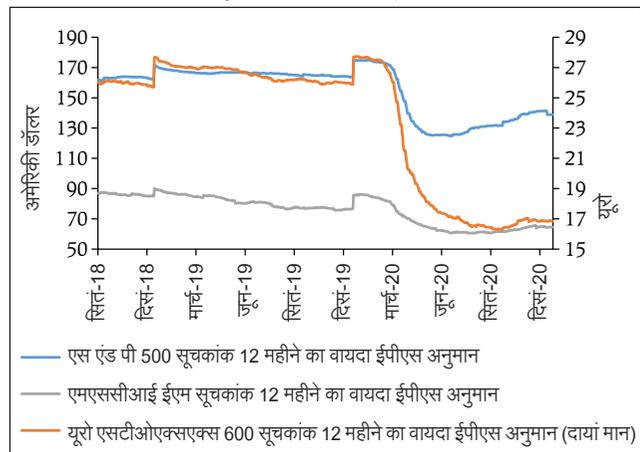
स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.11: यूएस: ओआईएस-ट्रेजरी बिल स्प्रेड (3 महीने का परिपक्वता काल)



स्रोत: ब्लूमबर्ग

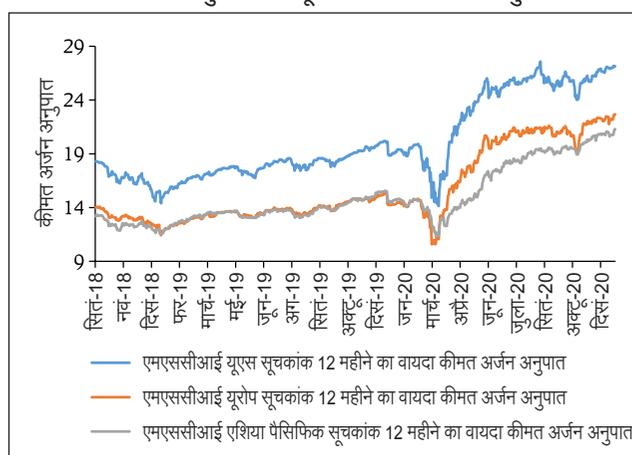
चार्ट 1.12: 12 महीने का प्रति शेयर वायदा अर्जन (ईपीएस) अनुमान- प्रमुख वैश्विक इक्विटी सूचकांक



स्रोत: ब्लूमबर्ग

1.12 नीतिगत प्रयास प्रणाली में दबाव को कम करते हुए उसमें सुधार और उसकी बहाली की तरफ आगे की दिशा में आगे बढ़ना है। हाउसहोल्ड्स एवं फर्मों को सहायता प्रदान करने तथा वित्तीय प्रणाली को एक अच्छी स्थिति में बनाए रखने के लिए नीतिगत बदलाव का रुख व्यापक आधार पर चलनिधि सहायता से अधिक लक्ष्य केंद्रित उपायों की तरफ है। (बॉक्स 1.1)

चार्ट 1.13: प्रमुख वैश्विक सूचकांकों के कीमत अर्जन गुणज



स्रोत: ब्लूमबर्ग

बॉक्स 1.1: कॉरपोरेट क्षेत्र का पुनरुत्थान और इसकी पुनः संरचना

विश्व भर के नीति निर्माताओं ने कोविड-19 महामारी के प्रतिकूल प्रभावों को तत्काल रोकने के लिए चलनिधि उपलब्ध कराकर, निधियों की लागत को कम कर, विनियामकीय नरमी बरतकर, खपत बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन योजनाओं तथा अन्य उपायों के माध्यम से त्वरित और साहसी उपाय किए।

महामारी ने खपत पैटर्न और कारोबार परिचालनों में अनेक संरचनात्मक परिवर्तनों की शुरुआत कर दी है जिसका प्रभाव अभी भी सामने आ रहा है। कुछ व्यवसायों के लिए ऋण शोधन की चिंताएं बहुत विकट हो गई हैं। तदनुसार, कॉरपोरेट क्षेत्र को और सहायता प्रदान करने के लिए प्राधिकारियों को नए उपाय और प्रक्रियाएं अपनाकर अपनी कार्रवाई में बदलाव लाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

इस संदर्भ में, ग्रुप ऑफ थर्टी (G30)³ ने मध्य-दिसंबर 2020 की अपनी रिपोर्ट में कोविड के बाद कॉरपोरेट क्षेत्र के पुनरुत्थान और पुनर्संरचना पर महत्वपूर्ण सर्वव्यापी सिद्धांत निर्धारित किए हैं। इनमें शामिल हैं- (क) सीमित संसाधनों का लाभकारी उपयोग; (ख) कारोबार में आवश्यक या वांछित बदलाव को बढ़ावा देना; (ग) निजी क्षेत्र की विशेषज्ञता को काम में लाना तथा (घ) नये उपायों के लिए उचित समय निर्धारित करना। यह मुख्य रूप से लक्षित क्रेडिट कार्यक्रमों का उपयोग करने, अर्थक्षम कंपनियों में इक्विटी लगाने / इक्विटी जैसे निवेश को बढ़ावा देने और उपयुक्त दिवालियापन और ऋण चुकौती उपायों की प्रक्रियाओं के माध्यम से तेजी से और किफायती ढंग से तुलन-पत्रों की पुनर्संरचना करने पर केंद्रित है।

सामान्य तौर पर, कारपोरेट्स के लिए बीमा का दायरा कारोबार में आने वाली बाधाओं से उनकी सुरक्षा के इर्द-गिर्द रहता है लेकिन वस्तुतः किसी महामारी के कारण हुई हानि कवरेज इसमें शामिल नहीं किया जाता है क्योंकि अप्रत्याशित जोखिमों की मात्रा और मूल्य का निर्धारण कठिन है।

इस रिपोर्ट में, प्रत्यक्ष रूप से या पुनर्बीमा के माध्यम से, कारोबार में व्यवधान संबंधी सरकार समर्थित ऐसे बीमा की समीक्षा की गई है जहां राजकोषीय क्षमता ने प्रतिबंधक कारक के रूप में कार्य किया है।

ऐसे देशों / अर्थव्यवस्थाओं में जहाँ सुदृढ़ निजी वित्तीय संस्थाएं तथा सघन पूंजी बाजार मौजूद हैं वहीं विभिन्न प्रकार के संस्थागत तरीकों की सहायता से प्राथमिकता के आधार वित्तीय प्रणाली की पुनर्संरचना करना व्यावहारिक हो सकता है। हालांकि, कुछ उभरती अर्थव्यवस्थाओं में जहां का संस्थागत ढांचा अपेक्षाकृत कमजोर है वहां सरकार समर्थित सहायता के लिए सरकारी उधार लेने की क्षमता बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित रखने की संभावना है। उभरती अर्थव्यवस्थाओं को एक बहुत बड़े रोजगार-प्रधान असंगठित क्षेत्र की कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ रहा है जो महामारी और उससे बचाव के लिए सहायता योजनाएं बनाने में गलत खाका (डिज़ाइन) का चयन करने से जुड़े जोखिमों से प्रभावित हुआ है। इसके अलावा, कॉर्पोरेट ऋण दायित्वों की किसी भी पुनर्संरचना के लिए संभवतः कुछ ऋण दावों को इक्विटी में रूपांतरित करने की आवश्यकता होगी, जहां ऐसे रूपांतरण के लिए पात्र परियोजनाओं का चयन महत्वपूर्ण होगा। इसलिए, अर्थव्यवस्थाओं के अनुसार "इष्टतम प्रतिक्रिया" भिन्न हो सकती है, रिपोर्ट में कारोबार क्षेत्र की आधारभूत मजबूती के पूरी तरह समाप्त हो जाने के पहले कार्रवाई करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

संदर्भ

ग्रुप ऑफ थर्टी (2020): रिवाइविंग एंड रिस्ट्रक्चरिंग द कॉरपोरेट सेक्टर पोस्ट कोविड: डिज़ाइनिंग पब्लिक पॉलिसी इंटरवेंशंस, वर्किंग ग्रुप ऑन कॉरपोरेट सेक्टर रिवाइटलाइजेशन. स्पेशल रिपोर्ट (दिसंबर 15)

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (2020), ग्लोबल फाइनेंशियल स्टैबिलिटी रिपोर्ट. अक्टूबर

³ G30 सरकारी और निजी क्षेत्रों की आर्थिक एवं वित्तीय संस्थाओं सहित शिक्षा जगत की अग्रणी हस्तियों का एक विश्व स्तरीय स्वतंत्र निकाय है।

1.1.2 पूंजी प्रवाह और विनिमय-दर उतार-चढ़ाव

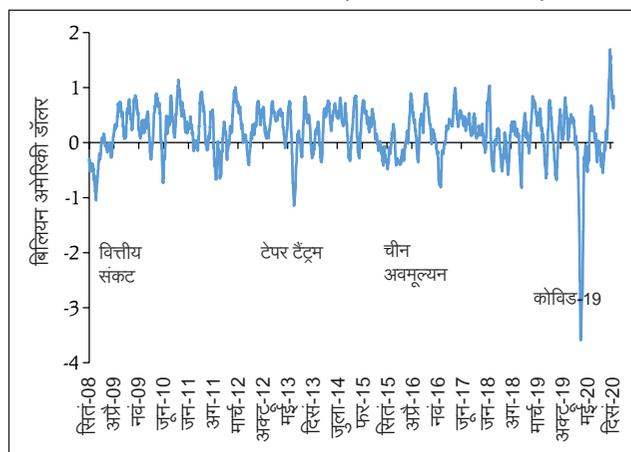
1.13 महामारी के प्रकोप के बाद वर्ष के आरंभिक भाग में अभूतपूर्व बहिर्वाह के पश्चात जून 2020 में उभरते बाजारों में पूंजी प्रवाह में एक अनिश्चित-सा सुधार होना आरंभ हुआ जिसमें कोविड-19 की वैक्सीन के बारे में अच्छी खबर के बाद तेजी आई (चार्ट 1.14)। उभरते बाजारों में जारी प्राथमिक निर्गमों के प्रति विदेशी निवेशकों की प्रतिक्रिया उत्साहजनक रही है (चार्ट 1.15)। कोविड-19 वैक्सीन से प्रेरित आर्थिक वृद्धि की प्रत्याशा में अमेरिकी मध्यवर्ती परिपक्वता अवधि (2 और 5 वर्ष) के प्रतिफल में सुधार होने लगा है⁴। इसका प्रभाव उभरते बाजारों के भावी पोर्टफोलियो पर पड़ सकता है।

1.14 वर्ष 2020 के आरंभ से उभरते बाजारों के स्थानीय मुद्रा बॉण्ड पोर्टफोलियो का प्रतिफल यूएस डालर के रूप में स्थानीय मुद्रा तथा हेज किए हुए प्रतिफल की तुलना में कम रहा है क्योंकि उभरते बाजारों की मुद्राएं यूएस डॉलर की तुलना में कमजोर हुई हैं (चार्ट 1.16)। इसके कारण यूरोप और अमेरिका में लंबे समय तक आर्थिक मंदी और हानिरहित स्फोटिकारी परिस्थितियों में वैश्विक बॉण्ड बाजार के कीमत निर्धारण के बाद भी उभरते बाजार के स्थानीय मुद्रा बॉण्ड प्रवाह में सुस्ती आई। इस परिदृश्य में, विशेष रूप से अमेरिका के लिए, वृद्धि या मुद्रास्फीति के आकलन में किए जाने वाले किसी भी बड़े बदलाव से, उभरते बाजारों के स्थानीय मुद्रा बॉण्ड प्रवाह तथा विनिमय दरों में संभवतः अस्थिरता पैदा हो सकती है।

1.1.3 कोविड-19 और बैंक पूंजी

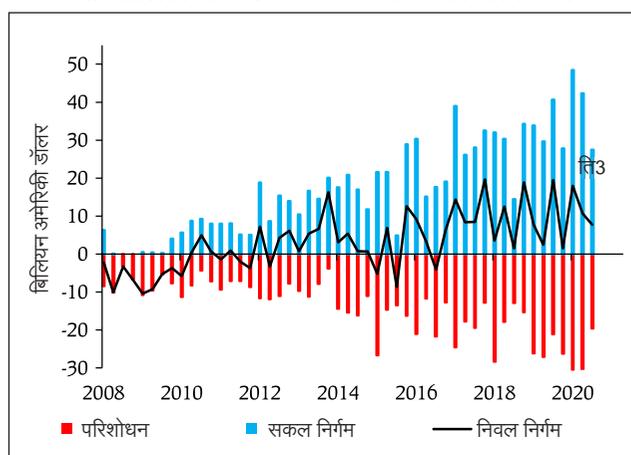
1.15 विश्व ने 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान आई परिस्थिति की तुलना में बहुत अधिक बेहतर ढंग से पूंजीकृत बैंकों के साथ कोविड-19 का सामना किया; वास्तव में 2008 के वित्तीय संकट ने मजबूत पूंजी बफर के लिए प्रेरित किया। कोविड-19 संकट के कारण बैंकों की पूंजीगत लागत को काफी बदल कर रख दिया है तथा बैंकों और विवेकपूर्ण प्राधिकारियों, दोनों के लिए चुनौतियां पेश कर दी हैं। संकट आने के साथ बैंक

चार्ट 1.14: ईएम दैनिक प्रवाह (28 दिवसीय चल औसत)



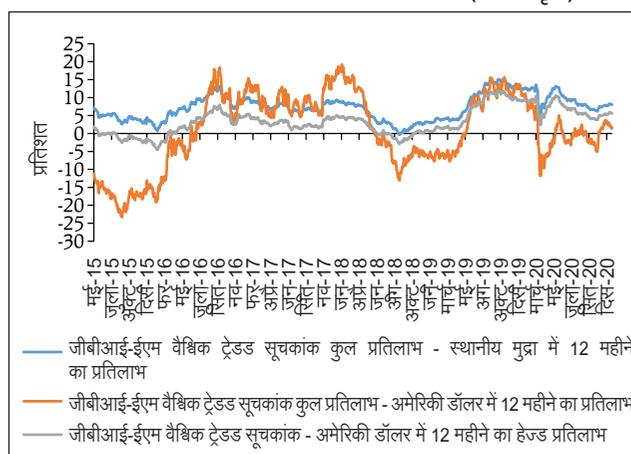
टिप्पणी : 28 दिसंबर 2020 तक की स्थिति।
स्रोत : अंतरराष्ट्रीय वित्त संस्थान (आईआईएफ)।

चार्ट 1.15: विदेशों में उभरते बाजार के बॉण्डों का निवल निर्गम



स्रोत : आईआईएफ, ब्लूमबर्ग।

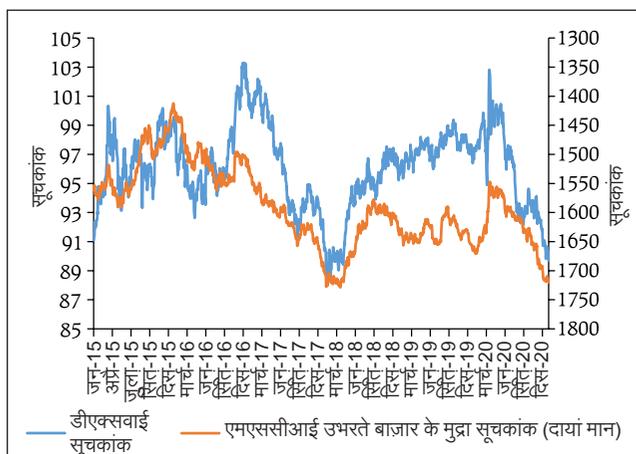
चार्ट 1.16 : उभरते बाजार के बॉण्ड पर प्रतिलाभ (वार्षिकीकृत)



टिप्पणी : ये जानकारी ऐसे स्रोतों से ली गई है जिसे भरोसेमंद माना जा सकता है, किंतु जे पी मॉर्गन इसकी संपूर्णता या सटीकता का वादा नहीं करता है। इस सूचकांक का इस्तेमाल अनुमति प्राप्त करके किया गया है। जेपी मार्गन से लिखित पूर्व अनुमोदन के बिना इसे कापी, इस्तेमाल या वितरण नहीं किया जाए। सौजन्य जे पी मॉर्गन चेस एंड कंपनी, समस्त अधिकार 2020।
स्रोत : जे पी मॉर्गन।

⁴ 03 दिसंबर 2020 की स्थिति के अनुसार यूएस प्रतिफल वक्र के आधार पर टिप्पणी

चार्ट 1.17: उन्नत अर्थव्यवस्थाओं और उभरते बाजारों में विनिमय दर

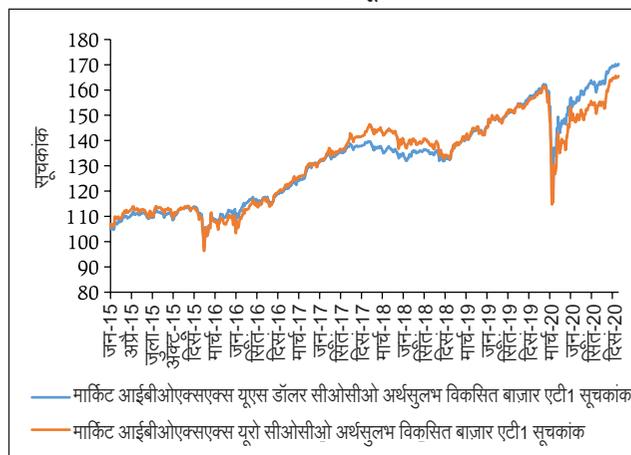


स्रोत: ब्लूमबर्ग

स्टॉक की कीमतें अचानक गिर गईं (बीआईएस, 2020⁵) और बाद में उनमें सुधार बहुत धीमा रहा क्योंकि उनकी कीमतें वैश्विक स्टॉक कीमतों से और संकट के पूर्व उनकी अपनी कीमतों से काफी कम रहीं। इसी प्रकार, यूरोप के बाहर के बैंकों के लिए बाजार मूल्य और बही मूल्य के अनुपात में भी कमी आई और यह अनुपात औसतन एकसमान रूप से स्थिर रहा। यूरोप और जापान के कम मुनाफा वाले बैंकों में यह अनुपात संकट पूर्व की स्थिति से कम रहा और इसके बाद भी उसमें गिरावट आई। हालांकि यूएस और यूरोपीय बैंकों के आकस्मिकता संपरिवर्तनीय (सीओसी) बॉण्डों में कोविड के कारण आई गिरावट में तेजी से सुधार हुआ लेकिन ऐसे लिखतों की फंडिंग लागत में अब भी सुधार जारी है और इसका स्तर कोविड से पहले के स्तर की तुलना में अधिक है (BIS, op.cit)

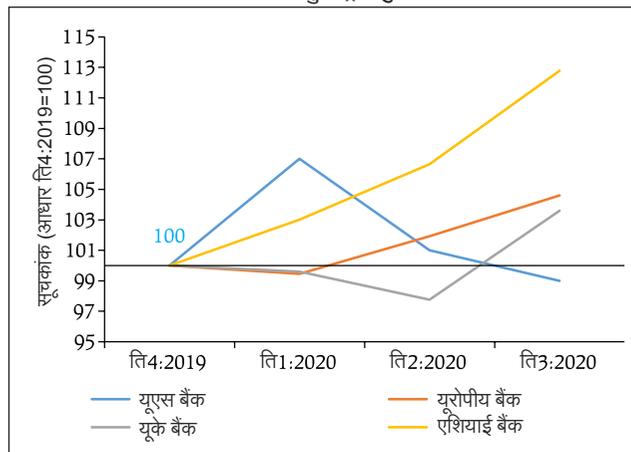
1.16 वैश्विक स्तर पर विनियामकों ने अपने कार्यक्षेत्र के अंतर्गत आने वाले बैंकों को स्थानीय अर्थव्यवस्था को सहायता प्रदान करने के लिए अपने बफर के उपयोग के लिए प्रोत्साहित किया है लेकिन इसका वांछित परिणाम एकसमान नहीं रहा। विभिन्न विनियामकीय क्षेत्रों में वैश्विक महामारी के दौरान बैंकों की बैलेंस-शीट के महत्वपूर्ण मानदंडों के विश्लेषण से रोचक विरोधाभास सामने आए हैं। एशिया में जहां बैंक ऋण में काफी अच्छी वृद्धि बनी रही है (बहुत हद तक चीन में तेजी से सुधार के कारण), अमेरिकी बैंकों ने ऋण में होने वाली हानि के लिए काफी अधिक प्रोविज़निंग किया है तथा यूरोपीय बैंक कॉमन इक्विटी टियर-1 (CET-1) के पूंजी वृद्धि में अग्रणी रहे हैं। (चार्ट 1.19 से 1.21)

चार्ट 1.18: अमेरिकी और यूरोपीय आकस्मिक संपरिवर्तनीय अतिरिक्त टियर-1 (एटी-1) सूचकांक



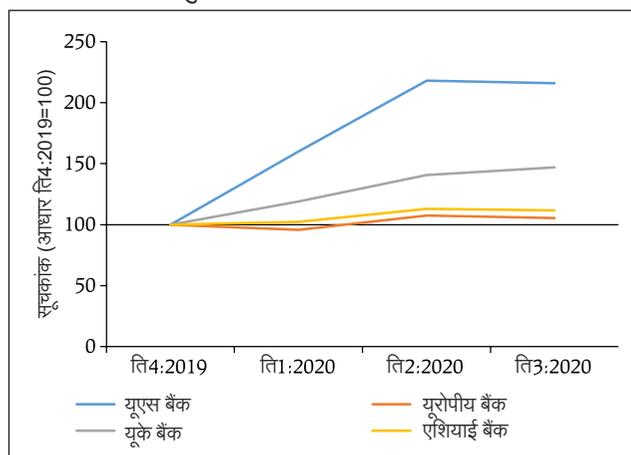
स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.19 : बहुराष्ट्रीय कुल ऋण



स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.20 : कुल ऋण हानि संबंधी आरक्षित निधि में संचलन



स्रोत: ब्लूमबर्ग

⁵ बीआईएस 2020: "धीमे आर्थिक सुधार के बावजूद बाजारों में उछाल आया", बीआईएस तिमाही समीक्षा, सितंबर

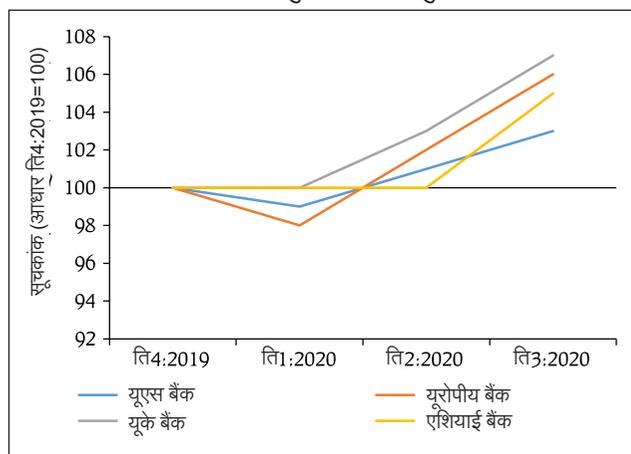
1.1.4 पण्य बाजार स्पिलओवर

1.17 कोविड-19 के लिए प्रभावी टीका तैयार हो जाने के समाचार से ऊर्जा बाजार में काफी अधिक उत्साह रहा। आरंभ में तेल की कीमतों में उछाल आया और ब्रेंट फ्रंट मंथ की वायदा कीमत फिर से 45 अमेरिकी डालर प्रति बैरल तक के ऐसे स्तर तक वापस आ गई जिसे सितंबर के आरंभ के बाद से नहीं देखा गया था। हालांकि अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (IEA) ने नवंबर की अपनी मासिक रिपोर्ट में 2021 की पहली छमाही में वैक्सीन के बहुत अधिक प्रभाव का अनुमान नहीं लगाया था। विशेष रूप से यूरोप और अमेरिका में तेजी से बढ़ते मामले और इसके परिणामस्वरूप कई देशों में इसकी रोकथाम के लिए हाल में लॉकडाउन के लिए की गई घोषणाएं और अन्य उपायों के कारण तेल की वैश्विक मांग के अनुमान में कमी आई है। अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी ने वर्ष 2020 में तेल की वैश्विक मांग का अनुमान औसतन 91.3 मिलियन बैरल प्रतिदिन का रखा है जो 2019 की मांग की तुलना में 8.8 प्रतिशत कम है। वर्ष 2021 में यह मांग बढ़कर 97.1 मिलियन बैरल प्रतिदिन होने की संभावना है जो 2019 में कोविड के पूर्व के स्तर से लगभग 3% कम है।

1.18 वैक्सीन विकसित करने संबंधी हाल के समाचार ने 2021 में चीन के बाहर मांग में सुधार होने की आशा जगा दी है जिससे धातुओं की कीमतों में सुधार होगा, हालांकि, यूरोप और अमेरिका दोनों में महामारी की दूसरी लहर के कारण लगाए गए लॉकडाउन से मांग में रुकावट आने की संभावना है और इसके कारण इस प्रत्याशा में निकट अवधि में जोखिम का अनुमान लगाया जा रहा है। इसके अलावा, इस उम्मीद से धातुओं की आधारभूत कीमतों को समर्थन प्राप्त हो रहा है कि आगे चलकर चीन की मांग में सुस्ती की स्थिति में विश्व के बाकी देशों में सुधार से संतुलन आएगा और धातुओं की कीमतों में महामारी के कारण आई मंदी में 2020 की तीसरी तिमाही में तेजी से सुधार दिखा है (चार्ट 1.23)।

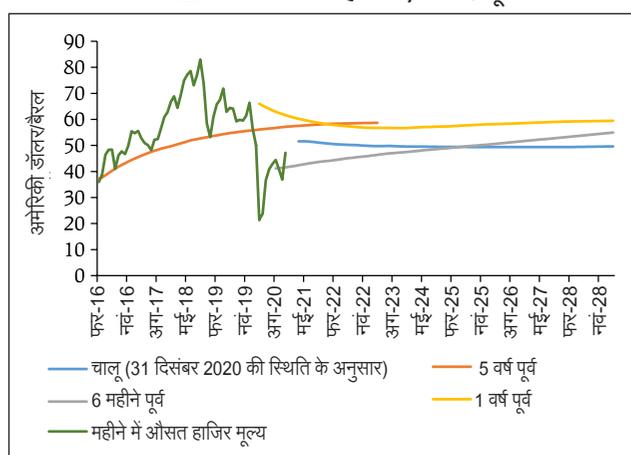
1.19 पण्य कीमतों में अस्थिरता का व्यापक असर पण्य निर्यात करने वाले देशों पर पड़ा है जिनमें 91% देशों को निम्न आय वर्ग में रखा गया है। वर्ष 2013-17 की तुलना में खनिज, ऊर्जा और कृषि उत्पादों की पण्य कीमतों में भारी गिरावट ने ऐसे

चार्ट: 1.21 : कुल सीईटी-1 अनुपात



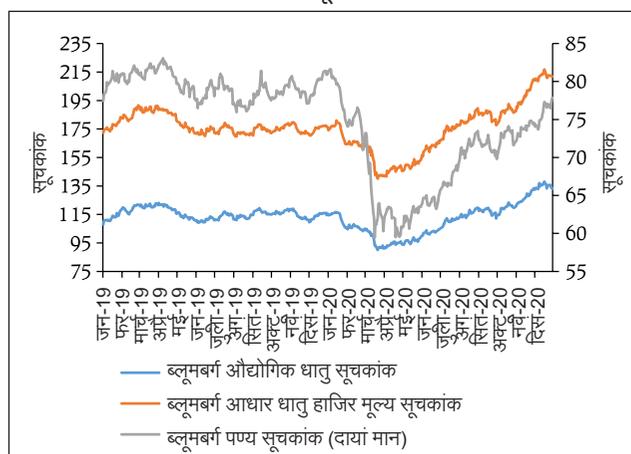
स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.22 : ब्रेंट कच्चा तेल हाजिर एवं वायदा मूल्य



स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.23: पण्य सूचकांकों में संचलन



स्रोत: ब्लूमबर्ग

सारणी 1.3: निम्न आय वाले क्षेत्रों की जीडीपी के प्रतिशत के रूप में राजकोषीय घाटा

	2015	2016	2017	2018	2019	2020*	2021*
एशिया के निम्न आय वाले विकासशील देश	-4.22	-3.26	-2.72	-3.89	-4.11	-6.32	-5.67
लैटिन अमेरिका के निम्न आय वाले विकासशील देश	-1.33	-0.72	-0.64	-1.15	-0.51	-3.93	-3.10
सब-सहारा अफ्रीका के निम्न आय वाले विकासशील देश	-3.76	-4.28	-4.51	-3.98	-4.09	-6.26	-4.86

स्रोत: आईएमएफ राजकोषीय मॉनिटर: * = अनुमानित

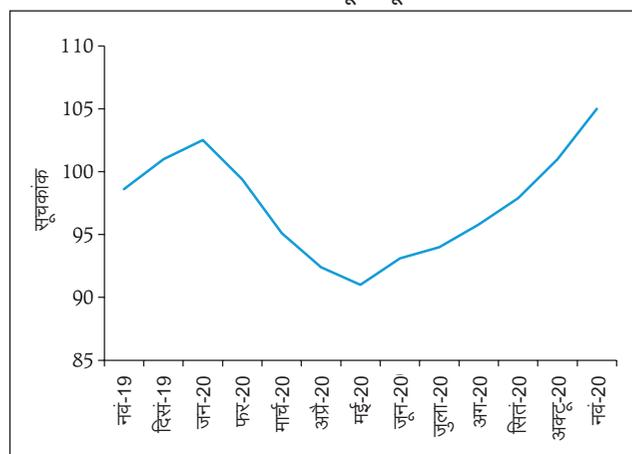
देशों के राजकोषीय संतुलन को बुरी तरह प्रभावित किया है (UNCTAD 2019) (सारणी 1.3)। इसके परिणामस्वरूप वैश्विक महामारी से निपटने के प्रति उनकी राजकोषीय सहायता बहुत कम रही। पण्य कीमतों में निरंतर गिरावट का गंभीर असर निम्न आय वाले देशों की राजकोषीय स्थिरता पर पड़ सकता है और ये देश सबसे अधिक ऋणग्रस्त भी हैं।

1.20 जैसा कि खाद्य और कृषि संगठन के खाद्य कीमत सूचकांक⁶ द्वारा ट्रैक किया गया है, वैश्विक खाद्य वस्तुओं की कीमतों में मई 2020 से लगातार गिरावट के बाद नवंबर 2020 में तेजी से उछाल आया (चार्ट 1.24)। नवंबर में खाद्य और कृषि संगठन के खाद्य कीमत सूचकांक के सभी उप सूचकांकों में बढ़त देखी गई जिसमें वनस्पति तेल के उप सूचकांक में सबसे अधिक वृद्धि हुई और इसके बाद चीनी, दालों, दुग्ध उत्पाद एवं मांस का स्थान रहा।

1.2 घरेलू समष्टि वित्तीय घटनाक्रम

1.21 वैश्विक महामारी के मद्देनजर आर्थिक गतिविधियों में सबसे बड़ी बाधा का परिणाम राजकोषीय दबाव, कॉरपोरेट क्षेत्र में तनाव और मांग की कमजोर स्थिति के रूप में सामने आया। रिज़र्व बैंक, वित्तीय क्षेत्र के अन्य विनियामकों तथा सरकार के त्वरित और साहसी उपायों ने वर्तमान में वित्तीय स्थिरता को जोखिमों से प्रतिरक्षित किया है। प्रतिफल की प्रत्याशा में अतिरिक्त वैश्विक चलनिधि से आवक पूंजी प्रवाह को समर्थन प्राप्त हुआ है। घरेलू अर्थव्यवस्था पर महामारी का समग्र प्रभाव अब भी धीरे-धीरे सामने आ रहा है और आगे की संभावना विशेषकर लघु और मध्यम उद्यमों के अधिक जोखिम संवेदी समूहों की रिकवरी की गति पर निर्भर करेगी।

चार्ट 1.24: खाद्य मूल्य सूचकांक



स्रोत : खाद्य और कृषि संगठन।

1.22 घरेलू गतिविधियों में लगातार 8 तिमाहियों की मंदी के मद्देनजर कोविड-19 का प्रकोप सदी में कभी एक बार होने वाली दुर्लभ विनाशकारी घटना साबित हुई जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था को उसकी समकक्ष अर्थव्यवस्थाओं के बीच, अप्रैल-जून 2020 में सबसे अधिक संकुचन में नीचे धकेल दिया। अग्रिम अनुमानों के अनुसार 2020-21 में जीडीपी में 7.7 प्रतिशत की गिरावट का अनुमान है। उसके बाद से हालांकि असमान रूप से ही सही लेकिन विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग गति से धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। इसके परिणामस्वरूप, विभिन्न क्षेत्रों में संकुचन के क्षेत्रों में कमी आई है और कुछ में सकारात्मक उभार के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। जोखिम सहने की क्षमता और प्रतिफल के लिए नई तलाश के साथ पूंजी प्रवाह तेजी से बढ़ा है। भारत में विदेशी पोर्टफोलियो निवेश के फिर से उभरने से वित्तीय बाजारों और आस्तिकीय कीमतों में उछाल आया है। भारत के भावी उज्ज्वल परिदृश्य के प्रति बढ़ती आशावादित

⁶ खाद्य और कृषि संगठन का खाद्य कीमत सूचकांक पांच खाद्य वस्तुओं के एक समूह यथा सब्जी, चीनी, दालें, दुग्ध उत्पाद और मांस के एक बास्केट की अंतराष्ट्रीय कीमतों में मासिक बदलाव की एक माप है। इसमें 2014-2016 की तुलना में समूह के प्रत्येक वस्तु के औसत निर्यात शेरों द्वारा भारित पांच क्मोडिटी ग्रुप मूल्य सूचकांकों का औसत शामिल होता है।

क्रमिक रूप से जारी अनलॉकिंग की प्रक्रिया और आपूर्ति की बाधाओं के दूर हो जाने के साथ उपभोक्ता और कारोबार का आत्मविश्वास बढ़ रहा है। इसके बावजूद, वैश्विक घटनाक्रम, बढ़ी हुई मुद्रास्फीति के घरेलू दबाव और प्रच्छन्न ऋणस्थगन, स्थगित आस्ति निर्धारण तथा ऋणों की एकबारगी पुनर्गठन के परिणामस्वरूप, जोखिमों के संतुलन पर भारी दुष्प्रभाव पड़ा है।

1.2.1 हाल की समष्टि आर्थिक प्रगति

1.23 कोविड-19 से संबंधित बाधाओं से बुरी तरह प्रभावित होने के कारण, 2020-21 में सरकार की वित्तीय स्थिति खराब होने की संभावना है क्योंकि राजकोषीय प्रोत्साहन के कारण व्यय दबाव उच्च स्तर पर बना हुआ है।

1.24 महामारी के कारण हुए आर्थिक संकुचन के परिणामस्वरूप सरकार के राजस्व में कमी आई है। अप्रैल-नवंबर के दौरान केंद्र सरकार की कुल प्राप्ति में पिछले वर्ष की तुलना में 17.9 प्रतिशत की कमी आई है। हालांकि, राजस्व संग्रहण में सुधार दिख रहा है, जैसा कि मासिक जीएसटी राजस्व (केंद्र+राज्य) में दर्शाया गया है, जिसमें वर्ष-दर-वर्ष अक्तूबर, नवंबर और दिसंबर महीने में क्रमशः 10.2 प्रतिशत, 1.4 प्रतिशत तथा 11.6 प्रतिशत की धनात्मक वृद्धि दर्ज की गई है। काफी बड़े राजकोषीय प्रोत्साहन के बावजूद, अप्रैल-नवंबर 2020-21 के दौरान कुल व्यय में 4.7 प्रतिशत की मामूली वृद्धि दर्ज की गई जिसमें राजस्व व्यय 3.7 प्रतिशत और पूंजीगत व्यय 12.8 प्रतिशत बढ़ा क्योंकि व्यय की अन्य शीर्षों से निधि का पुनः आबंटन कर अतिरिक्त व्यय की जरूरतों को पूरा किया गया है।

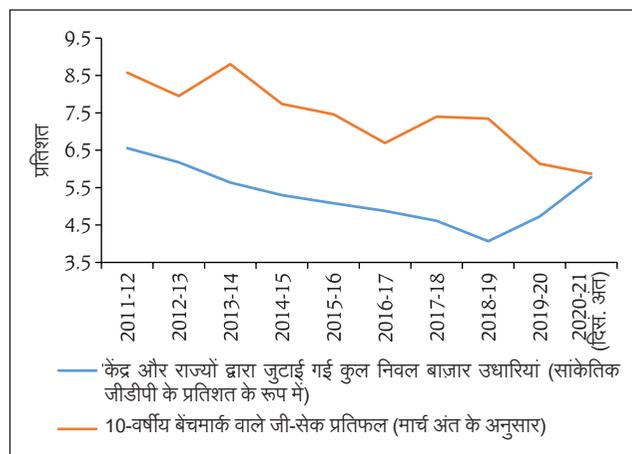
1.25 राज्यों के लिए, अपनी राजस्व प्राप्ति के कम होने के साथ-साथ केंद्र सरकार से कम राजस्व का अंतरण किए जाने का अतिरिक्त बोझ होने से 2020-21 में राजस्व में भारी कमी आने का जोखिम बढ़ सकता है। अप्रैल-अक्तूबर के दौरान राज्य सरकारों की कुल प्राप्ति में 13.7 प्रतिशत का संकुचन हो गया जो पिछले वर्ष की तुलना में कुल व्यय में 4.1 प्रतिशत की कमी होने का कारण बना। इस तथ्य के बावजूद कि महामारी का सामना करने में राज्य आगे रहे हैं, पिछले वर्ष की तुलना में अप्रैल-अक्तूबर 2020-21 के दौरान राजस्व व्यय में तेज उछाल नहीं देखा गया। इसका कारण मुख्य रूप से महंगाई भत्ता को स्थिर कर देने, वेतन को आंशिक या पूर्ण रूप से आस्थगित कर

देने तथा यात्रा और वाहन व्यय (भा.रि.बैं, 2020) को युक्तिसंगत बनाने जैसे उपायों के माध्यम से व्यय की प्राथमिकताओं को नए ढंग से निर्धारित किया जाना रहा है। हालांकि आठ महीनों के लगातार संकुचन के बाद अक्तूबर 2020 में राज्य सरकारों के पूंजीगत व्यय में सकारात्मक वृद्धि देखी गई।

1.26 प्राप्ति और व्यय में बड़े अंतर को मुख्य रूप से अतिरिक्त बाजार उधारों से पूरा किया गया, जैसा कि केंद्र द्वारा घोषित संशोधित उधार कैलेंडर तथा राज्यों को दी गई उच्च बाजार उधार सीमा से परिलक्षित होता है (चार्ट 1.25)। बॉण्ड बाजार पर बढ़े हुए सरकारी उधार के स्पिलओवर से दबाव को अब तक अर्थोपाय ऋण की सीमा में वृद्धि के साथ-साथ रिजर्व बैंक द्वारा चलनिधि सहायता के लिए किए गए उपायों से रोका गया है। साथ ही, राज्यों पर ऋणशोधन के दबाव को कम करने के लिए समेकित निक्षेप निधि (सीएसएफ) से निकासी को तय करने वाले नियमों में ढील दी गई है।

1.27 2020-21 की पहली छमाही में घरेलू मांग कमजोर होने के साथ चालू खाता अधिशेष बढ़कर जीडीपी का 3.1 प्रतिशत हो गया (2019-20 की चौथी तिमाही में 0.1 प्रतिशत)। कोविड-19 महामारी के कारण मांग और आपूर्ति में उत्पन्न व्यवधानों के कारण 2020-21 की पहली छमाही में भारत के पण्य निर्यात में 21.2 प्रतिशत का संकुचन हुआ। आयात इससे अधिक तेजी से 39.7 प्रतिशत संकुचित हुआ। इसके बाद, निर्यात में सुधार के कुछ संकेत दिखाई दिए और यह 2020-21 की तीसरी तिमाही

चार्ट 1.25: निवल उधारियां (केंद्र और राज्य सरकारें) और 10-वर्षीय बेंचमार्क वाले जी-सेक प्रतिफल

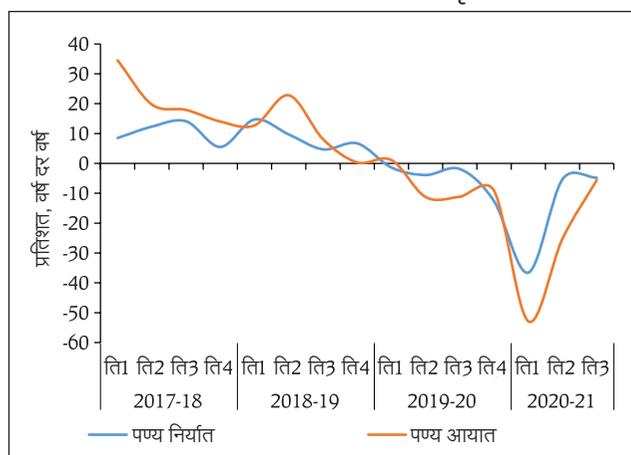


में संभलकर 4.8 प्रतिशत हो गया जिसमें तिमाही के दौरान गैर-तेल निर्यात 2.6 प्रतिशत बढ़ा। अर्थव्यवस्था के क्रमिक रूप से खुलने के साथ 2020-21 की तीसरी तिमाही में आयात में गिरावट घटकर 5.6 प्रतिशत हो गई (चार्ट 1.26)। अनंतिम आंकड़ों के आधार पर दिसंबर 2020 में आयात में 7.6 प्रतिशत का तेज उछाल आया। आयात में यह वृद्धि व्यापक आधार पर हुई क्योंकि 30 में से 20 मुख्य वस्तुओं के आयात में वृद्धि दर्ज की गई जिनमें मुख्य हैं सोना, इलेक्ट्रॉनिक वस्तुएं, केमिकल, मोती और महंगे रत्न, मशीनरी और वनस्पति तेल। व्यापार घाटा एक वर्ष पूर्व के 88.9 बिलियन यूएस डॉलर से घटकर पहली छमाही में 24.1 बिलियन हो गया, पिछले वर्ष इसी तिमाही में 37.1 यूएस डॉलर की तुलना में 2020-21 की तीसरी तिमाही में व्यापार घाटा घटकर 34.3 बिलियन हो गया। वैश्विक व्यापार गतिविधियों में क्रमिक सुधार के अनुरूप भारत के व्यापार परिदृश्य में सुधार हो सकता है जैसा कि विश्व व्यापार संगठन ने अनुमान लगाया है, हालांकि ऋणात्मक जोखिम अभी भी बरकरार है।

1.28 महामारी के आर्थिक परिणामों से निपटने के लिए अपने प्रयासों के कारण रिजर्व बैंक के तुलन-पत्र में काफी विस्तार हुआ है। प्रणाली को अभूतपूर्व ढंग से चलनिधि उपलब्ध कराने के कारण थोड़े समय के लिए वक्र प्रभावित हुआ है। मार्च 2019 से बाजार लेनदेनों के लिए एकदिवसीय प्रत्याभूत निधीयन दर जो चलनिधि समायोजन सुविधा रिवर्स रेपो रेट से 10-15 बेसिस प्वाइंट्स कम थी, उसमें अक्टूबर 2020 के अंत से तेजी से गिरावट आई है (चार्ट 1.27)। गैर-प्रत्याभूत एकदिवसीय मांग दर (ओवरनाइट कॉल रेट) जो सामान्य रूप से रेपो-एमएसएफ कॉरिडोर में रहती थी, लगभग इसी समय के आसपास रिवर्स रेपो रेट से कम हो गई। इसके परिणामस्वरूप, जोखिम रहित मुद्रा बाजार की आवधिक संरचना, विशेष रूप से वक्र के तुरंत बाद की अवधि में, रिवर्स रेपो रेट के ऋणात्मक स्प्रेड स्तर के आसपास लगातार बनी रही (चार्ट 1.28)। आवधिक वक्र, मुख्य रूप से, अधिशेष नकदी की स्थिति को दर्शाता है।

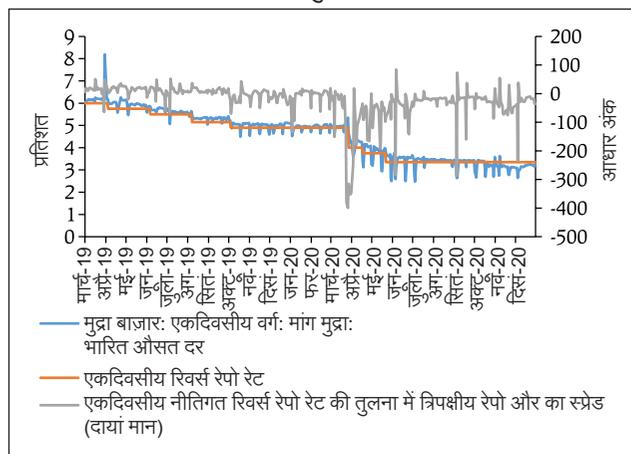
1.29 जनवरी 2019 से, एक दिवसीय बाजार रिपो दर (भारित औसत) में 6.37 प्रतिशत से 3.03 तक गिरावट हुई, जबकि त्रैमासिक खजाना बिलों – त्रिवर्षीय सरकारी प्रतिभूतियों के

चार्ट 1.26: भारत के पण्य व्यापार में वृद्धि



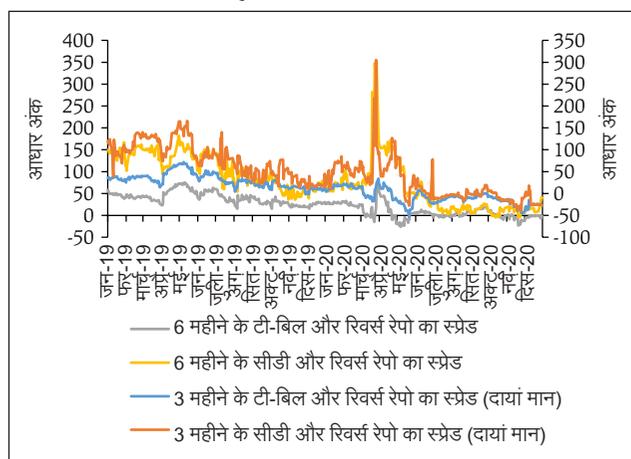
स्रोत: वाणिज्यिक आसूचना और अंक संकलन महानिदेशालय (डीजीसीआई&एस)

चार्ट 1.27 : बाजार रेपो की तुलना में नीतिगत दर और स्प्रेड



स्रोत: सीईआईसी

चार्ट 1.28 : परिचालन एकदिवसीय दर की तुलना में मियादी-जोखिम रहित दर और अरक्षित दर का स्प्रेड



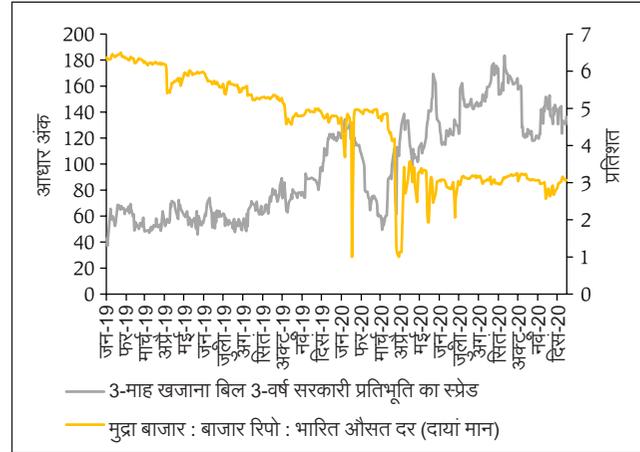
स्रोत: ब्लूमबर्ग

स्प्रेड का विस्तार 43 आधारभूत अंकों से 133 आधारभूत अंकों तक हुआ है। यह इस बात का द्योतक है कि तीन वर्षों की अवधि तक के सरकारी प्रतिभूतियों के प्रतिफल वक्र में अपेक्षाकृत अधिक उठान का मुख्य कारण त्रैमासिक खजाना बिलों की दरों में गिरावट होना रहा है (चार्ट 1.29)।

1.30 3-वर्षों और 7-वर्षों की अवधि के दौरान सरकारी प्रतिभूतियों के वक्र के सापेक्ष एक दिवसीय सूचीबद्ध अदला-बदली (ओआईएस) वक्रों की प्रवणता की तुलना से समर्थनकारी सरकारी प्रतिभूतियों के वक्र में काफी परिवर्तन होने का पता चलता है। हालांकि, वैश्विक महामारी के कारण ओआईएस वक्र के सापेक्ष इसमें सामान्यतः अधिक उठान देखी गई है (चार्ट 1.30)। वैश्विक महामारी के परिणामस्वरूप अधिकांश उन्नत अर्थव्यवस्थाओं के स्प्रेड में भी काफी विस्तार देखा गया है।

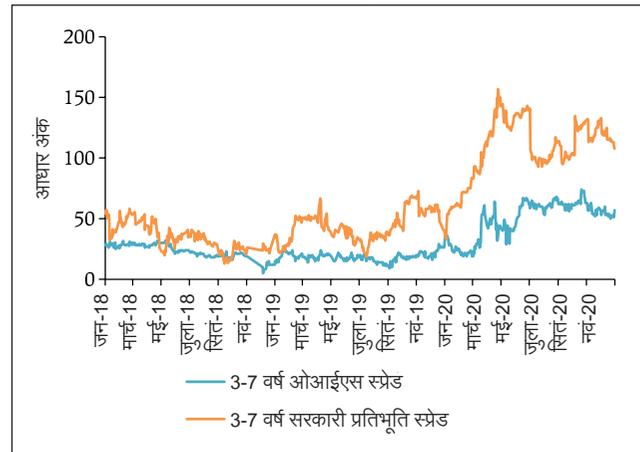
1.31 वैश्विक महामारी कोविड-19 के शुरू होने के बाद, मार्च 2020 में वैश्विक स्तर पर वित्तीय परिस्थितियां काफी कठिन हो गई थीं जिसके फलस्वरूप संविभाग निवेशकों द्वारा बिकवाली की गई जो अपनू स्तर और तेजी दोनों में अभूतपूर्व थी। हालांकि, जून 2020 से जोखिम लेने के मिज़ाज में मजबूती आने, अमेरिकी डॉलर के कमजोर पड़ने और वैश्विक स्तर पर मौद्रिक तथा राजकोषीय प्रोत्साहन में हुई वृद्धि से विदेशी संविभाग निवेश (एफपीआई) प्रवाह में फिर से तेजी आ गई है (चार्ट 1.31)। मासिक रूप में, एफपीआई का निवल प्रवाह नवंबर 2020 में

चार्ट 1.29 : सरकारी प्रतिफल वक्र की प्रवणता (अल्पावधिक) : 3-माह से 3-वर्ष



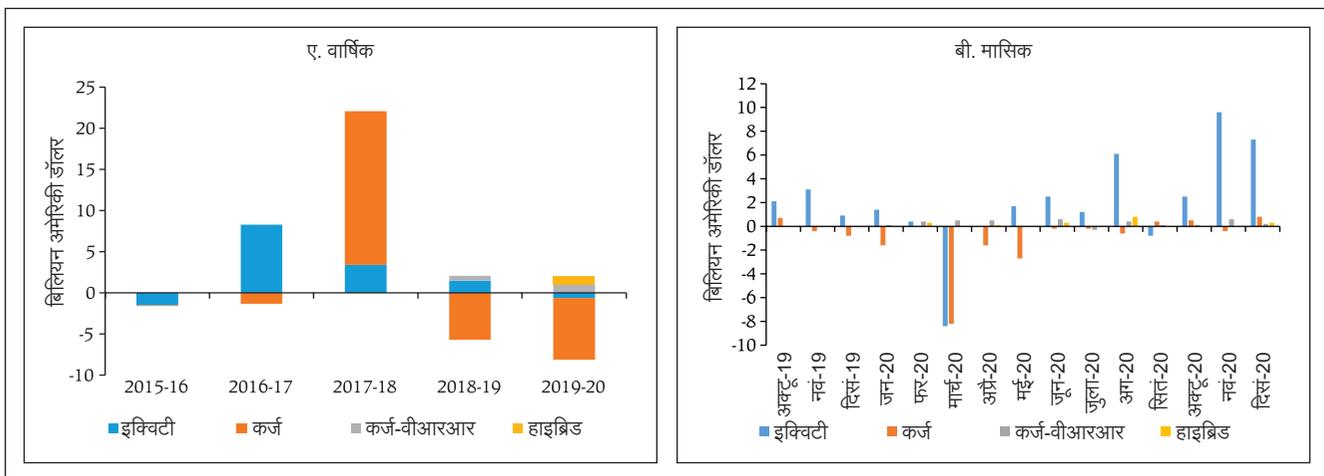
स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.30 : ओआईएस एवं सरकारी प्रतिभूति वक्र की प्रवणता (3 वर्ष-7वर्ष)



स्रोत: ब्लूमबर्ग

चार्ट 1.31 : विदेशी संविभाग निवेश का प्रवाह



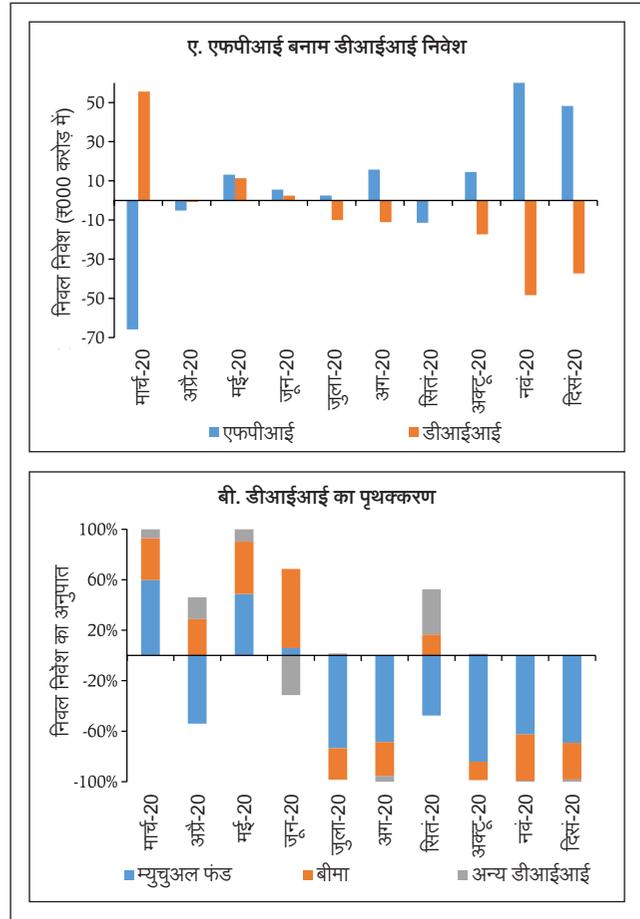
स्रोत : नेशनल सिक्यूरिटीज डिपॉजिट लिमिटेड (एनएसडीएल)

9.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर के अपने अब तक के उच्चतम स्तर पर रहा। एक वर्ष पहले इक्विटी में एफपीआई का 6.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर अंतर्वाह की तुलना में अप्रैल-दिसंबर 2020 के दौरान, इक्विटी में एफपीआई का अंतर्वाह 30.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। कर्ज खंड (सामान्य मार्ग) में, 2.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर का एफपीआई बहिर्वाह हुआ, जबकि एक वर्ष पूर्व यह 2.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर के स्तर पर था। इसी अवधि के दौरान, स्वैच्छिक धारिता मार्ग (वीआरआर) के तहत 2.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर का अंतर्वाह हुआ।

1.32 मार्च से दिसंबर 2020 के दौरान, इक्विटी नकदी खंड में विशेषरूप से म्युचुअल फंडों और बीमा क्षेत्र के निवेशकों जैसे घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई), ने एफपीआई की कार्रवाइयों को प्रति-संतुलित किया (चार्ट 1.32ए एवं बी)।

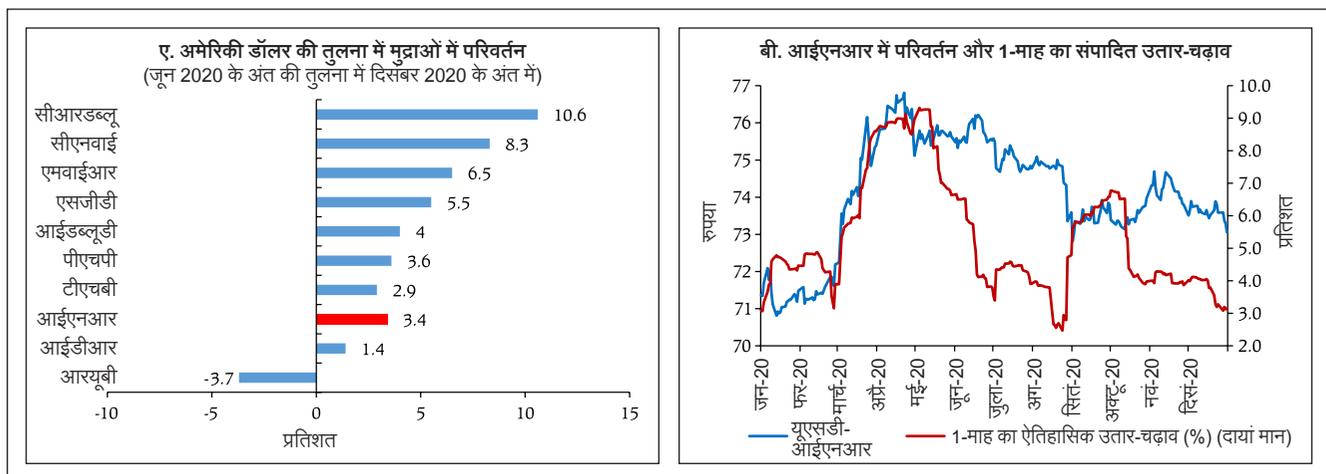
1.33 अमेरिकी डॉलर के कमजोर होने एवं पूंजी प्रवाहों के मजबूत होने के कारण जून 2020 की समाप्ति के समय से भारतीय रुपए में की मूल्यवृद्धि हुई है। हालांकि, रुपए में यह मूल्यवृद्धि समकक्ष उभरते बाजारों (ईएम) की तुलना में कम रही (चार्ट 1.33ए)। रुपए की यह स्थिति अमेरिकी डॉलर की तुलना में बढ़ोतरी के रुझान के साथ शुरू हुई और अक्टूबर 2020 के मध्य से इसके संपादित अंतर्निहित उतार-चढ़ाव में कमी आई है (चार्ट 1.33बी)।

चार्ट 1.32 : इक्विटी कैश खंड में विदेशी एवं घरेलू निवेश की प्रवृत्ति



स्रोत : सेबी।

चार्ट 1.33 : विनिमय दर में परिवर्तन और संपादित उतार-चढ़ाव



स्रोत : एफबीआईएल, आईएमएफ, ताइवान एवं इंडोनेशिया के केंद्रीय बैंक।

1.34 हालांकि, 1 एवं 3-वर्षीय अवधि का मुंबई अंतर-बैंक विदेशी मुद्रा प्रस्तावित दर - एकदिवसीय सूचीबद्ध अदला-बदली (एमआईएफओआर-ओआईएस) स्प्रेड कोविड-पूर्व स्तरों की तुलना में विस्तार तो हुआ है, लेकिन यह धनात्मक क्षेत्र के भीतर रहा है (चार्ट 1.34)। विदेशी मुद्रा प्रीमिया और अमेरिकी डॉलर आधारित एलआईबीओआर (एमआईएफओआर) के आधार पर बनाए गए अंतर-बैंक निधीयन वक्र की जोखिम-मुक्त नीतिगत मुद्रा दर (ओआईएस) के उद्भव से तुलना असंगत प्रतीत हो सकती है, किंतु इससे निधीयन (आधारभूत अदला-बदली) से संबंधित प्रभावों का संकेत प्राप्त होता है। ऐसा विशेषरूप से परिलक्षित होता है क्योंकि ओआईएस से संबद्ध दरें घरेलू मुद्रास्फीति से संबद्ध उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं। इसके अलावा, एमआईएफओआर के उच्चतर स्तर के कारण अमेरिकी डॉलर के अल्पावधिक एक्सपोजर की हैजिंग महंगी हो गई है।

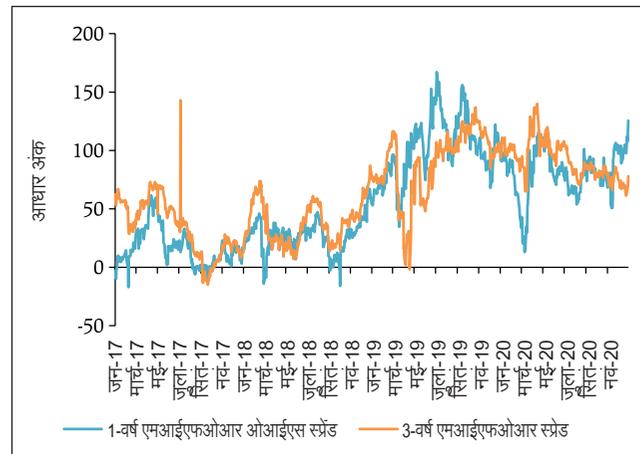
1.2.2 कॉर्पोरेट क्षेत्र

1.35 निजी कॉर्पोरेट कारोबारी क्षेत्र के कार्यनिष्पादन में वैश्विक महामारी के पहले से ही कमी देखी जा रही थी। कोविड-19 फैलने के बाद इसमें और अधिक कमी आई। वैश्विक महामारी का मुख्य प्रभाव 2020-21 की पहली तिमाही में केंद्रित था। वर्ष 2020-21 की दूसरी तिमाही में बहाली के संकेत दृष्टिगोचर होने लगे थे। सूचीबद्ध निजी विनिर्माण कंपनियों के लिए पूर्ववर्ती तिमाही में बिक्री के दौरान 41.1 प्रतिशत की तीव्र गिरावट का कम होकर (-) 4.3 प्रतिशत रह जाना एक महत्वपूर्ण सुधार था। जैसाकि बिक्री की तुलना में व्यय में हुई भारी कमी व्यापक कमी से प्रदर्शित होता है, लागत में कमी लिए जाने से यह संभव हुआ कि विनिर्माण क्षेत्र के परिचालनगत लाभों और कर्ज चुकौती में सुधार देखने को मिला। कर्ज चुकौती में सुधार उसके ब्याज व्याप्ति अनुपात (आईसीआर) में वृद्धि होने से प्रदर्शित होता है। दूसरी ओर, सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) क्षेत्र की बिक्री में हुई वृद्धि 2020-21 की पहली छमाही के दौरान परिस्थितियों के अनुसार सशक्त बनी रही। सभी क्षेत्रों के लाभ मार्जिनों में सुधार होने के बावजूद 2020-21 की पहली छमाही के दौरान विनिर्माण कंपनियों के कर्जपोषण⁷ में पूर्ववर्ती छमाही की तुलना में कमी आई तथा उन्होंने सुरक्षात्मक रूप से अपनी नकदी की स्थिति को मजबूत किया, जो 1,249 सूचीबद्ध निजी विनिर्माण कंपनियों के गैर-लेखापरीक्षित तुलन-पत्रों से प्रदर्शित होता है। इसके अलावा, स्थायी आस्तियों में उनका निवेश मंद बना रहा।

⁷ इक्विटी की तुलना में कर्ज अनुपात और आस्तित्व की तुलना में कर्ज अनुपात के द्वारा मापित।

⁸ ब्याज, मूल्यहास, कर, परिशोधन तथा अन्य समायोजनों से पहले का लाभ।

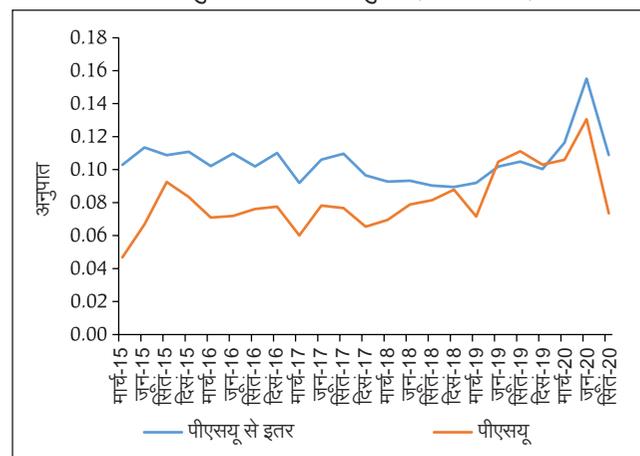
चार्ट 1.34 : 1-वर्ष एवं 3-वर्ष का एमआईएफओआर-ओआईएस स्प्रेड



स्रोत: ब्लूमबर्ग

1.36 मार्च 2015 से सितंबर 2020 के बीच 2,788 सूचीबद्ध गैर-वित्तीय संस्थाओं के नमूने 54 सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम- (पीएसयू), तथा 2,734 पीएसयू से इतर कंपनियों के विश्लेषण से वैश्विक महामारी के कारण पीबीआईडीटीए एंड ओए⁸ की तुलना में ब्याज अनुपात में काफी गिरावट प्रदर्शित होती है और उसके बाद 2020-21 की दूसरी तिमाही में इसमें उल्लेखनीय सुधार हुआ (चार्ट 1.35)। हालांकि, कुल कर्ज के आकार (नवीनतम तुलन-पत्रों के आंकड़ों के अनुसार) पर आधारित,

चार्ट 1.35 : गैर-वित्तीय कंपनियों के संबंध में पीबीआईडीटीए एवं ओए की तुलना में ब्याज का अनुपात (स्वामित्व-वार)

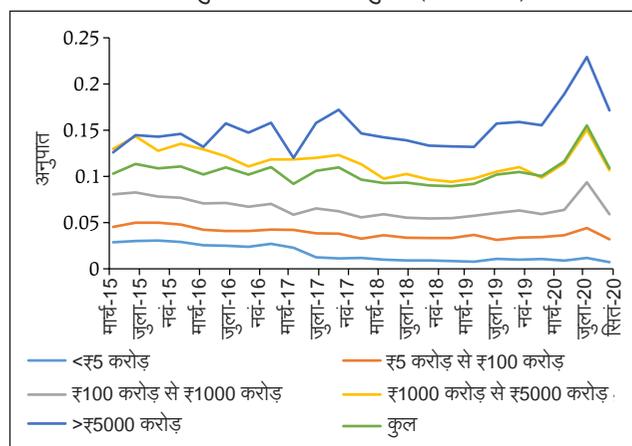


स्रोत : कैपिटलाइन एवं आरबीआई स्टाफ की गणना।

सूचीबद्ध पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय कंपनियों के असमग्र विश्लेषण से यह पता चलता है कि बड़े उधारकर्ताओं के मामले में पीबीआईडीटीए एंड ओए की तुलना में ब्याज अनुपात अभी भी कोविड-पूर्व के स्तर से ऊपर है (चार्ट 1.36)। 1,195 सूचीबद्ध पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय कंपनियों के स्थिर नमूने के रेटिंग-वार विश्लेषण में अधिक तीव्र प्रभाव होने और साथ ही अपेक्षाकृत कम रेटिंग श्रेणियों के लिए तेजी से बहाली होने की जानकारी भी प्राप्त होती है (चार्ट 1.37)।

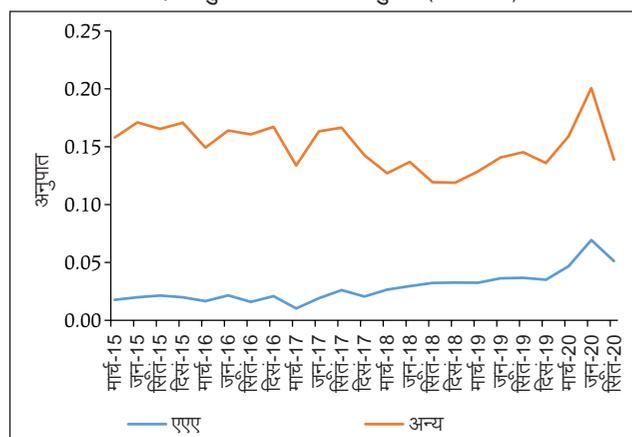
1.37 सूचीबद्ध पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय कंपनियों के अपेक्षाकृत छोटे 1,700 कंपनियों के समूह के विश्लेषण से 2017-2020 की अवधि के दौरान उनके तुलन-पत्रों में विस्तार होने में गैर-बैंकिंग निधीयन की बढ़ती भूमिका का पता चलता है। इस वर्ग में बैंकिंग क्षेत्र के एक्सपोजर में काफी कमी होने के बावजूद कंपनियों के तुलन-पत्रों में उल्लिखित कर्ज के साथ ही कुल आस्तियां भी बढ़ी हैं (चार्ट 1.38)। चूंकि, गैर-वित्तीय कॉर्पोरेट क्षेत्र द्वारा बैंक ऋण की मांग में कमी हुई है, इसलिए अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (एससीबी) के आस्तित्व संविभाग में खुदरा ऋणों की मांग के कारण वृद्धि हुई है। आगे चलकर, आर्थिक गतिविधियों के फिर से उभरने के कारण गैर-वित्तीय निगमों की ओर से उनकी परिचालनात्मक एवं निवेश संबंधी जरूरतों के लिए ऋण की मांग बढ़ सकती है।

चार्ट 1.36 : पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय कंपनियों के संबंध में पीबीआईडीटीए एवं ओए की तुलना में ब्याज का अनुपात (आकार-वार)



स्रोत : कैपिटलाइन एवं आरबीआई स्टाफ की गणना

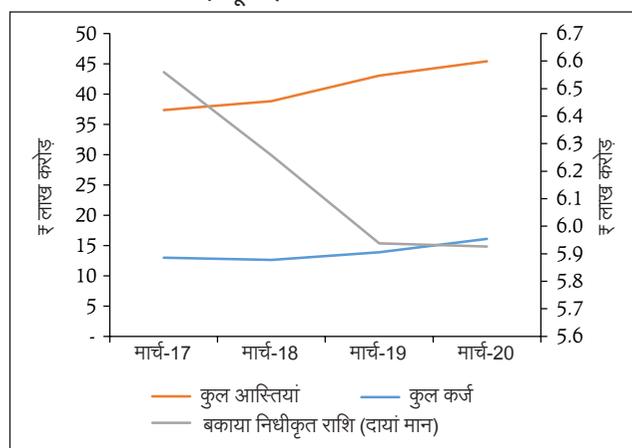
चार्ट 1.37 : पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय कंपनियों के संबंध में पीबीआईडीटीए एवं ओए की तुलना में ब्याज का अनुपात (रेटिंग-वार)



टिप्पणी : एए के रूप में दर्शाई गई कंपनियों की रेटिंग मार्च 2017 से मार्च 2020 के दौरान की गई।

स्रोत : कैपिटलाइन, प्राइम डाटाबेस एवं आरबीआई स्टाफ की गणना।

चार्ट 1.38 : तुलन-पत्र का विस्तार एवं बैंकिंग क्षेत्र का एक्सपोजर – सूचीबद्ध पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय कंपनियों



स्रोत : कैपिटलाइन, सीआरआईएलसी एवं आरबीआई स्टाफ की गणना।

1.38 दीर्घावधिक साख की गति (तिमाही बढ़ोतरी बनाम कमी), जिसमें 2018-19 की तीसरी तिमाही से लगातार गिरावट हो रही है, में बढ़ोतरी की तुलना में गिरावट अधिक होने के बावजूद 2020-21 की दूसरी तिमाही में विपरीत दिशा में गति, अर्थात् वृद्धि दिखाई दी है (चार्ट 1.39)। हालांकि, साख में यह बदलाव वैश्विक महामारी के चलते⁹ सेबी द्वारा साख निर्धारक एजेंसियों को चूक/पुनर्निर्धारण करने के संबंध में दिए गए अस्थायी विवेकाधिकार को भी परिलक्षित करता है।

1.2.3 बैंकिंग प्रणाली – चलनिधि का प्रोफाइल

1.39 प्रणाली में चलनिधि की सहज स्थिति बनाए रखने के मद्देनजर, काफी तीव्र चलनिधि दबाव परिदृश्य के अंतर्गत अल्पावधिक मीयादी चलनिधि की आवश्यकता को पूरा करने के लिए भार-रहित उच्च गुणवत्ता वाली चलनिधि युक्त आस्तियां (एचक्यूएलए) की पर्याप्तता का मूल्यांकन करना उपयोगी है। सभी बैंक समूहों के बीच चलनिधि व्याप्ति अनुपात (एलसीआर) की घट-बढ़ से इसका पता चलता है, जबकि यह भी माना जा रहा है कि एचक्यूएलए में उपलब्ध जमा राशियों का विनियोजन किए जाने के माध्यम से उत्पन्न हुए ऋणात्मक प्रभाव भविष्य में बैंकों की लाभप्रदता को प्रभावित कर सकता है (सारणी 1.4)।

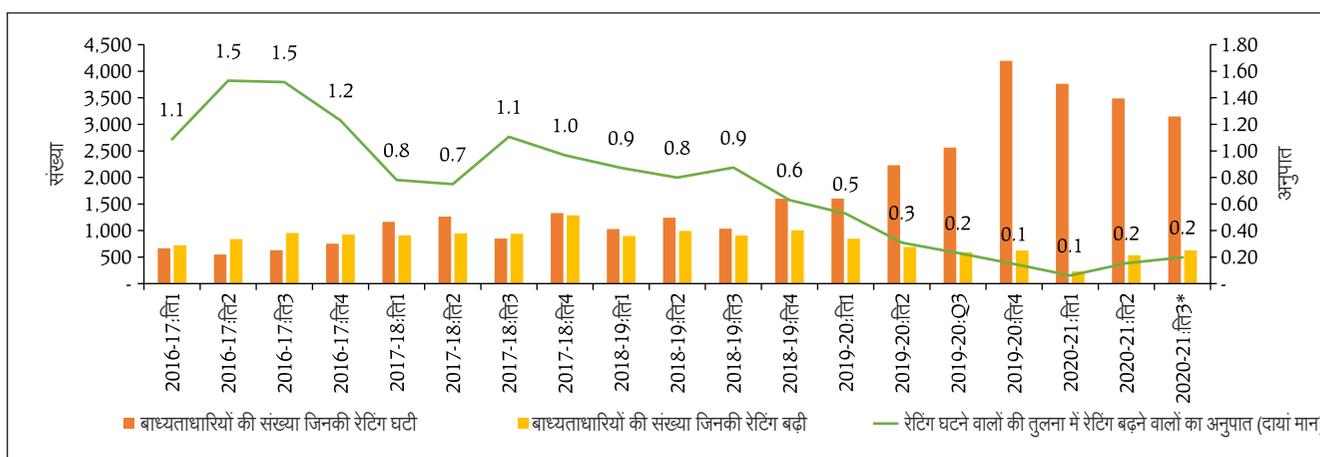
सारणी 1.4 : सभी बैंक समूहों का एलसीआर प्रोफाइल

(प्रतिशत)

बैंक समूह का नाम	चलनिधि कवरेज अनुपात (एलसीआर)		
	31-मार्च-20	30-जून-20	30-सितं-20
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	148.64	162.34	181.83
निजी क्षेत्र के बैंक	समग्र	130.65	144.42
	निजी क्षेत्र के पुराने बैंक	218.1	231.89
	निजी क्षेत्र के नए बैंक	123.18	136.64
विदेशी बैंक समूह	175.17	179.32	201.32

स्रोत : आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां

चार्ट 1.39 : दीर्घावधिक रेटिंग एवं बाध्यताधारियों की संख्या



टिप्पणी : 29 दिसंबर 2020 तक।

स्रोत : प्राइम डाटाबेस।

⁹ सेबी (2020): "कोविड-19 वैश्विक महामारी के कारण सेबी (साख निर्धारण करने वाली एजेंसियां) विनियमन, 1999 के तहत जारी परिपत्रों के कतिपय प्रावधानों के अनुपालन से छूट तथा भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा ऋण स्थगन की अनुमति" से संबंधित दिनांक 30 मार्च 2020 का परिपत्र सं. सेबी/एचओ/एमआईआरएसडी/सीआरएडीटी/सीआईआर/ पी/2020/53.

1.2.4 बैंकिंग प्रणाली – थोक ऋण

1.40 2020-21 की पहली छमाही एवं 2020-21 की तीसरी तिमाही (नवंबर तक) के थोक ऋण प्रोफाइल से सभी बैंक समूहों में ऋण की स्थिति में मंदी रहने का पता चलता है, जो जोखिम विमुखता और संभावनाओं के मद्देनजर धीमी मांग को दर्शाता है (सारणी 1.5)। कोविड-19 फैलने के साथ ही, खुदरा ऋण वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) में गिरावट आई है, जबकि थोक ऋण में वृद्धि बनी रही है, हालांकि यह वृद्धि निम्न स्तर पर ही रही है (चार्ट 1.40)। दबाव परीक्षण से बैंकों की आर्स्टि गुणवत्ता खराब होने के संकेत मिल रहे हैं, इसलिए संभावित अनर्जक आर्स्टियों (एनपीए) से निपटने के लिए प्राथमिक रणनीतियों के साथ ही साथ विभिन्न क्षेत्रों की ऋण वृद्धि को समर्थन प्रदान करने के लिए इन ऋण हानियों की प्रारंभिक अवस्था में पहचान करना और पूंजीकरण को तीव्र किया जाना अनिवार्य है।

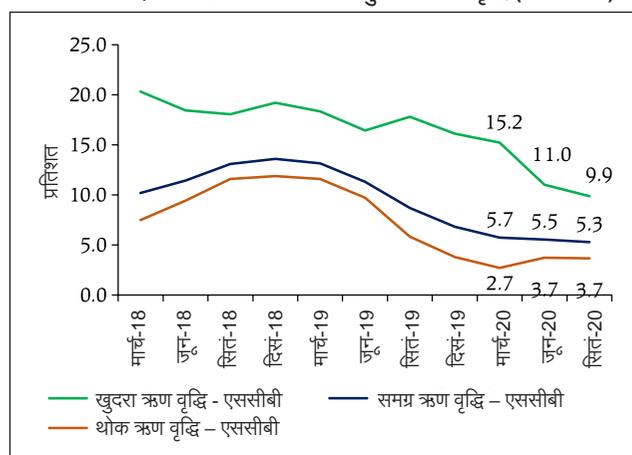
1.41 अनुच्छेदों 1.41-1.44 में थोक ऋण के विश्लेषण किए जाने के उद्देश्य से, कंपनियों की बकाया निधीकृत राशि (जो थोक बाध्यताधारियों की कुल बकाया निधीकृत राशि का लगभग 88 प्रतिशत होता है) को इस विश्लेषण में शामिल किया गया है। सहकारी संस्थाओं, साझेदारियों, न्यासों और समितियों जैसे सांगठनिक रूपों को इस विश्लेषण में शामिल नहीं किया गया है। वैश्विक महामारी के दौरान सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (पीएसयू) की ऋण वृद्धि तुलनात्मक रूप से परिस्थितियों के अनुसार मजबूत स्थिति में बनी रही, हालांकि मार्च-सितंबर 2020 के बीच पीएसयू के समग्र ऋण एक्सपोजर में गिरावट आई। इक्विटी बाजार में तेजी रहने के बावजूद केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों (सीपीएसई) के बाजार पूंजीकरण में कमी आई, जो पीएसयू के माध्यम से मूल्य निर्माण के बारे में बाजार की संभानाओं के क्षीण होने को दर्शाता है (सारणी 1.6 एवं चार्ट 1.41)।

सारणी 1.5 : थोक ऋण में हुई वृद्धि (ति-दर-ति, जब तक विशिष्टरूप से उल्लेख न किया जाए, प्रतिशत)

	सितं-19	दिसं-19	मार्च-20	जून-20	सितं-20	नवं-20*
पीएसबी	-0.53	-1.08	7.26	-1.51	-2.54	-2.40
पीवीबी	3.38	0.92	1.27	-0.68	0.94	-1.28
सभी एससीबी	0.67	-0.53	5.85	-0.97	-1.67	-1.36

टिप्पणी : * सितंबर 2020 के दौरान हुई वृद्धि।
स्रोत : सीआरआईएलसी एवं आरबीआई स्टाफ की गणना।

चार्ट 1.40 : एससीबी द्वारा ऋण – प्रकारानुसार वार्षिक वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष)



स्रोत : आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां।

सारणी 1.6 : स्वामित्व के आधार पर असमग्र थोक ऋण वृद्धि (ति-दर-ति, जब तक विशिष्टरूप से उल्लेख न किया जाए)

(प्रतिशत)

	पीएसयू से इतर					पीएसयू				
	दिसं-19	मार्च-20	जून-20	सितं-20	नवं-20*	दिसं-19	मार्च-20	जून-20	सितं-20	नवं-20*
पीएसबी	-2.5	1.0	-1.7	-2.4	-1.5	1.6	21.5	-2.4	-3.7	-1.7
पीवीबी	-0.7	-0.9	-3.0	-1.5	-3.7	14.0	29.4	16.2	13.5	2.6
पीएसबी + पीवीबी	-1.8	0.2	-2.2	-2.0	-2.4	2.9	22.3	-0.3	-1.4	-1.0

टिप्पणी : * सितंबर 2020 के दौरान हुई वृद्धि।
स्रोत : सीआरआईएलसी एवं आरबीआई स्टाफ की गणना।

सारणी 1.7 : पीएसयू से इतर बाध्यताधारकों की असमग्र थोक ऋण वृद्धि (तिमाही-दर-तिमाही)

(प्रतिशत)

	पीवीबी					पीएसबी				
	दिसं-19	मार्च-20	जून-20	सितं-20	नव-20 *	दिसं-19	मार्च-20	जून-20	सितं-20	नव-20 *
ए ए एवं उससे ऊपर निवेश की अन्य श्रेणी	-0.43	5.21	-2.55	-5.86	-7.48	0.19	7.68	-5.22	-6.70	0.05
निवेश श्रेणी के नीचे	0.16	-5.00	-4.26	-1.66	-4.03	1.42	-0.03	3.07	-1.15	-6.47
जिनकी रेटिंग नहीं की गई/एनए	-2.13	2.34	-1.49	3.83	-0.30	-7.42	-5.00	-0.74	2.90	0.02
	-1.22	-4.80	-2.88	0.88	-1.18	-3.51	-0.11	-2.45	-3.40	-0.10

टिप्पणी : * सितंबर 2020 के दौरान हुई वृद्धि।

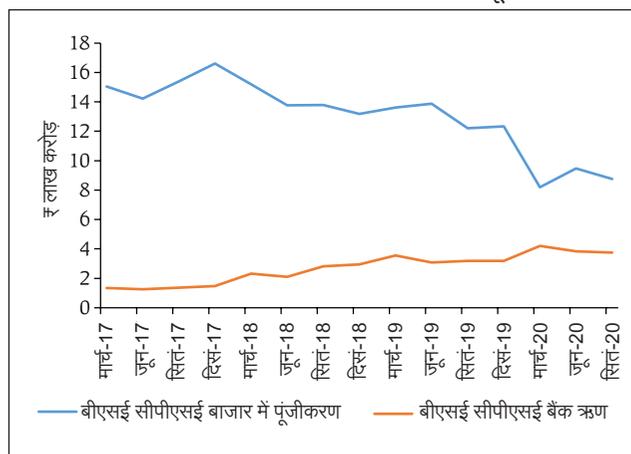
स्रोत : सीआरआईएलसी, प्राइम डाटाबेस एवं आरबीआई स्टाफ की गणना।

1.42 पीएसयू से इतर बाध्यताधारकों की साख श्रेणियों के आधार पर थोक ऋण प्रवाहों के विश्लेषण से 2020-21 के दौरान 'ए ए एवं उससे उच्च' साख श्रेणी के स्तर पर सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) एवं निजी क्षेत्र के बैंकों (पीएसबी) -दोनों के मामले में तेजी से कर्जभार से मुक्त होने (डीलिवरेजिंग) (तिमाही-दर-तिमाही) का पता चलता है। यह मार्च 2020 की स्थिति के विपरीत घटना को दर्शाता है, जिसमें वैश्विक महामारी के फैलने के शुरुआती दौर में ऋण प्राप्त करने के प्रति तेजी देखी गई थी (सारणी 1.7)।

1.43 थोक ऋण वृद्धि का मात्रात्मक विभाजन बड़े थोक उधारकर्ताओं, द्वारा कर्जभार से मुक्त होने के प्रति संकेत देता है, जबकि अपेक्षाकृत छोटे उधारकर्ताओं (ऋण आकार : ₹5 –₹100 करोड़) में अपनी क्षमता तक ऋण लेने की चाहत निरंतर बनी रही (चार्ट 1.42)।

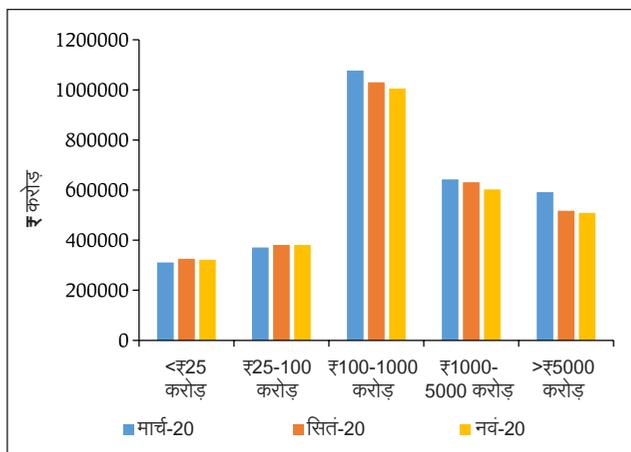
1.44 अगस्त-नवंबर 2020 के बीच, एसएमए स्थिति¹⁰ में हुए पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय थोक अर्जक एक्सपोजर के स्थिर नमूने में हुए परिवर्तन की जांच से एसएमए-0/1/2 श्रेणियों में

चार्ट 1.41 : सीपीएसई एवं ऋण उठाव के बाजार में पूंजीकरण



स्रोत : कैपिटलाइन।

चार्ट 1.42 : पीएसयू से इतर गैर वित्तीय बाध्यताधारकों के एक्सपोजर का संवितरण



टिप्पणी : नवंबर 2020 की स्थिति के अनुसार आंकड़े प्राविधिक हैं और उनकी लेखापरीक्षा नहीं की गई है।

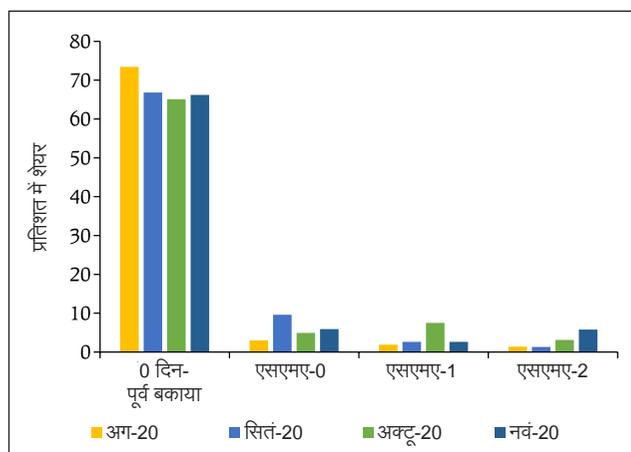
स्रोत : सीआरआईएलसी एवं आरबीआई स्टाफ की गणना।

¹⁰ एसएमए वर्गीकरण के उद्देश्य से, किसी उधारकर्ता जिसके एक्सपोजर एकाधिक बैंकों में हों, किसी निर्धारित तारीख को उसकी सबसे खराब एसएमए स्थिति रिपोर्ट को ही अनुप्रयोज्य एसएमए स्थिति माना जाता है।

बकाया जमा हाने की जानकारी मिलती है, हालांकि समग्र बकाया राशि अपरिवर्तित रही है (सारणी 1.8-1.9)। अगस्त और नवंबर 2020 के बीच प्रत्येक एसएमए समूह (कोहॉर्ट) के स्तर पर सकल बकाया की तुलना करने पर भी इसी तरह का संचित एक्सपोजर पाया गया है (चार्ट 1.43)। निःसंदेह आस्ति वर्गीकरण में हुए ठहराव के कारण आस्तियों का वास्तविक अंतर्निहित आर्थिक श्रेणी विभाजन बाधित होता है, हालांकि इसका प्रारंभिक रुझान स्थिति के बदतर होने का रहा है, जैसा कि प्रत्येक समूह के संबंध में अगली खराब श्रेणी में बकाया जमाराशियों की वृद्धि से प्रदर्शित होता है।

1.45 क्षेत्रगत ऋण वृद्धि¹¹ के विश्लेषण से, सकल योजित मूल्य (जीवीए) की दृष्टि से महत्वपूर्ण विशिष्ट रूप से निर्माण, व्यापार एवं सत्कार जैसे क्षेत्रों के विश्लेषण से उनमें होने वाले आघातसह

चार्ट 1.43 : अगस्त और नवंबर 2020 के बीच पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय बाध्यताधारकों के थोक संविभाग का एसएमए संवितरण



टिप्पणी : अगस्त 2020, अक्टूबर 2020 एवं नवंबर 2020 की स्थिति के अनुसार आंकड़े प्राविधिक हैं और उनकी लेखापरीक्षा नहीं की गई है।

स्रोत : सीआरआईएलसी एवं आरबीआई स्टाफ की गणना।

सारणी 1.8 : अगस्त एवं सितंबर 2020 के बीच पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय बाध्यताधारकों के स्थिर नमूने के थोक संविभाग से संबंधित एसएमए परिवर्तन की माप (प्रतिशत में)

	31 अगस्त 2020 की स्थिति के अनुसार बकाया (रुकोड़)	एक्सपोजर में अगस्त 2020 की तुलना में हुई वृद्धि	30 सितंबर 2020				
			विभिन्न समूहों में आस्तियों का अनुपात				
			0 डीपीडी	एसएमए-0	एसएमए-1	एसएमए-2	एनपीए
मानक (0डीपीडी)	20,58,349.02	1.02	87.3	10.1	2.3	0.2	0.1
एसएमए-0	85,385.41	-0.34	45.4	38.9	14.7	1.0	0.0
एसएमए-1	54,707.60	-0.36	24.5	34.3	23.1	18.1	0.0
एसएमए-2	40,862.33	0.60	21.9	14.7	3.6	57.7	2.1
कुल	22,39,304.36	0.93	83.1	11.8	3.3	1.7	0.1

टिप्पणी : नवंबर 2020 की स्थिति के अनुसार आंकड़े प्राविधिक हैं और उनकी लेखापरीक्षा नहीं की गई है।

स्रोत : सीआरआईएलसी एवं आरबीआई स्टाफ की गणना।

सारणी 1.9 : अगस्त एवं सितंबर 2020 के बीच पीएसयू से इतर गैर-वित्तीय बाध्यताधारकों के स्थिर नमूने के थोक संविभाग से संबंधित एसएमए परिवर्तन की माप (प्रतिशत में)

31 अगस्त 2020 की स्थिति	एक्सपोजर में सितंबर 2020 की तुलना में हुई वृद्धि	30 नवंबर 2020				
		विभिन्न समूहों में आस्तियों का अनुपात				
		0 डीपीडी	एसएमए-0	एसएमए-1	एसएमए-2	एनपीए
मानक (0डीपीडी)	-2.55	85.7	6.5	2.9	4.8	0.1
एसएमए-0	0.76	59.2	22.9	6.3	11.5	0.2
एसएमए-1	-1.37	24.9	21.1	10.0	43.9	0.1
एसएमए-2	0.46	17.0	6.0	5.9	65.0	6.2
कुल	-2.34	81.9	7.5	3.3	7.2	0.2

टिप्पणी : अगस्त 2020 एवं नवंबर 2020 की स्थिति के अनुसार आंकड़े प्राविधिक हैं और उनकी लेखापरीक्षा नहीं की गई है।

स्रोत : सीआरआईएलसी एवं आरबीआई स्टाफ की गणना।

¹¹ चुनिंदा 33 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों से प्राप्त मासिक आंकड़ों के सारांश पर आधारित जिसमें सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा दिए गए कुल गैर-खद्य क्रेडिट का लगभग 90 प्रतिशत शामिल है।

सारणी 1.10 : क्षेत्रगत ऋण वृद्धि

आर्थिक क्षेत्र *	सकल योजित मूल्य (जीवीए) में हिस्सेदारी (प्रतिशत)	ऋण वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) (प्रतिशत)				
		मार्च-20	जून-20	अग-20	सित-20	अक्टू-20
कृषि, वानिकी एवं मत्स्याखेट	15.8	4.2	2.4	4.9	5.9	7.4
खनन एवं उत्खनन	3.2	5.2	4.3	1.2	0	4.3
विनिर्माण	19.1	0.9	0.8	-0.8	-1.0	-2.0
बिजली, गैस, जल आपूर्ति एवं अन्य उपयोगिता सेवाएं	2.3	-1.6	0.9	-1.8	-0.9	-1.3
निर्माण-कार्य	8.5	4.8	5.6	8.1	4.5	5.1
व्यापार, मरम्मत, होटल एवं रेस्त्रां	13.4	5.5	6.9	12.9	12.1	13.9
यातायात, भंडारण, संचार एवं प्रसारण से संबंधित सेवाएं	6.9	1.9	6.8	5.8	3.5	-0.8
वित्तीय सेवाएं [#]	6.4	25.9	25.7	17.1	12.5	9.2
स्थावर संपदा, आवास एवं पेशेवर सेवाओं का मालिकाना हक	16.8	13.8	11.4	9.7	7.4	7.3
अन्य सेवाएं	7.7	-8.1	1.6	-2.0	7.0	10.5

टिप्पणी : 1. * 'लोक प्रशासन एवं रक्षा' के अलावा राष्ट्रीय लेखे के अंतर्गत क्षेत्रों को समाहित करता है।

2. [#] गैर-बैंक वित्तीय क्षेत्र को दिए गए बैंक ऋण को निरूपित करता है।

स्रोत : राष्ट्रीय लेखा सांख्यिकी, एमओएसपीआई एवं आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां।

प्रवाह को दर्शाता है, जबकि विनिर्माण क्षेत्र को दिया जाने वाला बैंक ऋण मंद रहा (सारणी 1.10)।

1.2.5 उपभोक्ता ऋण¹²

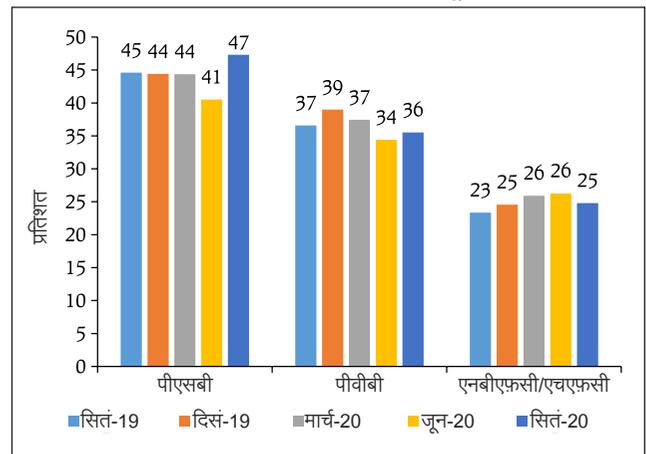
1.46 उपभोक्ता ऋण में हाल के वर्षों में खासकर पीवीबी के मामले में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इन बैंकों में उपभोक्ता ऋण पोर्टफोलियो में उछाल आने से ऋण बाजार में उनकी हिस्सेदारी बढ़ गई है। तथापि, जैसा कि इन्क्वायरी वॉल्यूम¹³ से परिलक्षित होता है, उपभोक्ता ऋण की समग्र माँग महामारी के आरंभ से मंद रही है। इस सैक्टर में पीएसबी की गतिविधियाँ काफी बढ़ी हैं (सारणी 1.11)। मंजूरी दरें 2020-21 की पहली तिमाही में कम थीं, लेकिन बाद में ये खासकर पीएसबी के लिए बेहतर हुई हैं (चार्ट 1.44)। जोखिम टियर के अनुसार इन्क्वायरी वॉल्यूम भी बेहतर साख वाले उपभोक्ताओं के पक्ष में सपष्ट सुधार दर्शाते

सारणी 1.11 : इन्क्वायरी परिमाण में वृद्धि (वर्ष दर वर्ष, प्रतिशत)

	दिसं-19	मार्च-20	जून-20	सित-20	दिसं-20
समग्र	36	-4	-34	-21	-14
पीएसबी	20	-8	37	20	5
पीवीबी	26	-21	-45	-13	-10
एनबीएफसी/एचएफसी	47	6	-42	-37	-25

स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

चार्ट 1.44 : उधारदाता श्रेणी द्वारा मंजूरी दरें

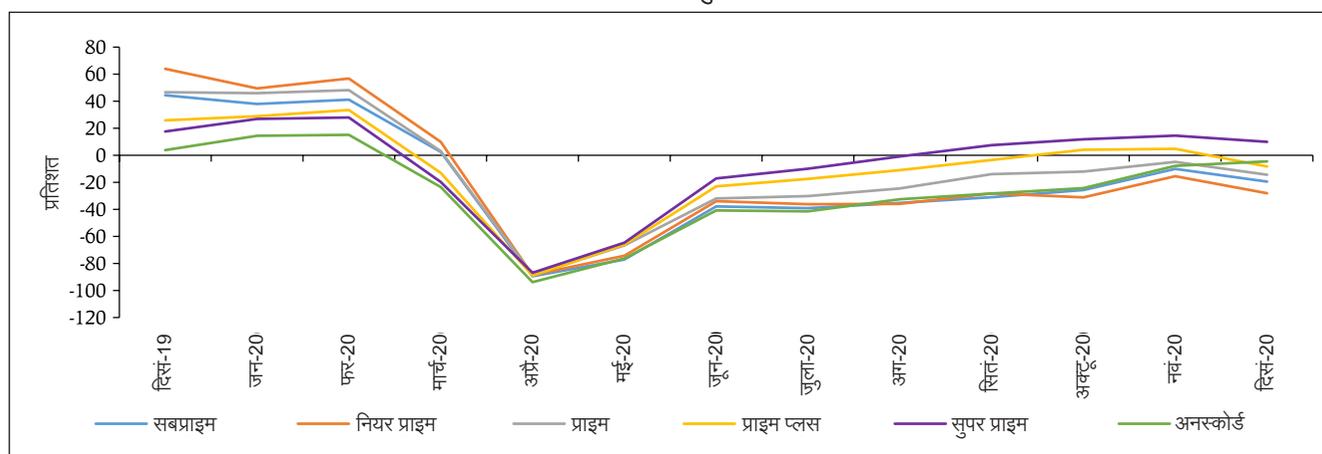


स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

¹² उपभोक्ता ऋण में आवास ऋण, संपत्ति के बदले ऋण, ऑटो ऋण, दुपहिया ऋण, वाणिज्यिक वाहन ऋण, निर्माण उपस्कर ऋण, क्रेडिट कार्ड, कारोबार ऋण, टिकाऊ उपभोक्ता वस्तु ऋण, शिक्षा ऋण और स्वर्ण ऋण शामिल हैं।

¹³ जब कोई उधारकर्ता, ऋण के लिए आवेदन करता है और उधारदाता को उनके क्रेडिट रिकॉर्ड निकालने की अनुमति देता है, तब क्रेडिट इन्क्वायरी सृजित की जाती है। ये इन्क्वायरी, ऋण बाजार के ऐसे पहले उपाय होते हैं जिनके जरिये उधारकर्ता के क्रेडिट रिकॉर्ड में परिवर्तन, आर्थिक गतिविधि में हुए परिवर्तन के हिसाब से किए जाते हैं।

चार्ट 1.45 : जोखिम टियर के अनुसार इन्क्वायरी परिमाण



नोट: सिबिल स्कोर पर आधारित जोखिम-टियरों का पृथक्करण निम्नानुसार है: सुपर प्राइम:791-900, प्राइम प्लस: 731-770, नियर प्राइम:681-730 और सब-प्राइम:300-680
 स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

हैं(चार्ट 1.45)। तब भी, समग्र ऋण शेष में वृद्धि, मार्च 2020 के बाद काफी मंद हुई है (सारणी 1.12)। 90 दिनों के बाद बकाया (90+डीपीडी) स्थिति स्थिर रही है लेकिन महामारी के बाद दी गई विनियामकीय राहतों के मद्देनजर, संभवतः इससे पोर्टफोलियो की वास्तविक कमजोरी प्रदर्शित न हो रही हो।

1.2.6 एमएसएमई क्षेत्र को बैंक ऋण

1.47 उपभोक्ता ऋण के एकदम उलट, एमएसएमई क्षेत्र ने 2020-21 की पहली तिमाही को छोड़कर, इन्क्वायरी वॉल्यूम में मजबूत वृद्धि दर्शाई लेकिन पीएसबी और एनबीएफसी के मामलों में बकाया शेषों में गिरावट के कारण, शेष में वृद्धि (वर्षानुवर्ष) सुस्त ही रही (सारणी 1.13 और 1.14)। साथ ही, 90 दिनों के ऊपर बकाया शेष, विनियामकीय राहतों से आच्छादित होने के बावजूद, खुदरा क्षेत्र के मुकाबले बहुत अधिक बकाया स्तरों की ओर इंगित करते हैं।

सारणी 1.12: उपभोक्ता ऋण में वृद्धि (वर्ष दर वर्ष, प्रतिशत)

	सितं-19	दिसं-19	मार्च-20	जून-20	सितं-20
शेष में वृद्धि	16.5	17.3	13.5	7.1	5.1
सृजन परिमाण में वृद्धि	46.9	48.5	-5.4	-28.0	-9.9
शेष स्तर 90+ डीपीडी%	3.2	3.3	3.2	3.4	3.5

नोट: यह सभी पीएसबी, पीवीबी, एनबीएफसी/एचएफसी और फिनटेक को मिलाकर तैयार सम्मिश्रित उपभोक्ता ऋण आंकड़ा है।
 स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

सारणी 1.13: एमएसएमई ऋण के इन्क्वायरी परिमाण (वर्ष दर वर्ष, प्रतिशत)

	नव-19	फर-20	मई-20	अग-20	नव-20
समग्र	26.4	21.6	-43.1	12.3	2.8
पीएसबी	49.8	26.3	-1.6	24.7	-2.0
पीवीबी	36.3	18.2	-55.8	0.5	14.0
एनबीएफसी/एचएफसी	47.8	31.0	-85.4	18.0	-20.2

नोट: सभी पीएसबी, पीवीबी, एनबीएफसी/एचएफसी और फिनटेक को मिलाकर समेकित एमएसएमई जोखिमि
 स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

सारणी 1.14: एमएसएमई क्षेत्र में गतिविधि (वर्ष दर वर्ष, प्रतिशत)

	सितं-19	दिसं-19	मार्च-20	जून-20	सितं-20
शेष में वृद्धि	5.6	4.3	0.7	0.4	-2.3
शेष स्तर 90+ डीपीडी%	11.8	11.8	11.7	12.5	12.0

स्रोत: ट्रांसयूनियन सिबिल

¹⁴ वाणिज्यिक ऋणों को प्रवेश स्तर पर समेकित ऋण जोखिम के आधार पर विभिन्न खंडों में वर्गीकृत किया जाता है। माइक्रो- 1 करोड़ रुपये से कम, एसएमई- 1-25 करोड़ रुपये।

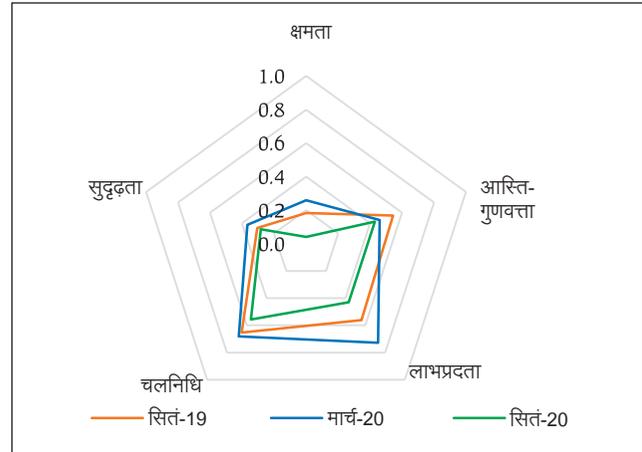
1.2.7 बैंकिंग स्थिरता संकेतक

1.48 मार्च 2020 के मुकाबले सितंबर 2020 में बैंकिंग स्थिरता संकेतक (बीएसआई)¹⁵ ने अपने सभी पांचों आयामों (नामत: आस्ति-गुणवत्ता; लाभप्रदता; चलनिधि; दक्षता; और सुदृढ़ता) में सुधार दर्शाया। अंतर्निहित वित्तीय स्थितियों और जोखिमों में बदलावों के आकलन के लिए इन आयामों पर विचार किया जाता है। यह सुधार विनियामकीय राहतों और पूर्व में उल्लिखित आस्ति वर्गीकरण में ठहराव को दर्शाता है और इसलिए शायद यह विभिन्न आयामों में अंतर्निहित जोखिमों की वास्तविक बनावट को प्रदर्शित न करता हो।

1.2.8 गैर-बैंकिंग वित्तीय मध्यस्थता में प्रगति

1.49 अप्रैल-नवम्बर 2020 अवधि के दौरान, म्यूचुअल फंड स्कीमों में 2.73 लाख करोड़ रुपए के निवल अंतर्वाह देखे गए और प्रबंधनाधीन आस्तियों में इसी अवधि में 17.73 प्रतिशत की वृद्धि हुई। जैसा कि जुलाई 2020 की वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (एफएसआर) में इंगित किया गया था, ऋण बाजारों में चलनिधि की कमी के कारण, गैर-बैंकिंग क्षेत्र में प्रमुख वित्तीय मध्यस्थ के रूप में म्यूचुअल फंड (एमएफ) को 2020-21 की पहली तिमाही में बढ़े हुए मोचन दबाव का सामना करना पड़ा (सारणी 1.15)। एमएफ के लिए रिजर्व बैंक की विशेष चलनिधि व्यवस्था ने राहत का बड़ा उपाय प्रदान किया जिससे इस क्षेत्र में चलनिधि दबाव कम हो गया। तत्पश्चात, इक्विटी बाजार में तीव्र उछाल और इसके साथ-साथ सकारात्मक चलनिधि स्थितियों के चलते एमएफ के प्रति निवेशक परिदृश्य में नई आशावादिता पैदा हुई है। विभिन्न श्रेणियों में सामान्यीकृत कर्ज निधि निवल अस्ति मूल्य (एनएवी) में मार्च-अप्रैल 2020 के दौरान कर्ज निधियों से मोचन दबाव के मद्देनजर, तीव्र गिरावट आयी थी। लेकिन अब यह भी सामान्य हो गयी है जो व्यवस्थित बाजार स्थितियों की बहाली का परिचायक है (चार्ट 1.47)।

चार्ट 1.46: बैंकिंग स्थिरता मानचित्र



नोट: केंद्र से दूरस्थता जोखिम में वृद्धि को दर्शाती है।
स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

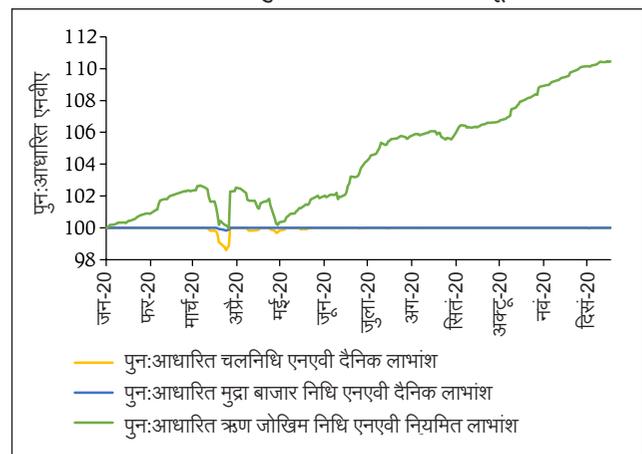
सारणी 1.15 : म्यूचुअल फंड द्वारा संसाधन जुटाने के रुझान

(करोड़ रुपये)

	ति1:2020-21	ति2:2020-21	अक्टू-20	नवं-20
सकल संग्रहण	26,47,640	19,33,575	6,43,237	5,66,379
मोचन	25,23,561	19,10,407	5,44,661	5,39,185
निवल अंतर्वाह/बहिर्वाह	1,24,079	23,168	98,576	27,194
अवधि के अंत में आस्तियाँ	25,48,848	26,85,982	28,22,941	30,00,904

स्रोत: सेबी

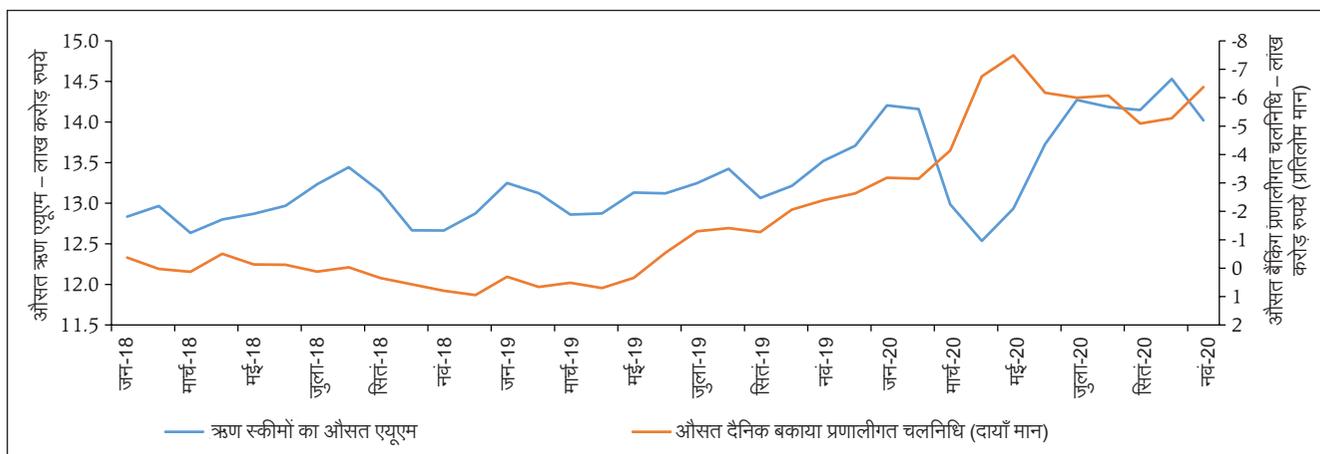
चार्ट 1.47 : तीन स्कीमों के पुनःआधारित निवल अस्ति मूल्यों में बदलाव



स्रोत: एमएफआई

¹⁵ विस्तृत कार्यपद्धति और विभिन्न बीएसआई आयामों के अंतर्गत प्रयुक्त आधारभूत संकेतकों के लिए कृपया परिशिष्ट 2 देखें।

चार्ट 1.48: ऋण-प्रबंधन स्कीमों के अंतर्गत औसत आस्तियां और औसत दैनिक बकाया प्रणालीगत चलनिधि¹⁶

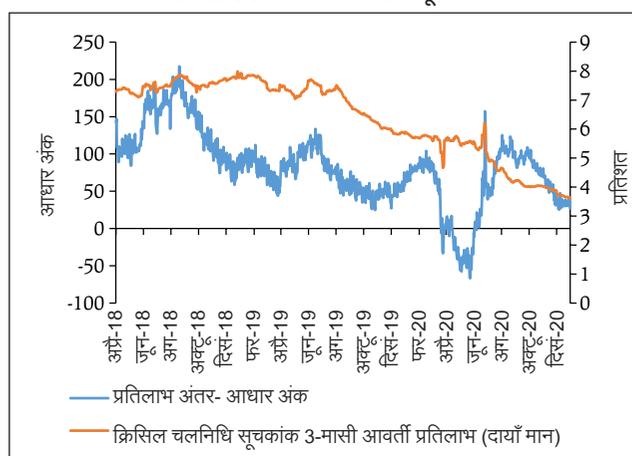


स्रोत: ब्लूमबर्ग: असोशिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स ऑफ इंडिया (एएमएफआई) और भारतीय रिजर्व बैंक

1.50 मुद्रा बाजार म्यूचुअल फंड (एमएमएमएफ) की औसत प्रबंधनाधीन आस्तियों (एयूएम) में प्रणाली-स्तर चलनिधि के अनुरूप विस्तार हुआ है (चार्ट 1.48)। एमएमएमएफ के अतिरिक्त रिटर्न पिछली तिमाही में ऋणात्मक रहने के बाद, सामान्य होना शुरू हो गए हैं, जो उनकी निवेश आधारभूत निधि में नकदी आस्तियों के बढ़े हुए अनुपात को दर्शाता है (चार्ट 1.49)। डेट म्यूचुअल फंड के पोर्टफोलियो में नकदी आस्तियों का अंश मार्च 2020 के बाद से ऊपर चढ़ा है और नवंबर 2020 के अंत तक समेकित एयूएम में इसकी 39 प्रतिशत हिस्सेदारी थी जो सावधानीपूर्ण आबंटनों का परिचायक है (चार्ट 1.50)।

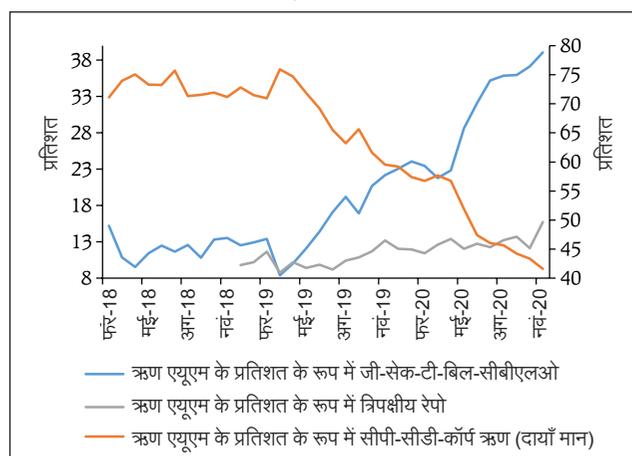
1.51 रिजर्व बैंक से चलनिधि सहायता ने वाणिज्यिक पत्र (सीपी) और गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर (एनसीबी), दोनों बाजारों के व्यवस्थित क्रियाकलाप को सुनिश्चित किया है और एक वर्ष पहले की तुलना में बड़े निर्गम जारी हुए हैं और रेटिंग श्रेणियों में

चार्ट 1.49 : चलनिधि प्रतिलाभ सूचकांक



नोट: क्रिसिल चलनिधि सूचकांक और 3-मासी नियत परिपक्वता प्रतिलाभ टी-बिल पोर्टफोलियो का प्रतिलाभ अंतर
स्रोत: ब्लूमबर्ग

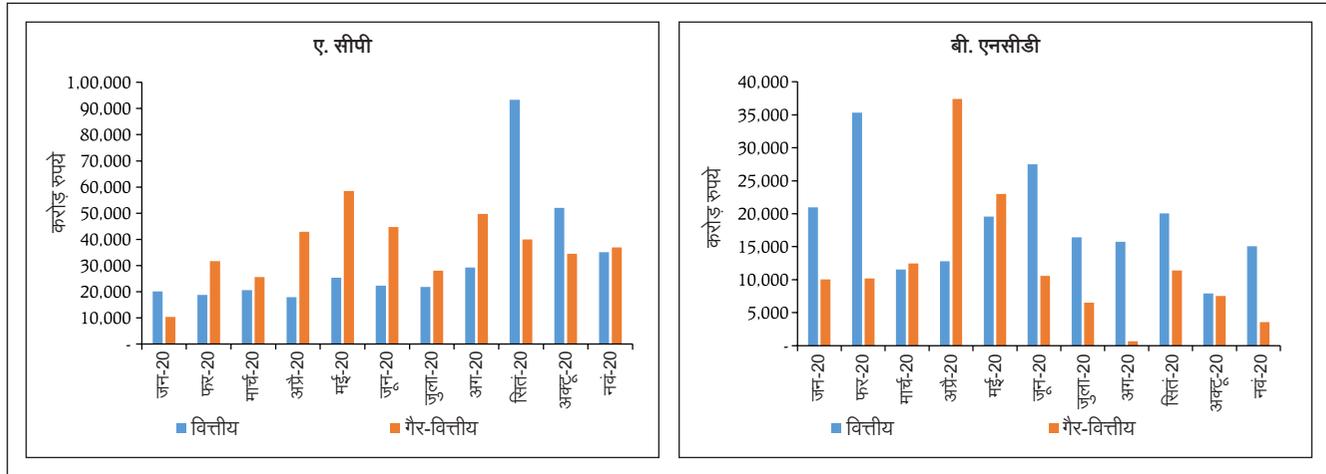
चार्ट: 1.50 : जी-सेक/टी-बिल/सीबीएलओ में निवेश और स्प्रेड उत्पाद गतिशीलता



स्रोत: भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड और भारतीय समाशोधन निगम लिमिटेड (सीसीआईएल)

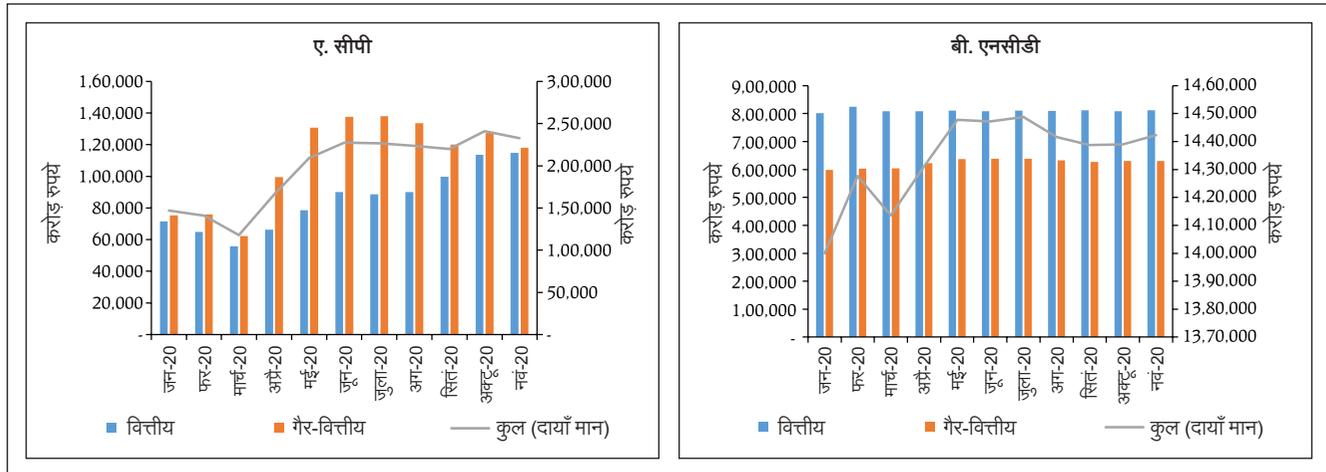
¹⁶ इसमें दैनिक चलनिधि का अवशोषण/अंत:वाह, आरबीआई से ली गई स्थायी चलनिधि सुविधा और केंद्रीय बैंक द्वारा सीआरआर अपेक्षाओं से कम/अधिक धारित नकदी शेष शामिल है।

चार्ट 1.51 : वाणिज्यिक पत्रों और गैर-परिवर्तनीय डिबेंचरों का निर्गम – गैर-पीएसयू ओब्लिगर्स



नोट: इनमें केवल 365 दिनों से अधिक के परिपक्वता काल वाले और पुट/कॉल ऑप्शन वाले एनसीडी शामिल हैं।
स्रोत: प्राइम डेटाबेस

चार्ट 1.52 : बकाया वाणिज्यिक पत्र और गैर-परिवर्तनीय डिबेंचर – गैर-पीएसयू ओब्लिगर्स

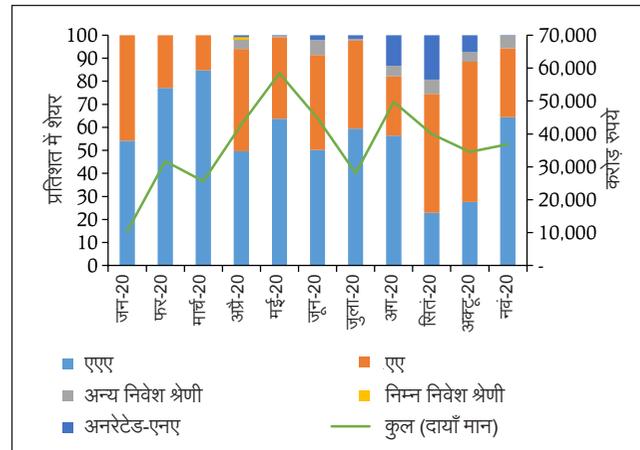


नोट: एनसीडी के डेटा में अप्रैल 2013 से 365 दिनों से अधिक के परिपक्वता काल वाले और पुट/कॉल ऑप्शन वाले निजी ऋण नियोजन शामिल हैं।
स्रोत: प्राइम डेटाबेस

स्प्रेड उल्लेखनीय रूप से संकुचित हुए हैं। परिणामस्वरूप गैर-पीएसयू ओब्लिगर्स के लिए बकाया सीपी में अच्छी-खासी वृद्धि हुई है (चार्ट 1.51 और 1.52)।

1.52 सीपी बनाम एनसीडी का रेटिंग प्रसार और अधिक विविधतापूर्ण रेटिंग प्रोफाइल को दर्शाता है। एए रेटेड समूह द्वारा एनसीडी निर्गमों के सापेक्षिक अंश में 2020-21 की दूसरी छमाही (नवम्बर तक) में तीव्र गिरावट आयी है (चार्ट 1.53 और 1.54)। सीपी और एनसीडी संबंधी निकट-अवधि परिपक्वताएं

चार्ट 1.53 : सीपी निर्गम – गैर-पीएसयू गैर-वित्तीय ओब्लिगर्स – रेटिंग-वार

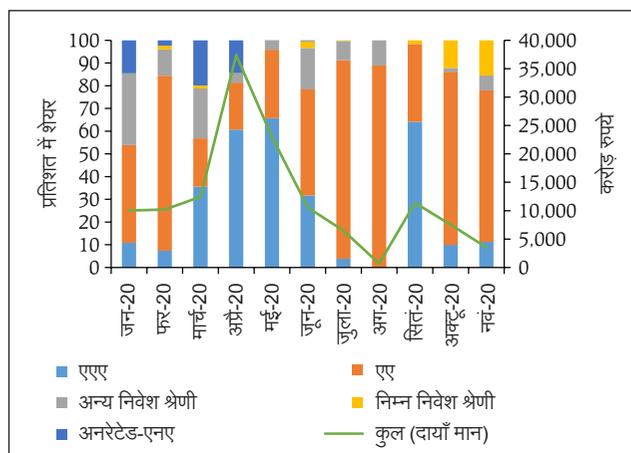


स्रोत: प्राइम डेटाबेस

रेटिंग ग्रेडों में व्यापक विभाजन को दर्शाती हैं, तथापि उच्चतर रेटिंगों की परिपक्वताएं हावी हैं (सारणी 1.16)।

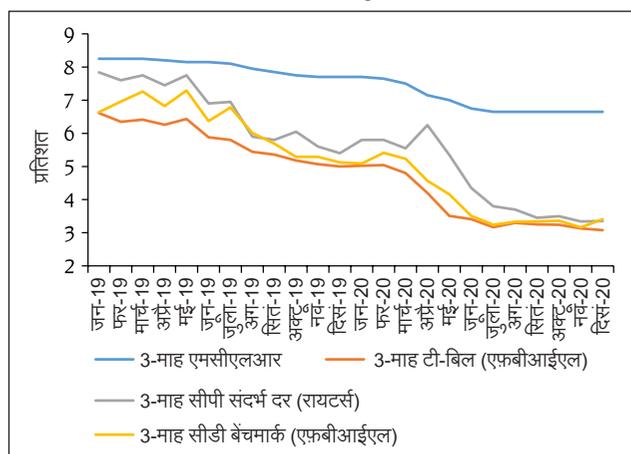
1.53 मुद्रा बाजार दरों में खासकर अप्रैल 2020 से तीव्र गिरावट ने बैंकों की निधि की सीमांत लागत आधारित उधार दर (एमसीएलआर) बेंचमार्क¹⁷ और उसी परिपक्वता काल की मुद्रा बाजार दरों के बीच उल्लेखनीय भेद पैदा कर दिया है (चार्ट 1.55)। महंगा बैंक वित्त, मुद्रा बाजारों की पहुँच वाले ऋण के उपयुक्त उधारकर्ताओं को बैंक-आधारित कार्यशील पूंजी वित्त से दूर ले जा सकता है। अच्छे उधारकर्ताओं का बैंकिंग चैनलों से इस प्रकार के विलगाव के कारण बैंकिंग क्षेत्र के ब्याज अर्जन और ऋण जोखिम पर प्रभाव पड़ सकता है।

चार्ट 1.54: एनसीडी निर्गम – गैर-पीएसयू गैर-वित्तीय ओब्लिगर्स – रेटिंग-वार



नोट: इनमें 365 दिनों से अधिक के परिपक्वता काल वाले और पुट/कॉल ऑप्शन वाले एनसीडी निर्गम शामिल हैं।
स्रोत: प्राइम डेटाबेस

चार्ट 1.55 : अल्पावधि मुद्रा बाजार दरें



स्रोत: रायटर्स, फाइनेंसियल बेंचमार्क्स इंडिया लि. (एफबीआईएल)

सारणी 1.16 : गैर-पीएसयू गैर वित्तीय ओब्लिगर्स के सीपी और एनसीडी के निर्गम और अल्पावधि परिपक्वताएं

(करोड़ रुपये)

	निर्गम			परिपक्वता						
	सितं-20	अक्टू-20	नवं-20	दिसं-20	जन-21	फर-21	मार्च-21	अप्रै-21	मई-21	जून-21
एएए	16,450.0	10,300.0	24,155.0	23,769.1	12,858.0	10,008.0	10,081.6	1,004.4	1,000.0	6,531.7
एए	24,545.1	26,756.0	13,385.0	20,059.7	8,214.4	8,018.0	8,642.3	10,350.0	1,739.1	7,260.0
अन्य	2,689.0	2,493.3	2,767.3	8,111.6	1,486.5	5,477.0	3,403.4	7,460.7	3,900.0	4,711.2
अनरेटेड-एनए	7,678.0	2,525.0	111.0	4,589.8	1,288.6	1,032.3	7,557.6	1,926.4	681.0	1,741.0
कुल	51,362.1	42,074.3	40,418.3	56,530.2	23,847.5	24,535.3	29,684.9	20,741.5	7,320.1	20,243.9

नोट: 1) एनसीडी के डेटा में अप्रैल 2013 से 365 दिनों से अधिक के परिपक्वता काल वाले और पुट/कॉल ऑप्शन वाले निजी ऋण नियोजन शामिल हैं।
2) परिपक्वता प्रोफाइल की रेटिंग नवंबर 2020 की स्थिति के अनुसार बकाया रेटिंग परिलक्षित करती हैं।

स्रोत: प्राइम डेटाबेस

¹⁷ बड़े पीएसबी का एमसीएलआर।

1.2.9 आवास बाजार

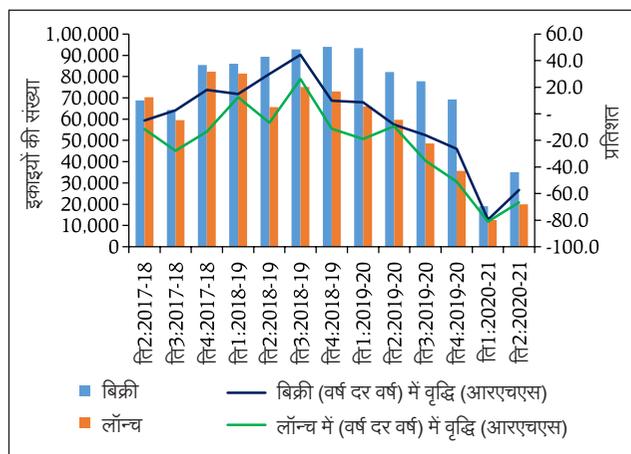
1.54 अर्थव्यवस्था के चरणबद्ध तरीके से खुलने और पुनुरुद्धार के विभिन्न उपायों से, भारतीय भूसंपदा बाजार, कोविड-19 जनित बाधाओं से उबरता प्रतीत हो रहा है। आवास बाजार अब क्रमशः पुनर्संतुलित हो रहा है और उस गर्त से उबर रहा है जिसमें यह 2020-21 की पहली तिमाही में डूब गया था। नई शुरू की गई इकाइयां और शीर्ष आठ शहरों में बेची गई आवासीय इकाइयां 2020-21 की दूसरी तिमाही और अब तक की तीसरी तिमाही में पिछली तिमाही के मुकाबले स्पष्ट सुधार दर्शाती हैं (चार्ट 1.56)।

1.55 2020-21 की दूसरी तिमाही में बिक्री में उतार से अनबिकी इनवेंटरी में कमी आयी, तथापि इनवेंटरी ओवरहैंग (अनबिके घरों को बेचने के लिए आवश्यक महीनों की औसत संख्या) महामारी के कारण तेजी से बढ़ गया (चार्ट 1.57)। 2020-21 की दूसरी तिमाही में कुल बिक्री का 70 प्रतिशत हिस्सा निर्माणाधीन इकाइयों का था और 81 प्रतिशत हिस्सा अनबिकी इनवेंटरी का था। सुस्त बिक्री ने डिवैलपरो को बड़े शहरों में कीमतें बढ़ाने से रोका है (चार्ट 1.58)।

1.2.10 प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण¹⁸

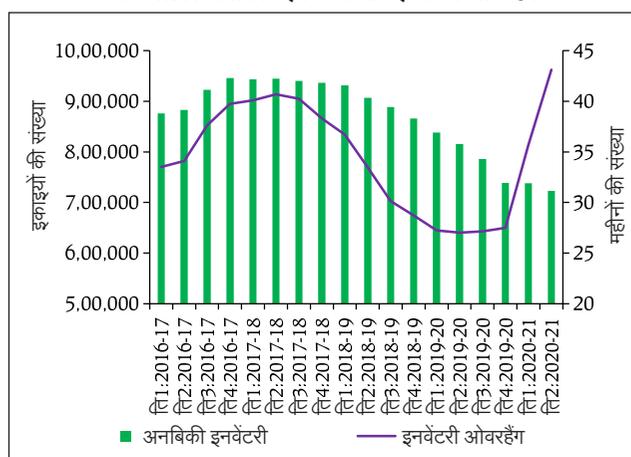
1.56 अक्टूबर/नवम्बर 2020 के नवीनतम प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (एसआरएस) में उत्तरदाताओं ने कतिपय संस्थागत जोखिमों को 'उच्च' की श्रेणी में रखा है, जबकि वैश्विक जोखिमों,

चार्ट 1.56: आवास लॉन्च और बिक्री



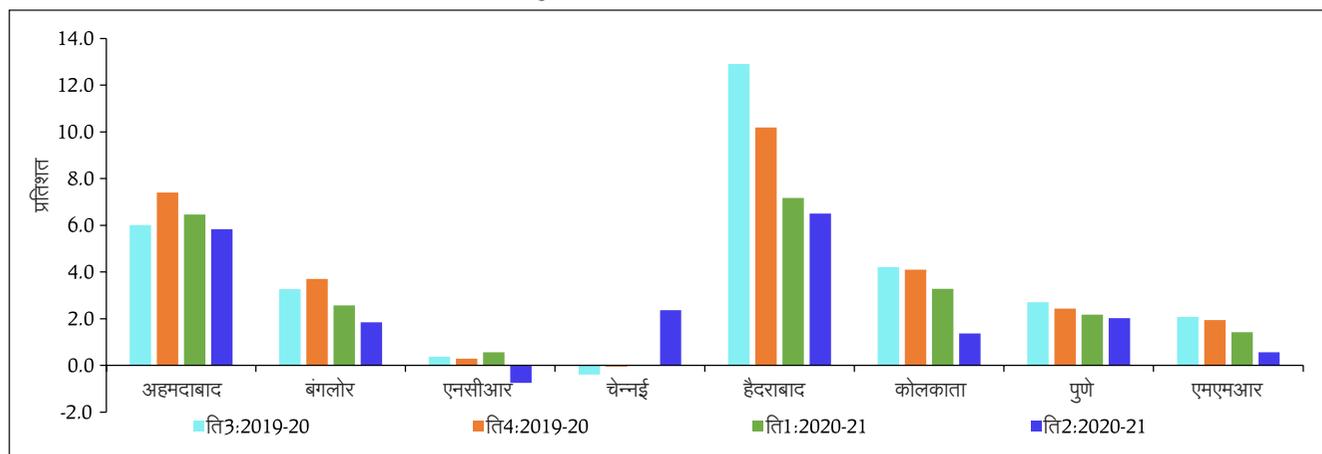
स्रोत: प्रोप टाइगर डेटालैब्स

चार्ट 1.57: अनबिकी इनवेंटरी और इनवेंटरी ओवरहैंग



स्रोत: प्रोप टाइगर डेटालैब्स

चार्ट 1.58: प्रमुख आवास बाजारों में कीमत बढ़ोतरी के रुझान



स्रोत: प्रोप टाइगर डेटालैब्स

¹⁸ परिशिष्ट 1 में ब्योरे दिये गए हैं।

समष्टिगत जोखिमों और बाजार जोखिमों को 'मध्यम' माना है। यह अप्रैल/मई 2020 में हुए सर्वेक्षण के पिछले चरण से स्पष्ट बदलाव दर्शाता था, जिसमें इन सभी समूहों को 'उच्च' जोखिम की श्रेणी में रखा गया था। सर्वेक्षण के पिछले चरण के उलट, जिसमें आर्थिक संवृद्धि (वैश्विक एवं घरेलू) और राजकोषीय घाटे के प्रति जोखिमों को 'अत्यंत उच्च' के रूप में आकलित किया गया था, लेकिन इनमें से किसी भी जोखिम को इस चरण में प्रतिभागियों ने 'अत्यंत उच्च' की श्रेणी में नहीं रखा। संस्थागत जोखिमों को छोड़कर, जोखिम समूहों में 'उच्च' जोखिम घटकों में वैश्विक संवृद्धि, घरेलू संवृद्धि, घरेलू मुद्रास्फीति, राजकोषीय घाटा, कॉर्पोरेट क्षेत्र की सुभेद्यताएं, अवसंरचना विकास की गति और इक्विटी कीमत में अस्थिरता शामिल हैं।

1.57 लगभग एक तिहाई उत्तरदाताओं ने कहा कि भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की स्थिति अगले एक वर्ष में सीमांत रूप से खराब होगी क्योंकि लॉकडाउन के बाद धीमी रिकवरी, अपेक्षाकृत कम निवल ब्याज अंतर, आस्ति गुणवत्ता की बढ़ी हुई चिंताओं और प्रावधानीकरण आवश्यकताओं में संभावित वृद्धि के कारण बैंकिंग उद्योग के अर्जन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। दूसरी तरफ, एक चौथाई उत्तरदाताओं ने महसूस किया कि संभावनाएं सीमांत रूप से बेहतर होंगी।

1.58 समग्र जवाब, सर्वेक्षण के पिछले चरण की तुलना में परिदृश्य में सकारात्मक बदलाव की ओर संकेत करते हैं।

सार और परिदृश्य

1.59 जुलाई 2020 की वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट के प्रकाशन के बाद से, कोविड-19 जोखिमों के विस्तार और गहराई तथा वैश्विक एवं घरेलू आर्थिक स्थितियों पर उनके ज्यादा व्यापक प्रभावों का बहुत बेहतर आकलन हुआ है। हालांकि मार्च और अप्रैल के निम्नतर स्तरों की तुलना में आर्थिक गतिविधियों में काफी तेजी से बहाली हुई है, लेकिन प्रमुख गैर-वित्तीय संकेतक महामारी-पूर्व स्तर से अभी नीचे ही हैं।

1.60 सरकारी राजस्व पर प्रतिकूल असर और ऐसी अवधि में जब राजकोषीय प्राधिकारियों द्वारा आर्थिक संवृद्धि को प्रोत्साहन

प्रदान करना भी अपेक्षित है, तब सरकारी उधार में इसके परिणामस्वरूप हुई वृद्धि, सरकारी कर्ज को ऐसे स्तर तक बढ़ा रही है जहां निजी क्षेत्र में वित्त की मात्रा और उसकी लागत दोनों के दृष्टिकोण से संधारणीयता और निवेश बहिर्गमन के भय से जुड़ी चिंताएँ और अधिक गहरी हो गई हैं।

1.61 वित्तीय बाजारों के कतिपय क्षेत्रों और भूसंपदा क्षेत्र के बीच बढ़ती पृथकता, जिसे पिछली एफ़एसआर में इंगित किया गया था, इस मध्यांतराल के दौरान, प्रतिलाभों की प्राप्ति प्रेरित करती प्रचुर नकदी के साथ, और बढ़ गई है। वित्तीय बाजार के पटल पर भी, इक्विटी और ऋण बाजारों की अपेक्षाओं में विचलन समूचे विश्व और भारत में भी बढ़ा है।

1.62 घरेलू स्तर पर, महामारी को देखते हुए घोषित किए गए नीतिगत उपायों और ऋणस्थगन से कॉर्पोरेट फंडिंग को राहत मिली है, लेकिन एक अंतराल के बाद दबाव दिखने लगेंगे। बैंकिंग क्षेत्र पर इसका प्रभाव पड़ेगा क्योंकि कॉर्पोरेट और बैंकिंग क्षेत्र की सुभेद्यताएं परस्पर जुड़ी हुई हैं। जहां एक ओर वैश्विक वित्तीय संकट (जीएफ़सी) के बाद उठाए गए विवेकपूर्ण उपायों ने बैंकिंग क्षेत्र में पहले से ज्यादा मजबूत पूंजी भंडार सुनिश्चित किया है, जिससे बैंक इस महामारी के सामने डट कर खड़े हो पाए हैं, वहीं दूसरी ओर यह भी संभावित है कि वित्तीय दबावों के वास्तविक रूप लेने पर, खासकर अलग-अलग बैंकों की आघातसहनीयता का परीक्षण हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप प्रणालीगत प्रभाव पड़ सकते हैं। बैंकों को इन प्रतिकूल स्थितियों का सामना करने के लिए अपने पूंजी आधार सुदृढ़ करने होंगे ताकि उनकी अपनी कारोबार योजनाओं और कोविडोत्तर काल में व्यापक आर्थिक रिकवरी प्रक्रिया को बल मिल सके। इसके अलावा, सहज वित्तीय स्थितियों से यह उम्मीद रहती है कि उनसे संवृद्धि संभावनाओं को बल मिलेगा। लेकिन इनके कारण लिवरेज को प्रोत्साहित करने, आस्ति कीमतों को बढ़ाने और वित्तीय स्थिरता के लिए खतरे को भड़काने जैसे अनपेक्षित परिणाम हो सकते हैं। महामारी ने व्यवहार और कारोबार मॉडलों को आमूल-चूल बदल दिया है। नीति-निर्माताओं को समुचित उपाय करते हुए, पहले से तैयार रहने के प्रयास करने पड़ रहे हैं।

अध्याय II

वित्तीय संस्थाएं : सुदृढ़ता और समुत्थानशक्ति

कोविड-19 महामारी से निपटने के लिए नीतिगत रूप से उपलब्ध कराई गई सहज चलनिधि तथा वित्तपोषण की परिस्थितियों के फलस्वरूप बैंकों की उधार देने की दरों, लाभप्रदता और पूंजी पर्याप्तता में सुधार संभव हुआ है और तुलनपत्र पर दबाव में थोड़ी कमी आई है, लेकिन बैंक-क्रेडिट की हालत धीमी बनी रही है। मैक्रो दबाव परीक्षण से यह ज्ञात होता है कि अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की आस्ति गुणवत्ता और पूंजी बफर में कमी हुई है क्योंकि नियामकीय रियायतों को हटा लिया गया है। अंतर-बैंक बाजार का आकार छोटा हो जाने से संक्रामक जोखिम घट गया है। गैर-बैंक क्षेत्र में म्यूच्युअल फंड और बीमा कंपनियों का वर्चस्व निधि प्रदान करने वालों के रूप में बना रहा है वहीं गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (एनबीएफसी) और आवास वित्त कंपनियाँ (एचएफसी) बड़ी उधारकर्ता बनीं रहीं।

प्रस्तावना

2.1 हाल के महीनों में वित्तीय बाजार के कार्य कोविड-19 महामारी के आर्थिक प्रभावों से संचालित रहे, जिसमें वित्तीय संस्थाओं को बैंकिंग प्रणाली में उपलब्ध प्रचुर मात्रा में चलनिधि की उपलब्धता, निधियों की कम होती लागत, तथा विशिष्ट ऋणों के मामले में नियामकीय रियायत खास बातें थीं। परिणामस्वरूप, क्रेडिट का उठाव कम रहने के बावजूद बैंकों को उम्मीद से कहीं अच्छे परिणाम प्राप्त हुए हैं। मैक्रो-इकोनॉमिक परिदृश्य की खस्ताहाली का बैंकों की आस्ति-गुणवत्ता, पूंजी पर्याप्तता तथा लाभप्रदता पर पड़ने वाला संपूर्ण प्रभाव धीरे-धीरे उद्घाटित होगा।

2.2 जो भी हो, इतने बड़े पैमाने के आघात का दबाव आगे चलकर बैंकों के तुलना पत्रों पर पड़ने की संभावना है। महामारी-पूर्व कुछ संस्थाएं जो कमजोर थीं उन पर इसका दबाव अपेक्षाकृत अधिक पड़ सकता है। एक दूसरे से जुड़े वित्तीय बाजार में क्रेडिट-एक्सपोजर के एक बड़े हिस्से के लिए सामान्य रूप से यह महामारी सभी के लिए जोखिम बन गई है। भारतीय वित्तीय संस्थाओं के निष्पादन पैरामीटर्स और परस्पर संबद्धता के स्तर के माध्यम से वित्तीय स्थिरता के विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन करने, साथ ही मैक्रो दबाव-परीक्षण के साथ-साथ ऊर्ध्वमुखी दबाव परीक्षण किया जाना इस जटिल समुच्चय को अलग अलग

कर पाने में उपयोगी सिद्ध होगा।

2.3 इस पृष्ठभूमि के अंतर्गत इस अध्याय में बैंकों, एनबीएफसी तथा अनुसूचित प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंकों (एसयूसीबी) की सुदृढ़ता एवं समुत्थानशीलता का मूल्यांकन किया गया है जिसमें उनके हालिया निष्पादन का परीक्षण किया गया है जैसाकि उनके तुलन पत्रों और ऑफसाइट विवरणियों से परिलक्षित होता है। वित्तीय मध्यस्थता संस्थाओं की प्रत्येक श्रेणी के संबंध में किए गए दबाव परीक्षण के परिणाम भाग II.1, II.2 और II.3 में प्रस्तुत किए गए हैं। यह अध्याय भाग II.4 में समाप्त होता है जिसमें भारतीय वित्तीय प्रणाली की नेटवर्क संरचना और संबद्धता का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है, साथ ही प्रतिकूल परिदृश्य में संक्रामकता विश्लेषण के परिणाम भी दिए गए हैं।

II.1 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (एससीबी)^{1,2}

2.4 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के क्रेडिट में वृद्धि (वर्ष-दर-वर्ष) जो मार्च 2020 में घटकर 5.7 प्रतिशत हो गई थी, वह सितंबर 2020 में गिरकर 5.0 प्रतिशत पर पहुंच गई थी। सरकारी क्षेत्र के बैंकों के मामले में क्रेडिट में वृद्धि मार्च के 3.0 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर 2020 में 4.6 प्रतिशत हो गई थी, जबकि निजी क्षेत्र के बैंकों में यह वृद्धि मार्च के 10.4 प्रतिशत से कम होकर 7.1 प्रतिशत हो गई थी। विदेशी बैंकों में मार्च 2020 में 7.2

¹ विश्लेषण मुख्यतः आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियों पर आधारित है, जिसमें एससीबी के केवल घरेलू परिचालन को कवर किया गया है, सिवाय बड़े कर्जदारों के आंकड़ों के मामले के, जो बैंकों के वैश्विक परिचालन पर आधारित हैं। सीआरएआर पूर्वानुमानों के लिए, बैंकिंग क्षेत्र (गैर-आरआरबी) की कुल संपत्ति के लगभग 98 प्रतिशत वाले 46 एससीबी (सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (पीएसबी), निजी क्षेत्र के बैंक (पीवीबी) और विदेशी बैंक (एफबी) सहित) पर विचार किया गया है।

² अध्याय में किए गए विश्लेषण 04 दिसंबर 2020 तक के उपलब्ध आंकड़ों पर आधारित हैं, जो अनतिम हैं। एससीबी में सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, निजी क्षेत्र के बैंक और विदेशी बैंक शामिल हैं। आईडीबीआई को 21 जनवरी 2019 से विनियामकीय उद्देश्य के लिए निजी क्षेत्र के बैंक के रूप में घोषणा के अनुरूप इस खंड में विश्लेषणों के लिए आईडीबीआई को एक पीवीबी माना गया है और तदनुसार मार्च 2019 से सभी आंकड़ों को इस पुनरीक्षण को दर्शाने करने के लिए फिर से तैयार किया गया है।

प्रतिशत की वृद्धि हुई थी जिसमें (-) 5.4 प्रतिशत की गिरावट रिपोर्ट की गई थी (चार्ट 2.1ए)। नये खातों के माध्यम से संवितरित ऋण वार्षिक आधार पर 2020-21 की पहली तिमाही में तकरीबन एक-चौथाई घट गया था, लेकिन बाद में उसमें कुछ सुधार हुआ। वर्ष 2020-21 की दूसरी तिमाही में नये ऋणों में वृद्धि प्राथमिक रूप से कृषि क्षेत्र एवं वैयक्तिक ऋण खंड में पाई गई (सारणी 2.1)।

2.5 इसके विपरीत, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की जमाराशि में वृद्धि अत्यधिक तीव्र 10.3 प्रतिशत(वर्ष-दर-वर्ष) बनी रही, जो सावधानीपरक बचतों के कारण थी। सरकारी क्षेत्र के बैंकों द्वारा पिछले पांच वर्षों में सर्वाधिक 9.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई (चार्ट 2.1ए)।

2.6 आमदनी पक्ष को देखें तो, अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की निवल ब्याज आय (एनआईआई) सितंबर 2020 में कहीं अधिक ऊंचाई 16.2 प्रतिशत तक बढ़ गई थी (मार्च 2020 में 13.0 प्रतिशत थी)। सितंबर 2020 में सभी बैंकिंग समूहों के निवल ब्याज मार्जिन(एनआईएम) में थोड़ा उभार पैदा हुआ

सारणी 2.1: एससीबी द्वारा क्षेत्रवार नए ऋण* (वर्ष-दर-वर्ष, प्रतिशत)

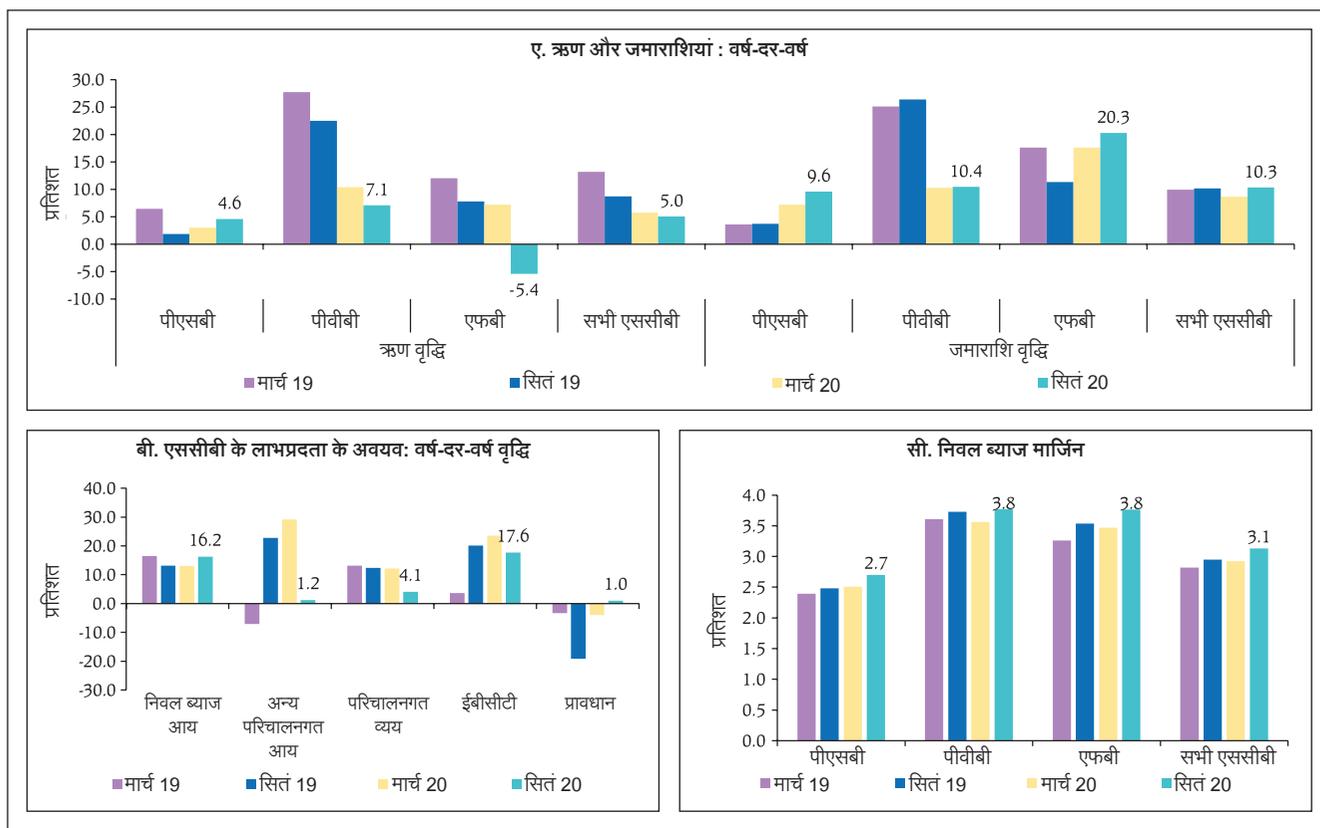
क्षेत्र	मार्च 2020 में हिस्सा	ति4:2019-20 वृद्धि	ति1:2020-21 वृद्धि	ति2:2020-21 वृद्धि
ऊर्जा	9.1	-2.0	-22.3	18.0
उद्योग	35.4	19.3	-20.2	-15.4
सेवाएं	38.2	14.3	-12.3	-9.8
व्यक्तिगत ऋण	14.1	11.3	-59.1	4.2
अन्य	3.2	-32.0	-41.8	-22.1
सभी ऋण	100.0	11.4	-24.6	-7.4

नोट- * क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) को छोड़कर

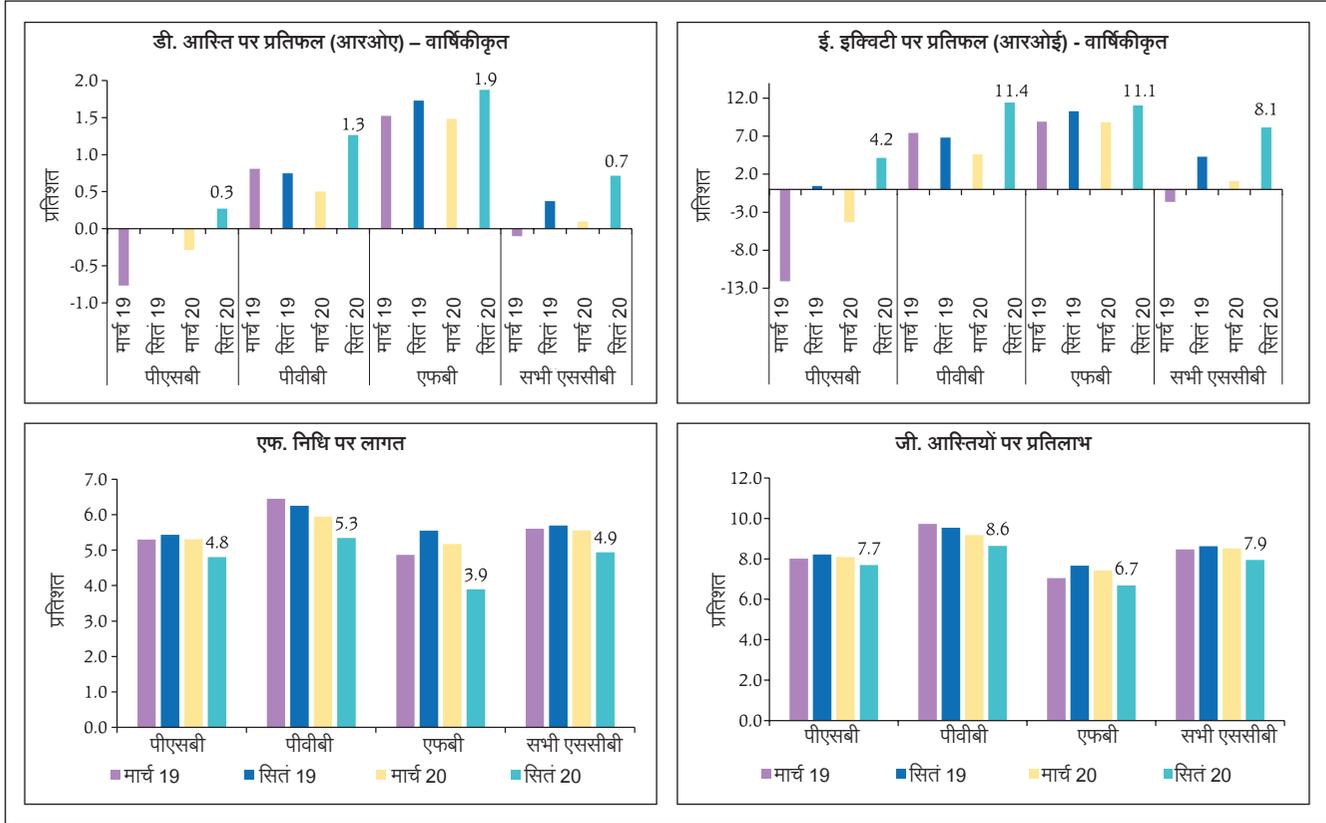
स्रोत: मूलभूत सांख्यिकीय विवरणी -1, आरबीआई।

(चार्ट 2.1 सी)। लेकिन, अन्य परिचालनगत आय (ओओआई) मार्च 2020 के 29.2 प्रतिशत से गिरकर 1.2 प्रतिशत से कम हो गई। प्रावधानों और करों से पूर्व आय (ईबीपीटी) 17.6 प्रतिशत बढ़ गई थी। आस्ति पर प्रतिफल (आरओए) और इक्विटी पर प्रतिफल (आरओई) में सभी बैंक समूहों में अत्यधिक सुधार हुआ था, खासतौर से सरकारी क्षेत्र के बैंकों में आरओई में पिछले चार वर्षों में अवशून्य (सब-जीरो) तथा शून्य के निकट स्तरों तक अल्प रहने के बाद उल्लेखनीय

चार्ट 2.1: चुनिंदा कार्य निष्पादन संकेतक (जारी...)



चार्ट 2.1: चुनिंदा कार्य निष्पादन संकेतक (समाप्त)



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

सुधार हुआ था (चार्ट 2.1डी और चार्ट 2.1ई)। घटती हुई ब्याज दरों की वजह से सभी बैंक समूहों में निधियों की लागतें कम हो गई थीं, जिनमें विदेशी बैंकों में मार्च 2020 से लेकर 130 आधार अंक की उल्लेखनीय गिरावट दर्ज की गई (चार्ट 2.1एफ)। साथ ही साथ अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की आस्तियों पर प्रतिलाभ कोविड-19 महामारी के प्रकोप के पहले लगभग एकसमान रहने के बाद सितंबर 2020 में 60 आधार अंक घट गया (चार्ट 2.1 जी)।

II.1.1 आस्ति गुणवत्ता और पूंजी पर्याप्तता

2.7 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की सकल अनर्जक आस्तियां (जीएनपीए) और निवल एनपीए (एनएनपीए) अनुपात निरंतर घटती रहीं और सितंबर 2020 में क्रमशः 7.5 प्रतिशत तथा 2.1 प्रतिशत थीं (चार्ट 2.2 ए, बी और सी)। फिसलन

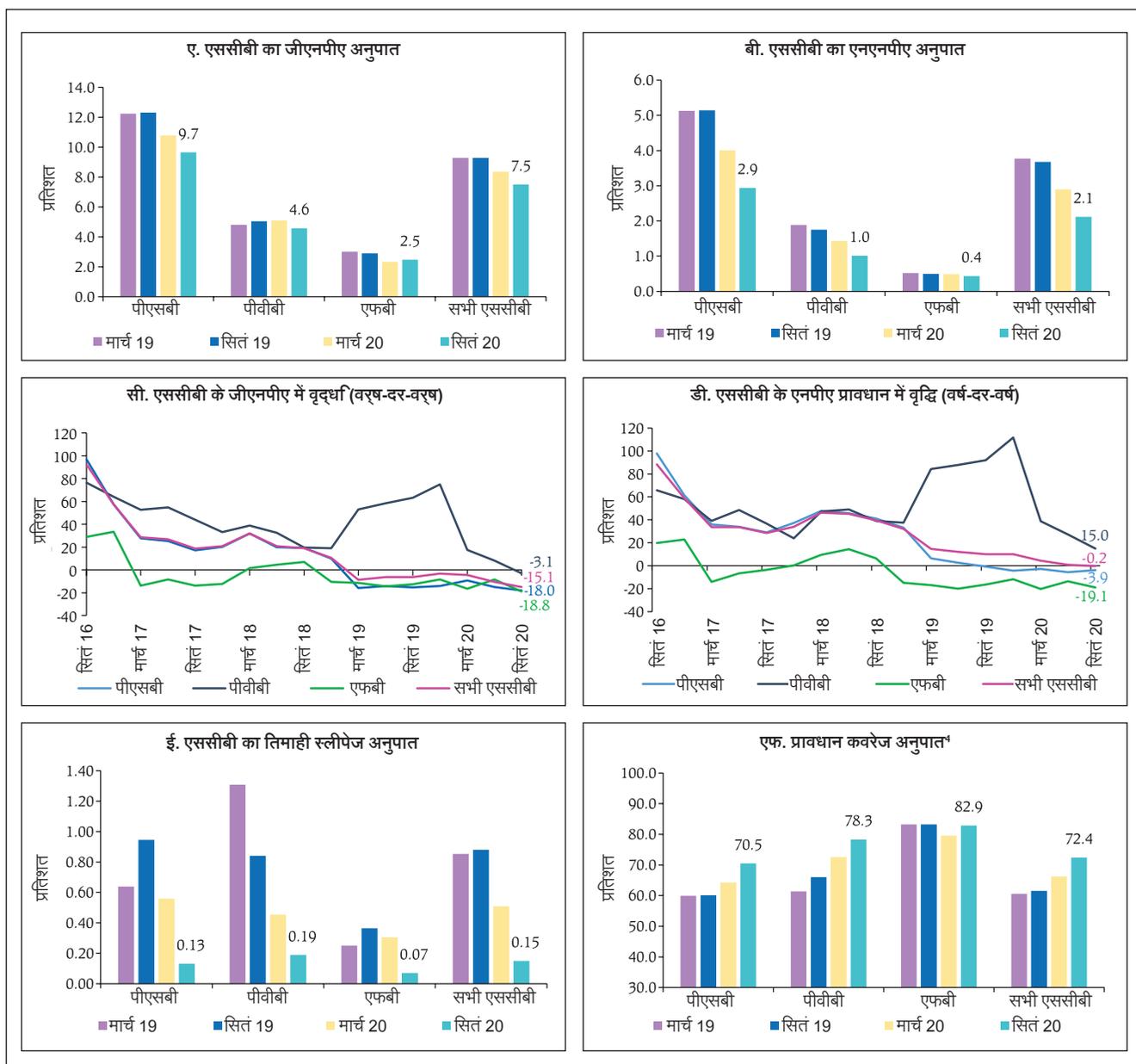
अनुपात, जिसे तिमाही के प्रारंभ में मानक अग्रियों की तुलना में तिमाही में संचित नये एनपीए अनुपात के रूप में परिभाषित किया गया है, लगातार आधे वर्ष तक तेजी से संकुचित होता रहा जो सितंबर 2020 में 0.15 प्रतिशत हो गया था (चार्ट 2.2 ई) और यह गिरावट सभी बैंक समूहों में प्रसारित हो गई थी। इस सुधार में कोविड-19 महामारी के चलते दिए गए नियामकीय छूट ने काफी सहायता की।³ अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के एनपीए प्रावधानों में 0.2 प्रतिशत(वर्ष-दर-वर्ष) की मामूली गिरावट दर्ज की गई, साथ ही पीएसबी एवं विदेशी बैंकों में प्रावधान घट गया था तथा निजी बैंकों में बढ़ा दिया गया था(चार्ट 2.2 डी)। अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों का प्रावधान कवरेज अनुपात (पीसीआर) कुल मिलाकर सभी बैंक समूहों में बेहतर हुआ था और जो मार्च 2020 के 66.2 प्रतिशत से बढ़कर सितंबर 2020 में 72.4 प्रतिशत हो गया था (चार्ट 2.2 एफ)।

³ कोविड-19 महामारी से संबंधित अवरोधों के मद्देनजर, आरबीआई ने ऋण देने वाले संस्थानों को (i) पात्र उधारकर्ताओं की स्थिति में, उनके मानक स्थिति पर कोई प्रभाव डाले बिना, 1 मार्च 2020 से 31 अगस्त 2020 तक छह महीने के लिए सावधि ऋण किस्तों और कार्यशील पूंजी सुविधाओं पर ब्याज अधिस्थगन का विस्तार करने; और (ii) परिसंपत्ति वर्गीकरण में किसी भी परिणामी डाउनग्रेड के बिना, निर्धारित मानदंडों को पूरा करने वाली ऋण सुविधाओं का पुनर्गठन करने की अनुमति दी।

2.8 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की पूंजी की तुलना में जोखिम-भारित आस्ति अनुपात (सीआरएआर) मार्च 2020 (14.7 प्रतिशत) की तुलना में सितंबर 2020 में काफी बढ़कर 110 आधार अंक हो गया था। जहां सरकारी क्षेत्र के बैंकों में 60 आधार अंक की वृद्धि दर्ज की गई थी, वहीं निजी क्षेत्र के बैंकों और विदेशी बैंकों में इससे अधिक वृद्धि क्रमशः 170 आधार अंक एवं 100 आधार अंक की हुई थी (चार्ट 2.2 जी)। अनुसूचित

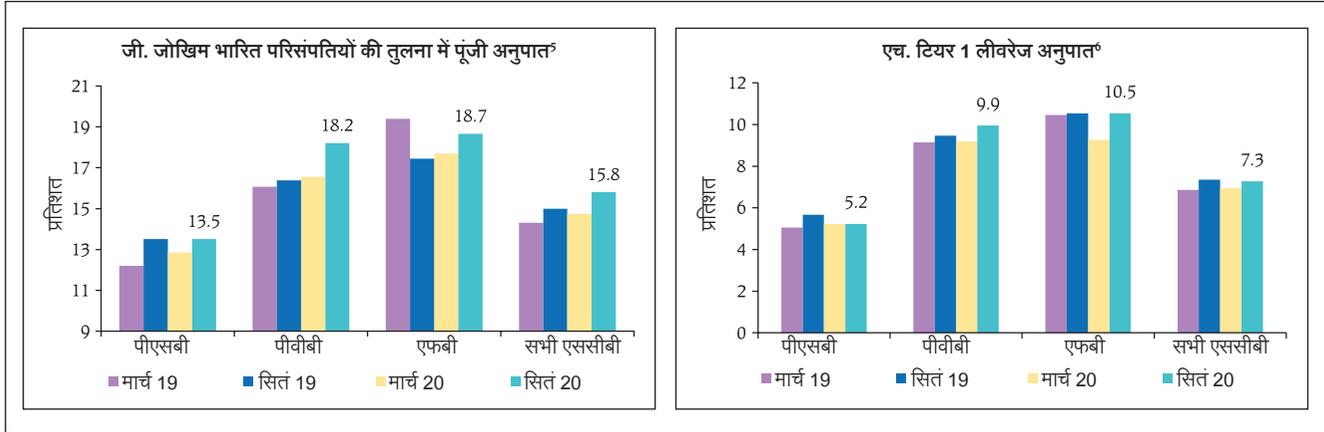
वाणिज्यिक बैंकों के मामले में टियर I लीवरेज पूंजी भी मार्च 2020 और सितंबर 2020 के बीच 30 आधार अंक बढ़ गई थी, जिसमें निजी क्षेत्र के बैंकों और विदेशी बैंकों का योगदान प्रमुख रूप से था, जिससे उनके अनुपात क्रमशः 80 आधार अंक और 120 आधार अंक बढ़ गए थे (चार्ट 2.2 एच)। तथापि, बैंकों के पास उपलब्ध पूंजी के कुशन की गुंजाइश नियामकीय रियायत मिलने से थोड़ा बेहतर दिखाई दे सकती है।

चार्ट 2.2: चुनिंदा परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक (जारी ...)



⁴ प्रावधान कवरेज अनुपात (राइट-ऑफ समायोजन के बिना) = एनपीए * 100/जीएनपीए के लिए धारित प्रावधान।

चार्ट 2.2: चुनिंदा परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक (समाप्त)



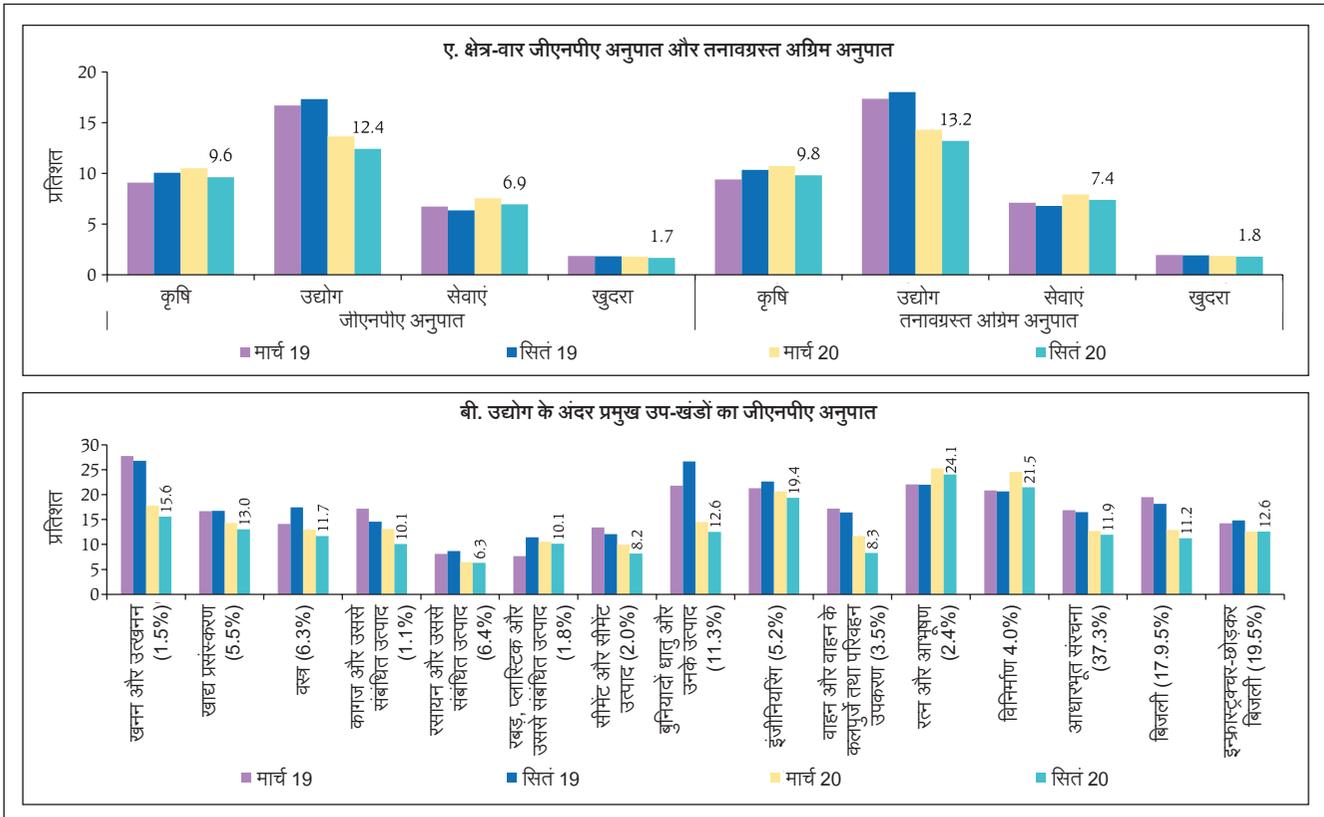
स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

II.1.2 क्षेत्रवार परिसंपत्ति गुणवत्ता

2.9 मार्च 2020 की अपेक्षा सितंबर 2020 में उद्योग, कृषि और सेवा जैसे व्यापक क्षेत्रों में जीएनपीए और दबाव अग्रिम अनुपात में गिरावट के साथ आरिष्ठ गुणवत्ता में स्पष्ट सुधार देखा

गया है। तथापि, खुदरा अग्रिमों के मामले में तथापि जीएनपीए अनुपात में थोड़ी गिरावट रही जबकि दबावग्रस्त अग्रिम समान रहा (चार्ट 2.3 ए)। उद्योग के भीतर सभी प्रमुख उप-क्षेत्रों के जीएनपीए अनुपात में व्यापक स्तर पर गिरावट देखी गई

चार्ट 2.3: क्षेत्रवार परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक



नोट: संकेतिका के साथ कोष्ठक में दिए गए नंबर उद्योग के लिए कुल ऋण में से उप क्षेत्रों की हिस्सेदारी है।

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

⁵ सीआरएआर सभी एससीबी से संबंधित है।

⁶ टियर 1 लीवरेज अनुपात कुल आरिष्ठियों की तुलना में टियर 1 पूंजी का अनुपात है।

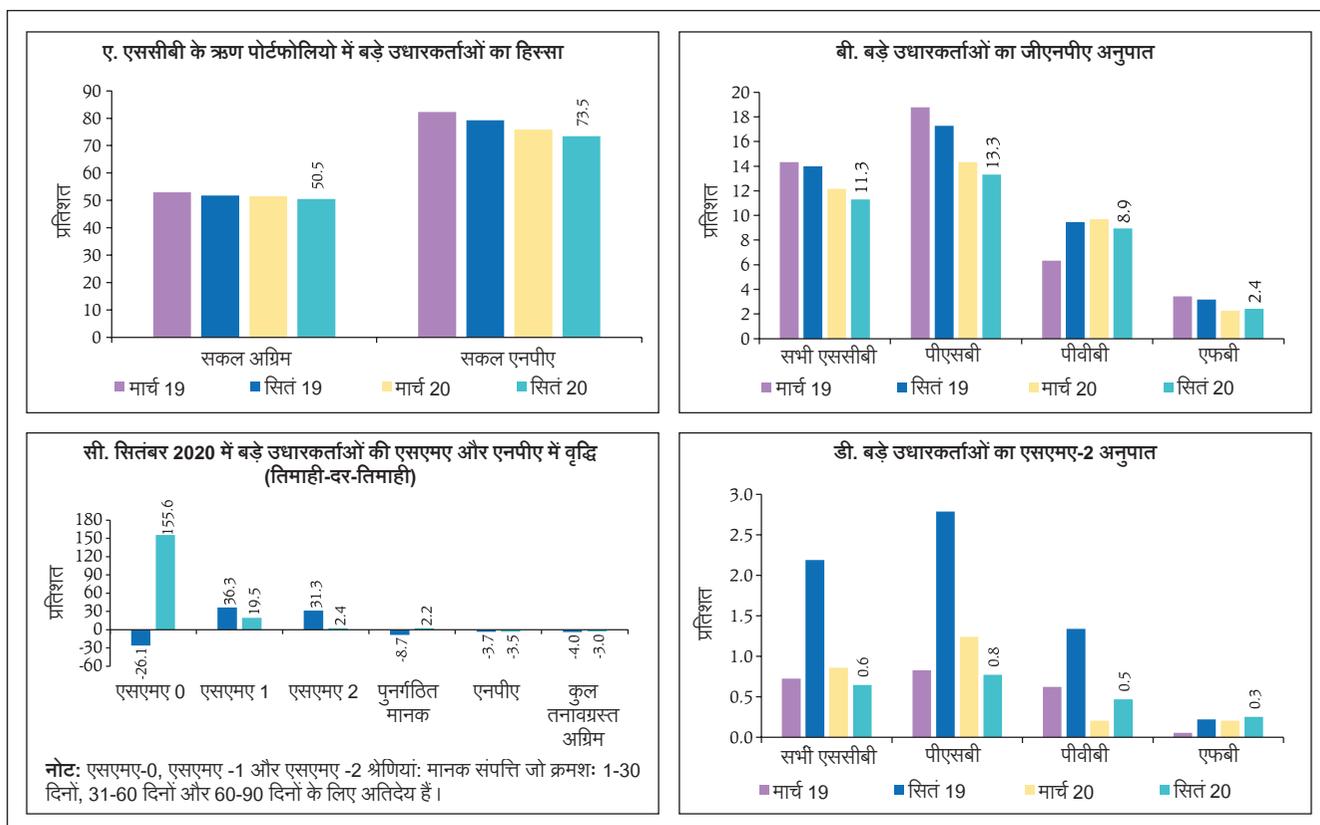
(चार्ट 2.3 बी)। तथापि, विनियामक रियायतों को देखते हुए आगामी रिपोर्टिंग अवधि के दौरान आस्ति गुणवत्ता पर इसके प्रभाव दिखाई देंगे।

II.1.3 बड़े उधारकर्ताओं की ऋण गुणवत्ता

2.10 सितंबर 2020 की समाप्ति में समग्र ऋण पोर्टफोलियो में बड़े उधारकर्ताओं⁷ और एससीबी के जीएनपीए हिस्सेदारी में गिरावट जारी रही जो क्रमशः 50.5 और 73.5 प्रतिशत तक रही (चार्ट 2.4ए)। जबकि विदेशी बैंकों में बड़े उधारकर्ता के जीएनपीए अनुपात में थोड़ी बढ़त देखी गई (चार्ट 2.4बी)। पुनर्गठित मानक ऋण श्रेणी की हिस्सेदारी में बढ़त यह दर्शाती है कि कोविड-19 से दबावग्रस्त उधारकर्ता के लिए बढ़ाए गए पुनर्गठित लाभ को बड़े उधारकर्ता प्राप्त कर रहे हैं। अवमानक और संदिग्ध आस्तियों के अनुपात में संकुचन जबकि हानि

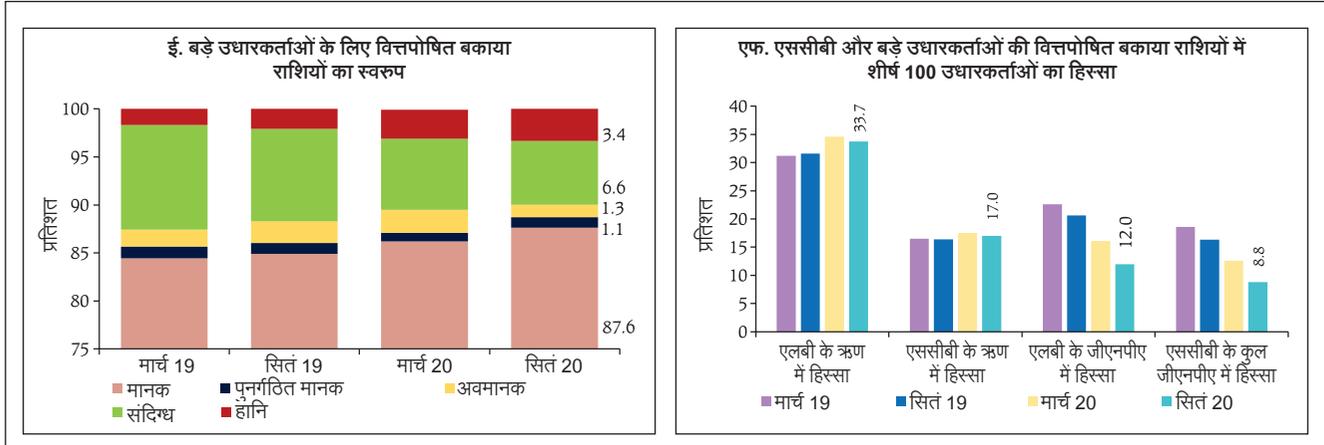
आस्तियों में बढ़त देखी गई, जो एनपीए पोर्टफोलियो में परिपक्व दर्शाता है (चार्ट 2.4ई)। शीर्ष 100 बड़े उधारकर्ताओं के पास एससीबी के सकल अग्रिम और बड़े उधारकर्ताओं के ऋण का क्रमशः 17 प्रतिशत और 33.7 प्रतिशत है। यद्यपि, यह मार्च 2020 की तुलना में गिरावट दर्शाती है, तथापि यह हिस्सेदारी कोविड पूर्व के स्तर से अधिक बनी रही, जो सतत क्रेडिट संकेंद्रण का संकेत देता है। तथापि एससीबी में 100 बड़े उधारकर्ताओं के जीएनपीए समूह में 8.8 प्रतिशत तक गिरावट आई (चार्ट 2.4 एफ)। बड़े अग्रिमों के एसएमए-ओ श्रेणी में आगामी तिमाहियों में गिरावट के आभास के साथ पिछली तिमाही से तीव्र वृद्धि (155.6 प्रतिशत) और मार्च 2020 से 245.6 प्रतिशत के स्तर पर दर्ज की गई (चार्ट 2.4 सी)। पीवीबी और एफबी के लिए बड़े उधारकर्ताओं के

चार्ट 2.4: बड़े उधारकर्ताओं के चुनिंदा परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक (जारी ...)



⁷ एक बड़े उधारकर्ता को एक ऐसे व्यक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है जिसके पास 5 करोड़ और उससे अधिक का निधि-आधारित और गैर-निधि-आधारित एकसोजर है। यह विश्लेषण एससीबी के वैश्विक परिचालनों पर आधारित है।

चार्ट 2.4: बड़े उधारकर्ताओं के चुनिंदा परिसंपत्ति गुणवत्ता संकेतक (समाप्त)



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

एसएमए-2 अनुपात में बढ़त जबकि पीएसबी में गिरावट देखी गई (चार्ट 2.4 डी)।

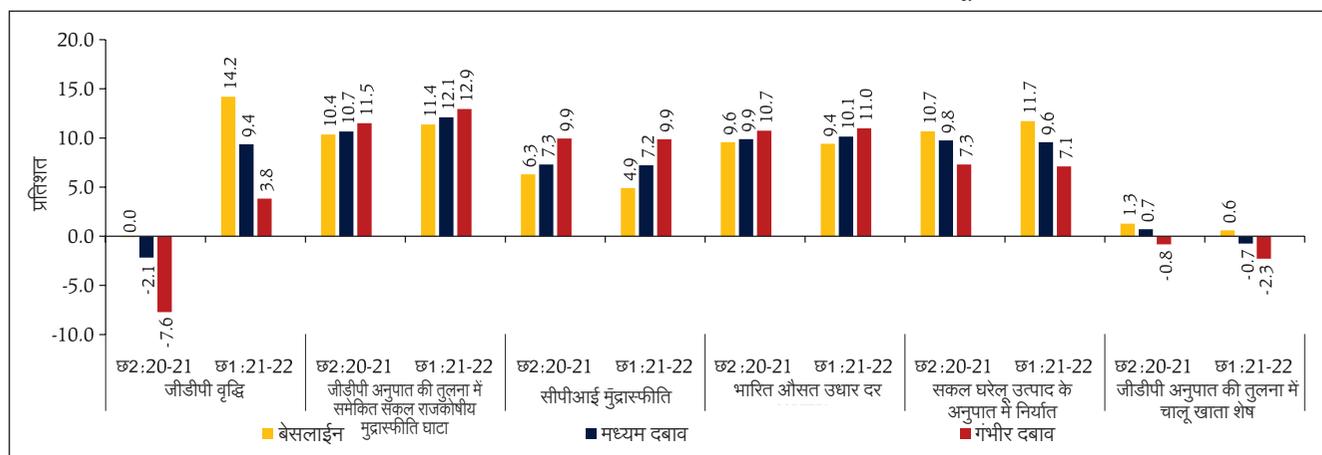
II.1.4 आघात सहनीयता – समष्टि दबाव परीक्षण

2.11 समष्टि दबाव परीक्षण आर्थिक परिवेश में उपजे अकल्पित आघातों से एससीबी के तुलन-पत्र पर संचयी आघात के प्रभाव के आकलन के लिए किया गया है। अभ्यास के परिणाम से पूंजी और क्षति अनुपात का अनुमान एक वर्ष के दौरान बेसलाइन के अंतर्गत दो प्रतिकूल - मध्यम और अति गंभीर परिदृश्यों के अंतर्गत किया गया है। पिछली वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट में कोविड-19 महामारी के विकास, इसकी आर्थिक लागत और डेटा संग्रहण प्रक्रिया में विलंब से उच्च अनिश्चितता के चलते एक बारगी “अति गंभीर दबाव” के अतिरिक्त परिदृश्य का समावेश किया गया था। आर्थिक परिस्थितियों पर महामारी के प्रभाव के

बेहतर मूल्यांकन के साथ, यह आकलन किया गया कि भविष्य में स्थितियां और खराब हो सकती हैं, हालांकि रिकवरी का रास्ता अनिश्चित है। तदनुसार दबाव परीक्षण इस मामले में नियमित रूप से 3- परिदृश्य विश्लेषण में पूर्ववत रहा। बेसलाइन की उत्पत्ति मुख्य मैक्रोइकॉनॉमिक चर⁸ का मूल्य स्थिर-पूर्वानुमानित पूर्वानुमान से प्राप्त की जाती है जो केंद्रीय पथ को इंगित करता है। (डिजाइन द्वारा, समष्टि दबाव परीक्षण के लिए प्रयोग में आने वाली काल्पनिक प्रतिकूल आर्थिक परिस्थितियों के अंतर्गत संतुलित मूल्यांकन हैं। इस बात पर जोर दिया जाता है कि मॉडल के नतीजे पूर्वानुमान के अनुरूप नहीं हैं।) मध्यम और अति गंभीर परिदृश्य प्रत्येक समष्टि आर्थिक चरों के लिए क्रमशः 0.25 से एक मानक विचलन (एसडी) आघात और 1.25 से दो एसडी आघात का उपयोग

⁸ जीडीपी वृद्धि, जीडीपी अनुपात की तुलना में संयुक्त राजकोषीय घाटा, सीपीआई मुद्रास्फीति, भारत औसत उधार दर, जीडीपी अनुपात की तुलना में निर्यात और जीडीपी अनुपात की तुलना में चालू खाता शेष।

चार्ट 2.5: छ2: विव20-21 और छ1: विव21-22 के लिए समष्टि आर्थिक परिदृश्य मूल्यांकन



करके प्राप्त किया गया है, जिससे प्रत्येक अनुमान तिमाही में आघातों में 25 आधार अंक की वृद्धि हुई है (चार्ट 2.5)।

2.12 सामान्यतः दबाव परीक्षण एससीबी के तुलन पत्र की स्थिति जिसमें ऋण का एनपीए में परिवर्तन शामिल है, लाभप्रदता, पूंजी और बैंक द्वारा रिपोर्ट किए गए अन्य सुसंगत डेटा के आधार पर किया जाता है। विनियामकीय रियायतों को देखते हुए जैसे ऋणस्थगन, कोविड -19 महामारी के संदर्भ में आस्ति वर्गीकरण और पुनः संरचना की यथावत स्थिति, बैंकों द्वारा रिपोर्ट किए गए नए ऋण क्षति के डेटा बैंक पोर्टफोलियो में शामिल वास्तविक स्थिति नहीं दर्शाते हैं। परिणामस्वरूप दबाव परीक्षण का प्रभाव कम आंकना, नवीनतम तिमाही हेतु स्लिपेज अनुपात जिसका डेटा मौजूद है जो समष्टि दबाव परीक्षण रूपरेखा का बिलिडिंग ब्लॉक है। इस समस्या से उबरने के लिए यह आवश्यक है कि विनियामक रियायतों के प्रभाव का नियंत्रण

करते हुए पिछली तीन तिमाहियों के विश्वसनीय फिसलन अनुपात प्राप्त किया जाए।

2.13 दो चरण की अनुमान प्रक्रिया अपनाई जाती है। पहली एससीबी के लिए, दिसंबर 2019 के डेटा विनियामकीय रियायतों से अप्रभावित रहने वाला उपलब्ध नवीनतम डेटा है और इसका प्रयोग दबाव परीक्षण सिमूलेशन के आरंभिक बिंदु जो मुख्य मैक्रोइकोनॉमिक चर का वास्तविक मूल्य है जिसे मार्च 2020, जून 2020 और सितंबर 2020 को समाप्त तिमाहियों के फिसलन अनुपात और जीएन पीए अनुपात को प्राप्त करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। दूसरे चरण में सितंबर 2020 के लिए अनुमानित अनुपात सितंबर 2021 के जीएनपीए और पूंजी अनुपात के पूर्वानुमान के आधार हेतु किया जाता है। दबाव परीक्षण के समसामयिक बहुराष्ट्रीय अनुभव बॉक्स 2.1 में दर्शाया जा रहा है।

बॉक्स 2.1: महामारी काल में दबाव परीक्षण: कतिपय राष्ट्रों के अनुभव

दबाव परीक्षण वित्तीय संस्थाओं की पूंजी पर्याप्तता तथा चलनिधि बफर की माप करता है ताकि यह देखा जा सके कि क्या वे कठिन किंतु, संभाव्य मैक्रो-इकोनॉमिक एवं वित्तीय स्थितियों का सामना कर सकती हैं। कोविड-19 महामारी जैसी अप्रत्याशित घटना को देखते हुए यह आवश्यक है कि नियमित दबाव परीक्षण ढांचे में परिवर्तन करते हुए उसमें महामारी की स्थिति में उससे संबंधित परीक्षण तत्वों

लक्षणों को उसमें शामिल किया जाए। इस संबंध में अन्य केंद्रीय बैंकों के अनुभव शिक्षाप्रद सिद्ध हो सकते हैं। रिजर्व बैंक ऑफ न्यूजीलैंड ने मार्च 2020 के अपने दबाव परीक्षण में देश के नौ बड़े बैंकों की लाभप्रदता और पूंजी के लिए दो कठिन किंतु संभाव्य परिदृश्यों को अपनाया था। एक निराशावादी बेसलाइन परिदृश्य यह था कि उसमें 50 वर्ष में एक बार से लेकर 75 वर्ष में एक बार होने वाली घटनाओं

(जारी...)

को लिया गया था, जिसमें रोजगार की दर बढ़कर 13.4 प्रतिशत (दिसंबर 2019 में 4.1 प्रतिशत थी) हो गई थी और संपत्ति के मूल्य से 37 प्रतिशत तक गिर गए थे (दिसंबर 2019 वर्ष-दर-वर्ष वृद्धि 4.6 प्रतिशत थी)। एक अत्यंत कठिन परिदृश्य में, 200 वर्ष में घटित इस घटना को लिया गया जिसमें आवास की कीमतों में 50 प्रतिशत की गिरावट हुई थी जो वैश्विक वित्तीय संकट के दौरान आयरलैंड के अनुभवों के समतुल्य थी तथा बेरोजगारी की दर 17.7 प्रतिशत मानी गई थी।

अमरीकी फेडरल रिजर्व बोर्ड ने जून 2020 में एक दबाव परीक्षण करने के अलावा दिसंबर 2020 में दबाव परीक्षण का एक अतिरिक्त चक्र और पूरा किया। पहले चक्र में तीन परिदृश्य लिए गए थे : (i) एक तीव्र वी-आकार की बहाली ; (ii) एक धीमी यू- आकार की बहाली; और (iii) एक डबलू- आकार की दुगुनी रफ्तार की मंदी तथा बहाली। इन तीनों परिदृश्यों में बड़े पैमाने के राजकोषीय प्रोत्साहन नदारद थे। यह माना गया था कि बेरोजगारी की दर 15.6 प्रतिशत और 19.5 प्रतिशत के बीच के उच्च स्तर पर रहेगी और यह स्थिति अमरीका के किसी भी महामारी-पूर्व किए गए दबाव परीक्षण परिदृश्य से कहीं ज्यादा कठोर थी और महामंदी के दौर के स्तर से भी अधिक थी। दिसंबर 2020 में किए गए दबाव परीक्षण चक्र में भी कठोर वैश्विक मंदी के लक्षण दिखाई दिए और इस दौरान वित्तीय बाजारों पर भी काफी दबाव रहा। उन्होंने इसमें वैश्विक बाजार आघात कंपोनेंट को भी शामिल किया था जिसे उन बैंकों पर लागू किया गया था जिनके व्यापार बड़े पैमाने पर होते हैं और उसके साथ सबसे बड़ी काउंटरपार्टी का डिफाल्ट भी शामिल रहता है। ये परिदृश्य अमरीकी अर्थव्यवस्था के रास्ते में वर्तमान बेसलाइन पूर्वानुमान की तुलना में कहीं ज्यादा गंभीर थे।

यूरोपियन सेंट्रल बैंक (ईसीबी) ने यूरो क्षेत्र के 86 बैंकों पर कोविड-19 के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए अप्रैल-जुलाई 2020 में दबाव परीक्षण किया था, जिसमें तीन परिदृश्य शामिल थे : (i) एक बेसलाइन परिदृश्य जिसे महामारी के फैलने से पूर्व परिभाषित किया गया था ; (ii) कोविड-19 के मध्य का परिदृश्य, जिससे ईसीबी के अनुमान परिलक्षित होते हैं जिनके पूरे होने की संभावनाएं हैं और (iii) एक कोविड-19 कठोर परिदृश्य जिसमें गहनतम मंदी तथा धीमी आर्थिक बहाली मानी गई थी। यूरोपियन बैंकिंग प्राधिकरण (ईबीए) के दबाव

परीक्षण की पद्धति का इस्तेमाल भेद्यता विश्लेषण की आवश्यकता को ध्यान में रखकर की गई काट-छांट के बाद प्रारंभिक बिंदु के रूप में किया गया। इस पद्धति में और मध्य एवं कठोर परिदृश्यों में अप्रत्याशित मौद्रिक,पर्यवेक्षी एवं राजकोषीय कोविड-19 राहत उपायों के प्रभाव को शामिल किया गया था।

बैंक ऑफ इंग्लैंड ने 2020 के वार्षिक दबाव परीक्षण चक्र को निरस्त कर दिया था ताकि उधारदाता इंग्लैंड के परिवारों एवं कारोबारियों के क्रेडिट प्रावधानों को पूरा करने पर ध्यान केंद्रित कर सकें। इसकी बजाय, बैंक ऑफ इंग्लैंड की वित्तीय नीति समिति (एफपीसी) ने इंग्लैंड के प्रमुख बैंकों एवं बिल्डिंग सोसायटियों का मई 2020 में डेस्कटॉप दबाव परीक्षण किया गया था। इसके लिए मई 2020 की मौद्रिक नीति रिपोर्ट (एमपीआर) में निर्दिष्ट परिदृश्यों का उपयोग किया गया था। हानि को अवशोषित करने के लिए उपयोग में लाए जाने वाले बफर की पर्याप्तता की और अधिक जांच करने की दृष्टि से बैंकों ने अगस्त 2020 में 'रिवर्स दबाव परीक्षण' किया था ताकि यह मूल्यांकन हो सके कि उस आर्थिक आघात की कठोरता की किस सीमा तक होना जरूरी होगी जो विनियामकीय पूंजी बफर को उस सीमा तक क्षतिग्रस्त कर दे जैसाकि 2019 के दबाव परीक्षण में किया गया था।

संदर्भ

बैंक ऑफ इंग्लैंड (2020): "अंतरिम फाइनेंसियल स्टेबिलिटी रिपोर्ट", मई

बैंक ऑफ इंग्लैंड (2020): "फाइनेंसियल स्टेबिलिटी रिपोर्ट", दिसंबर
बोर्ड ऑफ़ गवर्नर्स ऑफ़ यूएस फेडरल रिजर्व (2020): "असेसमेंट ऑफ़ कैपिटल ड्यूरिंग द रीसेंट कोरोनावायरस इवेंट", जून

बोर्ड ऑफ़ गवर्नर्स ऑफ़ यू एस फेडरल रिजर्व (2020): "दिसंबर 2020 स्ट्रेस टेस्ट रिजल्ट्स ओवरव्यू" दिसंबर

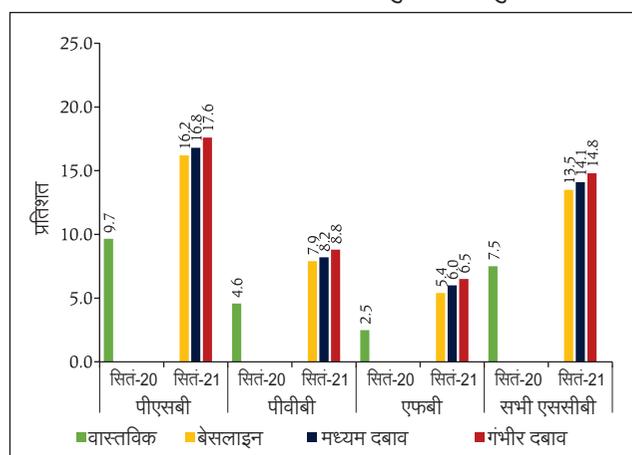
यूरोपियन सेंट्रल बैंक (2020): "कोविड-19 वलनेरएबिलिटी एनालिसिस रिजल्ट्स ओवरव्यू", जुलाई

नॉल्स. जे. निकोलस. के. एण्ड ब्लू. सी. (2020) "आउटकम्स फ्रॉम ए कोविड-19 स्ट्रेस टेस्ट ऑफ़ न्यूजीलैंड बैंक". रिजर्व बैंक ऑफ़ न्यूजीलैंड बुलेटिन. 83(3).1-12

2.14 दबाव परीक्षणों से यह संकेत मिलता है कि बेसलाइन परिदृश्य के अंतर्गत सभी एससीबी का जीएनपीए अनुपात सितंबर 2020 के 7.5 प्रतिशत की तुलना में बढ़कर सितंबर 2021 तक 13.5 प्रतिशत हो सकता है (चार्ट 2.6)। यदि समष्टि आर्थिक माहौल बिगड़कर गंभीर दबाव परिदृश्य का रूप ले लेता है, तो यह अनुपात बढ़कर 14.8 प्रतिशत हो सकता है। बैंक समूहों के बीच, बेसलाइन परिदृश्य के अंतर्गत पीएसबी का जीएनपीए अनुपात सितंबर 2020 के 9.7 प्रतिशत की तुलना में बढ़कर सितंबर 2021 तक 16.2 प्रतिशत हो सकता है; पीवीबी एवं एफबी के जीएनपीए अनुपात समान अवधि में 4.6 प्रतिशत एवं 2.5 प्रतिशत से बढ़कर क्रमशः 7.9 प्रतिशत एवं 5.4 प्रतिशत हो सकते हैं। गंभीर दबाव परिदृश्य में पीएसबी, पीवीबी एवं एफबी के जीएनपीए अनुपात सितंबर 2021 तक बढ़कर क्रमशः 17.6 प्रतिशत, 8.8 प्रतिशत एवं 6.5 प्रतिशत हो सकते हैं।

2.15 ये जीएनपीए अनुमान बैंकों के पोर्टफोलियो के अंतर्निहित संभावित आर्थिक नुकसान का संकेत देते हैं जिसका प्रभाव बैंकों की पूंजीगत आयोजना पर पड़ सकता है। तथापि, उभरते हुए आर्थिक दृष्टिकोण के प्रति अनिश्चितता को देखते हुए आपत्ति किया जाना उचित है, तथा पुनर्चना के तहत जिस हद तक विनियामकीय व्यवस्था का उपयोग किया गया हो, वैसे में अनुमानित अनुपात गैर-रैखिक तरीके से होने वाले परिवर्तन के प्रति संवेदनशील बने रहेंगे।

चार्ट 2.6: एससीबी के जीएनपीए अनुपातों का अनुमान

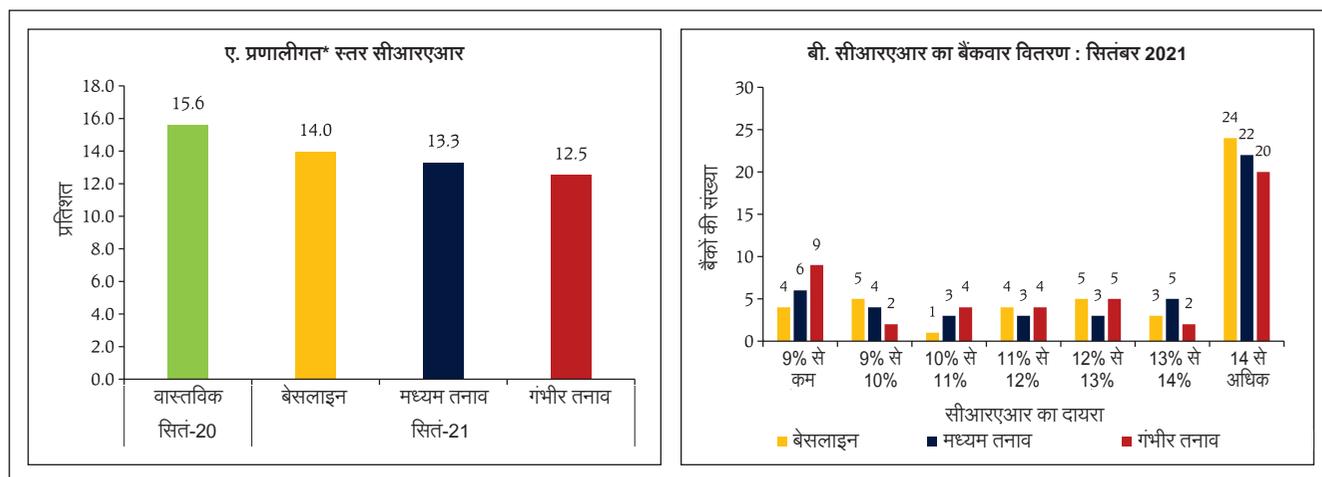


टिप्पणी: प्रणालीगत स्तर जीएनपीए को तीन संपूरक अर्धमितीय मॉडल- मल्टीवेरिएट रिग्रेशन, वेक्टर ऑटोरिग्रेशन (वीएआर) और क्वांटाइल रिग्रेशन - का उपयोग करके; और जीएनपीए अनुपातों का औसत निकालकर अनुमानित किया जाता है। बैंक समूह स्तर के अनुमानों के लिए, मल्टीवेरिएट रिग्रेशन और वीएआर परिणामों के औसत का उपयोग किया जाता है।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना।

2.16 प्रणाली स्तर सीआरएआर के सितंबर 2020 के 15.6 प्रतिशत की तुलना में सितंबर 2021 में बेसलाइन परिदृश्य के अंतर्गत कम होकर 14.0 प्रतिशत एवं गंभीर दबाव परिदृश्य के अंतर्गत कम होकर 12.5 प्रतिशत होने का अनुमान है (चार्ट 2.7 ए)। दबाव परीक्षण के परिणामों से संकेत मिलता है कि हितधारकों द्वारा पूंजी अंतः प्रवाह के बिना बेसलाइन परिदृश्य के अंतर्गत सितंबर 2021 तक चार बैंक पूंजी के न्यूनतम स्तर को पूरा करने में विफल हो सकते हैं। गंभीर दबाव परिदृश्य में, न्यूनतम

चार्ट 2.7: सीआरएआर पूर्वानुमान



* 46 चुनिंदा अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक की प्रणाली के लिए।

टिप्पणी: लाभ वाले एससीबी के लिए पूंजीगत आरक्षित निधि में न्यूनतम 25 प्रतिशत लाभ को अंतरित करने की एक रूढ़िवादी धारणा के तहत पूंजी अनुमान किया गया है। इसमें हितधारकों द्वारा किसी भी पूंजी अंतः प्रवाह को ध्यान में नहीं रखा गया है।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना।

पूँजी स्तर को पूरा करने में विफल बैंकों की संख्या बढ़कर नौ हो सकती है (चार्ट 2.7 बी)।

2.17 एससीबी का सामान्य इक्विटी टियर I (सीईटी 1) पूँजी अनुपात सितंबर 2020 के 12.4 प्रतिशत की तुलना में सितंबर 2021 में बेसलाइन परिदृश्य के अंतर्गत घटकर 10.8 प्रतिशत और गंभीर दबाव परिदृश्य के अंतर्गत घटकर 9.7 प्रतिशत हो सकता है (चार्ट 2.8 ए)। इसके अलावा, इन परिस्थितियों में बेसलाइन परिदृश्य के अंतर्गत सितंबर 2021 तक 5.5 प्रतिशत के न्यूनतम विनियामकीय सीईटी I पूँजी अनुपात को पूरा करने में दो बैंक विफल हो सकते हैं: और यह संख्या गंभीर दबाव परिदृश्य में बढ़कर पाँच हो सकती है (चार्ट 2.8 बी)।

2.18 समग्र रूप से, गंभीर दबाव परिदृश्य में भी, बाज़ार से पूँजी जुटाये जाने और पीएसबी के मामले में सरकार द्वारा अंतः प्रवाह से समर्थित, एससीबी के पास पर्याप्त पूँजी संबंधी बचाव-व्यवस्था मौजूद है। तथापि, व्यक्तिगत स्तर पर विभिन्न बैंकों के पूँजीगत बफ़र क्षीण होकर न्यूनतम विनियामकीय अपेक्षा के नीचे जा सकते हैं। इसलिए आगे बढ़ते हुए, चरणबद्ध तरीके से पूँजी अंतः

प्रवाह अथवा अन्य रणनीतिक कदम जैसे निवारक उपाय समष्टि विवेकपूर्ण दृष्टिकोण से इन बैंकों के लिए उपयुक्त होंगे।

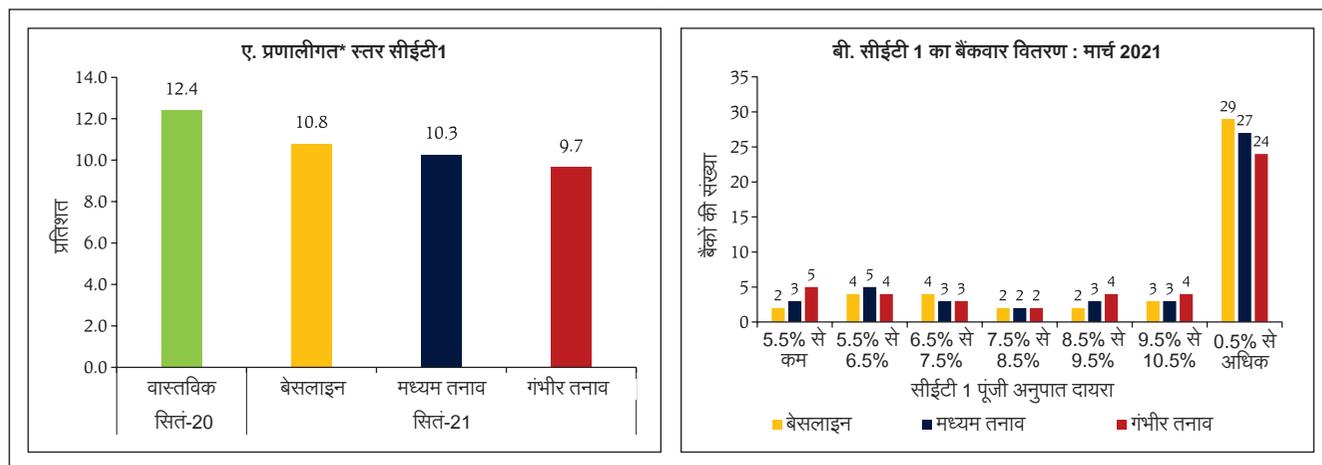
II.1.5 संवेदनशीलता विश्लेषण*

2.19 टॉप-डाउन¹⁰ संवेदनशीलता विश्लेषण के भाग के रूप में एससीबी की दुर्बलता का आकलन विभिन्न परिदृश्यों¹¹ के अंतर्गत अनेक एकल-कारक आघातों¹² को सितंबर 2020 के डाटा पर ऋण, ब्याज दर, इक्विटी दर और चलनिधि जोखिमों को सिमुलेट करने के लिए प्रयोग में लाकर किया गया।

ए. ऋण जोखिम

2.20 प्रणाली स्तर जीएनपीए (उदाहरणस्वरूप, 46 चुनिंदा एससीबी का जीएनपीए अनुपात आघात के प्रभाव से 7.6 प्रतिशत से बढ़कर 13.6 प्रतिशत हो जाता है) पर 2 एसडी¹³ के गंभीर आघात के परिणामस्वरूप प्रणाली स्तरीय सीआरएआर 15.6 प्रतिशत से कम होकर 11.6 प्रतिशत हो जाएगा। टियर I पूँजीगत अनुपात 13.3 प्रतिशत से गिरकर 9.3 प्रतिशत हो जाता है। प्रणाली स्तर पूँजीगत नुकसान लगभग 27.8 प्रतिशत

चार्ट 2.8: सीईटी 1 पूँजी अनुपात का अनुमान



* 46 चुनिंदा अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक की प्रणाली के लिए

टिप्पणी: लाभ वाले एससीबी के लिए पूँजीगत आरक्षित निधि में न्यूनतम 25 प्रतिशत लाभ को अंतरित करने की एक रूढ़िवादी धारणा के तहत पूँजी अनुमान किया गया है। इसमें हितधारकों द्वारा किसी भी पूँजी अंतः प्रवाह को ध्यान में नहीं रखा गया है।

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ गणना

⁹ समष्टि दबाव परीक्षणों के तहत, आघात प्रतिकूल समष्टि-आर्थिक स्थितियों के रूप में हैं, जबकि संवेदनशीलता विश्लेषण आघात में एकल कारकों जैसे, जीएनपीए, ब्याज दर, इक्विटी मूल्य, जमा राशियों और समान कारकों पर एक समय में आघात करते हैं। इसके अलावा, जीएनपीए अनुपातों के लिए समष्टि दबाव परीक्षणों को प्रणाली और प्रमुख बैंक-समूह स्तरों पर किया जाता है, जबकि संवेदनशीलता का विश्लेषण प्रणाली और वैयक्तिक बैंक स्तरों पर किया जाता है।

¹⁰ टॉप-डाउन दबाव परीक्षण विशिष्ट परिदृश्यों और बैंक-वार समग्र डाटा पर आधारित हैं।

¹¹ एकल कारक संवेदनशीलता विश्लेषण दबाव परीक्षण कुल बैंकिंग क्षेत्र की आस्तियों का 98 प्रतिशत धारित करने वाले 46 एससीबी को नमूना के रूप में मानकर किए गए विभिन्न काल्पनिक परिदृश्यों के तहत डिजाइन किए गए आघात चरम पर होते हुए भी स्वीकार्य हैं।

¹² तनाव परीक्षणों के विवरण के लिए कृपया अनुबंध-2 देखें।

¹³ जीएनपीए अनुपात के एसडी को मार्च 2011 से तिमाही आंकड़ों का उपयोग करके अनुमानित किया जाता है। एक एसडी आघात से जीएनपीए के स्तर में 39 प्रतिशत की वृद्धि अनुमानित है।

हो सकता है (चार्ट 2.9 ए)। विपरीत दिशा में किए गए दबाव परीक्षणों के परिणाम यह दर्शाते हैं कि प्रणाली स्तर सीआरएआर को 9 प्रतिशत पर लाने के लिए 4.1 एसडी के आघात की आवश्यकता है।

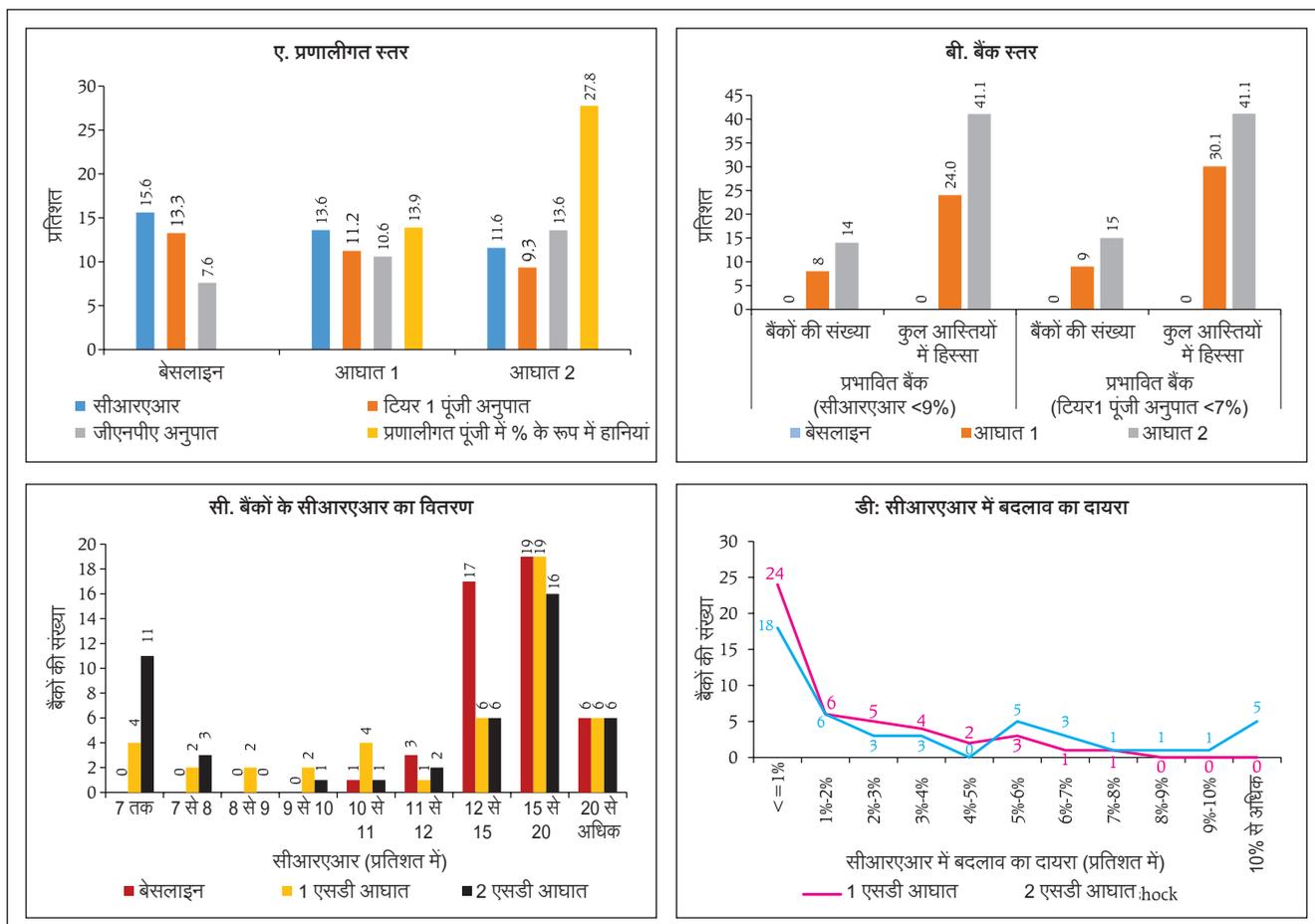
2.21 बैंक स्तरीय दबाव परीक्षण यह दर्शाते हैं कि जीएनपीए अनुपात पर 2 एसडी का आघात दिये जाने की स्थिति में एससीबी की कुल आस्तियों में 41.1 प्रतिशत की हिस्सेदारी वाले 14 बैंक अपेक्षित सीआरएआर को पूरा करने में विफल हो सकते हैं (चार्ट 2.9 बी)। 11 बैंकों का सीआरएआर 7 प्रतिशत से नीचे गिर जाएगा (चार्ट 2.9 सी)। 1 एसडी अथवा 2 एसडी के आघात दिये जाने की स्थिति में क्रमशः 2 और 11 बैंकों के सीआरएआर में छह प्रतिशत अंकों के अधिक की कमी दर्ज की जाएगी। तुलनात्मक रूप से, सीआरएआर के मामले में 2

एसडी आघात परिदृश्य के अंतर्गत पीवीबी तथा एफबी द्वारा पीएसबी की तुलना में कम गिरावट का सामना करना पड़ेगा (चार्ट 2.9 डी)।

बी. ऋण संकेंद्रण जोखिम

2.22 बैंकों के ऋण संकेंद्रण पर किए गए दबाव परीक्षणों – वैयक्तिक उधारकर्ताओं को उनके मानक एक्सपोजर को ध्यान में रखते हुए – ने दर्शाया कि संबंधित बैंकों के तीन शीर्ष वैयक्तिक उधारकर्ताओं द्वारा ऋण चुकौती¹⁴ में विफल होने जैसे गंभीर परिदृश्य में एक बैंक का सीआरएआर 9 प्रतिशत के नीचे गिर जाएगा (चार्ट 2.10 ए) और 34 बैंकों द्वारा अपने सीआरएआर में 1 प्रतिशत अंक से अधिक की गिरावट का सामना करना पड़ेगा (चार्ट 2.10 बी)।

चार्ट 2.9: ऋण जोखिम - आघात और परिणाम



आघात 1: जीएनपीए अनुपात पर 1 एसडी आघात

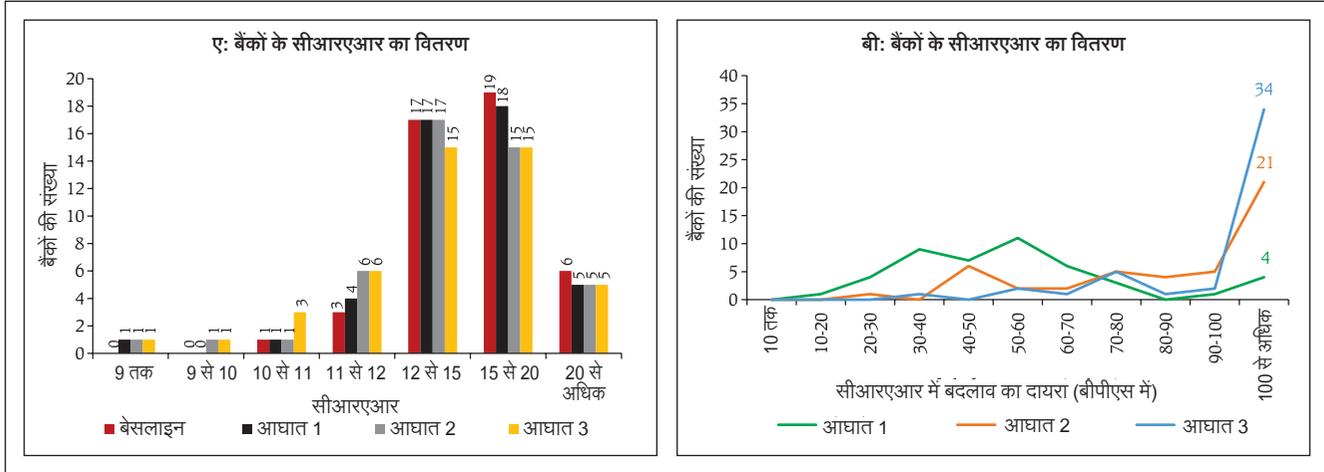
आघात 2: जीएनपीए अनुपात पर 2 एसडी आघात

टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली

स्रोत: आरबीआई पर्यवेक्षी विवरणियां और स्टाफ गणना

¹⁴ चूक होने की स्थिति में, यह मान लिया जाता है कि उधारकर्ता मानक श्रेणी से अवमानक श्रेणी में आ गया है।

चार्ट 2.10: ऋण संकेंद्रण जोखिम: वैयक्तिक उधारकर्ता – एक्सपोजर

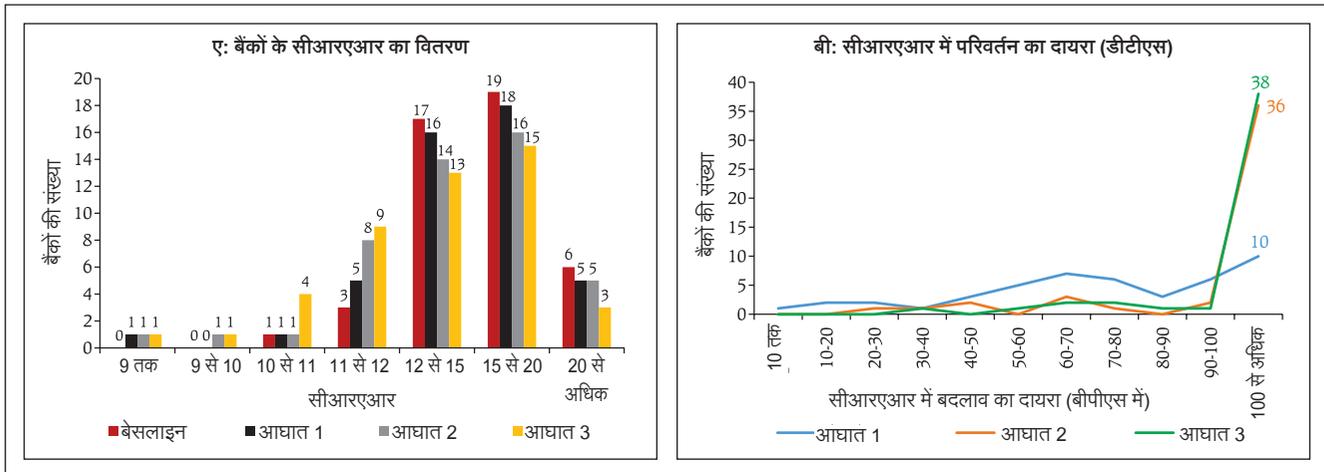


टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए
 आघात 1: शीर्षस्थ वैयक्तिक उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहता है।
 आघात 2: शीर्ष 2 वैयक्तिक उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहते हैं।
 आघात 3: शीर्ष 3 वैयक्तिक उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहते हैं।
स्रोत: रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना।

2.23 विचाराधीन बैंकों के शीर्ष तीन उधारकर्ता समूहों द्वारा चुकौती¹⁵ में विफलता वाले परिदृश्यों में, एक बैंक के सीआरएआर में 9 प्रतिशत से अधिक की गिरावट आणी (चार्ट 2.11 ए) तथा 38 बैंकों द्वारा अपने सीआरएआर में 1 प्रतिशत अंक से अधिक की गिरावट का सामना करना पड़ेगा (चार्ट 2.11 बी)।

2.24 शीर्ष दबावग्रस्त वैयक्तिक उधारकर्ताओं के मामले में बैंकों के ऋण संकेंद्रण पर दबाव परीक्षणों ने दर्शाया कि संबंधित बैंकों के तीन शीर्ष वैयक्तिक उधारकर्ताओं द्वारा ऋण चुकौती¹⁶ में विफल होने जैसे गंभीर परिदृश्य में दो बैंकों का सीआरएआर 9 प्रतिशत के नीचे गिर जाएगा (चार्ट 2.10 ए) और अधिकतर बैंकों द्वारा अपने सीआरएआर में सितंबर 2020 की स्थिति के

चार्ट 2.11: ऋण संकेंद्रण जोखिम: समूह उधारकर्ता – एक्सपोजर

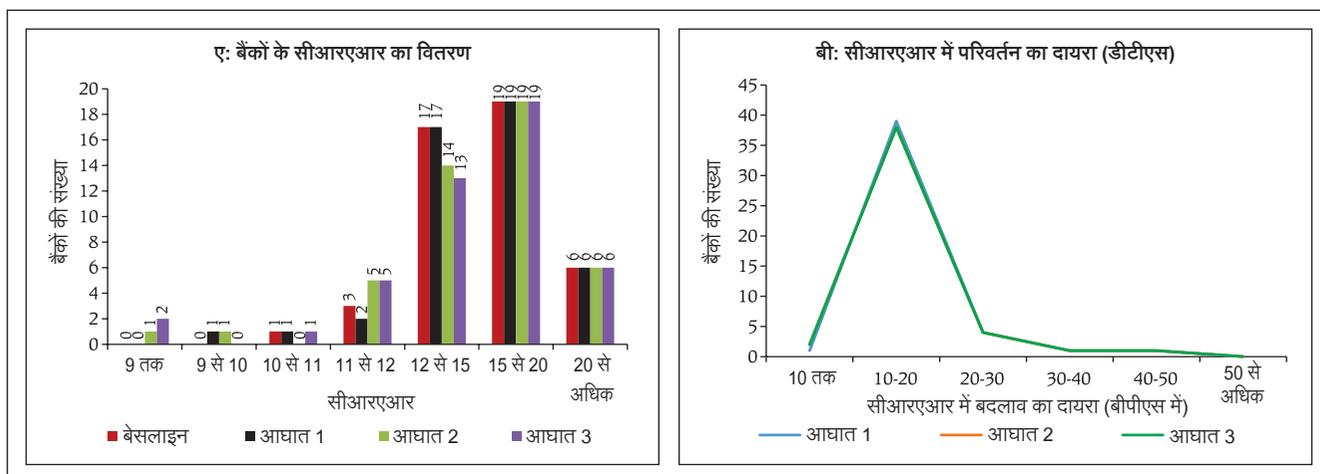


टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए
 आघात 1: शीर्षस्थ 1 समूह उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहता है।
 आघात 2: शीर्ष 2 समूह उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहते हैं।
 आघात 3: शीर्ष 3 समूह उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहते हैं।
स्रोत: रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना।

¹⁵ चूक होने की स्थिति में, यह मान लिया जाता है कि उधारकर्ता समूह मानक श्रेणी से अमानक श्रेणी में आ गया है।

¹⁶ विफल होने की स्थिति में यह मान लिया जाता है कि उधारकर्ता अमानक अथवा पुनर्संचित श्रेणी से हानि श्रेणी में आ गया है।

चार्ट 2.12: ऋण संकेंद्रण जोखिम: वैयक्तिक उधारकर्ता – दबावग्रस्त अग्रिम



टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए।

आघात 1: शीर्षस्थ 1 समूह उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहता है।
आघात 2: शीर्ष 2 समूह उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहते हैं।
आघात 3: शीर्ष 3 समूह उधारकर्ता भुगतान करने की अपनी प्रतिबद्धता में विफल रहते हैं।

स्रोत: रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना।

अनुसार दबावग्रस्त आस्तियों के निम्न स्तर पर होने के कारण केवल 10 से 20 बीपीएस की गिरावट का सामना करना पड़ेगा (चार्ट 2.12)।

सी. क्षेत्रवार ऋण जोखिम

2.25 उद्योग के भीतर (जीएनपीए अनुपात के उप क्षेत्र-वार ऐतिहासिक एसडी पर आधारित आघात) के उप-क्षेत्रों के प्रति एक्सपोजर के कारण जोखिम का भेद्यता की बैंक-वार संवेदनशीलता विश्लेषण विभिन्न उप-क्षेत्रों में बैंकों के जीएनपीए में बढ़ोतरी के बदलते परिमाण को दर्शाता है। आधारभूत धातु और धातु के उत्पादों तथा बुनियादी संरचना-ऊर्जा क्षेत्र को 2 एसडी का आघात दिए जाने की स्थिति में यह प्रणाली स्तर पर सीआरएआर को क्रमशः 19 बीपीएस और 18 बीपीएस कम करेगा (सारणी 2.2)।

सारणी 2.2: प्रणालीगत स्तर सीआरएआर में गिरावट
(आधार अंक, शीर्ष 10 सबसे संवेदनशील क्षेत्रों के लिए घटते क्रम में)

क्षेत्र	1 एसडी	2 एसडी
मूलभूत धातु और धातु उत्पाद (98%)	10	19
इंफ्रास्ट्रक्चर – ऊर्जा (62%)	9	18
इंफ्रास्ट्रक्चर – परिवहन (29%)	3	6
समस्त इंजीनियरिंग (38%)	3	5
कपड़ा (33%)	2	4
विनिर्माण (29%)	2	3
खाद्य प्रसंस्करण (26%)	1	3
वाहन, वाहनों के पुर्जों और परिवहन उपकरण (79%)	2	3
इंफ्रास्ट्रक्चर – संचार (56%)	1	2
सीमेंट और सीमेंट उत्पाद (61%)	1	1

टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए।

टिप्पणी: कोष्ठकों में दिए गए आंकड़े उस उप-क्षेत्र के जीएनपीए अनुपात में 1 एसडी आघात के कारण उसके जीएनपीए में हुई वृद्धि को दर्शाते हैं।

स्रोत: रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना।

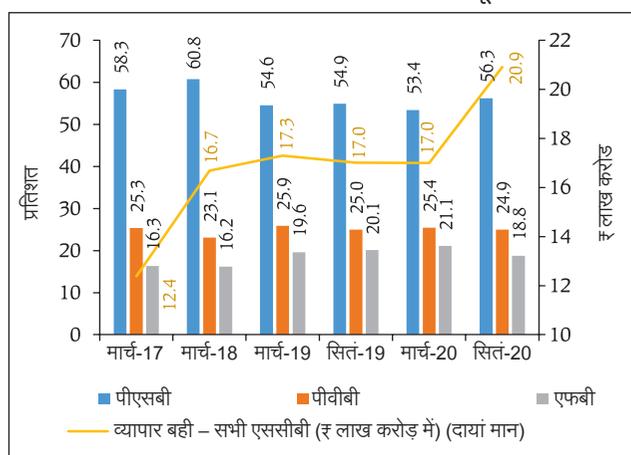
डी. ब्याज दर जोखिम

2.26 वर्ष 2020 के सितंबर-अंत की स्थिति के अनुसार निवेश पोर्टफोलियो का बाजार मूल्य, इन नमूना एससीबी के लिए उचित मूल्य को ध्यान में रखते हुए, ₹20.9 लाख करोड़ रहा, जो मार्च 2017 से अभी तक का सबसे अधिक तिमाही शेष है (चार्ट 2.13)। उचित मूल्यांकन के अधीन निवेशों के लगभग 95 प्रतिशत को बिक्री के लिए उपलब्ध (एफएस) के रूप में वर्गीकृत किया गया था।

2.27 एफएस पोर्टफोलियो की संवेदनशीलता (पीवी01¹⁷), एफबी द्वारा तिमाही में पीवी01 में 61.7 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज करने के साथ ही, समग्र रूप से जून 2020 की स्थिति की तुलना में बढ़ी। 10 वर्ष से अधिक की अवधि वाले एफबी खंड में कुछ पोर्जीशनिंग डेरीवेटिव की बचाव-व्यवस्था के आवरण के रूप में धारित बॉण्ड थे तथा ऐसे में ये पीवी01 जोखिम बढ़ाने में इनकी कोई भूमिका नहीं रही होगी। पीवी01 कर्व पोर्जीशनिंग के मामले में, पीएसबी में अवधि-वार वितरण 1-5 वर्ष के परिपक्वता खंड के पीवी01 में मामूली बढ़ोतरी एवं 10-वर्ष से अधिक वाले खंड में कमी सहित बढ़ोतरी की स्थिति को दर्शाता है, जबकि पीवीबी की स्थिति अपरिवर्तित देखी गई। वक्र की लंबी आवधिकता वाले खंड में काफी एक्सपोजर देखी गई (सारणी 2.3)।

2.28 सितंबर 2020 में समाप्त होने वाली तिमाही में सभी बैंक समूहों को सुदृढ़ मुनाफा अर्जित करते देखा गया, तथापि यह मुनाफा जून 2020 में समाप्त होने वाली तिमाही की तुलना में छोटे पैमाने का था। इसका कारण संभवतः सभी परिपक्वता अवधियों में बढ़ता हुआ प्रतिफल वक्र संचरण था (सारणी 2.4 एवं चार्ट 2.14)। सभी बैंक समूहों में उप पंचवर्षीय परिपक्वता अवधियों के मामले में ब्याज दर पोर्जीशन का महत्वपूर्ण संकेंद्रण, तथा अपेक्षाकृत कम अवधि वाले खंडों में उतार-चढ़ाव के उच्चतम स्थिति में होने के कारण आगे चलकर लाभ में व्यापार बहियों के योगदान की संभावना के बारे में सजग रहने की आवश्यकता है।

चार्ट 2.13: व्यापार बही पोर्टफोलियो: बैंक समूहवार



स्रोत: वैयक्तिक बैंक की प्रस्तुतियां और स्टाफ गणना

सारणी 2.3: एफएस पोर्टफोलियो का अवधि-वार पीवी01 वितरण (प्रतिशत में)

क्षेत्र	कुल (₹ करोड़ में)	< 1 वर्ष	1 वर्ष - 5 वर्ष	5 वर्ष - 10 वर्ष	> 10 वर्ष
पीएसबी	254.7 (270.7)	7.0 (7.3)	37.8 (32.4)	41.3 (42.3)	13.9 (18.0)
पीवीबी	72.1 (72.3)	18.7 (15.3)	52.7 (51.3)	26.2 (28.8)	2.3 (4.6)
एफबी	90.9 (56.2)	4.7 (5.6)	41.4 (45.3)	12.2 (15.7)	41.7 (33.4)

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए मूल्य दिसंबर 2020 के आंकड़े दर्शाते हैं।

स्रोत: वैयक्तिक बैंक प्रस्तुतियां और स्टाफ गणना

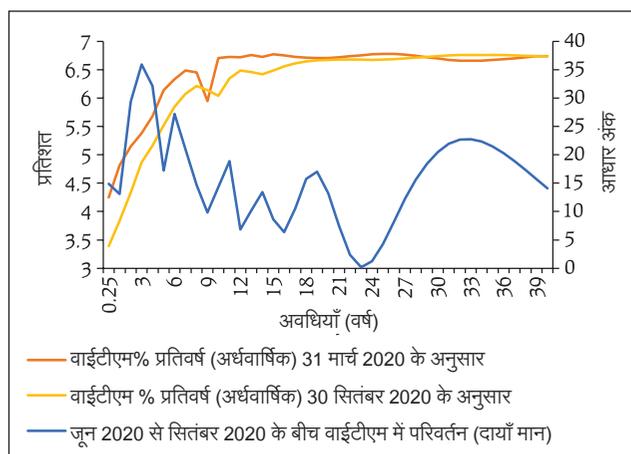
सारणी 2.4: ओओआई – प्रतिभूत कारोबार में लाभ/(हानि)

(₹ करोड़ में)

	मार्च-20	जून-20	सितं-20
सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक	8,271.07	10,081.93	6,843.91
निजी क्षेत्र के बैंक	4,185.46	9,882.76	4,520.88
विदेशी बैंक समूह	228.34	1,730.87	620.66

स्रोत: रिजर्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणियाँ

चार्ट 2.14: प्रतिफल कर्व और सभी अवधियों के प्रतिफलों में परिवर्तन



स्रोत: फिक्स्ड इनकम मनी मार्केट एंड डेरिवेटिव्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (फिममडा)

¹⁷ पीवी01 ब्याज दर में एक आधार अंक परिवर्तन से पोर्टफोलियो के संपूर्ण मूल्य में संवेदनशीलता का एक माप है।

सारणी 2.5: एचएफटी पोर्टफोलियो का अवधि-वार पीवी01 वितरण
(प्रतिशत में)

क्षेत्र	कुल (₹ करोड़ में)	< 1 वर्ष	1 वर्ष- 5 वर्ष	5 वर्ष - 10 वर्ष	> 10 वर्ष
पीएसबी	1.7 (2.0)	1.5 (0.5)	9.2 (3.2)	73.8 (31.6)	15.7 (64.8)
पीवीबी	11.7 (55.6)	10.2 (74.5)	59.9 (16.3)	17.3 (7.1)	12.6 (2.0)
एफबी	15.7 (11.5)	5.4 (0.5)	30.4 (40.3)	51.3 (48.0)	12.9 (11.3)

टिप्पणी: कोष्ठक में दिए गए मूल्य जून 2020 के आंकड़े दर्शाते हैं।

स्रोत: वैयक्तिक बैंक प्रस्तुतियां और स्टाफ गणना।

2.29 पीवीबी और एफबी में उनके एफएस बहियों के सापेक्ष ट्रेडिंग के लिए धारित पोर्टफोलियो (एचएफटी) में ब्याज दर एक्सपोजर अधिक था, तथापि पीवीबी ने अपने पीवी01 एक्सपोजर को काफी कम किया था। पीवीबी के मामले में परिपक्वता काल के अनुसार पीवी01 वितरण 1 वर्ष से कम की अवधियों से 1-5 वर्ष की अवधियों की तरफ एक्सपोजर का स्पष्ट विस्थापन दर्शाता है, जबकि एफबी के मामले में वक्र के दोनों छोर पर बढ़ी हुई पीवी01 संवेदनशीलता दिखाई देती है (सारणी 2.5)।

2.30 ब्याज दर में किसी प्रकार की सख्ती एफएस और एचएफटी श्रेणियों (सीधा असर) के अंतर्गत निवेश प्रतिलाभ को हतोत्साहित कर सकती है। प्रतिफल वक्र में 2.5 प्रतिशत अंकों की समानांतर बढ़ोतरी से प्रणाली स्तर पर पूंजी और सीआरएआर में क्रमशः 7.0 प्रतिशत और 93 आधार अंकों की कमी होगी (सारणी 2.6)।

2.31 सभी बैंक समूहों में सितंबर 2020 की स्थिति के अनुसार परिपक्वता तक धारित (एचटीएम) की स्थितियों का विश्लेषण यह बताता है कि पीएसबी द्वारा प्राप्त नहीं किए गए लाभ लगभग बराबर मात्रा में सभी एसडीएल और सरकारी प्रतिभूतियों (जी-सेक) में विस्तारित हैं, जबकि पीवीबी के मामले में ये सरकारी प्रतिभूतियों (जी-सेक) में संकेंद्रित हैं (चार्ट 2.15)। एसडीएल में खुले बाजार के परिचालन (ओएमओ) को संचालित करने का हाल का निर्णय पीएसबी को अपने एसडीएल प्राप्ति को एक निश्चित रूप प्रदान करने के लिए एक नया माध्यम प्रदान करेगा।

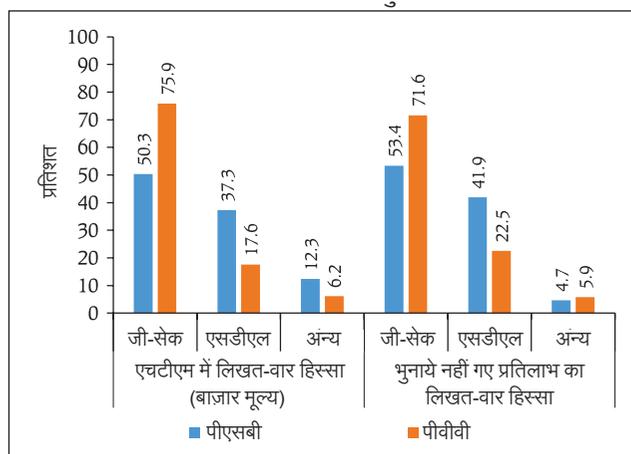
2.32 रिजर्व बैंक ने अपने दिनांक 12 अक्टूबर 2020 की अधिसूचना के माध्यम से बैंकों को एचटीएम श्रेणी के अंतर्गत 01 सितंबर 2020 से 31 मार्च 2021 तक अर्जित एसएलआर प्रतिभूतियों को 31 मार्च 2022 तक धारित रखने की अनुमति प्रदान की है, जिसकी समग्र रूप से अधिकतम सीमा एनडीटीएल का 22 प्रतिशत होगी। 30 सितंबर 2020 की स्थिति के अनुसार, एचटीएम श्रेणी में पीएसबी द्वारा धारित एसएलआर-पात्र प्रतिभूतियों का मूल्य उनके एनडीटीएल का 19.2 प्रतिशत रहा, जबकि पीवीबी और एफबी के मामले में यह क्रमशः 19 प्रतिशत और 0.5 प्रतिशत रहा।

सारणी 2.6: ब्याज दर जोखिम - बैंक समूह - आघात और प्रभाव
(250 आधार अंक के आघात के अंतर्गत आईएनआर प्रतिफल कर्ष में समानांतर ऊर्ध्वगामी परिवर्तन)

	सरकारी क्षेत्र के बैंक		निजी क्षेत्र के बैंक		विदेशी बैंक		सभी एससीबी	
	एफएस	एचएफटी	एफएस	एचएफटी	एफएस	एचएफटी	एफएस	एचएफटी
संशोधित अवधि	2.2	2.5	1.5	2.3	2.7	2.9	2.1	2.6
सीआरएआर में कमी (बीपीएस)	103		46		239		93	

स्रोत: वैयक्तिक बैंक प्रस्तुतियां और स्टाफ गणना।

चार्ट 2.15: एचटीएम पोर्टफोलियो – प्रकार के आधार पर
अलग-अलग किया हुआ



स्रोत: वैयक्तिक बैंक प्रस्तुतियां और स्टाफ गणना।

ई. इक्विटी मूल्य जोखिम

2.33 बैंक की पूंजी एवं लाभ पर इक्विटी कीमतों में कमी का प्रभाव यह संकेत देता है कि प्रणाली स्तर पर सीआरएआर में इक्विटी कीमतों में 55 प्रतिशत की कमी वाले अत्यंत प्रतिकूल परिदृश्य में 54 आधार अंकों की गिरावट आ सकती है (चार्ट 2.16)। विनियामक सीमाओं से उत्पन्न बैंकों के निम्न पूंजी बाजार एक्सपोजर के कारण समग्र प्रणाली के लिए प्रभाव सीमित है।

एफ. चलनिधि जोखिम

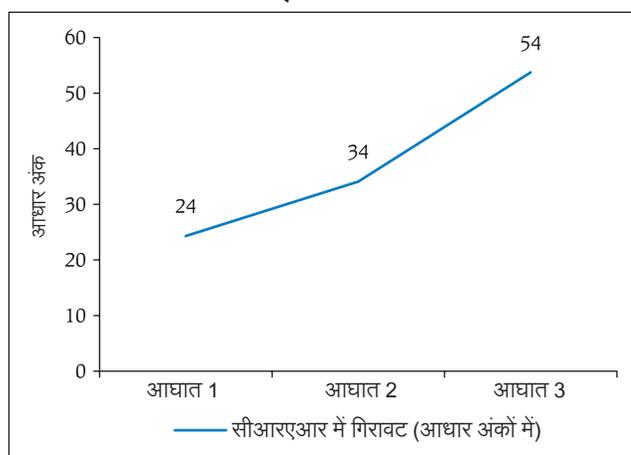
2.34 चलनिधि जोखिम विश्लेषण का उद्देश्य जमा राशियों की भारी मात्र में आकस्मिक निकासी के प्रभाव तथा स्वीकृत/वचनवद्ध/प्रत्याभूत क्रेडिट लाइन के अप्रयुक्त भागों के लिए मांग में बढ़ोतरी को जानना है। सामान्य तौर पर बैंक अपनी उच्चस्तरीय चलनिधि आस्तियों के साथ चलनिधि आघातों को झेलने की स्थिति में हो सकते हैं (एचक्यूएलए)¹⁸।

2.35 कल्पित परिदृश्य के अंतर्गत, अभीमित जमा राशियों¹⁹ का अधिक आहरण होगा और स्वीकृत कार्यशील पूंजी के साथ-साथ उनके ग्राहकों को बैंकों द्वारा की गई ऋण प्रतिबद्धताओं तथा गारंटियों के उपयोग संबंधी सीमाओं के अप्रयुक्त भागों को प्रयोग में लाने में साथ-साथ बढ़ोतरी होगी। दैनिक चलनिधि जरूरतों को पूरा करने के लिए अपने एचक्यूएलए का प्रयोग करने पर कुल जमा राशियों में से लगभग 15 प्रतिशत की अचानक और अनपेक्षित निकसियों वाले परिदृश्य में, अपनी प्रतिबद्धता वाली क्रेडिट लाइन में से 75 प्रतिशत का उपयोग करने के साथ-साथ, 46 नमूना बैंकों में से 45 आघात-सह बने रहेंगे (चार्ट 2.17)।

II.1.6 बॉटम-अप दबाव परीक्षण: डेरीवेटिव पोर्टफोलियो

2.36 30 सितंबर 2020 के संदर्भ में हुए चुनिंदा बैंकों²⁰ के डेरीवेटिव पोर्टफोलियो पर क्रमिक बॉटम-अप दबाव परीक्षण (संवेदनशीलता विश्लेषण) किए गए। नमूना के रूप में लिए गए बैंकों ने ब्याज एवं विदेशी विनिमय दरों पर अलग-अलग चार आघातों के परिणामों को रिपोर्ट किया। ब्याज दरों पर आघात का असर 100 से 250 आधार अंकों के बीच रहा, जबकि

चार्ट 2.16: इक्विटी कीमत जोखिम



टिप्पणी: चुनिंदा 46 एससीबी की प्रणाली के लिए।

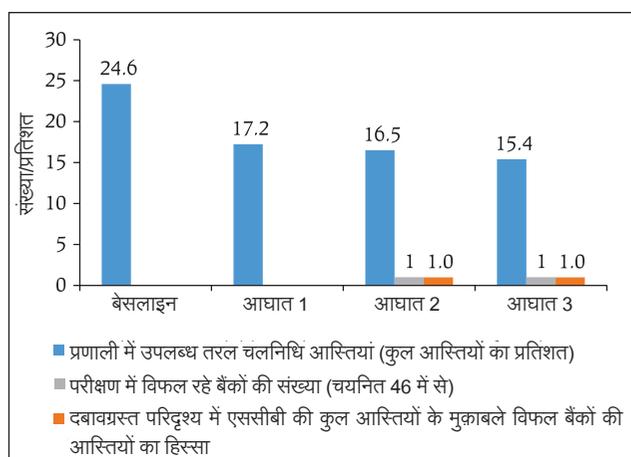
आघात-1 : इक्विटी कीमतों में 25 प्रतिशत तक की गिरावट

आघात-2 : इक्विटी कीमतों में 35 प्रतिशत तक की गिरावट

आघात-3 : इक्विटी कीमतों में 55 प्रतिशत तक की गिरावट

स्रोत: रिज़र्व बैंक पर्यवेक्षी विवरणी और स्टाफ गणना

चार्ट 2.17: चलनिधि जोखिम - आघात और परिणाम



टिप्पणी: 1. परीक्षण में किसी बैंक को विफल तब माना गया जब वह दबावग्रस्त परिदृश्य के अंतर्गत अपनी

चलनिधि आस्तियों की सहायता से अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने में असमर्थ रहा - दबावग्रस्त स्थितियों के तहत तरल आस्तियों का स्टॉक नकारात्मक हो गया।

2. चलनिधि आघातों में 75 प्रतिशत प्रतिबद्ध क्रेडिट लाइन की मांग (स्वीकृत कार्यशील पूंजी सीमाओं के अप्रयुक्त भागों के साथ-साथ उनके ग्राहकों के लिए ऋण प्रतिबद्धताएं) और निम्नलिखित बीमा-रहित जमा राशियों के एक हिस्से के आहरण को भी शामिल किया गया है:

आघात	आघात 1	आघात 2	आघात 3
बीमा-रहित जमा राशियों के आहरण का प्रतिशत	10	12	15

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

¹⁸ एचक्यूएलए की गणना अपेक्षित सीआरएआर, अधिशेष एसएलआर निवेशों, एनडीटीएल (एमएसएफ के तहत) (26 जून 2020 के परिपत्र डीओआर.सं.आरईटी.बीसी 77/12.02.001/2019-20 के अनुसरण में) के 3 प्रतिशत के बराबर एसएलआर निवेशों और एनडीटीएल के 15 प्रतिशत के बराबर के अतिरिक्त एसएलआर निवेशों के रूप में की गई (17 अप्रैल 2020 के परिपत्र डीबीआर.बीपी. बीसी. सं. 65/21.04.098/2019-20 के अनुसरण में)।

¹⁹ कुल जमा राशियों में से लगभग 49.1 प्रतिशत बीमा-रहित हैं, जो ₹5 लाख जमा राशि की बीमा सीमा पर आधारित है (स्रोत: डीआईसीजीसी की 2019-20 की वार्षिक रिपोर्ट)।

²⁰ 20 बैंकों को नमूना मानकर उनके डेरीवेटिव पोर्टफोलियो पर दबाव परीक्षण किए गए, जिसमें बड़े सक्रिय डीलर और ब्याज दर स्वेप प्रतिपक्षकार शामिल हैं।

विदेशी विनिमय दरों के लिए कल्पित बढ़ोतरी/गिरावट वाले आघातों का प्रतिशत 20 रहा। दबाव परीक्षण वैयक्तिक आघातों के लिए एकल-आधार पर संपादित किए गए।

2.37 परिणामों से ज्ञात होता है कि कुछ एफबी ने सीईटी 1 पूंजी के अनुपात के रूप में अत्यधिक ऋणात्मक निवल मार्क-टू-मार्केट (एमटीएम) प्रभाव दर्शाए हैं जबकि पीएसबी और पीवीबी के मामले में अधिकांशतः यह प्रभाव दबा रहा है (चार्ट 2.18)। चूंकि जोखिमों को केवल स्थानांतरित किया जा सकता है, समाप्त नहीं इसलिए वे कॉर्पोरेट तुलन पत्रों में बने रहते हैं। इसी क्रम में, कॉर्पोरेट के हेजिंग प्रोफाइल, जैसा कि प्रकटीकरण में दिया गया है, का मूल्यांकन, जोखिमों को सही तरीके से समझने में मदद करेगा।

2.38 दबाव परीक्षण के परिणाम दर्शाते हैं कि ब्याज दर आघातों और विनिमय दर आघातों का औसत निवल प्रभाव कुल पूंजीगत निधियों के 2.5 प्रतिशत की सीमा में है (2.19)। ब्याज दर खंड में डेरिवेटिव के एक्सपोजर में अधिविक्रय रहा अर्थात् ब्याज दर बढ़ने पर उन्हें लाभ होता है जोकि मार्च 2020 की उनकी स्थिति के समान है। जहां तक विदेशी मुद्रा डेरिवेटिव के एक्सपोजर का संबंध है, चुकता करने वाला प्रोफाइल यूएसडी के कम अधिविक्रय के अनुरूप स्थिर है।

II.2 अनुसूचित प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंक

2.39 अनुसूचित प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंकों (एसयूसीबी) के निष्पादन में मार्च 2020 से सितंबर 2020 के बीच गिरावट रही। प्रणालीगत स्तर पर उनका जीएनपीए अनुपात मार्च 2020 के 9.89 प्रतिशत की तुलना में गिरकर सितंबर 2020 में 10.36 प्रतिशत हो गया जबकि इस अवधि के दौरान उनके प्रावधान कवरेज अनुपात²¹ में सुधार आया और वह 61.88 प्रतिशत से बढ़कर 65.13 प्रतिशत हो गया। प्रणालीगत स्तर²² पर सीआरएआर मार्च 2020 में रिपोर्ट किए गए 9.70 प्रतिशत की तुलना में घटकर सितंबर 2020²³ में 9.24 प्रतिशत रहा। इस अवधि के दौरान एसयूसीबी का चलनिधि अनुपात²⁴ 33.95 प्रतिशत से बढ़कर 34.35 प्रतिशत हो गया।

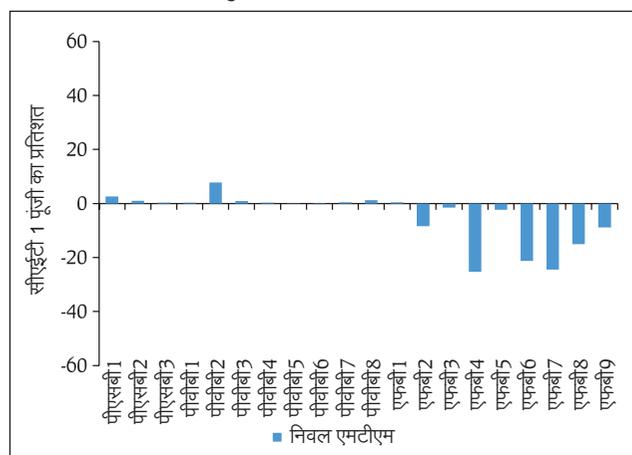
²¹ प्रावधान कवरेज अनुपात = एनपीए हेतु धारित प्रावधान*100/जीएनपीए

²² 53 एसयूसीबी शामिल हैं।

²³ आंकड़े अनंतिम हैं और ओएसएस विवरणियों पर आधारित हैं।

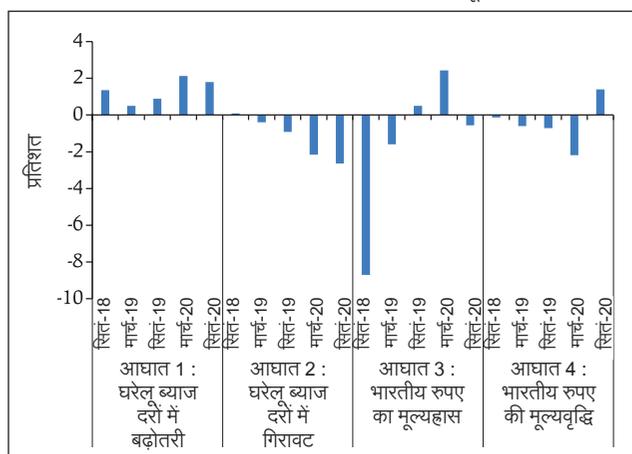
²⁴ चलनिधि अनुपात = 100* (नकदी + बैंकों से प्राप्य + अन्य संस्थानों से प्राप्य + एसएलआर निवेश)/कुल आस्तियां

चार्ट 2.18: कुल डेरिवेटिव पोर्टफोलियो का मार्क-टू-मार्केट (एमटीएम) – चुनिंदा बैंक, सितंबर 2020



नोट: पीएसबी : सरकारी बैंक, पीवीबी : निजी बैंक, एफबी : विदेशी बैंक
स्रोत : नमूना बैंक (डेरिवेटिव पोर्टफोलियो पर उपरिगामी दबाव परीक्षण)

चार्ट 2.19 : चुनिंदा बैंकों के डेरिवेटिव पोर्टफोलियो पर आघातों का प्रभाव (आघात करने पर निवल एमटीएम में बदलाव) (पूंजी निधियों का प्रतिशत)



नोट : लगाए गए आघात की स्थिति में बेसलाइन के सापेक्ष निवल एमटीएम में बदलाव।
स्रोत : नमूना बैंक (डेरिवेटिव पोर्टफोलियो पर उपरिगामी दबाव परीक्षण)

II.2.1 दबाव परीक्षण – क्रेडिट जोखिम

2.40 एसयूसीबी के सीआरएआर पर क्रेडिट जोखिम आघातों का प्रभाव चार अलग-अलग परिदृश्यों²⁵ में किया गया। आघात लगाने से पहले ही चार एसयूसीबी का सीआरएआर 9 प्रतिशत के न्यूनतम विनियामकीय अपेक्षाओं से कम था। परिणाम दर्शाते हैं कि (i) अवमानक आस्तियों में 1 एसडी आघात के तहत, प्रणालीगत स्तर पर सीआरएआर गिरकर 9.08 प्रतिशत होगा और एक एसयूसीबी न्यूनतम सीआरएआर संबंधी अपेक्षाओं को हासिल करने में विफल रहेगा (इसके अलावा चार एसयूसीबी ऐसे थे जिनका सीआरएआर आघात के पहले ही 9 प्रतिशत से कम था); (ii) अवमानक आस्तियों में 2 एसडी आघात के तहत सीआरएआर 8.90 प्रतिशत तक गिर जाएगा और दो अतिरिक्त एसयूसीबी (सभी में से सात) न्यूनतम सीआरएआर को हासिल करने में विफल रहेंगे; (iii) हानि अग्रिमों में 1 एसडी आघात के तहत, प्रणालीगत स्तर पर सीआरएआर 8.52 प्रतिशत तक गिर जाएगा तथा अन्य चार एसयूसीबी (उन चारों एसयूसीबी के अतिरिक्त जिनका सीआरएआर पहले ही 9 प्रतिशत से कम है) न्यूनतम सीआरएआर अपेक्षाओं को बनाए रखने में विफल रहेंगे; और (iv) हानि अग्रिमों में 2 एसडी आघात के तहत, प्रणालीगत स्तर पर सीआरएआर 7.51 प्रतिशत तक गिर जाएगा और अतिरिक्त दो एसयूसीबी (सभी में से दस) न्यूनतम सीआरएआर अपेक्षाओं को बनाए रखने में विफल रहेंगे।

II.2.2 दबाव परीक्षण – चलनिधि जोखिम

2.41 दो अलग-अलग परिदृश्यों के तहत चलनिधि पर दबाव परीक्षण किया गया यथा 1-28 दिवसीय समयावधि (टाइम बकेट) में नकदी बहिर्वाह में i) 50 प्रतिशत और ii) 100 प्रतिशत की बढ़ोतरी करके जिसमें नकदी अंतर्वाह अपरिवर्तित रहा है। दोनों ही परिदृश्यों के तहत, क्रमशः 18 और 30 एसयूसीबी को चलनिधि दबाव²⁶ का सामना करना पड़ेगा।

II.3 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां

2.42 कुछ बड़े एनबीएफसी में छिट-पुट क्रेडिट की घटनाओं, निधियां प्राप्त करने की चुनौतियों का सामना करने और समग्र

आर्थिक गिरावट के साथ बाद की अवधि में महामारी द्वारा दबाव को और बढ़ा देने जैसे कारणों से गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) की वृद्धि में 2019-20 में गिरावट आई। वर्ष 2018-19 में एनबीएफसी द्वारा दिए गए 22 प्रतिशत ऋण की तुलना में वर्ष 2019-20 के दौरान दिए गए ऋण में 4.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई। एनबीएफसी का कुल अग्रिमों में से सकल एनपीए मार्च 2019 के 5.3 प्रतिशत की तुलना में मार्च 2020 में बढ़कर 6.3 प्रतिशत हो गया। आस्ति गुणवत्ता में और गिरावट आने की संभावना है क्योंकि महामारी के कारण कारोबारी परिचालन बाधित हुए हैं, विशेष रूप से उद्योग क्षेत्र के, जो एनबीएफसी ऋण का प्रमुख प्राप्तकर्ता है।

II.3.3 दबाव परीक्षण – ऋण जोखिम

2.43 एनबीएफसी क्षेत्र के ऋण जोखिम हेतु ऐसे 200 एनबीएफसी²⁷ के नमूनों पर प्रणालीगत स्तर पर दबाव परीक्षण किया गया जिनका आस्ति आकार मार्च 2020 की स्थिति के अनुसार ₹ 1000 करोड़ से अधिक था।

2.44 एनबीएफसी क्षेत्र के समग्र ऋण जोखिम हेतु प्रणाली स्तर पर दबाव परीक्षण बेसलाइन, मध्यम और उच्च जोखिमों के तीन परिदृश्यों के तहत किए गए। बेसलाइन परिदृश्य मार्च 2020 की स्थिति के अनुसार एनबीएफसी क्षेत्र की पूंजी पर्याप्तता की स्थिति दर्शाता है और मध्यम एवं उच्च जोखिम परिदृश्य क्षेत्र की पूंजी पर्याप्तता की स्थिति में 1 एसडी और 2 एसडी के तहत जीएनपीए बढ़ जाता है। 2 एसडी के उच्च जोखिम आघात के तहत प्रणालीगत स्तर पर जीएनपीए बढ़ जाता है (क्षेत्र का जीएनपीए 6.8 प्रतिशत से बढ़कर 8.4 प्रतिशत हो जाता है)। यह पाया गया कि ऋण जोखिम हेतु बेसलाइन, मध्यम और उच्च जोखिम परिदृश्यों में एनबीएफसी की पूंजी पर्याप्तता 15 प्रतिशत से अधिक के स्तर पर अर्थात्

²⁵ चार परिदृश्य इस प्रकार हैं: i) जीएनपीए में 1 एसडी आघात (अवमानक अग्रिमों के रूप में वर्गीकृत), ii) जीएनपीए में 2 एसडी आघात (अवमानक अग्रिमों के रूप में वर्गीकृत), iii) जीएनपीए में 1 एसडी आघात (हानि अग्रिमों के रूप में वर्गीकृत), और iv) जीएनपीए में 2 एसडी आघात (हानि अग्रिमों के रूप में वर्गीकृत)। एसडी का अनुमान 10 वर्षों के आंकड़ों का प्रयोग करते हुए लगाया गया था (अनुबंध-2)।

²⁶ आरबीआई के दिशानिर्देशों के अनुसार, 1 से 28 दिवसीय समयावधि में विसंगति [ऋणात्मक अंतराल अर्थात् नकद अंतर्वाह से नकद बहिर्वाह को घटाकर] बहिर्वाहों के 20 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिए। आघात के बाद वे एसयूसीबी जिनमें विसंगति 20 प्रतिशत से अधिक है, बहुत कम चलनिधि मार्जिन के तहत कार्य कर रहे हैं।

²⁷ नमूनों में 10 जमा स्वीकार करने वाली और 190 जमा स्वीकार न करने वाली प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण एनबीएफसी शामिल हैं। नमूनों की कुल आस्तियों का आकार 29.68 करोड़ था जिसमें क्षेत्र की कुल आस्तियों के आकार का लगभग 81 प्रतिशत हिस्सा शामिल है। दबाव परीक्षण की विस्तृत पद्धति के बारे में अनुबंध 2 में चर्चा की गई है।

क्रमशः 24.5, 24.1 और 23.7 प्रतिशत पर बनी रही (चार्ट 2.20)।

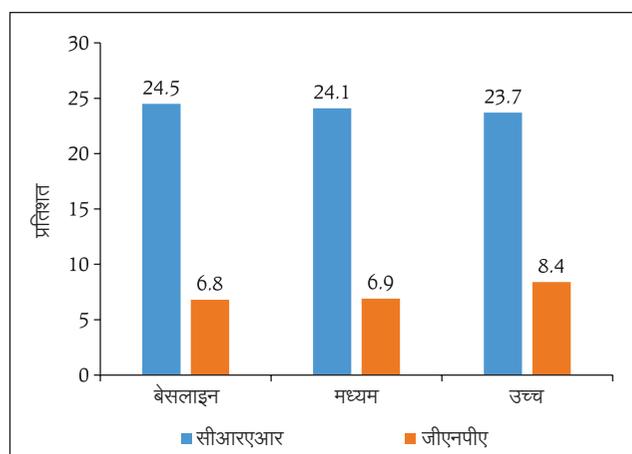
2.45 वैयक्तिक एनबीएफसी स्तर पर किए गए दबाव परीक्षण दर्शाते हैं कि बेसलाइन, मध्यम और उच्च जोखिम परिदृश्यों में 3.3 प्रतिशत, 9.7 प्रतिशत और 10.3 प्रतिशत एनबीएफसी का सीआरएआर न्यूनतम विनियामकीय अपेक्षाओं से कम रहेगा।

II.4 अंतर्संबद्धता

II.4.1 वित्तीय प्रणाली का नेटवर्क^{28 29}

2.46 वित्तीय प्रणाली की कल्पना एक नेटवर्क के रूप में की जा सकती है जिसमें वित्तीय संस्थानों को नोड और द्विपक्षीय एक्सपोजर को इन नोड्स को जोड़ने वाले लिंक के रूप में देखा जा सकता है। हालांकि, ये लिंक दक्षता लाभ और जोखिमों के विविधीकरण को सक्षम करते हैं, लेकिन वे संकट की स्थिति में जोखिम संचरण के वाहक बन सकते हैं। नेटवर्क के माध्यम से जोखिम प्रसार से जुड़ी बारीकियों को समझना वित्तीय और समष्टि आर्थिक स्थिरता की सुरक्षा हेतु उपयुक्त नीतिगत पहल खोज निकालने में उपयोगी होता है।

चार्ट 2.20: एनबीएफसी में क्रेडिट जोखिम – प्रणालीगत स्तर

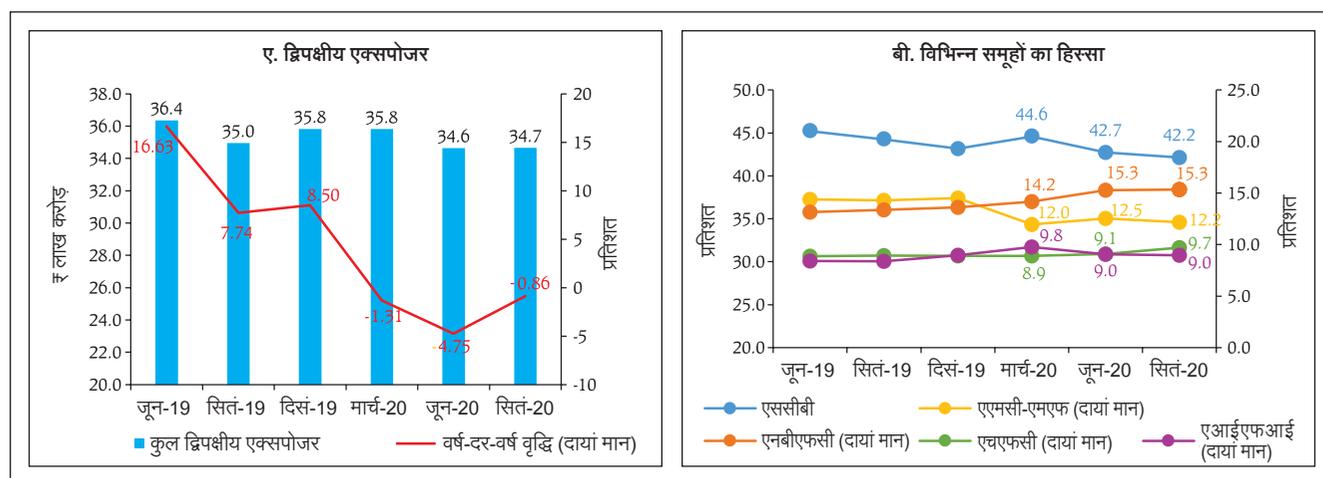


स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

2.47 वित्तीय प्रणाली में संस्थाओं के बीच कुल बकाया द्विपक्षीय एक्सपोजर³⁰ में जून 2020 में तीव्र गिरावट होने के बाद मामूली रूप से बढ़ोतरी हुई जिसका एक बड़ा कारण था पीवीबी द्वारा वित्तीय प्रणाली से कम उधार लेना (चार्ट 2.21 ए)।

2.48 वर्ष 2020-21 की पहली छमाही में एससीबी की हिस्सेदारी में गिरावट होने के बावजूद सितंबर 2020 में भारतीय

चार्ट 2.21: वित्तीय प्रणाली में संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय एक्सपोजर



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

²⁸ विश्लेषण में उपयोग किए गए नेटवर्क मॉडल का विकास प्रोफेसर शेरी मार्कोस (यूनिवर्सिटी ऑफ एसेक्स) और डॉ सिमोन गियानसांटे (बाथ यूनिवर्सिटी) ने वित्तीय स्थिरता इकाई, भारतीय रिजर्व बैंक के सहयोग से किया है।

²⁹ यहां पर और अगले भाग में प्रस्तुत विश्लेषण निम्नलिखित आठ क्षेत्रों की 199 संस्थाओं के डाटा पर आधारित है: एससीबी, एसयूसीबी (एसयूसीबी), एएमसी-एमएफ, एनबीएफसी, एचएफसी, बीमा कंपनियां, पेंशन फंड और एआईएफआई। कवर की गई 190 संस्थाओं में शामिल हैं - 70 एससीबी, 20 एसयूसीबी, 22 एएमसी-एमएफ (जो म्यूचुअल फंड क्षेत्र के 90 प्रतिशत से अधिक एयूएम को कवर करते हैं), 32 एनबीएफसी (जमा राशि स्वीकार करने वाली और जमा राशि स्वीकार न करने वाली प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियां, जो एनबीएफसी आस्तियों के लगभग 60 प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करती हैं), 21 बीमा कंपनियां (जो इस क्षेत्र की 90 प्रतिशत से ज्यादा आस्तियों को कवर करती हैं), 14 एचएफसी (जो एचएफसी की कुल आस्तियों के 90 प्रतिशत से अधिक भाग का प्रतिनिधित्व करती हैं), 7 पीएफ और 4 एआईएफआई (नाबार्ड, एक्विजि, एनएचबी और सिडबी)।

³⁰ समान क्षेत्र की संस्थाओं के बीच एक्सपोजर शामिल हैं।

वित्तीय प्रणाली में एससीबी का सबसे अधिक द्विपक्षीय एक्सपोजर बना रहा। अन्य संस्थाओं (अन्य एससीबी सहित) को एससीबी द्वारा दिया गया ऋण और लिया गया उधार, प्रणाली के कुल ऋण और उधार का 42.2 प्रतिशत रहा (चार्ट 2.21 बी)। बैंक समूहों के बीच, पूरे वित्तीय क्षेत्र के मुकाबले पीएसबी की निवल प्राप्य की स्थिति बनी रही, जिसमें पिछले एक वर्ष के दौरान बढ़ोतरी हुई। वहीं दूसरी ओर पीवीबी की निवल देय की स्थिति रही, जिसमें वर्ष-दर-वर्ष आधार पर गिरावट रही। एफबी समान रूप से संतुलित रहे (चार्ट 2.22 और 2.23)।

2.49 वर्ष 2019-20 के दौरान भारी गिरावट के बाद जब उनका एयूएम कम हो गया, एएमसी-एमएफ की हिस्सेदारी 2020-21 की पहली छमाही में स्थिर बनी रही। इसी समान अवधि के दौरान एनबीएफसी, एचएफसी, बीमा कंपनियों तथा पेंशन फंडों की हिस्सेदारी में क्रमशः 15.3 प्रतिशत, 9.7 प्रतिशत, 9.6 प्रतिशत एवं 1.8 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई (चार्ट 2.21 बी)। वहीं दूसरी तरफ, एआईएफआई की हिस्सेदारी कम होकर 9.0 प्रतिशत हो गई।

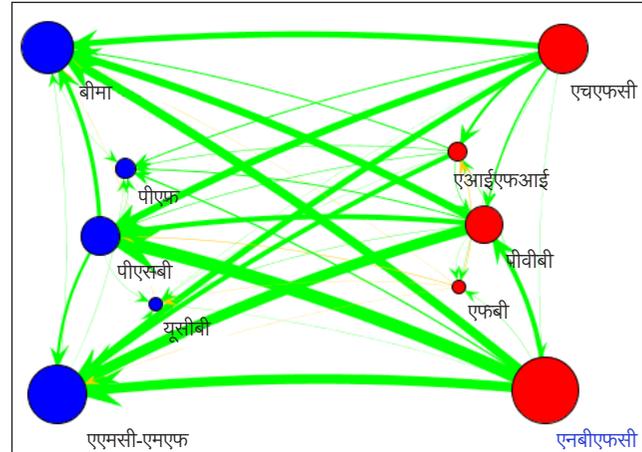
2.50 अंतर-क्षेत्रवार³¹ एक्सपोजर के अनुसार एएमसी-एमएफ, जिनके बाद बीमा कंपनियों का स्थान है, ने प्रणाली को सबसे अधिक निधि उपलब्ध कराई, जबकि एनबीएफसी, जिनके बाद एचएफसी का स्थान है, सबसे बड़े निधि प्राप्तकर्ता रहे। वित्तीय प्रणाली से निधियां प्राप्त करने वाली संस्थाओं के मामले में देखा जाए तो पीवीबी में 40 प्रतिशत के आसपास गिरावट दर्ज हुई (वर्ष-दर-वर्ष), जबकि एनबीएफसी तथा एचएफसी के देय में क्रमशः 10.7 प्रतिशत और 1.8 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई (चार्ट 2.23)।

2.51 पिछले एक वर्ष के दौरान एएमसी-एमएफ में वित्तीय प्रणाली से प्राप्य राशियों में काफी गिरावट दर्ज हुई, जबकि इस मामले में पीएसबी और बीमा कंपनियों ने बढ़ोतरी दर्ज की, जोकि अन्य प्रमुख निधि प्रदाता हैं (चार्ट 2.23)।

ए. अंतर-बैंक बाजार

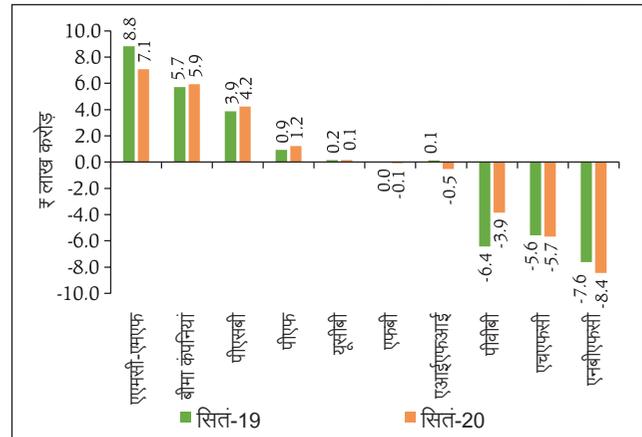
2.52 हाल के वर्षों की प्रवृत्ति के अनुरूप अंतर-बैंक बाजार के आकार का संकुचित होना जारी रहा। बैंकिंग प्रणाली की कुल आस्तियों के हिस्से के रूप में निधि-आधारित³² अंतर-बैंक

चार्ट 2.22: वित्तीय प्रणाली का नेटवर्क प्लेट, सितंबर 2020



नोट: प्राप्य और देय में एक ही समूह की संस्थाओं के बीच के लेनदेन शामिल नहीं हैं। लाल रंग के गोले निवल देय वाली संस्थाएं हैं और नीले लाल रंग के गोले निवल प्राप्य वाली संस्थाएं हैं।
स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

चार्ट 2.23 संस्थानों की निवल प्राप्य राशियां (+) / देय राशियां (-)



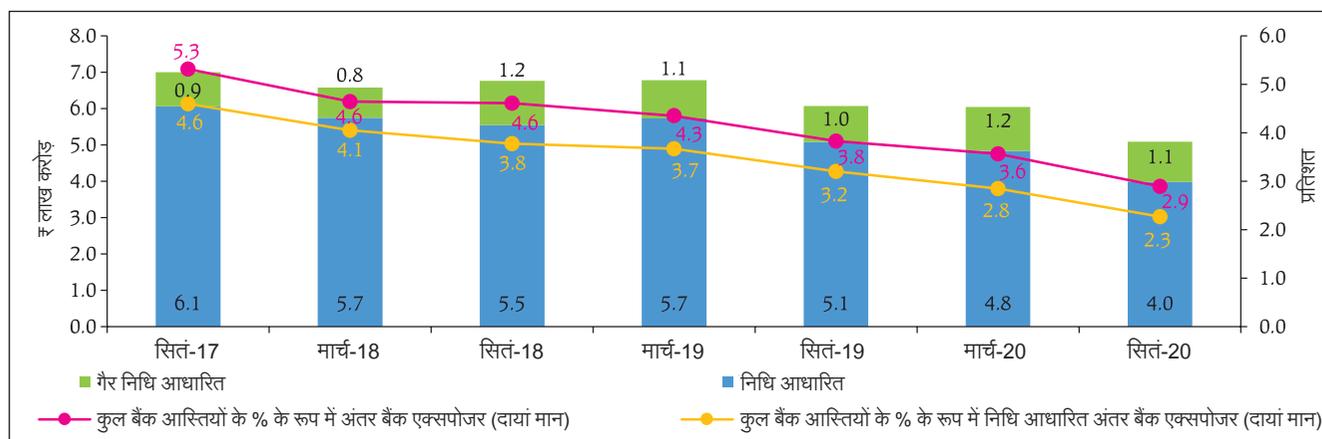
स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

³¹ अंतर क्षेत्रीय एक्सपोजर में वित्तीय प्रणाली में शामिल एक ही क्षेत्र की संस्थाओं के बीच के लेनदेन शामिल नहीं हैं।

³² निधि-आधारित एक्सपोजर में अल्पावधिक और दीर्घावधिक दोनों तरह के एक्सपोजर शामिल हैं। अल्पावधिक एक्सपोजर पर डाटा सात श्रेणियों - अर्थात रिपो (नॉन-सेंट्रली क्लियर्ड); कॉल मनी; वाणिज्यिक पत्र; जमा प्रमाण पत्र; अल्पावधि ऋण; अल्पावधि जमा और अन्य अल्पावधि एक्सपोजरों, में एकत्र किया जाता है। दीर्घावधि एक्सपोजर से संबंधित डाटा पांच श्रेणियों - इक्विटी; दीर्घावधि कर्ज; दीर्घावधि ऋण; दीर्घावधि जमा राशियों और अन्य दीर्घावधि देयताओं, में एकत्र किया जाता है।

गैर-निधि आधारित एक्सपोजर में, बकाया बैंक गारंटी, बकाया साख पत्र और डेरिवेटिव बाजार में धनात्मक मार्क-टू-मार्केट पोजिशन (उन एक्सपोजर को छोड़कर जिनके लिए सीसीआईएल द्वारा निपटान की गारंटी है) शामिल हैं।

चार्ट 2.24: अंतर-बैंक बाजार



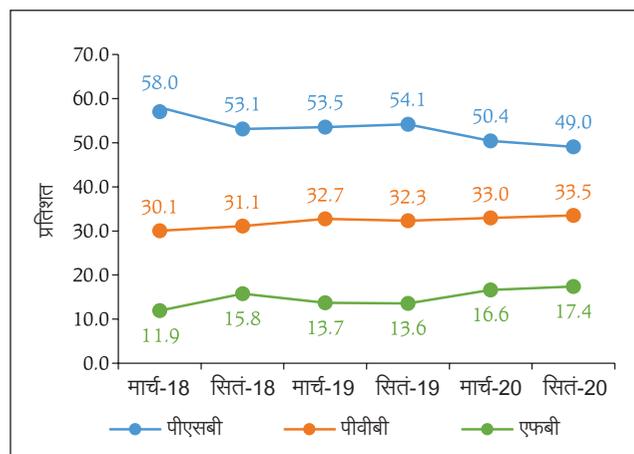
स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

एक्सपोजर में पिछले प्रवृत्तियों के अनुरूप बैंकिंग प्रणाली में अधिशेष चलनिधि रहने के कारण 2020-21 की पहली छमाही में गिरावट रही (चार्ट 2.24)। गैर-निधि आधारित अंतर-बैंक एक्सपोजर में मामूली गिरावट आई।

2.53 अंतर-बैंक बाजार में पीएसबी का वर्चस्व बना रहा, हालांकि, उनकी हिस्सेदारी में गिरावट जारी रही और 2020-21 की पहली छमाही के दौरान 50 प्रतिशत से कम हो गई, जबकि इसी अवधि के दौरान पीवीबी एवं एफबी की हिस्सेदारी बढ़ गई (चार्ट 2.25)।

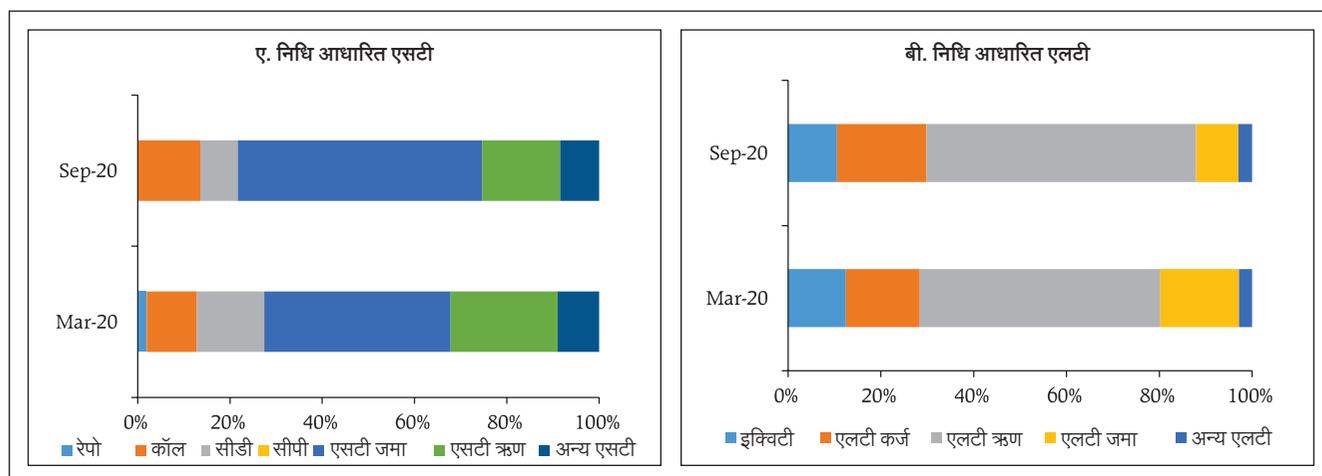
2.54 अंतर-बैंक बाजार में लगभग 71 प्रतिशत हिस्से के साथ अल्पावधिक (एसटी) एक्सपोजर का वर्चस्व रहा, जिसमें एसटी जमाराशियों का हिस्सा सबसे अधिक था तथा उनके बाद एसटी ऋणों का था। दीर्घावधिक (एलटी) निधि-आधारित अंतर-बैंक एक्सपोजर के मामलों में 58.2 प्रतिशत हिस्सेदारी एलटी ऋणों की थी (चार्ट 2.26)।

चार्ट 2.25: अंतर-बैंक बाजार में विभिन्न बैंक समूह सितंबर 2020



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

चार्ट 2.26: निधि आधारित अंतर-बैंक बाजार की संरचना



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

बी. अंतर-बैंक बाजार – नेटवर्क संरचना और संबद्धता

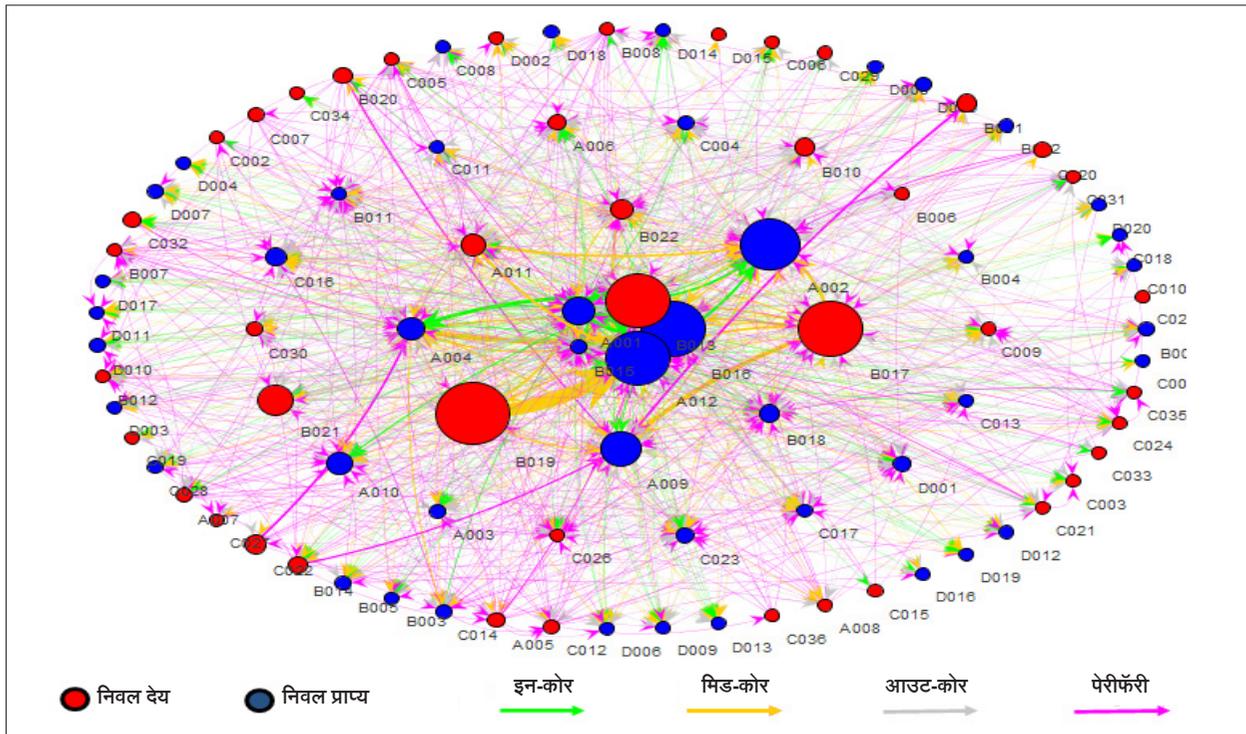
2.55 अंतर-बैंक बाजार के पास एक विशिष्ट कोर-पेरीफ़री नेटवर्क स्ट्रक्चर^{33 34} होता है। वर्ष 2020 के सितंबर-अंत में, परिधि के सबसे भीतरी कोर में पांच बैंक थे तथा इसके मिड-कोर वृत्त में 8 बैंक थे। यह पिछले 6 वर्षों के दौरान देखे गए ढर्रे के अनुरूप है, जिसके अनुसार परिधि के सबसे भीतरी कोर में बैंकों की संख्या 2 से 5 के बीच थी और इनमें सबसे बड़े पीएसबी अथवा पीवीबी शामिल हैं। अधिकांश विदेशी बैंक तथा लगभग सभी पुराने निजी बैंक इस परिधि के सबसे बाहरी भाग में बने रहे, जो इनको प्रणाली में सबसे कम जुड़ाव वाले बैंक बनाता है। कुछ बड़े एफबी सहित, शेष पीएसबी तथा पीवीबी, इस परिधि

के मध्य एवं बाहरी कोर का निर्माण करते हैं। अप्रैल 2020 से कुछ पीएसबी के विलय के कारण इसका कोर तथा बाहरी-कोर प्रभावित हुआ है (चार्ट 2.27)।

2.56 इसमें उल्लेखनीय है कि जो सर्वाधिक जुड़ी (और परिणामस्वरूप सबसे भीतरी कोर में) संस्थाएं हैं वे निवल उधारदाता हैं अथवा निवल उधारकर्ता हैं परंतु उनकी प्राप्य राशियां/देय उन संस्थाओं की तुलना में निरपेक्ष संदर्भ में छोटी हो सकती हैं जो प्रणाली के साथ उस रूप में नहीं जुड़ी हैं।

2.57 बैंकिंग प्रणाली (एससीबी) में अंतर-संबद्धता के स्तर में, जैसा कि संबद्धता अनुपात³⁵ द्वारा मापा गया है, पिछले कुछ वर्षों में धीरे-धीरे गिरावट रहने के बाद सितंबर 2020 में बढ़ोतरी हुई

चार्ट 2.27: भारतीय बैंकिंग प्रणाली का नेटवर्क ढांचा (एससीबी + एसयूसीबी) – सितंबर 2020



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

³³ बैंकिंग प्रणाली के नेटवर्क का आरेखीय प्रतिनिधित्व एक ऐसी टियर वाली संरचना है, जहां नेटवर्क में एक-दूसरे के साथ विभिन्न बैंकों की अलग-अलग मात्रा एवं स्तर की संबद्धता है। सबसे ज्यादा कनेक्टेड बैंक सबसे भीतरी कोर (नेटवर्क आरेख के केंद्र में) में हैं। बैंकों को बाद में उनकी सापेक्ष संबद्धता के स्तर के आधार पर मिड कोर, आउट कोर और पेरीफ़री (आरेख में केंद्र के आसपास संकेंद्रित वृत्तों) में रखा गया है। टियर नेटवर्क आरेख में लिंक का रंग कोडिंग नेटवर्क में विभिन्न टियरों से उधार का प्रतिनिधित्व करता है (उदाहरण के लिए, हरा लिंक आंतरिक कोर में बैंकों से उधार का प्रतिनिधित्व करता है)। प्रत्येक बॉल एक बैंक का प्रतिनिधित्व करती है और प्रणाली में अन्य सभी बैंकों की तुलना में उनकी निवल स्थितियों के अनुसार उन्हें भारित किया गया है। प्रत्येक बैंक को जोड़ने वाली लाइनों को बकाया एक्सपोजरों के आधार पर भारित किया गया है।

³⁴ इस विश्लेषण के लिए 70 एससीबी और 20 एसयूसीबी पर विचार किया गया है।

³⁵ संबद्धता अनुपात संपूर्ण नेटवर्क में सभी संभावित लिंक के सापेक्ष नोड्स के बीच लिंक की वास्तविक संख्या को मापता है। पद्धति के लिए अनुबंध 2 देखिए।

है। क्लस्टर गुणांक³⁶, जो स्थानीय अंतर-संबद्धता को प्रदर्शित करता है (अर्थात्, क्लस्टर अभिमुखी प्रवृत्ति), में पिछले 5 वर्षों में मामूली गिरावट हुई है (चार्ट 2.28)।

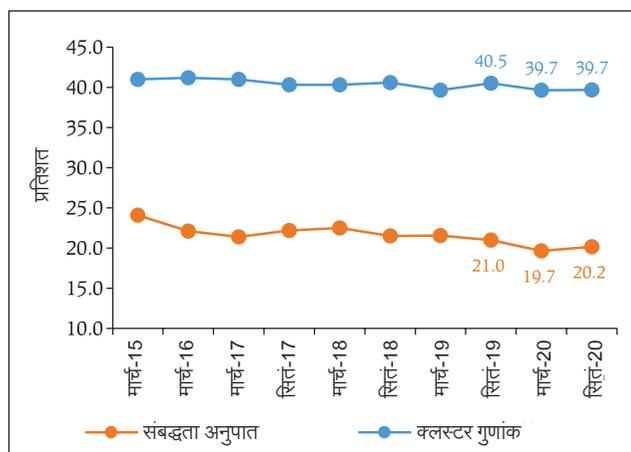
सी. एएमसी-एमएफ का एक्सपोजर

2.58 एएमसी-एमएफ वित्तीय प्रणाली के लिए निधियों के सबसे बड़े निवल प्रदाता बने रहे। 2020 के सितंबर-अंत में उनकी सकल प्राप्य राशियां ₹ 7.74 लाख करोड़ (उनके औसत एयूएम का 29 प्रतिशत) थीं, जबकि उनका सकल देय ₹ 0.67 लाख करोड़ था।

2.59 उनके निधीयन के शीर्ष प्राप्तकर्ता एससीबी थे जिनके बाद एनबीएफसी, एचएफसी और एआईएफआई का स्थान आता है। वर्ष 2019-20 में और 2020-21 की पहली छमाही में एससीबी से उनकी प्राप्य राशियों में भी गिरावट आई। मात्रा की दृष्टि से, हालांकि एससीबी ने एएमसी-एमएफ को अपनी देय राशियों में गिरावट दर्ज की है, अलबत्ता घट-बढ़ के क्रम में एनबीएफसी और एचएफसी में इसमें बढ़ोतरी हुई। इसके विपरीत, एएमसी-एमएफ पर एआईएफआई की निर्भरता पिछले में बढ़ रही थी, उसमें 2020-21 की पहली छमाही में मामूली गिरावट देखी गई (चार्ट 2.29 ए)।

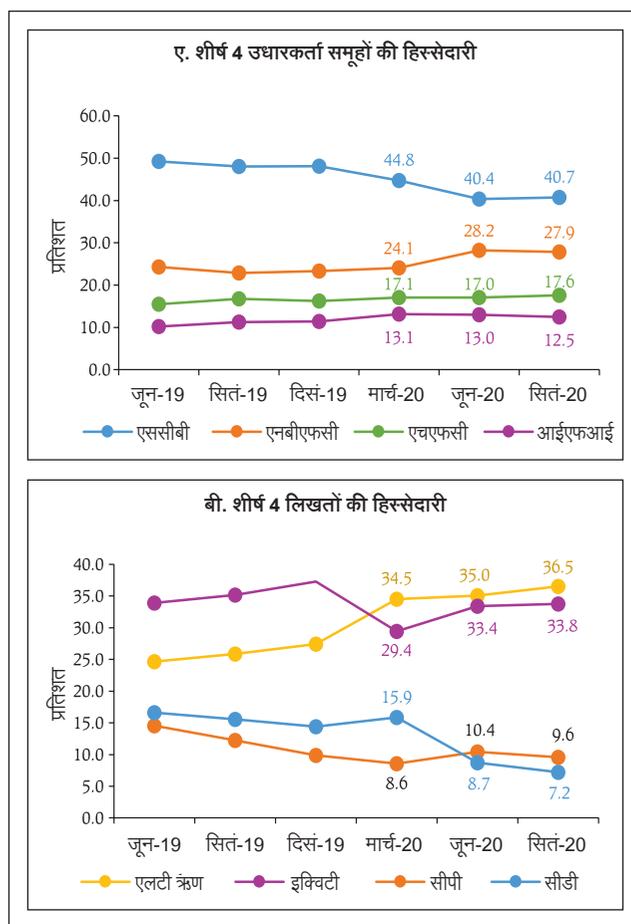
2.60 लिखतवार, एएमसी-एमएफ की प्राप्य राशियों में इक्विटी निधीयन की हिस्सेदारी में 2020-21 की पहली छमाही में तेज बढ़ोतरी दर्ज की। कर्ज निधीयन में के मामलों में एएमसी-एमएफ ने अल्पावधिक कर्ज की अपेक्षा दीर्घावधिक कर्ज के प्रति प्राथमिकता दर्शाई है जो उनके संबंधित शेयरों के लेन-देन से परिलक्षित होता है। म्युचुअल फंडों द्वारा वित्तीय प्रणाली के प्रतिभागियों को इक्विटी एक्सपोजर का कोई संविदात्मक दावा नहीं होता लेकिन संतुलित म्युचुअल फंडों द्वारा वित्तीय प्रणाली के प्रतिभागियों की कर्ज तथा इक्विटी एक्सपोजरों में एक साथ धारिता के कारण इक्विटी बाजार में होने वाली अनिश्चित बिकवाली से उत्पन्न जोखिम का संचरण इक्विटी बाजार से कर्ज बाजार में और कर्ज बाजार से इक्विटी बाजार में होने लगता है। अंतरसंबद्ध प्रकृति को देखते हुए उक्त औने-पौने दाम में बिकवाली से समूची वित्तीय प्रणाली में आस्ति बाजार आघात प्रसारित होने की संभावना हो सकती है (चार्ट 2.29 बी)।

चार्ट 2.28: बैंकिंग प्रणाली (एससीबी) की संबद्धता सांख्यिकी



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

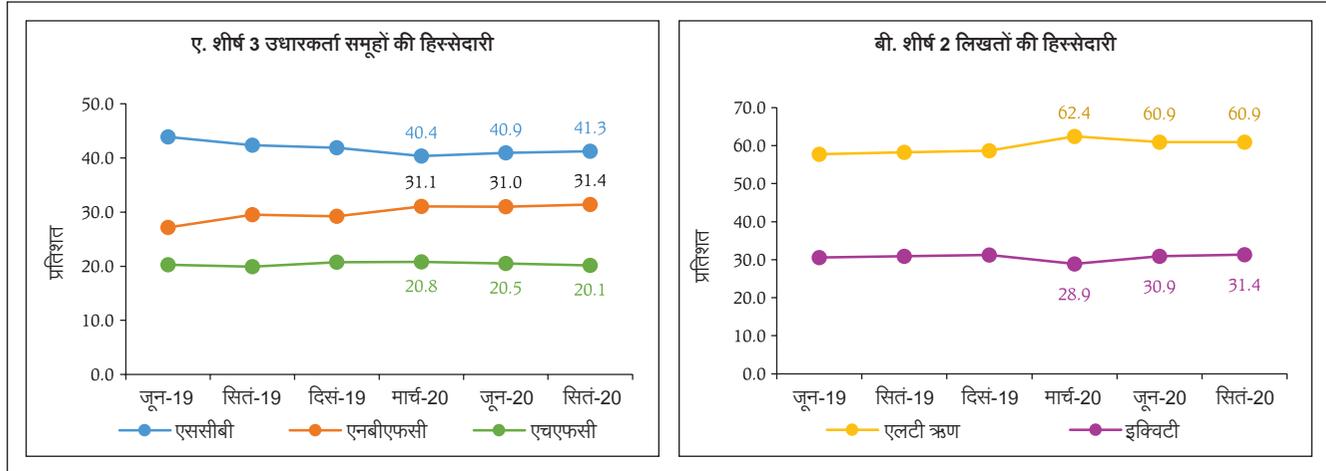
चार्ट 2.29: वित्तीय प्रणाली से एएमसी-एमएफ की सकल प्राप्ति



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

³⁶ क्लस्टर गुणांक: नेटवर्क में क्लस्टरिंग यह मापता है कि प्रत्येक नोड आपस में कैसे जुड़ा हुआ है। विशेष रूप से, इसकी बहुत अधिक संभावना बढ़ जाती है कि (वित्तीय नेटवर्क के मामलों में बैंकों के समकक्ष) एक नोड के समीप दो नोड आपस में भी समीप हों। नेटवर्क के लिए एक उच्च क्लस्टर गुणांक प्रणाली में प्रभावी उच्च स्थानीय अंतर्संबद्धता के अनुरूप होता है। पद्धति के लिए अनुबंध 2 देखिए।

चार्ट 2.30: वित्तीय प्रणाली से बीमा कंपनियों को सकल प्राप्ति



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

डी. बीमा कंपनियों का एक्सपोजर

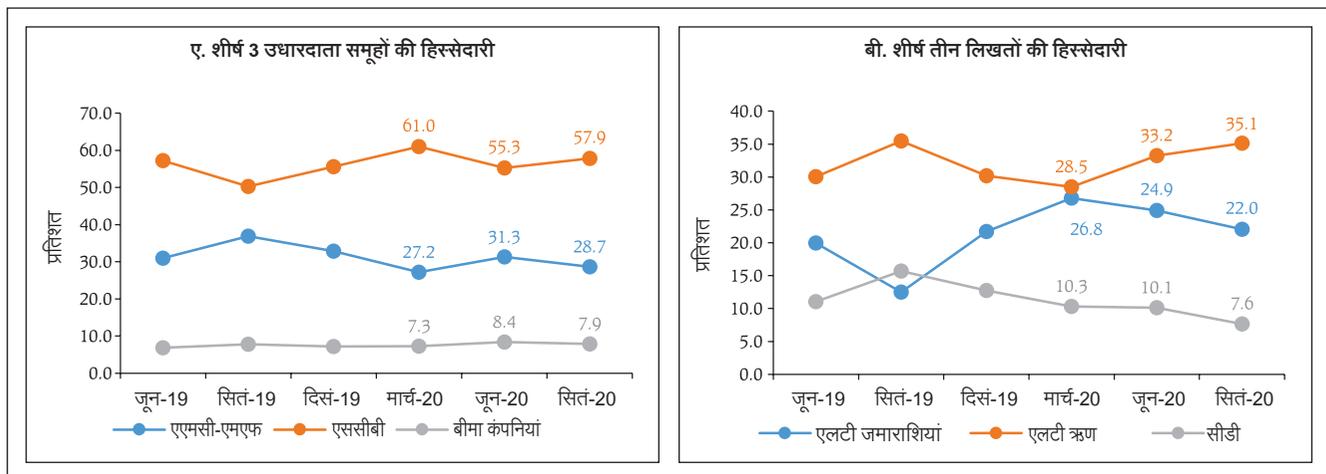
2.61 वित्तीय प्रणाली को सबसे अधिक निवल निधियां उपलब्ध कराने में बीमा कंपनियों का दूसरा सबसे बड़ा स्थान (सितंबर 2020 में सकल प्राप्य राशियां ₹ 6.21 लाख करोड़ तथा सकल देयताएं ₹ 0.29 लाख करोड़ थीं) है।

2.62 एससीबी उनकी निधियों के सबसे बड़े प्राप्तकर्ता थे जिनके बाद एनबीएफसी और एचएफसी का स्थान आता है। बीमा कंपनियों की लगभग संपूर्ण प्राप्य राशियां एलटी कर्ज और इक्विटी के रूप में थीं, जिनका अल्पावधि लिखतों के प्रति सीमित एक्सपोजर था। इन कंपनियों के एलटी कर्ज में प्रमुख रूप से एनबीएफसी और एचएफसी द्वारा जारी किए गए कर्ज लिखतों के अभिदान शामिल थे (चार्ट 2.30 ए और बी)।

ई. एआईएफआई का एक्सपोजर

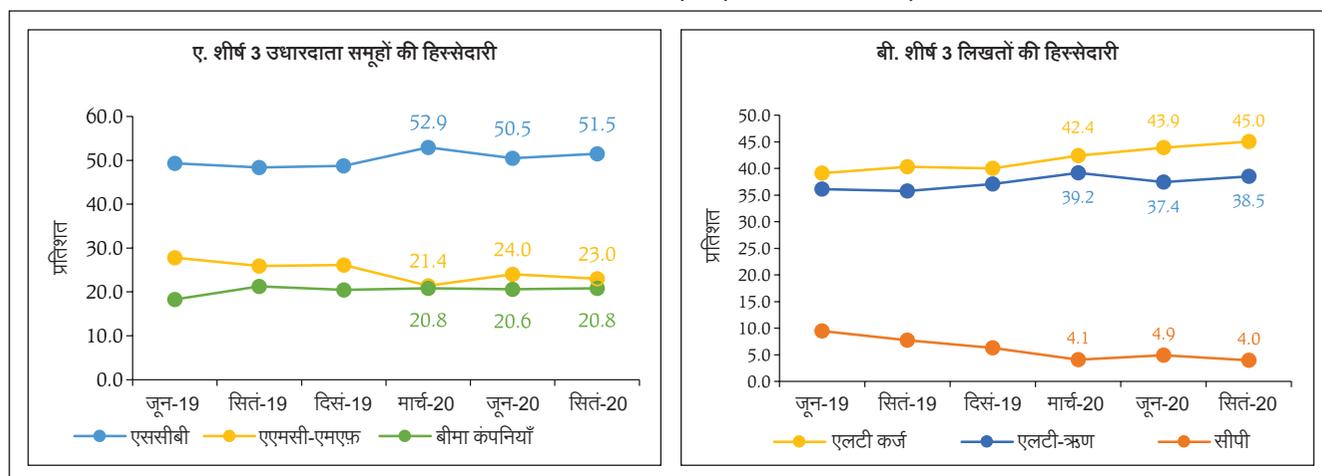
2.63 एआईएफआई वित्तीय प्रणाली की निधियों के निवल उरधारकर्ता थे और उनका सकल देय 2020-21 की पहली छमाही में बढ़कर ₹ 3.36 लाख करोड़ हो गया, जबकि सकल प्राप्य राशियां कम होकर सितंबर 2020 के अंत तक ₹ 2.83 लाख करोड़ हो गईं। एआईएफआई को निधियां उपलब्ध कराने वाले शीर्ष प्रदाता एससीबी (प्रमुख रूप से पीवीबी) थे, जिनके बाद एमसी-एमएफ और बीमा कंपनियां थीं (चार्ट 2.31 ए)। ये निधियां प्रमुख रूप से एलटी कर्ज, एलटी जमाराशियां और सीडी के माध्यम से प्रदान किए गए थे (चार्ट 2.31 बी)। एलटी जमाराशियां का हिस्सा जो मार्च 2020 में शिखर पर था उसके बाद की दो तिमाहियों में लगातार गिरावट हुई है।

चार्ट 2.31: वित्तीय प्रणाली को एनबीएफसी की सकल देयता



स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियां एवं स्टाफ द्वारा गणनाएं।

चार्ट 2.32: वित्तीय प्रणाली को एनबीएफसी की सकल देयताएं



स्रोत: भा.रि. बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

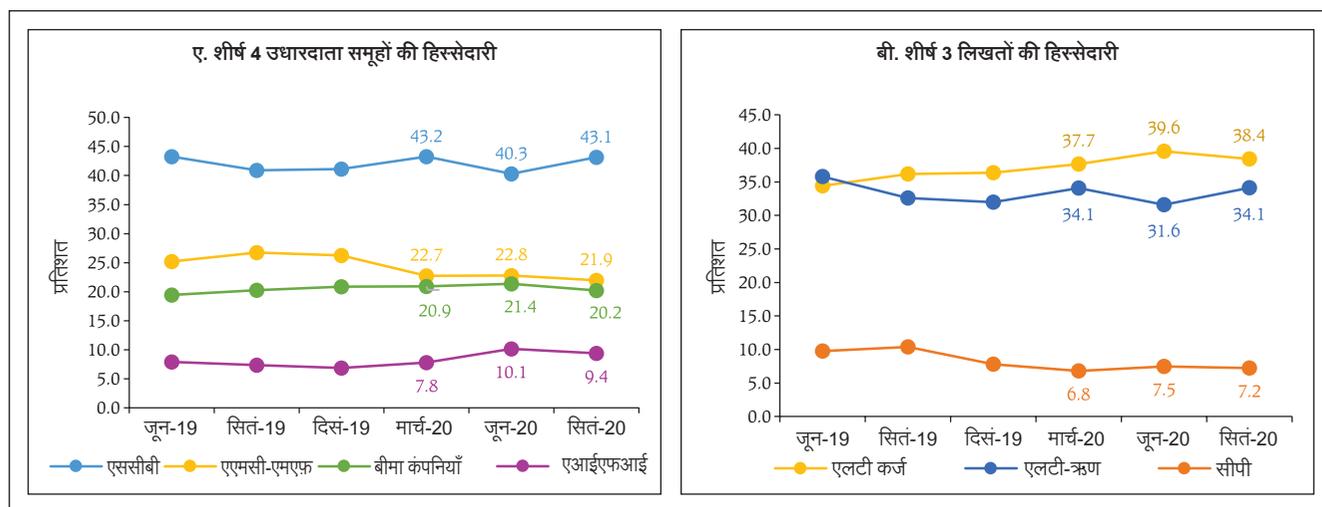
एफ. एनबीएफसी के एक्सपोजर

2.64 एनबीएफसी, सितंबर 2020 के अंत तक ₹9.37 लाख करोड़ की सकल देयताओं और ₹0.93 लाख करोड़ की सकल प्राप्तियों के साथ वित्तीय प्रणाली से निधियों की सबसे बड़ी निवल उधारकर्ता थी। उन्होंने अपनी निधियों का आधा से ज्यादा हिस्सा एससीबी से प्राप्त किया, इसके बाद एमसी-एमएफ और बीमा कंपनियों का स्थान आता है (चार्ट 2.32ए)। वर्ष 2020-21 की पहली छमाही के दौरान एनबीएफसी के निधीयन समूह में लिखतों का चयन एससीबी से एलटी ऋण की बढ़ती प्राथमिकता को दर्शाता है, जो अन्य बातों के साथ-साथ लक्षित दीर्घावधि रिपो परिचालनों (टीएलटीआरओ) के माध्यम से समर्थन को दर्शाता है (चार्ट 2.32 बी)।

जी. एचएफसी का एक्सपोजर

2.65 एचएफसी, सितंबर 2020 के अंत तक, लगभग ₹6.20 लाख करोड़ की सकल देय राशियों और ₹0.53 लाख करोड़ की सकल प्राप्त राशियों के साथ वित्तीय प्रणाली से निधियों के दूसरे सबसे बड़े उधारकर्ता थे। एचएफसी का उधार प्रोफाइल ज्यादातर एनबीएफसी के समान था, सिवाय एआईएफआई के जिन्होंने एचएफसी को निधि उपलब्ध कराने में अहम भूमिका निभाई। एमसी-एमएफ द्वारा एचएफसी के निधीयन के शेयर में 2019-20 में तेजी से गिरावट के बाद 2020-21 की पहली छमाही में मामूली रूप से गिरावट हुई। इसके विपरीत, पिछले वर्ष में वृद्धि के बाद एससीबी का हिस्सा कम रहा (चार्ट 2.33 ए)।

चार्ट 2.33: वित्तीय प्रणाली को एचएफसी को सकल देयताएं



स्रोत: भा.रि. बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियाँ और स्टाफ गणना

2.66 एनबीएफसी की तरह एलटी कर्ज (डेट) और एलटी ऋण दो शीर्ष लिखत थे जिनके माध्यम से एचएफसी ने वित्तीय प्रणाली से निधियाँ जुटाईं जिसके कारण एलटी कर्ज (पीवीबी द्वारा) के शेयर में बढ़ोत्तरी हुई। सीपी (एएमसी-एमएफ और कुछ हद तक एससीबी द्वारा अभिदत्त) के माध्यम से जुटाए गए संसाधन जिनमें आईएल एंड एफएस घटनाक्रम के बाद से निरंतर गिरावट हुई थी, उनमें 2020-21 की पहली छमाही में मामूली रूप से सुधार हुआ (चार्ट 2.33 बी)।

II.4.2 संक्रमण विश्लेषण³⁷

2.67 संक्रमण विश्लेषण विभिन्न बैंकों के प्रणालीगत महत्व का आकलन करने के लिए नेटवर्क तकनीक का प्रयोग करता है। प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण किसी बैंक की विफलता का परिणाम बैंकिंग प्रणाली के लिए बड़ी ऋण-शोधन क्षमता और चलनिधि हानियों के रूप में होता है जो, प्रकारांतर से बैंकों की प्रारंभिक पूंजी और चलनिधि की स्थिति सहित विफल बैंक का शेष बैंकिंग प्रणाली से आपसी जुड़ाव की संख्या, प्रकृति (चाहे वह एक उधारदाता हो अथवा उधारकर्ता) तथा परिमाण पर निर्भर करता है।

ए. संयुक्त ऋण-शोधन क्षमता³⁸ – बैंक की विफलता के कारण एससीबी के लिए चलनिधि³⁹ संक्रमण वाली हानियाँ

2.68 इस विश्लेषण में बैंकिंग प्रणाली पर विभिन्न आघातों के प्रभाव को बैंक विफलता की घटनाओं की संख्या तथा वहन की गई ऋण शोधन क्षमता एवं चलनिधि हानियों की राशि को ध्यान में रखते हुए देखा गया है।

2.69 सितंबर 2020 के अंत की स्थिति पर आधारित बैंकिंग नेटवर्क का संक्रमण विश्लेषण यह दर्शाता है कि यदि सबसे अधिक संक्रमण हानियों को उत्पन्न करने की क्षमता वाले बैंक के विफल होता है तो एससीबी की कुल टियर पूंजी का 2.5 प्रतिशत ऋण-शोधन क्षमता हानि तथा बैंकिंग प्रणाली के कुल एचक्यूएलए के 0.5 प्रतिशत की चलनिधि की हानि होगी। छह

महीने पहले किए गए इसी प्रकार के अभ्यास में जब शोधन क्षमता और चलनिधि हानियों का आकलन क्रमशः 4.3 प्रतिशत और 0.3 प्रतिशत था, यदि उन आकलनों के साथ इनकी तुलना करते हैं तो इसे बहुत राहत के रूप में नहीं देखा जा सकता है क्योंकि जोखिम की इस सीमा के मद्देनजर बैंकों के तुलन-पत्र पर कोविड-19 का प्रभाव अभी पूरी तरह परिलक्षित होना शेष है (सारणी 2.7)।

बी एनबीएफसी/एचएफसी की विफलता के कारण एससीबी के लिए संक्रामक ऋण-शोधन क्षमता हानियाँ

2.70 एनबीएफसी और एचएफसी वित्तीय प्रणाली से निधियों के सबसे बड़े उधारकर्ता हैं। इस निधीयन का एक बड़ा भाग बैंकों से आता है। इसलिए, एनबीएफसी और एचएफसी की विफलता उनके उधारदाताओं के लिए एक ऋण-शोधन क्षमता आघात के रूप में कार्य करेगा, जो संक्रमण के रूप में बैंकिंग प्रणाली में प्रसारित हो सकता है।

सारणी 2.7: बैंक की विफलता के कारण संक्रमण हानियाँ – सितंबर 2020

ट्रिगर कोड	बैंकिंग प्रणाली के टियर 1 कैपिटल का %	एचक्यूएलए का %	ऋण-शोधन क्षमता हानियों के कारण चूक करने वाले बैंकों की संख्या	चलनिधि हानियों के कारण चूक करने वाले बैंकों की संख्या
बैंक 1	2.50	0.50	2	0
बैंक 2	2.46	0.02	0	0
बैंक 3	2.39	0.11	0	0
बैंक 4	2.07	1.72	0	0
बैंक 5	1.73	1.07	0	2

टिप्पणी: बैंकिंग प्रणाली को हुई ऋण-शोधन हानियों के आधार पर शीर्ष 5 "ट्रिगर बैंकों" का चयन किया गया है।

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियाँ एवं स्टाफ द्वारा गणना।

³⁷ कार्यप्रणाली के लिए कृपया अनुबंध 2 देखें।

³⁸ ऋण-शोधन संक्रमण विश्लेषण में, एक अथवा एक से अधिक उधारकर्ता बैंक के विफल होने के एक दूरगामी प्रभाव (डोमिनो इफेक्ट) के कारण बैंकिंग प्रणाली के लिए सकल हानि का पता लगाया जाता है। संक्रमण विश्लेषण के लिए विफलता के मानदंड को टियर-1 पूंजी के 7 प्रतिशत से नीचे गिर जाने के रूप में लिया गया है।

³⁹ चलनिधि संक्रमण विश्लेषण में, एक बैंक को तब विफल माना जाता है, जब उसकी चलनिधि आस्तियाँ एक बड़े निवल ऋणदाता की विफलता से उत्पन्न चलनिधि दबाव को झेलने के लिए पर्याप्त नहीं होती है। चलनिधि आस्तियों को एनडीटीएल के 18 प्रतिशत + अधिशेष एसएलआर + अधिशेष सीआरआर के रूप में मापा जाता है।

⁴⁰ केवल निजी एनबीएफसी पर विचार किया जाता है।

2.71 किसी एनबीएफसी की विशिष्ट प्रकृति की विफलता के कारण बैंकिंग प्रणाली की संभावित ऋण-शोधन क्षमता संक्रमण वाली हानियों⁵⁰ का विश्लेषण यह इंगित करता है कि 2020 के सितंबर अंत में बैंकिंग प्रणाली के लिए ऋण-शोधन हानियाँ पैदा करने की अधिकतम क्षमता वाली एनबीएफसी की विफलता बैंकिंग प्रणाली की कुल टियर I पूंजी को 2.26 प्रतिशत धराशायी कर सकता है, लेकिन इससे कोई भी बैंक विफल नहीं हो सकता है। बैंकिंग प्रणाली के लिए ऋण-शोधन हानियाँ पैदा करने की अधिकतम क्षमता वाली एचएफसी की विफलता बैंकिंग प्रणाली की कुल टियर I पूंजी को 5.92 प्रतिशत धराशायी कर सकता है, लेकिन इस प्रकार की घटना में कोई भी बैंक विफल नहीं हो सकता है। (सारणी 2.8 और 2.9)।

2.72 बैंक के तुलन-पत्र पर कोविड-19 का प्रभाव परिलक्षित नहीं होने के चलते विशिष्ट प्रकार की विफलता के कारण हुई हानियों को कम करके दर्शाया गया हो सकता है।

सी. एससीबी को समष्टि-आर्थिक आघातों के बाद ऋण शोधन क्षमता का संक्रामक प्रभाव⁴¹

2.73 अर्थव्यवस्था में सामान्यीकृत गिरावट की स्थिति में समष्टि-आर्थिक आघातों के कारण बैंकिंग प्रणाली में उत्पन्न कठिनाई से किसी बैंक की विफलता के संक्रामक प्रभाव में इजाफा हो सकता है। समष्टि-आर्थिक आघात कुछ एससीबी के लिए ऋण-शोधन क्षमता को प्रभावित कर सकते हैं जो प्रकरांतर से आगे की ऋण-शोधन क्षमता हानियों के लिए ट्रिगर का काम कर सकते हैं। पिछली पुनरावृत्ति में ऐसी संस्था पर आघात किया गया जिसके कारण अधिकतम ऋण-शोधन क्षमता संक्रमण हानियाँ पैदा हो सकती थी। तथापि, इस पुनरावृत्ति में एक विशिष्ट बैंक की पूंजी पर समष्टि-आर्थिक आघातों का आरंभिक प्रभाव समष्टि-दबाव परीक्षणों से लिया गया जिसमें सितंबर 2021⁴² के लिए एक बेसलाइन तथा दो (मध्यम और गंभीर) प्रतिकूल परिदृश्य लिए गए थे।

2.74 समष्टि-आर्थिक आघात के कारण बेसलाइन, मध्यम, और गंभीर दबाव परिदृश्यों के लिए आरंभिक पूंजीगत हानि टियर I पूंजी का क्रमशः 8.36 प्रतिशत, 12.39 प्रतिशत, और

सारणी 2.8: एनबीएफसी की विफलता के कारण संक्रामक हानियाँ – सितंबर 2020

ट्रिगर कोड	बैंकिंग प्रणाली की टियर I पूंजी के % के रूप में ऋण-शोधन क्षमता हानियाँ	ऋण-शोधन क्षमता हानियों के कारण चूक करने वाले बैंकों की संख्या
एनबीएफसी 1	2.26	0
एनबीएफसी 2	2.21	0
एनबीएफसी 3	1.86	0
एनबीएफसी 4	1.30	1
एनबीएफसी 5	1.24	0

टिप्पणी: बैंकिंग प्रणाली को हुई ऋण-शोधन हानियों के आधार पर शीर्ष 5 "ट्रिगर एनबीएफसी" का चयन किया गया है।

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियाँ एवं स्टाफ द्वारा गणना।

सारणी 2.9: एचएफसी की विफलता के कारण संक्रामक हानियाँ – सितंबर 2020

ट्रिगर कोड	बैंकिंग प्रणाली की टियर I पूंजी के % के रूप में ऋण-शोधन क्षमता हानियाँ	ऋण-शोधन क्षमता हानियों के कारण चूक करने वाले बैंकों की संख्या
एचएफसी 1	5.92	0
एचएफसी 2	3.70	0
एचएफसी 3	1.97	1
एचएफसी 4	1.92	1
एचएफसी 5	1.34	0

टिप्पणी: बैंकिंग प्रणाली को हुई ऋण-शोधन हानि के आधार पर शीर्ष 5 "ट्रिगर बैंकों" का चयन किया गया है।

स्रोत: आरबीआई की पर्यवेक्षी विवरणियाँ एवं स्टाफ द्वारा गणना।

17.25 प्रतिशत रही। समष्टि-आर्थिक आघातों के सामने 7 प्रतिशत की टियर I पर्याप्तता अनुपात बनाए रखने में विफल बैंकों की संख्या बेसलाइन में तीन, मध्यम दबाव परिदृश्यों में पाँच एवं अत्यंत गंभीर दबाव परिदृश्य में आठ है। सितंबर 2020 में इन बैंकों की टियर I पूंजी का स्तर निम्न (या तो पहले से 7 प्रतिशत के नीचे अथवा सीमांत रूप से अधिक) रहा था।

2.75 संक्रमण (समष्टि आघातों के कारण आरंभिक हानि से अधिक एवं ऊपर) के कारण बैंकिंग प्रणाली को हुई अतिरिक्त ऋण-शोधन क्षमता हानियाँ, बैंकिंग प्रणाली की टियर I पूंजी के

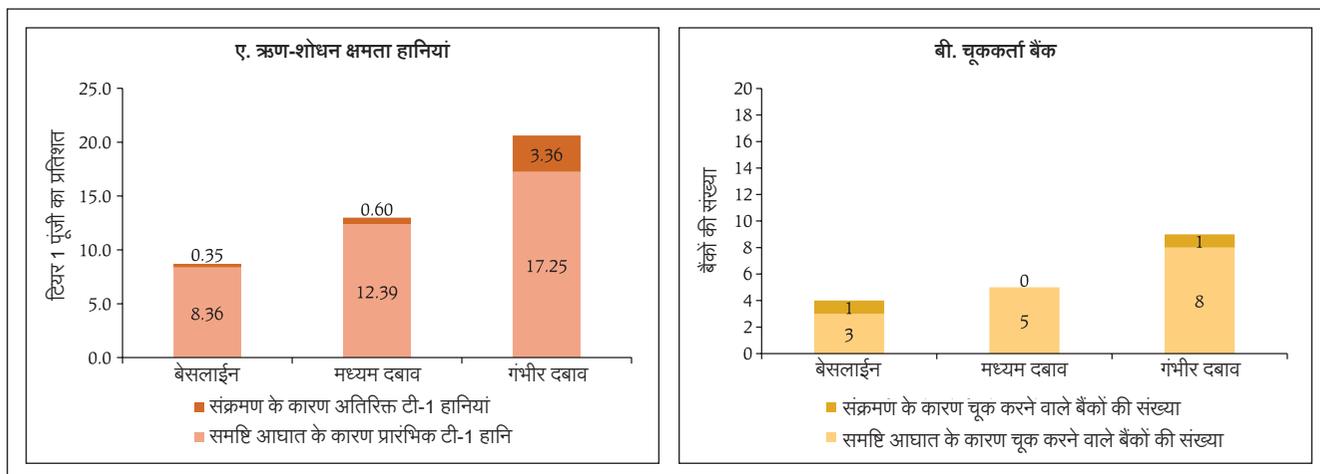
⁴¹ पीएसबी और पीवीबी दोनों के लिए विफलता मानदंड को टियर-1 सीआरएआर के 7 प्रतिशत से नीचे गिर जाने के रूप में लिया गया है।

⁴² संक्रमण विश्लेषण के लिए समष्टि-दबाव परीक्षणों के परिणामों का प्रयोग किया गया है और निम्नलिखित धारणाएँ व्यक्त की गई हैं:

ए) समष्टि-परिदृश्य के तहत अनुमानित हानियाँ (सितंबर 2020 की इसकी वास्तविक राशि की तुलना में सितंबर 2021 में प्रतिशत रूप में अनुमानित टियर-I सीआरएआर में कमी के रूप में आकलित किया गया) सितंबर 2020 की पूंजी स्थिति पर यह मानते हुए लागू किए गए थे कि सितंबर 2020 और सितंबर 2021 दोनों के लिए तुलन-पत्र का खाका अनुपातिक रूप से समान है।

बी) वित्तीय संस्थाओं के बीच द्विपक्षीय एक्सपोजर को सितंबर 2020 और सितंबर 2021 के लिए समान माना गया है।

चार्ट 2.34 : समष्टि आर्थिक आघातों का संक्रामक प्रभाव (ऋण-शोधन क्षमता संक्रामकता)



टिप्पणी: सितंबर 2021 में अनुमानित पूंजी में हितधारकों द्वारा किए गए किसी पूंजी प्रवाह को गणना में नहीं शामिल किया गया है। इसने पूंजीगत रिजर्व में 25 प्रतिशत न्यूनतम लाभ अंतरित करने की रूढ़ीवादी धारणा को अपनाया है।

स्रोत: रिजर्व बैंक की पर्यवेक्षी विवरणियाँ एवं स्टाफ द्वारा गणना।

संबंध में बेसलाइन के लिए 0.35 प्रतिशत, मध्यम दबाव के लिए 0.60 प्रतिशत एवं अत्यंत गंभीर दबाव परिदृश्य के मामले में 3.36 प्रतिशत राशि रहें। ऐसी परिस्थितियों में, बेसलाइन और अत्यंत गंभीर दबाव परिदृश्यों में संक्रमण के कारण एक अतिरिक्त बैंक विफल हो सकता है (चार्ट 2.34)।

2.76 संकुचित होते अंतर-बैंक बाजार और पूंजी पर्याप्तता में हुए सुधार ने विभिन्न परिदृश्यों के तहत बैंकिंग प्रणाली में संक्रामक जोखिम को सीमित कर दिया है। तथापि, जैसे-जैसे कोविड-19 से उत्पन्न दबाव उभर रहा है, जैसे-जैसे आगे चलकर सभी बैंक समूहों में पूंजी पर्याप्तता दबाव में आ सकती है तथा प्रतिकूल परिदृश्यों के अंतर्गत बड़े आघातों के कारण संक्रामक हानियों में बढ़ोत्तरी हो सकती है, जब तक कि बैंकों की पूंजी स्थिति बहुत अधिक मजबूत नहीं हो जाती।

सारांश और दृष्टिकोण

2.77 संक्षेप में, जीएफसी विनियामकीय और विवेकसम्मत मानकों के बाद भारतीय बैंकिंग प्रणाली के बढ़ते अभिसरण ने पूंजी और चलनिधि बफर सृजित किया जिससे मौजूदा महामारी में समुत्थानशीलता बढ़ी। आगे चलकर, बैंकों के तुलन-पत्र में इन राहतों को महामारी के कारण घोषित विनियामकीय नरमी को वापस लेने के कारण उत्पन्न एक विपरीत स्थिति का सामना करना पड़ेगा। एससीबी के पूंजी और आस्ति गुणवत्ता अनुपातों का परीक्षण बैंकों अन्य वित्तीय मध्यस्थाओं के पोर्टफोलियो के

वास्तविक आर्थिक मूल्य के रूप में परीक्षित किया जाएगा जो महामारी द्वारा उत्पन्न अव्यवस्था से प्रभावित हुई हैं।

2.78 ऋण जोखिमों के लिए मैक्रो-दबाव परीक्षण बताते हैं कि एससीबी का जीएनपीए अनुपात विभिन्न दबाव परिदृश्यों के अंतर्गत बदतर हो सकता है तथा पूंजी अनुपात घट सकता है, यह परीक्षण अग्रसक्रिय प्रावधानीकरण की आवश्यकता और आसन्न आस्ति गुणवत्ता में गिरावट की स्थिति से निपटने के लिए पर्याप्त पूंजी के निर्माण पर प्रकाश डालता है। 31 मार्च 2020 को समाप्त वित्तीय वर्ष से संबंधित लाभ से इक्विटी शेयरों पर किसी प्रकार का लाभांश भुगतान नहीं करने के लिए बैंकों को जारी किया गया निर्देश का उद्देश्य तुलन-पत्र को मजबूत करना है ताकि जैसे ही वसूली में तीव्रता आए, वे वास्तविक अर्थव्यवस्था के लिए उधारी को समर्थन देने के लिए आगे की ओर कदम बढ़ा सके।

2.79 गैर-बैंक क्षेत्र में म्यूच्युअल फंडों और बीमा कंपनियों की प्रभावशाली स्थितियों का इस तथ्य पर मूल्यांकन करना आवश्यक है कि गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियाँ और आवास वित्त कंपनियाँ प्रणालीगत अंतर्निहित प्रभावों के साथ सबसे बड़ी उधारकर्ता बनी रही हैं। इसी बीच, संकुचित होते अंतर-बैंक बाजार ने संक्रामक प्रभावों के चलते बैंक विफलता के जोखिमों को कम कर दिया है। रिजर्व बैंक ने वित्तीय स्थिरता को बनाए रखने के उद्देश्य से अपने स्तर पर सभी विनियमित संस्थाओं और बाजारों की गहन और निरंतर निगरानी को तेज किया है।

अध्याय III

वित्तीय क्षेत्र में विनियामकीय पहल

महामारी के प्रभाव को कम करने के लिए केंद्रीय बैंकों और अन्य विनियामकों द्वारा किए गए असाधारण उपायों ने वित्तीय स्थिरता को सहारा दिया तथा आर्थिक गतिविधियों पर कोविड-19 के हानिकारक प्रभावों को कम किया। अंतरराष्ट्रीय मानक स्थापित करने वाली निकायों ने भी इस उभरते परिदृश्य में अग्र-सक्रियता दिखाई। घरेलू मोर्चे पर, वित्तीय क्षेत्र के विनियामकों ने वित्तीय स्थिरता के प्रति जोखिमों से सचेत रहते हुए निभावकारी नीतियां बनाए रखीं। वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफएसडीसी) एवं उसकी उप-समिति वित्तीय क्षेत्र की आघात-सहनीयता और स्थिरता को मजबूती प्रदान करने हेतु विभिन्न विनियामकों द्वारा समन्वित पहल तथा उभरती चुनौतियों के प्रति सजग रही।

परिचय

3.1 कोविड-19 महामारी में भारी मानवीय और आर्थिक कीमत चुकाया जाना जारी है। महामारी के नतीजों का प्रबंधन करने के लिए सरकारी संस्थाओं और प्राधिकरणों ने अभूतपूर्व उपाय किए हैं। दूसरी लहर के कारण वैश्विक आर्थिक संभावनाओं पर छाए निराशा के बादल टीका के विकास संबंधी सकारात्मक समाचार के साथ कुछ हद तक छंट जाने के बावजूद, वैश्विक आर्थिक और वित्तीय प्रणाली तथा उसके घटकों को लेकर अति अनिश्चितता का दृष्टिकोण बना रहा।

3.2 आगे इस अध्याय के आरंभ खंड III.1 में हाल में वैश्विक स्तर पर किए गए विनियामकीय और अन्य उपायों के बारे में कहा गया है। भारतीय वित्तीय क्षेत्र के विनियामकों द्वारा अपने क्षेत्राधिकार में किए गए उपायों को खंड III.2 से III.4 में वर्णित किया गया है। अंतिम खंड में दृष्टिकोण के परिप्रेक्ष्य में कुछ प्रकाश डाला गया है।

III.1 वैश्विक घटनाक्रम

3.3 ब्याज दरों को कम करने, पर्याप्त चलनिधि उपलब्ध कराने और वाणिज्यिक क्षेत्र में ऋण सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीय बैंकों द्वारा मजबूत नीतिगत हस्तक्षेपों ने अब तक वित्तीय बाजार की अस्थिरता को नियंत्रित किया है और महामारी के प्रभाव में समष्टि-वित्तीय प्रतिपुष्टि पाश की प्रतिकूल संभावना को कम किया है। कुल मिलाकर, अमरीकी फेडरल रिज़र्व, बैंक ऑफ इंग्लैंड (बीओई), बैंक ऑफ जापान (बीओजे) और यूरोपीय केंद्रीय बैंक (ईसीबी) ने मात्रात्मक सुलभता के माध्यम से केवल इस वर्ष (नवंबर के अंत तक) अपने तुलन-

पत्र को 5.6 ट्रिलियन अमरीकी डॉलर बढ़ाया है। ईसीबी ने हाल ही में महामारी आपातकालीन खरीद कार्यक्रम (पीईपीपी) को 500 बिलियन यूरो और बढ़ाकर कुल 1,850 बिलियन यूरो करने, पीईपीपी के अंतर्गत निवल खरीददारी की सीमा को कम से कम मार्च 2022 के अंत तक बढ़ाने और पीईपीई के अंतर्गत खरीदे गए प्रतिभूतियों के परिपक्व होने पर मूलधन भुगतान के पुनर्निवेश को कम से कम 2023 अंत तक बढ़ाने का निर्णय लिया है।

3.4 संकटकालीन चलनिधि चरण अब शोधन क्षमता चरण में बदल रहा है क्योंकि बैंकिंग क्षेत्र पर आर्थिक अवरोधों का प्रभाव उजागर हो रहा है, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहां महामारी का प्रभाव सबसे विनाशकारी रहा है। बैंकों द्वारा ऋण हानि हेतु एहतियाती प्रावधान किए जाने से यह दृष्टिगत है, यहां तक कि दुनिया के विभिन्न भागों में ऋण मानकों को कड़ा करने का संकेत सर्वेक्षणों में भी मिलता है। इस संदर्भ में, पूंजी, चलनिधि और प्रत्याशित ऋण हानि (ईसीएल) प्रावधान जैसे बैंकों के तुलन-पत्र से प्रत्यक्ष प्रासंगिकता वाले विनियामकीय उपायों के संबंध में प्रमुख मानक निर्धारक प्राधिकरणों द्वारा उठाए गए कदमों को नीचे रेखांकित किया गया है।

III.1.1 पूंजी

3.5 बैंकिंग पर्यवेक्षण पर बासेल समिति (बीसीबीएस) ने घोषणा यह की कि संकटकाल में वित्तीय आघातों को अवशोषित करने तथा ऋणपात्र हाउसहोल्ड और व्यवसायों को ऋण देकर वास्तविक अर्थव्यवस्था को सहारा प्रदान करने के लिए बैंक अपनी सुरक्षित पूंजी का उपयोग कर सकते हैं। इसने पर्यवेक्षकों को आर्थिक और बाजार की स्थितियों के साथ-

साथ बैंक-विशिष्ट परिस्थितियों के अनुसार बैंकों को बफ़र के पुनर्स्थापन हेतु पर्याप्त समय देने के लिए भी प्रोत्साहित किया। वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) ने बीसीबीएस के नीतिगत रुझान और दृष्टिकोण का समर्थन किया है।

III.1.2 चलनिधि

3.6 बीसीबीएस ने यह संकेत दिया कि अप्रत्याशित चलनिधि मांगों को पूरा करने के लिए अपनी उच्च गुणवत्ता वाली अर्थसुलभ परिसंपत्ति (एचक्यूएलए) प्रतिभूतियों के बफ़र से आहरण करना बैंकों के लिए स्वीकार्य है, और पर्यवेक्षक बफ़र पुनर्स्थापन से पहले पर्याप्त समय-सीमा प्रदान कर सकते हैं। कुछ प्रमुख व्यवस्थाओं ने ऐसे बफ़र के उपयोग के लिए सावधि विधि-खंड लागू किए हैं। उदाहरण के लिए, ईसीबी ने बैंकों को स्वतः उत्प्रेरित पर्यवेक्षी कार्रवाइयों के बिना कम से कम 2021 के अंत तक चलनिधि कवरेज अनुपात (एलसीआर) से नीचे परिचालन करने की अनुमति देने की प्रतिबद्धता दिखाई है। अमरीकी फेडरल रिज़र्व (फेड) ने अंतर्दिवासिय क्रेडिट की उपलब्धता बढ़ाने में मदद करने के लिए असंपूर्णकृत अंतर्दिवासीय क्रेडिट सीमा को निलंबित करने तथा द्वितीयक क्रेडिट संस्थाओं के संपार्श्विकृत अंतर्दिवासीय क्रेडिट अनुरोध के लिए एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया की अनुमति देने की अस्थायी उपायों की घोषणा को बढ़ाकर 31 मार्च 2021 कर दिया।

III.1.3 प्रत्याशित ऋण हानि (ईसीएल) प्रावधान

3.7 महामारी के परिणामस्वरूप आर्थिक अनिश्चितता का प्रबंधन करने के क्रम में अंतरराष्ट्रीय लेखा मानक बोर्ड (आईएसबी) ने प्रत्याशित ऋण हानियों के लेखा-जोखा के लिए अंतराष्ट्रीय वित्तीय रिपोर्टिंग मानक-9 (आईएफआरएस-9) के प्रयोज्यता पर एक स्पष्ट बयान¹ जारी किया। आईएफआरएस-9 के अंतर्गत जबकि लाइफटाइम ईसीएल को चिह्नित करने की आवश्यकता है जब किसी वित्तीय लिखत पर क्रेडिट जोखिम में महत्वपूर्ण वृद्धि (एसआईसीआर) हुई हो, आईएफएसबी ने वित्तीय लिखतों के वर्ग विशेष के सभी उधारकर्ताओं के लिए भुगतान

अवकाश विस्तार को स्वचालित रूप से नहीं लेने के उदाहरण का उल्लेख इस बात पर जोर देते हुए किया कि संस्थाओं को अपनी मौजूदा ईसीएल पद्धति यांत्रिक रूप से लागू नहीं करनी चाहिए जबकि मामलों में एसआईसीआर हैं। आईएफएसबी ने यह भी राय दी कि मौजूदा दबावग्रस्त माहौल में आईएफआरएस-9 और संबद्ध प्रकटीकरण वित्तीय विवरण के उपयोगकर्ताओं को अत्यावश्यक पारदर्शिता प्रदान कर सकते हैं।

III.1.4 बैंकों में परिचालनगत जोखिम

3.8 महामारी ने कार्मिकों, प्रक्रियाओं, सूचना प्रणालियों तथा कारोबार निरंतरता को प्रभावित कर बैंकों के परिचालनगत जोखिमों को बढ़ा दिया है और अनिश्चितता अत्यधिक बढ़ गई है। परिचालनगत आघात-सहनीयता की अत्यधिक आवश्यकता को देखते हुए, बीसीबीएस ने अपने 'परिचालनगत जोखिम के मजबूत प्रबंधन के लिए सिद्धांत' (पीएसएमओआर) में परिचालनगत आघात-सहनीयता और उसके पुनरीक्षण के लिए प्रस्तावित सिद्धांतों पर एक परामर्शी दस्तावेज़² प्रकाशित किया जो कारोबार निरंतरता योजना, साइबर सुरक्षा और तृतीय पक्ष के जोखिम प्रबंधन जैसे पहलुओं पर केंद्रित हैं।

3.9 वित्तीय कार्रवाई कार्यबल (एफएटीएफ) ने एक शोध-पत्र³ जारी किया जिसमें कोविड-19 से उत्पन्न होने वाली धन शोधन (एमएल) और/या आतंकवादी वित्तपोषण (टीएफ) जोखिमों पर चर्चा की गई। यह प्रस्तुत करता है कि ऑनलाइन सेवाओं के बढ़ते उपयोग के परिणामस्वरूप पर्याप्त ग्राहक समुचित सावधानी (सीडीडी) अनुवीक्षण के ग्राहक बिना आ सकते हैं, जिससे आभासी परिसंपत्तियों की गुप्त गतिविधि और अवैध धन को छुपाने में मदद मिलती है। इस तरह की जोखिम पहले से ही बढ़े हुए हैं क्योंकि वित्तीय संस्थान कारोबारी निरंतरता बनाए रखने में व्यस्त रहते हैं, जिससे संदिग्ध लेनदेनों की पहचान और रिपोर्टिंग पीछे रह जाती है। इन संभावित सुभेद्यताओं का प्रबंधन करने के लिए, शोध-पत्र में यह सिफारिश किया गया है कि एएमएल/आतंकवाद वित्तपोषण से लड़ने संबंधी (सीएफटी)

¹ अंतरराष्ट्रीय लेखा मानक बोर्ड (2020): आईएफआरएस-9 और कोविड-19, मार्च

² बीआईएस (2020), परिचालनगत आघात-सहनीयता के लिए सिद्धांत (परामर्शी दस्तावेज़), अगस्त।

³ वित्तीय कार्रवाई कार्यबल (2020): "कोविड-संबद्ध धन शोधन और आतंकवादी वित्तपोषण", मई।

नीतिगत अनुक्रियाओं में (i) एएमएल/सीएफटी जोखिमों और प्रणालियों पर कोविड-19 के प्रभाव का घरेलू आकलन; (ii) निजी क्षेत्र के साथ संचार को मजबूत करना; (iii) समुचित सावधानी के लिए जोखिम आधारित दृष्टिकोण के पूर्ण उपयोग को प्रोत्साहित करना; (iv) लेनदेन करते हुए उत्तरदायी डिजिटल पहचानों का उपयोग प्रोत्साहित करना; और (v) व्यावहारिक, जोखिम आधारित एएमएल/सीएफटी पर्यवेक्षण शामिल होना चाहिए।

III.1.5 कोविड-19 और बीमा क्षेत्र

3.10 अंतरराष्ट्रीय बीमा पर्यवेक्षक संघ (आईएएस) ने वैश्विक बीमा क्षेत्र पर कोविड-19 के प्रभाव पर प्रकाश डालते हुए एक वक्तव्य प्रकाशित किया, जिसमें संकट के दौरान प्रभावी बीमाधारक संरक्षण और उचित ग्राहक सुविधा के महत्व पर जोर दिया गया। इसमें शोधन क्षमता, विभिन्न प्रकार के दावों को पूरा करने की क्षमता और बड़े पैमाने पर वित्तीय स्थिरता पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए, बीमाकर्ताओं को पूर्वव्यापी रूप से कोविड-19 संबंधित नुकसान को कवर करने की आवश्यकता के बारे में भी आगाह किया गया है। वक्तव्य में यह भी कहा गया है कि इस संकट ने बीमा क्षेत्र द्वारा स्वतः प्रदान की जा सकने वाली अपेक्षित संरक्षण की सीमाओं को उजागर करने का काम किया है।

III.1.6 अन्य अंतरराष्ट्रीय विनियामक

बैंकिंग क्षेत्र में गतिविधियां

3.11 जुलाई 2020 में, बीसीबीएस ने ऋण मूल्यांकन समायोजन (सीवीए) जोखिम अर्थात्, डेरिवेटिव अथवा प्रतिभूति वित्तपोषण लेनदेनों में उनके प्रतिपक्षों की ऋण-पात्रता में गिरावट के कारण बाजार भाव पर दर्शाए गए नुकसान को उठाने में बैंकों द्वारा सामना किए जा रहे जोखिम के लिए अंतिम पुनरीक्षित मानक⁴ प्रकाशित किया। इस पुनरीक्षण के परिणामस्वरूप कतिपय श्रेणी के प्रतिपक्षों के संबंध में सीवीए के लिए मानकीकृत दृष्टिकोण (एसए) और मूल दृष्टिकोण दोनों में सीवीए के लिए जोखिम भार कम हो जाएगा। पुनरीक्षित बाजार जोखिम ढांचे में

नए 'सूचकांक बकेट' की भी शुरुआत की गई जिसके अंतर्गत कतिपय शर्तों के अधीन बैंक अंतर्निहित घटकों को देखने के बजाय सीधे क्रेडिट और इक्विटी सूचकांकों का उपयोग करके पूंजीगत आवश्यकताओं की गणना कर सकेंगे। समिति ने कतिपय प्रतिभूति वित्तपोषण लेनदेन (एसएफटी) को छोड़ते हुए सीवीए जोखिम पूंजी आवश्यकताओं के अधीन पोर्टफोलियो के दायरे को समायोजित करने पर भी सहमति व्यक्त की है। लक्षित पुनरीक्षण में सीवीए जोखिम ढांचे के समग्र अंशांकन को भी पुनरीक्षित किया गया है, जिससे एसए-सीवीए दृष्टिकोण का उपयोग करने वाले बैंकों के लिए संकलित गुणक का मान कम हो गया है।

3.12 एफएसबी और बीसीबीएस ने लाइबोर संक्रमण पर अपने द्वारा किए गए सर्वेक्षणों के निष्कर्षों पर एक रिपोर्ट⁵ प्रकाशित किया। रिपोर्ट में संक्रमण की तैयारी करने और सुगम बनाने के लिए सभी क्षेत्राधिकारों में वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों संस्थाओं द्वारा निरंतर प्रयासों की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है, यह देखते हुए कि लाइबोर क्षेत्राधिकारों की तुलना में गैर-लाइबोर क्षेत्राधिकारों के वित्तीय संस्थानों ने संक्रमण में बेहतर प्रगति दिखाई है। संक्रमण का समर्थन करने के लिए रिपोर्ट में प्राधिकारणों द्वारा एक त्रिआयामी प्रयास की सिफारिश की गई है जिसमें (i) व्यापार संघों को शामिल करना तथा समय-समय पर वित्तीय संस्थानों के लाइबोर एक्सपोजर का जायजा लेना; (ii) एक औपचारिक संक्रमण कार्यनीति स्थापित करना और बैंकों द्वारा तैयारी में सुस्ती दिखाने के मामले में पर्यवेक्षी कार्रवाई को बढ़ाना; और (iii) उद्योग-व्यापी समन्वय को बढ़ावा देना और सर्वोत्तम प्रथाओं तथा चुनौतियों के बारे में सूचनाओं का आदान-प्रदान निहित हैं।

III.1.7 मार्च 2020 में बाजार उथल-पुथल की समग्र समीक्षा

3.13 एफएसबी ने मार्च 2020 में वित्तीय बाजार में अभूतपूर्व उथल-पुथल की अपनी समीक्षा⁶ प्रकाशित की, जिसमें जोखिम के मौलिक पुनर्मूल्यान और सुरक्षित परिसंपत्तियों की बढ़ती मांग के साथ-साथ मध्यस्थीकरण सहयोग के लिए आवश्यक चलनिधि की मांग और आपूर्ति में बड़े और लगातार असंतुलन

⁴ बीआईएस (2020): क्रेडिट मूल्यांकन समायोजन जोखिम ढांचा का लक्षित पुनरीक्षण, जुलाई।

⁵ वित्तीय स्थिरता बोर्ड (2020): बेंचमार्क संक्रमण से जुड़े पर्यवेक्षी मुद्दे, जुलाई।

⁶ वित्तीय स्थिरता बोर्ड (2020): मार्च में बाजार हलचल की समग्र समीक्षा, नवंबर।

पर प्रकाश डाला गया। समीक्षा में आगे तीन प्रमुख केंद्र बिंदुओं की पहचान की गई: (i) विशिष्ट जोखिम घटकों और आघात विस्तारण में योगदान देने वाले बाजारों का परीक्षण करना और उन्हें सही करने पर काम करना; (ii) गैर-बैंकिंग वित्तीय मध्यस्थता (एनबीएफआई) क्षेत्र एवं वित्तीय प्रणाली में प्रणालीगत जोखिमों की समझ बढ़ाना, जिसमें बैंकों और गैर-बैंकों के बीच अंतःक्रिया और सीमा पार प्रभाव-विस्तार शामिल हैं; और (iii) एनबीएफआई क्षेत्र में प्रणालीगत जोखिमों का समाधान करने के लिए नीतियों का आकलन करना।

III.1.8 गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता पर वैश्विक निगरानी रिपोर्ट

3.14 वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) ने गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता (एनबीएफआई) पर अपनी हाल के रिपोर्ट⁷ में कहा है कि मुख्य रूप से पेंशन निधि, बीमा निगमों और विभिन्न वित्तीय मध्यवर्ती संस्थाओं (ओएफआई)⁸ वाली एनबीएफआई क्षेत्र में बैंकिंग क्षेत्र की तुलना में तेज गति से वृद्धि हुई और 2019 में वैश्विक वित्तीय प्रणाली में इसकी हिस्सेदारी 49.5 प्रतिशत रही। सामूहिक निवेश माध्यमों (सीआईवी) के विस्तार ने, जो चाल के प्रति स्वाभाविक रूप से अतिसंवेदनशील होते हैं, अधिकांशतः वृद्धि को बढ़ाया। ईएमई में, एनबीएफआई क्षेत्र के वृद्धि की गति स्वयं और अल्पकालिक वित्तपोषण पर निर्भर गैर-बैंक संस्थाओं द्वारा ऋण विस्तार दोनों ही एई की तुलना में तेज थे।

III.1.9 जलवायु परिवर्तन जोखिम

3.15 जलवायु से संबंधित जोखिम पर अपनी हाल के रिपोर्ट⁹ में एफएसबी ने कहा है कि वित्तीय परिसंपत्तियों/देनदारियों के मूल्य या तो जलवायु परिवर्तन (भौतिक जोखिम) में निरंतरता, या कम कार्बन अर्थव्यवस्था (संक्रमण जोखिम) की ओर समायोजन से प्रभावित हो सकते हैं। भौतिक जोखिमों के आविर्भाव से परिसंपत्ति की कीमतों में तेज गिरावट आ सकती है और अनिश्चितता में वृद्धि हो सकती है। कम कार्बन

अर्थव्यवस्था की ओर अव्यवस्थित संक्रमण भी वित्तीय प्रणाली पर अस्थिरता का प्रभाव डाल सकता है। जलवायु से संबंधित जोखिम से परिसंपत्तियों के एक बड़े हिस्से पर क्रेडिट, चलनिधि और प्रतिपक्ष जोखिम बढ़ने से जोखिम प्रीमियम में अचानक वृद्धि हो सकती है। इस तरह के बदलावों से बैंक ऋण और बीमा प्रावधान में कमी के लिए स्वयं-प्रयास हो सकते हैं। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि जलवायु से संबंधित जोखिमों को कम करने के लिए वित्तीय फर्मों द्वारा की गई कार्रवाइयों की प्रभावकारिता आंकड़ों की कमी से बाधित हो सकती है जिसके साथ जलवायु से संबंधित जोखिमों या जलवायु से संबंधित प्रभावों के परिमाण के प्रति ग्राहकों के जोखिम का आकलन किया जाना है।

III.1.10 आउटसोर्सिंग और तृतीय पक्ष संबंधों से जोखिम

3.16 एफएसबी ने आउटसोर्सिंग और तृतीय पक्ष के संबंधों से संबंधित विनियामकीय और पर्यवेक्षी मुद्दों की पहचान करते हुए एक चर्चा पत्र¹⁰ प्रकाशित किया। वित्तीय संस्थानों (एफआई) के लिए कतिपय आउटसोर्सिंग और तृतीय पक्ष की सेवाओं के प्रावधान संबंधी प्रमुख चिंताओं में से एक संकेंद्रण से उत्पन्न प्रणालीगत जोखिम की संभावना पर प्रकाश डाला गया है जहां तृतीय पक्ष में रुकावट या विफलता वित्तीय स्थिरता के लिए संभावित प्रतिकूल परिणामों के साथ विफलता का एकल केंद्र बना सकता है।

III.1.11 उभरते बाजारों में पूंजी बाजार का विकास

3.17 अंतरराष्ट्रीय प्रतिभूति आयोग संगठन (आईओएससीओ) ने उभरते बाजार (ईएम) क्षेत्राधिकारों द्वारा उनके पूंजी बाजारों के विकास के क्रम में सामने आने वाली चुनौतियों और अवसरों का परीक्षण करते हुए अपनी अंतिम रिपोर्ट¹¹ प्रकाशित की। आईओएससीओ द्वारा चिह्नित की गई कुछ चुनौतियों में कमजोर संस्थागत और कानूनी ढांचे, आर्थिक विकास के निम्न स्तर और उच्च वित्तीय और सामाजिक जोखिम स्तर शामिल हैं। इसके अलावा, अनुचित संबद्ध-पार्टी

⁷ वित्तीय स्थिरता बोर्ड (2020): गैर-बैंक वित्तीय मध्यस्थता पर वैश्विक निगरानी रिपोर्ट, दिसंबर।

⁸ ओएफआई (अन्य वित्तीय मध्यस्थ), एनबीएफआई क्षेत्र के एक उप समूह में निवेश निधि, आबद्ध वित्तीय संस्थान और महाजन, केंद्रीय प्रतिपक्ष, दलाल-व्यापारी, वित्त कंपनियां, न्यासकंपनियां और संरचनाबद्ध वित्त माध्यम शामिल हैं।

⁹ वित्तीय स्थिरता बोर्ड (2020): वित्तीय स्थिरता के लिए जलवायु परिवर्तन के निहितार्थ, नवंबर।

¹⁰ वित्तीय स्थिरता बोर्ड (2020): बाह्यस्रोतीकरण और तृतीय पक्ष के संबंधों से संबद्ध विनियामकीय और पर्यवेक्षी मुद्दे, नवंबर।

¹¹ आईओएससीओ (2020): उभरते पूंजी बाजार का विकास: अवसर, चुनौतियां और समाधान, अक्टूबर।

लेनदेन, प्रकटीकरण विफलताओं, भ्रष्टाचार घोटालों, और अनुचित राजनीतिक हस्तक्षेप निवेशकों के लिए हतोत्साहन के रूप में कार्य करते हैं। यह स्वीकार करते हुए कि पूंजी बाजार विकास के लिए सभी हेतु कोई एक समान दृष्टिकोण नहीं है, रिपोर्ट में निम्नलिखित पांच प्रमुख सिफारिशों की गई हैं: (i) पूंजी बाजारों के विकास के लिए एक समग्र कार्यनीति तैयार करना; (ii) संस्थागत निवेशकों की भागीदारी बढ़ाकर यह सुनिश्चित करना कि पूंजी बाजार पूंजी जुटाने के लिए निष्पक्ष और कुशल है, निवेश के विविध विकल्प प्रदान करना, और बाजार का विश्वास सुनिश्चित करना; (iii) प्रतिभूति विनियामकों को पर्याप्त संसाधन, शक्ति और क्षमता सुनिश्चित करना; (iv) मजबूत राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय सहयोग स्थापित करना; और (v) निवेशक शिक्षा और मार्गदर्शन के लिए एक कुशल कार्य-योजना विकसित और कार्यान्वित करना।

III.2 घरेलू घटनाक्रम

3.18 वित्तीय स्थिरता और विकास परिषद (एफएसडीसी) और उसकी उप समिति (एफएसडीसी-एससी) ने औपचारिक और अनौपचारिक बातचीत के माध्यम से वित्तीय प्रणाली की उभरती स्थितियों पर निगरानी जारी रखा। वित्त मंत्री की अध्यक्षता में 15 दिसंबर 2020 को अपनी 23वीं बैठक में परिषद ने जोखिम से संबंधित मुद्दों के विशेष संदर्भ में प्रमुख वैश्विक और घरेलू समष्टि आर्थिक घटनाक्रमों और वित्तीय स्थिरता के मुद्दों की समीक्षा की और कहा कि भारत सरकार और वित्तीय क्षेत्र के विनियामकीय प्राधिकरणों द्वारा किए गए नीतिगत उपायों से प्रारंभिक अपेक्षाओं के सापेक्ष भारत में तेजी से आर्थिक सुधार सुनिश्चित हुआ है, जैसा कि 2020-21 की दूसरी तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद के घटते संकुचन से परिलक्षित होता है। अर्थव्यवस्था ने गति पकड़ी है और सुधार की रफ्तार पहले के अनुमान की तुलना में तेज रहेगी। वित्तीय स्थिरता बनाए रखने के साथ-साथ वित्तीय क्षेत्र को लगातार सहायता सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक पड़ने पर किए जाने वाले आगे के उपायों पर विचार-विमर्श किया गया। लंदन अंतर-बैंक प्रस्तावित दर (लाइबोर) आधारित संविदाओं से वैकल्पिक बेंचमार्क के लिए सुचारु संक्रमण में आने वाली चुनौतियों पर चर्चा की गई। यह कहा गया कि इस संबंध में

संबंधित हितधारक संस्थानों और विभागों को शामिल करते हुए एक बहुआयामी कार्यनीति की आवश्यकता है।

3.19 31 अगस्त 2020 को हुई अपनी 25वीं बैठक में, एफएसडीसी-एससी ने वित्तीय स्थिरता के समक्ष आने वाली वैश्विक और घरेलू विकास और वित्तीय बाजारों की स्थिति की समीक्षा की। इसमें अंतर-विनियामकीय समन्वय और उसके अंतर-विनियामकीय तकनीकी समूहों के कामकाज से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई। इसमें राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षा केंद्र (एनसीएफई) की पहलों और गतिविधियों तथा विभिन्न राज्यों/केंद्रों में राज्य स्तरीय समन्वय समितियों (एसएलसीसी) के कामकाज की भी समीक्षा की गई। विनियामकों ने इन असाधारण चुनौतीपूर्ण समय में वित्तीय क्षेत्र को मजबूत करने के लिए विभिन्न पहलों और उपायों पर समन्वय जारी रखने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

III.3 विनियामकों/ प्राधिकरणों की ओर से पहल

3.20 रिजर्व बैंक और वित्तीय क्षेत्र के अन्य विनियामकों ने वित्तीय स्थिरता बनाए रखने और कोविड-19 के प्रभाव का शमन करने के लिए अपना बहुआयामी प्रयास जारी रखा है। ये उपाय अनिवार्य रूप से बाजार की अखंडता और आघात-सहनीयता बनाए रखने के लिए महामारी से उत्पन्न बाधाओं को कम करने के लिए पहले की चलनिधि और विनियामकीय सहायता को जारी रखने और पूरकीकरण की ओर संचालित हैं।

III.3.1 क्रेडिट से संबंधित उपाय

3.21 रिजर्व बैंक ने उधारकर्ताओं पर महामारी-प्रेरित दबाव के प्रभाव को कम करने और रीयल सेक्टर की गतिविधि को पुनर्जीवित करने में सुविधा प्रदान करने के लिए अगस्त 2020 में एक समाधान ढांचे की घोषणा की। यह विवेकपूर्ण ढांचे के तहत एक विंडो प्रदान करता है ताकि विनिर्दिष्ट शर्तों के अधीन स्वामित्व में परिवर्तन किए बिना 'मानक' के रूप में वर्गीकृत करते हुए पात्र कॉर्पोरेट एक्सपोजर के संबंध में एक समाधान योजना को लागू करने के लिए उधारदाताओं को सक्षम बनाया जा सके तथा व्यक्तिगत ऋण भी शामिल हैं। इसके बाद, विशेषज्ञ समिति (अध्यक्ष श्री के वी कामथ) की सिफारिशों को मोटे तौर पर स्वीकार करते हुए रिजर्व बैंक ने समाधान ढांचे के तहत व्यक्तिगत ऋणों के अलावा अन्य एक्सपोजर के लिए

समाधान योजनाओं को अंतिम रूप देते हुए विचारणीय वित्तीय मानदंडों और क्षेत्र-विशिष्ट के लिए प्रारंभिक सीमा को अधिसूचित किया।

3.22 सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (एमएसएमई) क्षेत्र को अपनी सहायता जारी रखते हुए, रिजर्व बैंक ने एमएसएमई के लिए मौजूदा पुनर्गठन ढांचे को कुछ शर्तों के अधीन 31 मार्च 2021 तक बढ़ा दिया, जिसमें उन उधारकर्ताओं को शामिल किया गया जिनका गैर-निधिक एक्सपोजर सहित कुल एक्सपोजर ₹25 करोड़ से अधिक नहीं है और जिन्हें 1 मार्च 2020 को परिसंपत्ति वर्गीकरण में दर्जा घटाए बिना 'मानक' के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

3.23 भारत सरकार ने अपने 'आत्म निर्भर भारत अभियान' (आत्मनिर्भरता) पैकेज के हिस्से के रूप में आपातकालीन क्रेडिट लाइन गारंटी योजना (ईसीएलजीएस 1.0) को 31 मार्च 2021 तक बढ़ा दिया और ऋण आकार पात्रता सीमा बढ़ा दी। सरकार ने इस योजना का दूसरा संस्करण (ईसीएलजीएस 2.0) भी आरंभ किया है जिसमें बैंकों और एनबीएफसी द्वारा चिन्हित दवाबग्रस्त क्षेत्रों को ऋण के लिए ऋण गारंटी दी गई है। रिजर्व बैंक ने ऋण देने वाली संस्थाओं को इस योजना के तहत विस्तारित ऋण सुविधाओं को गारंटी कवरेज की सीमा तक शून्य जोखिम भार आवंटित करने की अनुमति दी।

III.3.2 एनबीएफसी क्षेत्र के लिए सहायता

3.24 एनबीएफसी अपने अंतर्निहित व्यापार मॉडलों के कारण कोविड-संबद्ध दबाव से प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुए थे। आपूर्ति पक्ष पर, कम रेटेड और अनरेटेड एक्सपोजर के लिए बैंकों की कम जोखिम वहन क्षमता के कारण विशेषकर छोटे और मध्य आकार के एनबीएफसी के लिए धन के स्रोत क्षीण हो गए। म्युचुअल फंड उद्योग पर भारी पड़ रहे अभूतपूर्व मोचन दबाव से स्थिति बदतर हो गई थी, जिसके परिणामस्वरूप स्प्रेड में उछाल रहा। मांग पक्ष में, एनबीएफसी के लिए महामारी जनित दबाव के परिणामस्वरूप उधार देने के लिए ऋणपात्र परियोजनाओं और उधारकर्ताओं को ढूंढना मुश्किल हो गया।

3.25 एनबीएफसी के समक्ष आने वाली चलनिधि संबंधी बाधाओं को दूर करने के लिए 2020-21 की पहली छमाही के दौरान रिजर्व बैंक और भारत सरकार द्वारा एक महत्वपूर्ण उपाय किया गया, जिसमें पात्र एनबीएफसी/एचएफसी से अल्पकालिक पेपर खरीदने के लिए एक विशेष प्रयोजन माध्यम (एसपीवी) स्थापित किया गया था, जो तब अपनी मौजूदा देनदारियों को खत्म करने के लिए आय का उपयोग कर सकता था। एसपीवी द्वारा जारी विशेष प्रतिभूतियों की गारंटी भारत सरकार द्वारा दी गई थी और उसे रिजर्व बैंक द्वारा खरीदा जाएगा। इसके अतिरिक्त, कम रेटेड एनबीएफसी, एचएफसी और एमएफआई के उधारों को कवर करने के लिए आंशिक क्रेडिट गारंटी (पीसीजी) संबंधी सरकारी योजना के दायरे का विस्तार किया गया था।

III.3.3 बीमा क्षेत्र

3.26 कोविड-19 महामारी के मद्देनजर उत्पन्न होने वाले विविध जोखिमों को देखते हुए, भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) ने "महामारी जोखिम पूल" के प्रणाली के माध्यम से इन जोखिमों को निपटाने की संभावना का पता लगाने के लिए एक कार्यदल का गठन किया। समूह ने प्रारंभिक चरण में लगभग ₹75,000 करोड़ की सरकारी बैकस्टॉप, एकत्र पूल प्रीमियम का सरकारी प्रतिभूतियों में या विशेष रूप से डिजाइन किए गए सरकारी बॉण्ड में निवेश था कवर किए गए क्षेत्रों की अनिवार्य भागीदारी का प्रस्ताव किया गया है।

III.3.4 ग्राहक संरक्षण

3.27 महामारी के संदर्भ में, लेनदेन करने के लिए डिजिटल मोड के उपयोग की ओर पर्याप्त झुकाव रहा। उसी गति से, नए उपयोगकर्ताओं के ऑनलाइन धोखाधड़ी के विभिन्न रूपों का शिकार हो जाने का जोखिम भी बढ़ गया। इस संबंध में रिजर्व बैंक ने विभिन्न मीडिया प्लेटफार्मों पर सुरक्षित डिजिटल बैंकिंग, धोखाधड़ी वाले इलेक्ट्रॉनिक लेनदेन में ग्राहकों की सीमित देयता और लोकपाल योजना पर अपने बहुभाषी जागरूकता अभियानों को तेज कर दिया। रिजर्व बैंक ने

¹² भारतीय रिजर्व बैंक (2020): "भुगतान धोखाधड़ी की बढ़ती घटनाएं – बहु चैनलों के माध्यम से जन जागरूकता अभियानों को बढ़ाना", परिपत्र संख्या आरबीआई/2019-20/256 डीपीएसएस. सीओ.ओडी. संख्या 1934/06.08.005/2019-20, जून।

अधिकृत भुगतान प्रणाली ऑपरेटर्स और प्रतिभागियों (बैंकों के साथ-साथ गैर-बैंकों) को डिजिटल भुगतान के संरक्षित और सुरक्षित उपयोग के बारे में अपने उपयोगकर्ताओं को शिक्षित करने के लिए लक्षित बहुभाषी अभियान शुरू करने की आवश्यकता संबंधी निर्देश भी जारी किए।

III.3.5 समाधान और वसूली

3.28 हाल के घटनाओं ने अर्थक्षम उद्यमों को महामारी जनित वित्तीय दबाव के कारण मजबूरन अन्यथा दिवाला कार्यवाही से बचाने के लिए दिवाला ढांचे के अंशशोधन की आवश्यकता हुई। इस दिशा में, भारत सरकार की अधिसूचना के अनुसार, दिवाला कार्यवाही शुरू करने के लिए आवश्यक चूक की सीमा राशि ₹1 लाख से बढ़ाकर ₹1 करोड़ तक कर दी गई है और आईबीसी में धारा 10ए जोड़कर 25 मार्च 2020 या उसके बाद होने वाली किसी भी चूक के लिए कॉरपोरेट देनदार की कॉरपोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया (सीआईआरपी) प्रारंभ करने को छः महीने तक के लिए निलंबित किया गया जिसे आगे प्रत्येक तीन महीने के दो चरणों में छह महीने के लिए और अर्थात् 24 मार्च 2021 तक बढ़ा दिया गया था।

III.4 अन्य विनियामकीय गतिविधियां

3.29 कोविड-संबद्ध अव्यवस्थाओं को दूर करने के लिए लक्षित उपाय करने के अलावा, वित्तीय क्षेत्र के विनियामकों ने विनियमित संस्थाओं की आघात-सहनीयता को मजबूत करने, बाजार अवसंरचना की मजबूती को सहारा देने और बाजार सहभागियों के लिए आसान परिचालन को बढ़ावा देने हेतु अपने प्रयासों को बनाए रखा (अनुबंध 3)। इनमें से कुछ पहलों पर नीचे प्रकाश डाला गया है।

III.4.1 संविदाओं की द्विपक्षीय नेटिंग

3.30 वित्तीय क्षेत्र की स्थिरता और विकास को बढ़ावा देने की दिशा में एक बड़ा कदम, 01 अक्टूबर 2020 से अर्हित वित्तीय संविदा द्विपक्षीय नेटिंग अधिनियम, 2020 प्रभावी हुआ। यह अर्हित वित्तीय बाजार सहभागियों के बीच किए गए सभी अर्हित वित्तीय संविदाओं के लिए द्विपक्षीय नेटिंग को मान्यता देता है, और संविदा से जुड़े सांपाषिक प्रतिभूतियों की प्रवर्तनीयता भी सुनिश्चित करता है। इसकी अनुपस्थिति में, जब वित्तीय संविदाओं के एक सेट के प्रतिपक्षों में से एक

दिवालियापन में चले जाने पर सांपाषिक प्रतिभूतियों की प्रवर्तनीयता पर अनिश्चितता थी और अन्य प्रतिपक्ष को वित्तीय संविदाओं के अनुसार भुगतान करना जारी रखना होगा, जबकि दिवालियापन में चले गए प्रतिपक्ष से भुगतान प्राप्त करने पर अनिश्चितता थी। नया कानून बैंकों के पूंजी संरक्षण तथा बाजार सहभागियों को जोखिम हेजिंग और जोखिम शमन के लिए क्रेडिट डिफॉल्ट स्वैप (सीडीएस) सहित डेरिवेटिव का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने सहित वित्तीय क्षेत्र के लिए पर्याप्त लाभ लाया है। इससे कम रेटेड जारीकर्ताओं द्वारा कॉरपोरेट बांड जारी करने की सुविधा देकर बांड बाजार को मजबूत करने में भी मदद मिलेगी। यह बाजार सहभागियों को निवल आधार पर गैर-केंद्रित रूप से मंजूरी प्राप्त ओटीसी डेरिवेटिव्स (एनसीसीडी) के लिए मार्जिन का आदान-प्रदान करने में भी सक्षम बनाएगा।

भुगतान और निपटान प्रणाली

III.4.2 आरटीजीएस 24x7 का शुभारंभ

3.31 रिजर्व बैंक का भुगतान प्रणाली विज़न 2021 सुरक्षित, संरक्षित, सुलभ और किफायती भुगतान प्रणालियों की कुशल और निर्बाध उपलब्धता सुनिश्चित करने की आकांक्षा रखता है। इसी विज़न के अनुसरण में, तथा भुगतान को प्रभावी करने के लिए व्यवसायों को और लचीलापन प्रदान करने के लिए, रिजर्व बैंक ने 14 दिसंबर 2020 से तत्काल सकल निपटान (आरटीजीएस) प्रणाली को वर्ष के सभी दिनों में चौबीसों घंटे उपलब्ध कराया है। भारत इस मील के पत्थर को हासिल करने वाले दुनिया के चंद देशों में से एक बन गया है। एक वर्ष पूर्व चौबीसों घंटे राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक निधि अंतरण (एनईएफटी) प्रणाली को क्रियाशील करने के पश्चात् आरटीजीएस 24x7x365 को लागू किया गया था। आरटीजीएस वर्तमान में ₹57.96 लाख के औसत टिकट आकार के साथ 237 प्रतिभागी बैंकों में लगभग ₹4 लाख करोड़ के मूल्य के दैनिक लगभग 6 लाख लेनदेन संभालता है (नवंबर 2020)।

III.4.3 भारतीय भुगतान प्रणाली के माध्यम से धन का विप्रेषण

3.32 भारतीय रिजर्व बैंक की भुगतान और निपटान प्रणाली विज़न भारत की भुगतान प्रणालियों के वैश्विक पहुँच को बढ़ाने

की गुंजाइश की परिकल्पना करता है जिसमें विप्रेषण सेवाएं भी शामिल हैं। ऐसा, मानक-निर्धारण में सहयोग और योगदान करके अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय मंचों में सक्रिय भागीदारी और सहयोग के माध्यम से किया जा रहा है। इस लक्ष्य की ओर निरंतर ध्यान देने के लिए भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) ने अंतरराष्ट्रीय व्यापार हेतु पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी एनपीसीआई इंटरनेशनल पेमेंट्स लिमिटेड को प्रोत्साहन प्रदान किया है। रुपये कार्ड की अंतरराष्ट्रीय मौजूदगी को मजबूती प्रदान किए जाने का कार्य किया जा रहा है और यूनिकायड पेमेंट इंटरफ़ेस(यूपीआई) के उपयोग द्वारा भारत में विदेशी आवक धन प्रेषण को बढ़ावा देने के लिए अंतर-क्षेत्रीय साझेदारी की जा रही है।

III.4.4 डिजिटल लेनदेन – क्वीक रिस्पोंस (क्यूआर) कोड संरचना को कारगर बनाना

3.33 भारत में क्वीक रिस्पोंस (क्यूआर) कोड की वर्तमान प्रणाली की समीक्षा के आधार पर बुनियादी ढांचे की स्वीकृति को सुदृढ़ बनाने के उपाय किए गए हैं और अंतः प्रचालनीयता और प्रणाली दक्षता वृद्धि के माध्यम से बेहतर उपयोगकर्ता सुविधा प्रदान किए गए हैं। इन उपायों में शामिल हैं- (i) मौजूदा अंतर-संचालित क्यूआर कोड जैसे- यूपीआई क्यूआर और भारत क्यूआर को जारी रखना; (ii) मार्च 2022 तक एक या एक से अधिक अंतः प्रचालनीयता क्यूआर कोड के मालिकाना क्यूआर कोड का उपयोग करके भुगतान प्रणाली ऑपरेटरों द्वारा माइग्रेशन; और (iii) आरबीआई द्वारा लाभप्रद सुविधाओं को सक्षम करने के लिए अंतः प्रचालनीयता -क्यूआर कोड को मानकीकृत और बेहतर बनाने के लिए परामर्श प्रक्रिया को जारी रखना।

III.4.5 वित्तीय बाजार संरचना (एफएमआई) और खुदरा भुगतान प्रणाली (आरपीएस) के लिए निगरानी ढांचा

3.34 बदलते भुगतान और निपटान परितंत्र के साथ, भुगतान प्रणाली ऑपरेटरों के लिए पर्यवेक्षी ढांचे के साथ-साथ पर्यवेक्षणीय महत्व जो कि हस्तक्षेप अवधि में उत्पन्न हुए हैं को शामिल करने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा वित्तीय बाजार संरचना(एफएमआई) और खुदरा भुगतान प्रणाली निगरानी ढांचा को संशोधित किया गया है। यह फ्रेमवर्क पर्यवेक्षण

उद्देश्यों और पर्यवेक्षी प्रक्रियाओं के साथ-साथ वित्तीय बाजार संरचना(पीएफएमआई) के लिए मूल्यांकन पद्धति और वित्तीय बाजार संरचनाओं (पीएफएमआईएस) के लिए आईओएससीओ के सिद्धांतों के तहत सिस्टम-वाइड महत्वपूर्ण भुगतान प्रणालियों को निर्दिष्ट करता है। भुगतान प्रणालियों और सहभागियों का आकलन और निगरानी करने के लिए आरबीआई ने पॉइंट ऑफ अराइवल (पीओए) और परफॉर्मेंस मेट्रिक्स (पीएम) के बिंदु निर्धारित किए हैं।

III. 4.6 भारतीय संदर्भ में लंदन अंतर-बैंक प्रस्तावित दर का ट्रैन्जिशन

3.35 रिजर्व बैंक अंतरराष्ट्रीय और घरेलू विकास की निगरानी कर रहा है और बैंकों को लंदन अंतर-बैंक प्रस्तावित दर की समाप्ति के लिए तैयार रहने की आवश्यकता के बारे में जागरूक कर रहा है। इसके लिए भारतीय बैंकों संघ (आईबीए) को चरण-दर-चरण ट्रैन्जिशन योजना पर काम करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी है।

3.36 घरेलू बाजार में, लंदन अंतर-बैंक प्रस्तावित दर लिंकड एक्सपोजर ऋण अनुबंधों में विस्तारित है (जैसे बाह्य वाणिज्यिक उधार [ईसीबी], अस्थायी जमा दर, एलआईबीओआर या लाइबोर से लिंकड व्युत्पन्न (जैसे मुंबई अंतर- बैंक प्रस्तावित दर, जो लंदन अंतर-बैंक प्रस्तावित दर पर आधारित घरेलू बेंचमार्क है) और बहुपक्षीय संस्थानों से उठाए गए सरकारी ऋण जो लाइबोर से संदर्भित हैं (सारणी 3.1)। इसके अलावा, लाइबोर से व्यापार अनुबंध संदर्भित हैं, लेकिन यह अल्पावधि स्वरूप का है।

सारणी 3.1 : भारत के विभिन्न वित्तीय अनुबंधों का लंदन अंतर-बैंक प्रस्तावित दर लिंकड एक्सपोजर

वित्तीय अनुबंध	एक्सपोजर
बाह्य वाणिज्यिक उधार(ईसीबी)*	\$74 बिलियन
एफसीएनआर(बी) जमाराशियाँ *	\$24 बिलियन
पारस्परिक मुद्रा अदलाबदली [§]	\$83 बिलियन
एफसीवाई ब्याज दर स्वैप [§]	\$260 बिलियन
एमआईएफओआर ब्याज दर स्वैप [§]	\$91 बिलियन

टिप्पणी : - * 31 मार्च 2020 की स्थिति; § 31 अगस्त 2020 की स्थिति।

स्रोत : ब्लूमबर्ग और आरबीआई स्टाफ आकलन।

3.37 भारतीय संदर्भ में एक सूचारू परिवर्तन सुनिश्चित करने के लिए उठाए गए महत्वपूर्ण कदम हैं: (i) मुंबई अंतर- बैंक प्रस्तावित दर को प्रतिस्थापित करने के लिए वैकल्पिक तरीकों का विकास; (ii) फॉलबैक क्लॉज का विकास, जिसे भारतीय बाजार के लिए अनुकूल तैयार किया गया है लेकिन यह विश्व स्तर पर अपनाई गई प्रथाओं पर आधारित है। (iii) अनुबंध पुनर्चर्चा के मुद्दों के निपटान के लिए हितधारकों की जागरूकता बढ़ाना; (iv) लंदन अंतर-बैंक प्रस्तावित दर की समाप्ति तिथि के करीब एक कटऑफ तिथि को अधिसूचित करना, जिसके बाद संस्थानों को नए अनुबंधों में प्रवेश करना बंद कर देना चाहिए; जो लंदन अंतर-बैंक प्रस्तावित दर के संदर्भ में है। यह वित्तीय अनुबंधों का वैश्विक स्वीकरण के विकास पर भी निर्भर करता है जो वैकल्पिक संदर्भ दर (एआरआर) को संदर्भित करते हैं।

III.4.3 साइबर सुरक्षा

3.38 भारतीय कंप्यूटर आपातकालीन प्रतिक्रिया टीम (सीईआरटी- इन) ने देश में वित्तीय संस्थाओं की साइबर क्षमता को मजबूत करने के लिए कई उपाय किए हैं। इनमें शामिल हैं: (i) साइबर सुरक्षा अभ्यास/ प्रशिक्षण; (ii) ऑपरेटिंग साइबर स्वच्छता केंद्र (बोटनेट क्लीनिंग एंड मालवेयर एनालिसिस सेंटर); (iii) वास्तविक समय में साइबर खतरा आसूचना का प्रसार; (iv) वित्तीय क्षेत्र में सीआईएसओ समुदाय के साथ अनुरूप परामर्श साझा करना; (v) सुरक्षा खतरों को दूर करने और डिजिटल भुगतानों को सुरक्षित करने के लिए सर्वोत्तम प्रथाओं को विकसित करने के लिए एशिया पैसिफिक सीईआरटी सदस्यों के लिए सुरक्षित डिजिटल भुगतान कार्य समूह की रिपोर्ट जारी करना; (vi) साइबर दुर्घटना प्रतिक्रिया और साइबर क्षमता बढ़ाने के लिए रिकवरी पर एक टूलकिट (वित्तीय स्थिरता बोर्ड के सदस्य के रूप में) विकसित करना; और (vii) मई 2010 के मध्य से सीईआरटी- इन के अंतर्गत वित्तीय क्षेत्र के कंप्यूटर सुरक्षा हादसा प्रतिक्रिया टीम (सीएसआईआरटीफिन) की स्थापना।

3.39 रिजर्व बैंक डिजिटल बैंकिंग पर जोर दे रहा है, जिसका ग्राहक आधार अब काफी बड़ा है। अब सभी वित्तीय संस्थाओं को सुरक्षित, मजबूत, माप योग्य और दोष-सहिष्णु आईटी इन्फ्रास्ट्रक्चर में पर्याप्त निवेश करने की आवश्यकता है ताकि वे प्रतिस्पर्धी बने रहें, विस्तार योजना अच्छी तरह से समर्थित हो

और जनता का विश्वास बना रहे। परिचालन जोखिम का प्रबंधन, विशेष रूप से धोखाधड़ी से, घटनाओं को नियंत्रित करने और साइबर संबंधी और अन्यथा करने में सक्षम न हो पाना धोखाधड़ी जोखिम प्रबंधन के क्षेत्र में एक चिंता विषय है। रिजर्व बैंक मामलों/ कमियों के आधार पर इन मामलों पर उचित पर्यवेक्षी कार्रवाई करता है।

3.40 उभरते आईटी और साइबर खतरे के माहौल के लिए प्राथमिक (शहरी) सहकारी बैंकों (यूसीबी) के साइबर क्षमता को मजबूत करने के उद्देश्य से, रिजर्व बैंक ने विभिन्न हितधारकों से प्राप्त इनपुट के आधार पर शहरी सहकारी बैंकों के लिए 'साइबर सुरक्षा के लिए 'प्रौद्योगिकी विज्ञान: 2020-2023' जारी किया है। यह एक पांच-स्तंभ वाले रणनीतिक दृष्टिकोण को कवर करता है (i) प्रशासन प्रणाली संबंधी निगरानी; (ii) उपयोगिता प्रौद्योगिकी निवेश; (iii) उपयुक्त विनियमन और पर्यवेक्षण; (iv) मजबूत सहयोग; और (v) आवश्यक आईटी और साइबर सुरक्षा कौशल विकसित करना। इससे यह आकांक्षा की जाती है कि (ए) साइबर सुरक्षा पर बैंकों के बोर्ड द्वारा अधिक ध्यान दिया जाए; (बी) अपनी आईटी परिसंपत्तियों को बेहतर ढंग से सुरक्षित करने के लिए शहरी सहकारी बैंकों को सक्षम करें; (सी) साइबर सुरक्षा से संबंधित नियंत्रणों पर शहरी सहकारी बैंकों के लिए एक ऑफसाइट पर्यवेक्षी तंत्र ढांचा लागू करना; (डी) एक मंच विकसित करना जहां शहरी सहकारी बैंक अपने सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा कर सकते हैं और व्यावहारिक मुद्दों और चुनौतियों पर चर्चा कर सकते हैं; और (ई) शहरी सहकारी बैंकों से संबंधित जोखिमों के प्रभावी प्रबंधन के लिए जागरूकता / प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए एक ढांचा को क्रियान्वित करना।

III.4.8 जोखिम न्यूनीकरण उपाय

3.41 बड़े उधारकर्ताओं द्वारा कई ऑपरेटिंग खातों के उपयोग के संदर्भ में, रिजर्व बैंक ने नकदी उधार (सीसी)/ ओवरड्राफ्ट (ओडी) का लाभ प्राप्त करने वाले ग्राहकों के लिए चालू खाता खोलने पर क्रेडिट अनुशासन में सुधार करने के उद्देश्य से संशोधित निर्देश जारी किए हैं। सांविधिक लेखा परीक्षकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले लॉन्ग फॉर्म ऑडिट रिपोर्ट के प्रारूपों की समीक्षा की गई और उन्हें संशोधित किया गया है। सभी अधिकृत भुगतान प्रणाली ऑपरेटर्स और प्रतिभागियों को लघु संदेश सेवाओं (एसएमएस) के माध्यम से लक्षित बहुभाषी अभियान

शुरू करने और प्रिंट और विजुअल मीडिया में विज्ञापन देने की सलाह दी गई, ताकि वे अपने उपयोगकर्ताओं को डिजिटल के सुरक्षित उपयोग के बारे में शिक्षित कर सकें। इसके अलावा, कानून प्रवर्तन एजेंसियों, प्रारंभिक चेतावनी संकेत (ईडब्ल्यूएस) तंत्र, रेड-फ्लैग किए गए खातों और फॉरेंसिक ऑडिट की कमीशनिंग में धोखाधड़ी की रिपोर्ट करने के निर्देशों की समीक्षा की जा रही है। भारतीय सनदी लेखाकार संस्थान (आईसीएआई) इस क्षेत्र में अपने सदस्यों द्वारा किए गए कार्यों के मानकीकरण के उद्देश्य से फॉरेंसिक अकाउंटिंग एंड इन्वेस्टिगेशन (एफएआईएस) को विकसित करने की प्रक्रिया में है।

III.4.9 जमा बीमा

3.42 भारत में जमा बीमा की सीमा ₹5 लाख तक बढ़ जाने पर, मार्च 2020 में बीमित जमा राशि ₹68,71,500 करोड़ थी और कुल आकलन योग्य जमा राशि ₹1,34,88,900 करोड़ का 50.9 प्रतिशत थी। कुल खातों की संख्या में से पूरी तरह से संरक्षित खातों की कुल संख्या 98.3 प्रतिशत है। 2019-20 के दौरान सदस्य बैंकों से एकत्र किए गए ₹13,234 करोड़ के कुल प्रीमियम में से, वाणिज्यिक बैंकों ने 93 प्रतिशत और सहकारी बैंकों ने शेष सात प्रतिशत का योगदान दिया। वर्ष 2020-21 की पहली छमाही के दौरान प्राप्त प्रीमियम ₹8,540 करोड़ था। निक्षेप बीमा और प्रत्यय गारंटी निगम (डीआईसीजीसी) ने 2019-20 के दौरान 10 सहकारी बैंकों से संबन्धित ₹80.7 करोड़ के कुल दावों को मंजूरी दी।

सारणी 3.2 : सहकारी बैंकों की बीमाकृत जमा (₹ करोड़)

तिमाही समाप्ति	निर्देश के तहत एसटीसीबी/डीसीसीबी	निर्देश के तहत यूसीबी	कमजोर यूसीबी को छोड़कर (3)	कुल (2+3+4)
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)
जून 2020	4,945	11,697	5,151	21,793
सितम्बर 2020	4,945	11,688	5,151	21,784

स्रोत : डीआईसीजीसी।

3.43 निरीक्षणों के दौरान देखी गई गंभीर अनियमितताओं के अवलोकन के मामले में, रिज़र्व बैंक सहकारी बैंकों को जमाकर्ताओं के हितों की रक्षा करने और सार्वजनिक हित में दिशा-निर्देश जारी करता है। सितंबर 2020 के अंत तक, कमजोर बैंकों और निर्देश प्राप्त बैंकों की बीमित जमा राशि वाणिज्यिक और सहकारी बैंकों की कुल बीमित जमा राशि का लगभग 0.3 प्रतिशत, और जमा बीमा कोष का 18.2 प्रतिशत थी (सारणी 3.2)।

III.4.10 कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया (सीआईआरपी)

3.44 वर्ष 2020 की दूसरी तिमाही के अंत में, दिवाला और दिवालियापन कोड (आईबीसी) लागू होने के बाद से स्वीकृत सीआईआरपी की संख्या 4008 पर थी, जिसमें सबसे बड़ा हिस्सा के लिए विनिर्माण क्षेत्र का लेखा-जोखा था (सारणी 3.3 और 3.4)। महामारी की स्थिति के मद्देनजर, प्रक्रिया के अस्थायी निलंबन के कारण पिछली तिमाहियों की तुलना में

सारणी 3.3 : कॉर्पोरेट दिवाला समाधान प्रक्रिया

(संख्या)

तिमाही	तिमाही की शुरुआत में सीआईआरपी	स्वीकृत	तक बंद किया गया				तिमाही के अंत में सीआईआरपी
			अपील/समीक्षा/निपटान किया गया	धारा 12ए के तहत वापसी	समाधान योजना का अनुमोदन	परिसमापन की शुरुआत	
2016-17	0	37	1	0	0	0	36
2017-18	36	705	90	0	20	90	541
2018-19	541	1152	141	95	80	306	1071
पहली तिमाही: 2019-20	1071	301	45	31	26	96	1174
दूसरी तिमाही: 2019-20	1174	588	46	43	33	155	1485
तीसरी तिमाही: 2019-20	1485	623	71	43	40	150	1804
चौथी तिमाही: 2019-20	1804	441	62	46	36	135	1966
पहली तिमाही: 2020-21	1966	81	7	21	20	25	1974
दूसरी तिमाही: 2020-21	1974	80	10	12	22	68	1942
कुल	NA	4008	473	291	277	1025	1942

इन सीआईपी का संबंध 3936 कॉर्पोरेट कर्जदारों से है।

एक सीडी को छोड़कर, जो बीआईएफआर से सीधे समाधान के अंतर्गत चला गया है।

स्रोत : आंकड़ों का समेकन एनसीएलटी की वेबसाइट का प्रयोग करते हुए किया गया है और दिवाला पेशेवरों द्वारा भरा गया है।

सारणी 3.4: 30 सितम्बर 2020 तक सीआईआरपी का क्षेत्रवार वितरण

तिमाही	सीआईआरपी की संख्या						चल रही है
	स्वीकृत	तक बंद किया गया					
		अपील/समीक्षा/निपटान किया गया	धारा 12ए के तहत वापसी	समाधान योजना का अनुमोदन	परिसमापन की शुरुआत	कुल	
विनिर्माण	1639	163	118	140	449	870	769
खाद्य, पेय पदार्थ एवं तंबाखू के उत्पाद	208	17	10	15	58	100	108
रसायन एवं रासायनिक उत्पाद	164	16	15	19	38	88	76
बिजली से चलने वाली मशीनरी एवं यंत्र	118	14	4	5	45	68	50
विनिर्मित धात्विक उत्पाद	92	8	11	4	28	51	41
मशीनरी एवं उपकरण	183	25	20	10	45	100	83
टेक्सटाइल, चमड़ा एवं पोशाक संबंधी उत्पाद	279	27	18	19	98	162	117
लकड़ी, रबड़, प्लास्टिक एवं कागजी उत्पाद	195	17	18	20	38	93	102
मूलभूत धातुएं	286	26	11	35	73	145	141
अन्य	114	13	11	13	26	63	51
स्थावर संपदा, किराये में देना एवं कारोबारी गतिविधियाँ	793	123	75	34	166	398	395
स्थावर संपदा की गतिविधियाँ	188	36	16	5	18	75	113
कंप्यूटर और संबन्धित गतिविधियाँ	115	15	12	1	29	57	58
अनुसंधान एवं विकास	5	1	1	1	0	3	2
अन्य कारोबारी गतिविधियाँ	485	71	46	27	119	263	222
निर्माण	428	70	36	26	76	208	220
थोक एवं खुदरा व्यापार	398	39	22	16	127	204	194
होटल एवं रेस्तरां	93	15	9	10	20	54	39
बिजली एवं अन्य	124	11	3	10	22	46	78
यातायात, भंडारण एवं संचार	119	15	7	9	40	71	48
अन्य	414	37	21	32	125	215	199
कुल	4008	473	291	277	1025	2066	1942

टिप्पणी : वितरण कॉर्पोरेट कर्जदारों के सीआईएन पर आधारित है और राष्ट्रीय औद्योगिकी वर्गीकरण (एनआईसी 2004) के अनुसार है।

स्रोत: भारतीय दिवाला एवं धनशोधन अक्षमता बोर्ड (आईबीबीआई)

पहली तिमाही और 2020 की दूसरी तिमाही के दौरान सीआईआरपी की संख्या में तेज गिरावट आई।

3.45 शुरू किए गए सीआईआरपी पहल से, सितंबर 2020 के अंत तक 277 समाधान की प्रक्रिया पूरी हुई। परिसमापन योजना के तहत लेनदारों द्वारा वसूली परिसमापन मूल्य का

185.2 प्रतिशत था, जबकि प्राप्ति उनके दावों की तुलना में 43.6 प्रतिशत थी (सारणी 3.5)। गौरतलब है कि उपरोक्त 277 प्रस्तावों में से 91 कॉर्पोरेट देनदार औद्योगिक और वित्तीय पुनर्निर्माण (बीआईएफआर) प्रक्रियाओं या चूक के लिए बोर्ड के अधीन थे। सितंबर 2020 के अंत तक रिजॉल्यूशन प्लान तैयार

सारणी 3.5 : 30 सितम्बर 2020 की स्थिति के अनुसार हितधारक वार सीआईआरपी पहल का परिणाम

परिणाम	विवरण	वित्तीय ऋणदाता	परिचालनगत ऋणदाता	कॉर्पोरेट कर्जदार	कुल
सीआईआरपी की अवस्था	अपील/समीक्षा/समाधान से समाप्त हुए	124	343	6	473
	धारा 12ए के तहत वापसी से समाप्त हुए	88	198	5	291
	समाधान योजना के अनुमोदन से समाप्त	157	80	40	277
	परिसमापन से समाप्त हुए	444	438	143	1025
	चली रही सीआईआरपी	917	958	67	1942
	कुल	1730	2017	261	4008
सीआईपीआर समर्पण समाधान योजना	एफसी द्वारा प्रा वसूली (% का परिसमापन मूल्य)	192.09	112.40	142.77	185.15
	उनके दावों के % के रूप में एफसी द्वारा वसूली	46.84	21.80	25.30	43.56
	सीआईपीआर को बंद करने में औसत समय लगता है	444	406	443	433
सीआईपीआर समर्पण परिसमापन	दावों के % के रूप में परिसमापन मूल्य	6.35	9.19	9.89	7.20
	सीआईपीआर को बंद करने में औसत समय लगता है	336	304	306	318

स्रोत: आईबीबीआई

करने वाले सीआईपीआर ने प्रक्रिया के समापन के लिए औसतन 384 दिन (न्याय निर्णयन प्राधिकारी द्वारा निकाले गए समय को छोड़कर) लिया।

3.46 बंद किए गए सीआईआरपी में से, परिसमापन के लिए लगभग आधे प्रतिफल मिले। इनमें से 73.5 प्रतिशत मामलों में (1022 में से 751 जिसके लिए डेटा उपलब्ध है), कॉर्पोरेट देनदार पहले बीआईएफआर और / या निष्क्रिय थे (सारणी 3.6) और ज्यादातर मामलों में उनके सीआईआरपी में शामिल होने के पहले आर्थिक मूल्य पहले ही घट गए थे। इन कॉर्पोरेट देनदारों के पास आस्तियां, औसतन ऋण की राशि का पाँच प्रतिशत से भी कम मूल्य का था।

III.4.11 म्यूचुअल फंड

3.47 वर्ष 2020-21 की पहली छमाही के दौरान, म्यूचुअल फंड योजनाओं में ₹1.5 लाख करोड़ का शुद्ध प्रवाह पिछले वर्ष की इसी अवधि के दौरान ₹0.6 लाख करोड़ की तुलना में बहुत अधिक था। आय / ऋण-उन्मुख योजनाओं ने आमदनी (₹1.2 लाख करोड़) की प्रमुख हिस्सेदारी को आकर्षित किया, जबकि विकास / इक्विटी-उन्मुख योजनाओं को अपेक्षाकृत अल्प राशि (₹2,496 करोड़) के लिए जिम्मेदार माना गया।

सारणी 3.6 : 30 सितम्बर 2020 तक परिसमापन के आदेश के साथ सीआईआरपी की समाप्ति होना

सीआईआरपी की शुरुआत में कॉर्पोरेट कर्जदारों की स्थिति	इनके द्वारा प्रारम्भ की गई सीआईआरपी की संख्या			
	वित्तीय ऋणदाता	परिचालनगत ऋणदाता	कॉर्पोरेट कर्जदार	कुल
या तो बीआईएफआर के अंतर्गत या फिर निष्क्रिय अथवा दोनों समाधान का मूल्य < परिसमापन का मूल्य	304	337	110	751
समाधान का मूल्य > परिसमापन का मूल्य*	67	35	26	128
	374	404	116	894

** : ऐसे मामले शामिल हैं जहां कोई समाधान योजनाएं प्राप्त नहीं हुई थीं और ऐसे मामले जहां परिसमापन मूल्य शून्य है या अनुमानित नहीं है।

टिप्पणी: 1.57 सीआईआरपी ऐसी थीं, जहां पर कॉर्पोरेट कर्जदार बीआईएफआर के अधीन थीं अथवा निष्क्रिय थीं, किन्तु उनके समाधान का मूल्य परिसमापन के मूल्य से अधिक था।

2.3 सीआईआरपी से आंकड़े अभी प्रतीक्षित हैं।

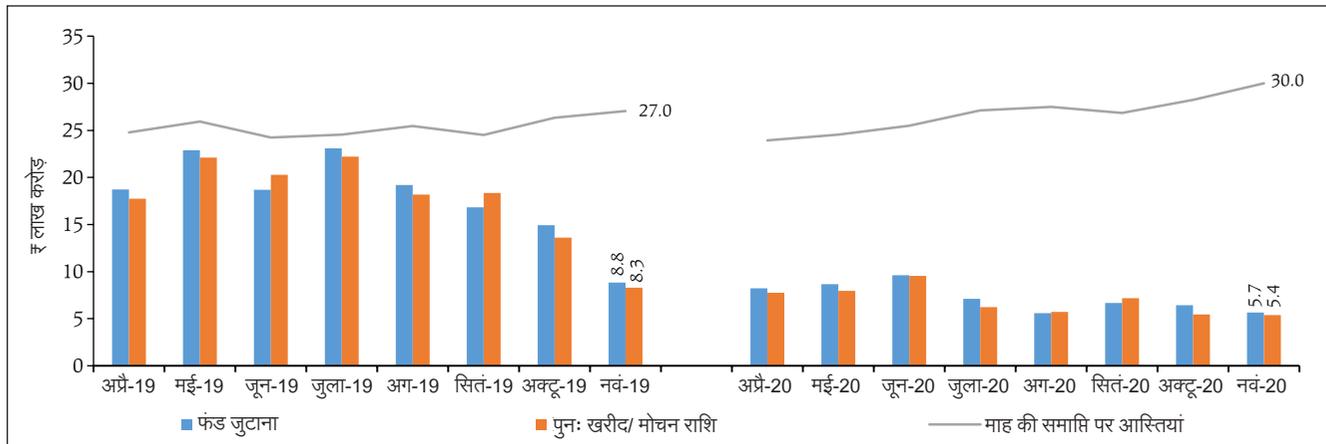
स्रोत : आईबीबीआई।

अन्य सभी योजनाओं ने मिलकर 0.3 लाख करोड़ की पूंजी अंतर्वाह दर्ज की।

3.48 प्रबंधनाधीन आस्तियों (एयूएम) के तहत म्यूचुअल फंड उद्योग की संपत्ति में नवंबर 2020 के अंत में 10.9 प्रतिशत (वर्ष-दर-वर्ष) की वृद्धि हुई (चार्ट 3.1)।

3.49 सुनियोजित निवेश योजना (एसआईपी) निवेशकों के लिए एक पसंदीदा विकल्प बनी रही। अप्रैल-सितंबर 2020 के दौरान, एसआईपी के फोलियो की संख्या में 22 लाख की वृद्धि हुई (सारणी 3.7)।

चार्ट 3.1: म्यूचुअल फंड और एयूएम द्वारा संसाधनों का अभिनियोजन



स्रोत : भारतीय प्रतिभूति और विनियमन बोर्ड (सेबी)

सारणी 3.7 : 2020-21 में एसआईपी (01 अप्रैल 2020 से 30 सितंबर 2020)

अवधि के आरंभ में विद्यमान (एसटीपी को छोड़कर)	अवधि के दौरान पंजीकृत	अवधि के दौरान परिपक्व	अवधि के दौरान परिपक्वता-पूर्व निरस्त	अवधि के अंत में एसआईपी की अंतिम संख्या	अवधि के आरंभ में एयूएम	अवधि के अंत में एयूएम
(संख्या लाख में)				(₹ करोड़ में)		
315	72	15	35	337	2,38,821	3,75,968

स्रोत : सेबी

III.4.12 पूंजी संग्रहण- इक्विटी और कॉर्पोरेट बॉन्ड

3.50 महामारी के बावजूद, वर्ष 2020-21 की पहली छमाही के दौरान प्राथमिक बाजार से फंड जुटाना 2019-20 में इसी अवधि की तुलना में 14.1 प्रतिशत अधिक था। यह ऋण प्लेसमेंट (सार्वजनिक निर्गम और निजी प्लेसमेंट के माध्यम से) के माध्यम से उठाए गए धन में 24.9 प्रतिशत की वृद्धि के कारण था। इस अवधि के दौरान इक्विटी के माध्यम से फंड जुटाने में 6.6 प्रतिशत की गिरावट आई है (चार्ट 3.2)।

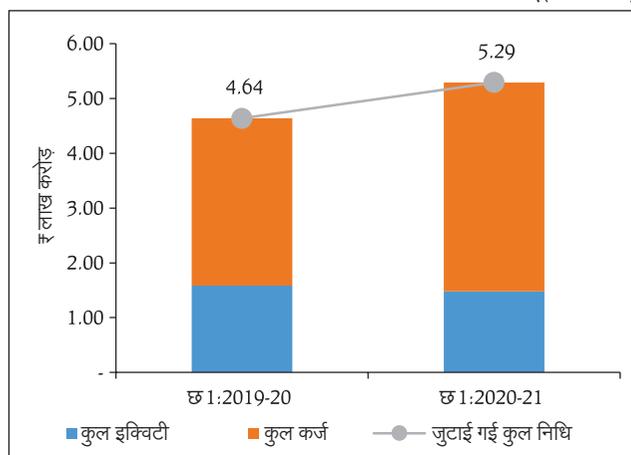
3.51 वर्ष 2020-21 की पहली छमाही के दौरान, अर्हताप्राप्त संस्थागत स्थानन के माध्यम से जुटाई गई धनराशि पिछले वर्ष की इसी अवधि में 152 प्रतिशत बढ़ी, जबकि अधिमानी आबंटन के माध्यम से उठाए गए धनराशि में 78.3 प्रतिशत की गिरावट आई। इस अवधि के दौरान सार्वजनिक निर्गम के माध्यम से जुटाया गया धन लगभग दोगुना हो गया। ऋण के मामले में, पिछले वर्ष की समान अवधि की तुलना में वर्ष 2020-21 की पहली छमाही के दौरान ऋण के निजी तौर पर शेयर आबंटन में 27.7 प्रतिशत की वृद्धि हुई (चार्ट 3.3)

III.4.13 क्रेडिट रेटिंग

3.52 समग्र आधार पर, पूर्ववर्ती दो तिमाहियों की तुलना में, जून 2020 को समाप्त तिमाही के दौरान कुल बकाया रेटिंग में डाउनग्रेडेड / निलंबित कंपनियों की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई

चार्ट 3.2: प्राथमिक बाजार में जुटाई गयी निधि

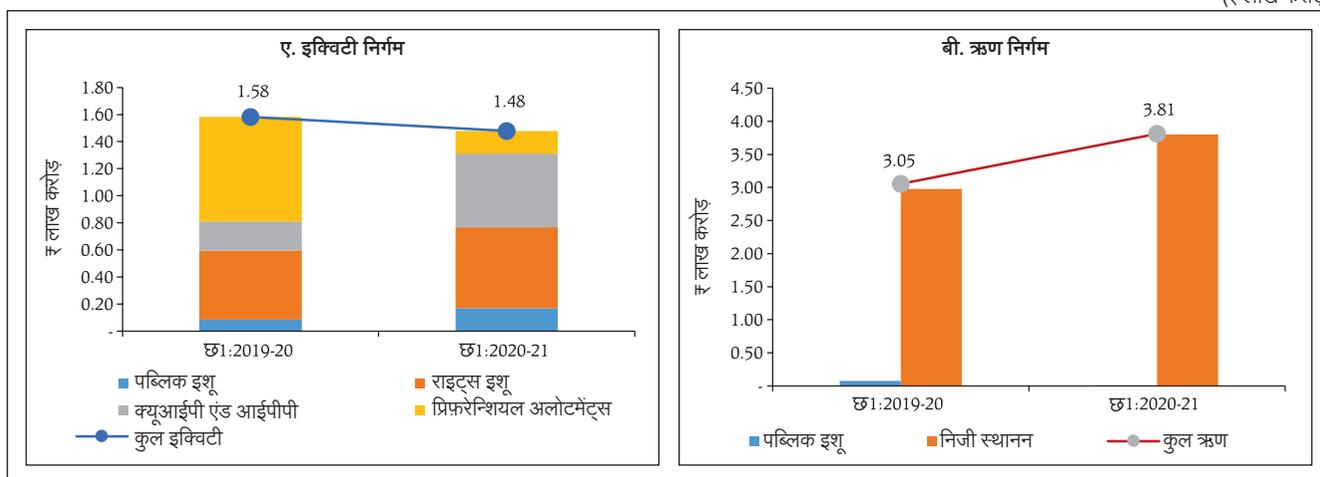
(₹ लाख करोड़)



स्रोत: सेबी

चार्ट 3.3: इक्विटी और ऋण निर्गमों के माध्यम से पूंजी उगाही

(₹ लाख करोड़)



स्रोत: सेबी

थी। सितंबर 2020 की समाप्ति के दौरान यह हिस्सा काफी कम हो गया (चार्ट 3.4)।

3.53 वर्ष 2020-21 की पहली छमाही के दौरान रेटिंग में गिरावट विभिन्न क्षेत्रों में फैली थी; हालांकि, एनबीएफसी और एचएफसी क्षेत्र के साथ-साथ बैंकों और वित्तीय सेवाओं से संबंधित डाउनग्रेडों का अनुपात सितंबर 2020 की तिमाही के दौरान पिछली तिमाही की तुलना में काफी कम हो गया (चार्ट 3.5)।

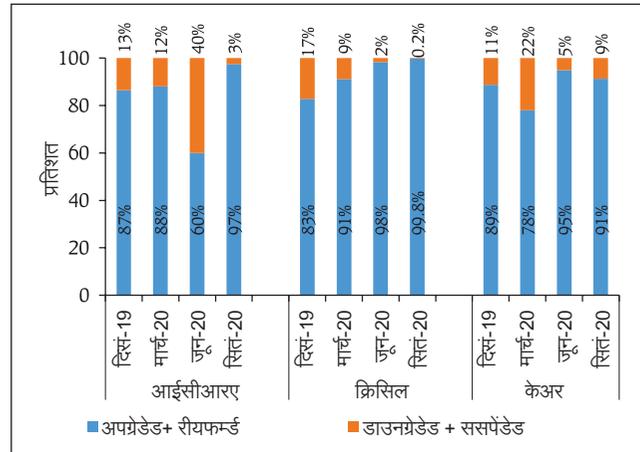
III.4.14 पण्य डेरिवेटिव्स बाजार

3.54 वैश्विक वस्तु की कीमतों पर कोविड -19 महामारी का प्रभाव मिश्रित रूप में था। ऊर्जा क्षेत्र में इसका खामियाजा धातुओं और कृषि की कीमतों में तुलनात्मक रूप से कम रहा है (चार्ट 3.6)। महामारी के दौरान भी सुरक्षित स्थानों द्वारा की गई मांग पर कीमती धातु की कीमतों में वृद्धि जारी रही। मार्च के अंत में, मार्च / अप्रैल 2020 में पण्य मूल्य कीमतों में सुधार हुआ है, जो आर्थिक गतिविधियों में वृद्धि के कारण हुआ है। धातु की कीमत में वृद्धि औद्योगिक विकास और चीन द्वारा खपत में वृद्धि के कारण किया गया है।

घरेलू पण्य डेरिवेटिव्स बाजार

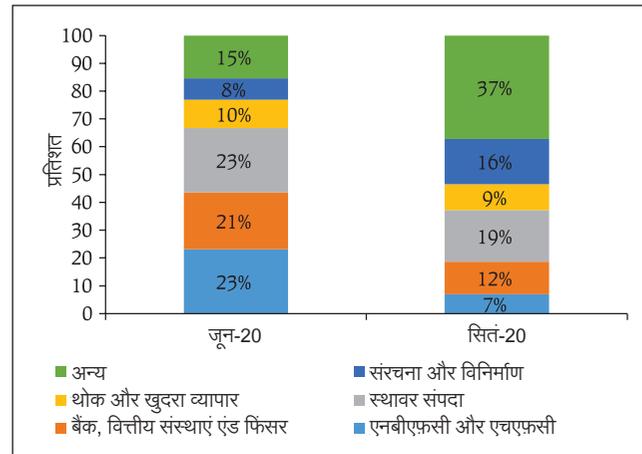
3.55 अनुकूल मानसून ने खरीफ फसल को मजबूत बनाया और खाद्य पदार्थों की कीमतों में नरमी की उम्मीद जताई क्योंकि लॉकडाउन से संबंधित आपूर्ति बाधित हुई थी। इसे दर्शाते हुए, अब तक के वित्तीय वर्ष के दौरान बेंचमार्क कमोडिटी डेरिवेटिव सूचकांकों, एमसीएक्स आईसीओएमडीईएक्स कम्पोजिट और एनकृषि इंडेक्स में

चार्ट 3.4 : सूचीबद्ध कंपनियों के ऋण निर्गम- रेटिंग कार्रवाई के अनुसार



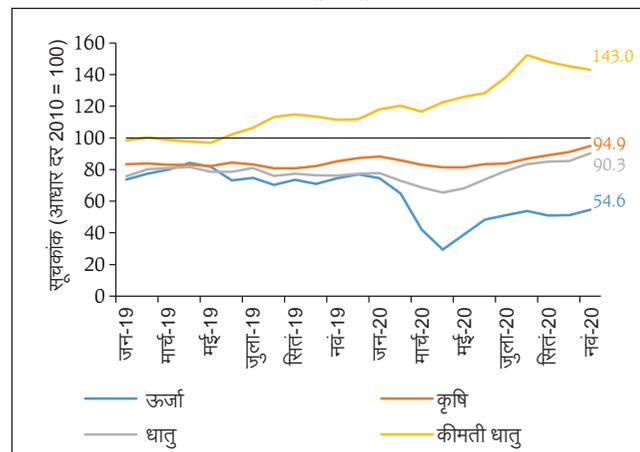
स्रोत : व्यक्तिगत सीआरए।

चार्ट 3.5 : रेटिंग डाउनग्रेड का वितरण – क्षेत्रवार



स्रोत : व्यक्तिगत सीआरए।

चार्ट 3.6: वैश्विक पण्य मूल्य सूचकांकों की गतिविधि



स्रोत : विश्व बैंक

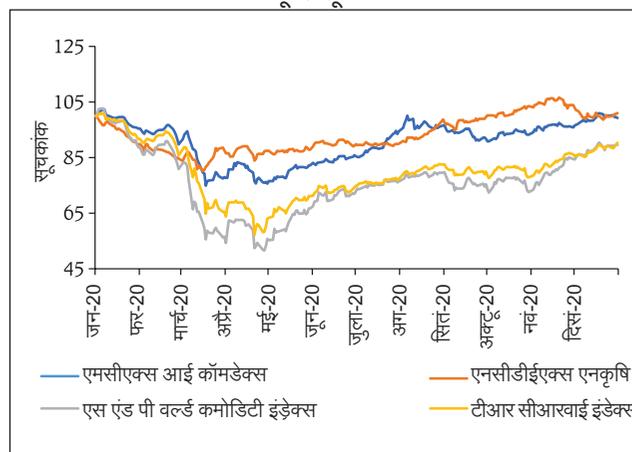
क्रमशः 27.2 प्रतिशत और 15.3 प्रतिशत की बढ़त हुई (31 दिसंबर 2020 तक) (चार्ट 3.7)।

3.56 जुलाई 2020 में सूचकांकों में बहाली अधिक स्पष्ट थी और आईकॉमडेक्स बुलियन इंडेक्स में चालू वित्त वर्ष के दौरान 23.7 प्रतिशत बढ़ गया, क्योंकि कीमती धातुओं, विशेष रूप से सोने की सुरक्षित मांग के कारण कीमतों में ऐतिहासिक तेजी आई। अप्रैल 2020 में आईकॉमडेक्स कच्चा तेल सूचकांक अपने रिकॉर्ड निचले स्तर से सुधरकर 10.1 प्रतिशत तक बढ़ गया। आईसीओएमडीईएक्स बेस मेटल इंडेक्स ने 2020-21 (31 दिसंबर, 2020 तक) के दौरान अभी तक 42.9 प्रतिशत की वृद्धि के साथ सबसे तीव्र गति से बढ़ा (चार्ट 3.8)।

पण्य डेरिवेटिव (व्युत्पन्नी) बाजार में व्यापारिक गतिविधियां

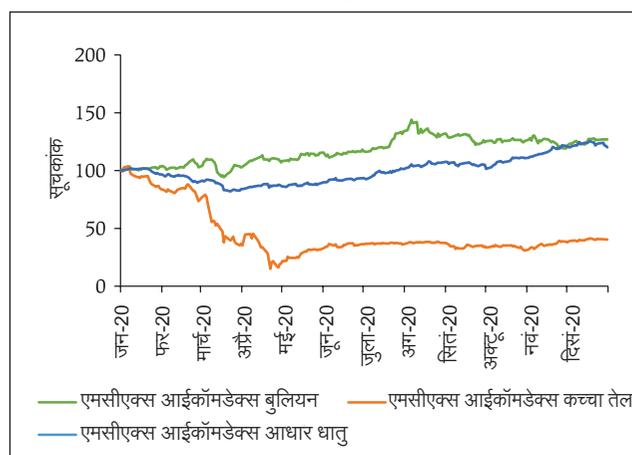
3.57 बुलियन में अगर 93 प्रतिशत की वृद्धि को छोड़ दिया जाए तो सभी सेगमेंट के कारोबार में एक समान गिरावट दर्ज की गई, पण्य डेरिवेटिव्स बाजार के कुल कारोबार में पिछले वर्ष की इसी अवधि (चार्ट 3.9 और सारणी 3.8) की तुलना में 2020-21 (नवंबर 2020 तक) के दौरान 3.2 प्रतिशत की मामूली वृद्धि देखी गई। जबकि जून 2020 से बीएसई और एनएसई में कमोडिटी विकल्पों की शुरुआत से वायदा अनुबंधों के कारोबार में 2.8 प्रतिशत की गिरावट आई जबकि ऑप्शन सेगमेंट में 227.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई। कारोबार में तेजी के विपरीत, वर्ष के दौरान (नवंबर 2020 तक) एनसीडीईएक्स और एमसीएक्स में कुल कारोबार अनुबंधों में क्रमशः (वर्ष-दर-वर्ष) 31.2 प्रतिशत और 34.5 प्रतिशत की गिरावट आई है। एमसीएक्स में धातु और ऊर्जा क्षेत्र में व्यापार की मात्रा (टन में) और एनसीडीईएक्स में कृषि क्षेत्र में लगभग 50 फीसदी की गिरावट आई।

चार्ट 3.7 घरेलू एवं अंतरराष्ट्रीय पण्य फ्यूचर्स सूचकांक



स्रोत : एमसीएक्स, एनसीडीईएक्स और ब्लूमबर्ग

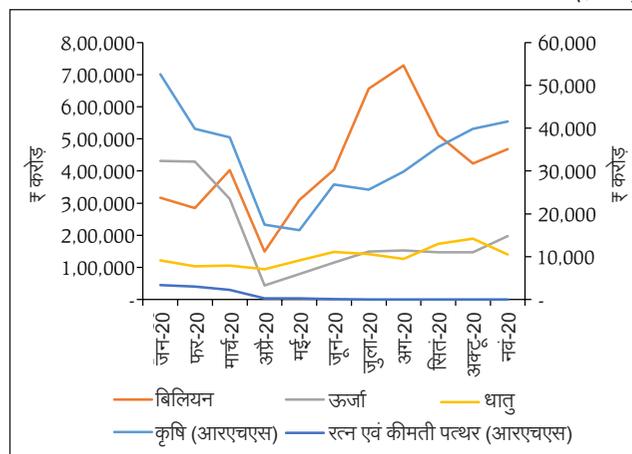
चार्ट 3.8 : सेक्टरोल सूचकांकों का चयन



स्रोत : एमसीएक्स

चार्ट 3.9: सूचकांक में पण्य डेरिवेटिव्स कारोबार (फ्यूचर्स और ऑप्शंस)

(₹ करोड़)



स्रोत: बीएसई, आईसीईएक्स, एमसीएक्स, एनसीडीईएक्स और एनएसई

सारणी 3.8 : पण्य डेरिवेटिव में खंड-वार कारोबार (फ्यूचर्स और ऑप्शंस)

(करोड़ रुपये)

अवधि/टर्नओवर	कृषि	बुलियन	ऊर्जा	धातु	रत्न एवं कीमती पत्थर	कुल कारोबार
2020-21 (अप्रैल2-नवंबर)	2,33,199	36,51,498	10,32,070	11,34,603	554	60,51,924
2019-20 (अप्रैल2-नवंबर)	4,05,549	18,85,570	24,23,082	11,33,187	16,728	58,64,116
वर्ष-दर-वर्ष परिवर्तन (प्रतिशत)	-42.5	93.7	-57.4	0.1	-96.7	3.2
कुल कारोबार में प्रतिशत (प्रतिशत: नवंबर 20)	4	60	17	19	0	100

स्रोत: बीएसई, आईसीडीएक्स, एमसीएक्स, एनसीडीएक्स और एनएसई

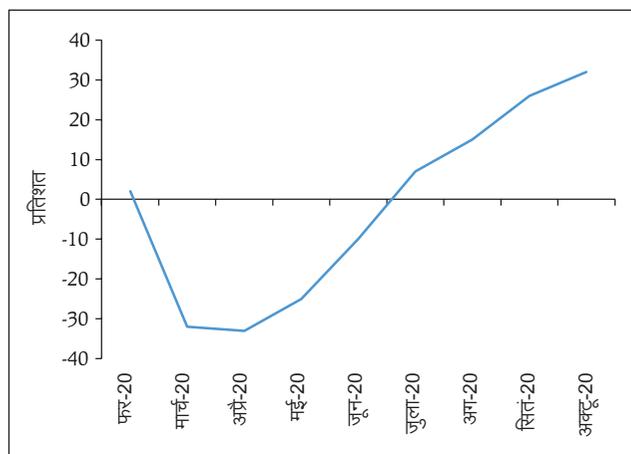
3.58 समग्र चुनौतीपूर्ण परिवेश होने के बावजूद भी, कृषि सेगमेंट के वस्तु अनुबंध में नए उत्पाद जैसे ऑप्शन और सूचकांक वायदा उत्पादों के व्यापार जैसे एग्रीडेक्स फ्यूचर्स, बुलडेक्स फ्यूचर्स और मेटलडेक्स फ्यूचर्स में नए उत्पाद पेश किए गए। एमसीएक्स पर सूचकांक वायदा सेगमेंट में कुल 19,529 करोड़ का कारोबार हुआ और इस अवधि में एनसीडीएक्स पर 295 करोड़ था।

III.4.15 बीमा

3.59 कोविड-19 का प्रभाव मार्च 2020 से शुरू होकर जून 2020 तक बने रहने के कारण जीवन बीमा से संबंधित नए व्यापार प्रीमियम में प्रत्यक्ष रूप से नकारात्मक वृद्धि रही जो बढ़ कर दोहरे अंकों में चली गई (चार्ट 3.10)। हालांकि, बाद के महीनों में यह संकुचन पूरी तरह से खत्म हो गया। अक्टूबर 2020 के अंत तक वर्ष-दर-वर्ष के आधार पर नए व्यापार प्रीमियम में 3 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस अवधि के दौरान, ग्राहकों ने गैर-लिंकड बीमा उत्पादों के लिए ज्यादा प्राथमिकता दिखायी जो यूनिट-लिंकड बीमा उत्पादों की तुलना में स्पष्ट रूप से गारंटी लाभ प्रदान करते हैं।

3.60 गैर-जीवन बीमाकर्ताओं के प्रीमियम संग्रह के आंकड़ों पर कोविड-19 का प्रभाव मिला-जूला रहा। अग्नि और स्वास्थ्य बीमा जैसे “पुल” उत्पादों का प्रदर्शन अच्छा रहा, लेकिन आर्थिक कारकों (जैसे, समुद्री, मोटर और फसल बीमा) पर निर्भर अनिवार्य नियामक बीमा उत्पादों का प्रदर्शन अच्छा नहीं रहा। कार्गो गतिविधियों में गिरावट के कारण समुद्री बीमा में संकुचित हुआ। कुछ राज्यों द्वारा प्रधान मंत्री बीमा योजना से बाहर निकालने के कारण फसल बीमा में गिरावट आई। हालांकि लॉकडाउन के बाद नए वाहन बिक्री में बढ़ोतरी के कारण मोटर बीमा प्रीमियम संग्रह में सुधार हुआ, घर से

चार्ट 3.10 : न्यू लाइफ इंश्योरेंस बिजनेस प्रीमियम-वृद्धि (माह-दर-माह)



स्रोत : आईआरडीएआई

कार्य मॉडल के तहत प्रभावित काम कर रहे वाहन मालिकों से प्रीमियम संग्रह कम रहा।

3.61 भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) द्वारा की गई विनियामक पहलों का स्वास्थ्य बीमा व्यवसाय में प्रीमियम के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है (सारणी 3.9)।

3.62 सितंबर 2020 के समाप्ति तक कोविड-19 से संबन्धित विशिष्ट पॉलिसियों के तहत एकत्रित बीमा प्रीमियम, 13 लाख करोड़ की बीमित राशि के लिए लगभग 865 करोड़ था। वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष से अधिक आयु) के लिए लगभग सात प्रतिशत जीवन बीमा पॉलिसी 'कोरोना कवच' नीति के तहत और चार प्रतिशत जीवन बीमा पॉलिसी 'कोरोना रक्षक' और अन्य कोविड-19 विशिष्ट उत्पादों के तहत जीवन बीमा हुआ था (तालिका 3.10)।

3.63 अप्रैल से नवंबर 2020 तक, जीवन बीमा उद्योग को 12753 दावे प्राप्त हुए (जहां मृत्यु कोविड-19 और संबंधित

जटिलताओं के कारण हुई) जिसके तहत ₹ 990 करोड़ का दावा था। यदि इसे उस अवधि में मूल्य के संदर्भ में देखा जाए तो कुल प्रीमियम आय का यह 0.3 प्रतिशत था। 687 करोड़ की राशि वाले 11,464 मृत्यु दावों का निपटारा किया गया है और 1259 दावों की कुल 303 करोड़ की राशि अभी प्रक्रियाधीन है। इससे जीवन बीमाकर्ताओं की वित्तीय स्थिति पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा है। दावों की संख्या के आधार पर दावा किया गया भुगतान अनुपात व्यक्तिगत दावों के संबंध में 92.76 प्रतिशत और अप्रैल-सितंबर 2020 की अवधि के लिए समूह में 95.44 प्रतिशत है, जबकि पिछले वर्ष की इसी अवधि के लिए यह 90.09 प्रतिशत और 96.47 प्रतिशत था। इस प्रकार, मृत्यु दावा निपटान पर कुल मिलाकर कोविड-19 का कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं रहा है।

III.4.16 पेंशन निधि

3.64 राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) और अटल पेंशन योजना (एपीवाई) में नामांकन के साथ ही प्रबंधन के तहत आस्ति (एयूएम) में वर्ष-दर-वर्ष के आधार पर वृद्धि दर्ज की गई

सारणी 3.9: स्वास्थ्य बीमा क्षेत्र में वृद्धि*

व्यवसाय का प्रकार	प्रथम तिमाही: 2020-21	प्रथम तिमाही: 2019-20	% परिवर्तन	प्रथम छमाही 2020-21	प्रथम छमाही 2019-20	% परिवर्तन
सरकारी व्यवसाय	631	961	-34.4	1,843	2,567	-28.2
समूह व्यवसाय	7,776	7,180	8.3	14,929	12,908	15.7
व्यक्तिगत व्यवसाय	4,990	4,025	24.0	11,927	8,879	34.3
कुल	13,397	12,166	10.1	28,699	24,354	17.8

नोट: कार्मिक दुर्घटना और यात्रा बीमा को छोड़कर

स्रोत: जनरल इश्योरेंस काउंसिल

सारणी 3.10: कोविड विशिष्ट बीमा उत्पादों में व्यवसाय (1 अप्रैल, 2020 से 30 सितंबर, 2020)

व्यवसाय का प्रकार/ ईकाई	बीमा संख्या	जीवन कवर	कुल बीमा राशि	सकल प्रीमियम
	संख्या		₹ करोड़	
कोरोना कवच	19,58,677	32,86,692	1,12,253	469.66
कोरोना रक्षक	3,80,270	4,42,812	7,481	57.03
अन्य कोविड विशिष्ट उत्पाद	36,954	73,39,399	11,70,851	338.12
कुल	23,75,901	1,10,68,903	12,90,585	864.81

स्रोत: आईआरडीएआई

(सारणी 3.11)। असंगठित क्षेत्र और कम आय वाले समूहों के वित्तीय समावेशन की दिशा में प्रयास के तहत, 391 बैंकों को पेंशन नेट के तहत नागरिकों के कवरेज का विस्तार करने के उद्देश्य से एपीवाई के तहत पंजीकृत किया गया।

III.4.17 अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (आईएफएससीए)

3.65 अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण¹³ (आईएफएससीए) की स्थापना अप्रैल 2020 में एक मजबूत वैश्विक संपर्क विकसित करने और भारतीय अर्थव्यवस्था की जरूरतों के साथ-साथ पूरे क्षेत्र और वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए एक अंतरराष्ट्रीय वित्तीय मंच के रूप में सेवा करने के लिए की गई थी। विशेष रूप से, प्राधिकरण भारतीय और विदेशी दोनों जारीकर्ताओं, फिनटेक स्टार्ट-अप्स और इनोवेशन, टिकाऊ और ग्रीन फाइनेंसिंग, बुलियन ट्रेडिंग, एयरक्राफ्ट लीजिंग और फाइनेंसिंग, ग्लोबल-इन-हाउस केंद्र, निधि प्रबंधन, अंतरराष्ट्रीय बैंकिंग और पुनर्बीमा के माध्यम से जीआईएफटी-आईएफएससी को निधि जुटाने के लिए एक गंतव्य के रूप में विकसित करने का लक्ष्य बना रहा है। इसने रेगुलेटरी सैंडबॉक्स, रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स (आरआईआईटी) और इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स (इनवित) के लिए आईएफएससी में और अन्य के साथ-साथ आईएफएससी में डिपॉजिटरी रसीदों की लिस्टिंग की रूपरेखा पेश की।

सारांश और आउटलुक

3.66 कुल मिलाकर, कोविड-19 महामारी समस्या की व्यापकता को देखते हुए प्रारम्भ में अधिकारियों द्वारा बड़े पैमाने पर माना गया था। मौद्रिक, चलनिधि, राजकोषीय और

सारणी 3.11: अभिदाता और एयूएम: एनपीएस और एपीवाई

क्षेत्र	अभिदाता (लाख में)		एयूएम (करोड़ में)	
	सितंबर 2020	सितंबर 2020	सितंबर 2020	सितंबर 2020
केंद्र सरकार	20.26	21.30	1,24,703	1,60,606
राज्य सरकार	45.51	48.97	1,86,849	2,50,260
कॉर्पोरेट	8.77	10.46	36,340	50,730
ऑल सिटिजन मॉडल	10.24	13.58	11,127	16,224
एनपीएस लाइट	43.40	43.17	3,631	4,068
एपीवाई	178.21	236.85	8,743	13,042
कुल	306.39	374.32	3,71,393	4,94,930

स्रोत: पीएफआरडीए

वित्तीय विनियामक डोमेन के त्वरित उपायों ने वित्तीय प्रणाली को अच्छी तरह से अबाधित और सुचारु रूप से कार्यरत बनाए रखा। इन शुरुआती उपायों में अस्थिरता अंतर्विष्ट थी और इससे वित्तीय बाजारों के प्रति विश्वास बढ़ा। मध्यावधि में महामारी के समय दिए गए समर्थन पैकेज को न्यूनतम विघटन के साथ नपे-तुले ढंग से खोलना चाहिए ताकि महामारी पूर्व के विवेकपूर्ण मानदंड वाले स्तर को बहाल किया जा सके।

3.67 महामारी से हट कर, साइबर सुरक्षा और भुगतान प्रणाली सहित अन्य विकासात्मक और जोखिम न्यूनीकरण उपायों पर ध्यान जारी है, जिसमें विगत अनुभवों से लाभ उठाते हुए वित्तीय बाजारों में कामकाज को मजबूती से सुनिश्चित करेगा, जो वित्तीय स्थिरता को स्थायी रूप से सुदृढ़ करेगा।

¹³ आईएफएससीए को अप्रैल 2020 में अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (आईएफएससीए) में वित्तीय संस्थानों, वित्तीय सेवाओं और वित्तीय उत्पादों के विकास और विनियमन के लिए एक एकीकृत नियामक के रूप में स्थापित किया गया था। देश का पहला आईएफएससी गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक (जीआईएफटी) सिटी, गांधीनगर में संचालित होता है।

अनुबंध 1

प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण

वित्तीय प्रणाली के समक्ष प्रमुख जोखिमों के संबंध में बाजार के प्रतिभागियों सहित विशेषज्ञों की राय जानने के लिए अक्टूबर-नवंबर 2020 में प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (एसआरएस) किया गया, जो इस श्रृंखला का उन्नीसवां सर्वेक्षण है। 31 उत्तरदाताओं के आधार पर सर्वेक्षण के परिणाम नीचे दिए गए हैं।

प्रमुख जोखिम श्रेणियों की संभावना

2. वित्तीय प्रणाली के जोखिमों की व्यापक श्रेणी में, उत्तरदाताओं ने चुनिंदा संस्थागत जोखिम (अर्थात्, आरिस्ट की गुणवत्ता में गिरावट, अतिरिक्त पूंजी की आवश्यकता, वृद्धि का स्तर; और साइबर जोखिम) को 'उच्च' (चित्र 1 और 2) के रूप में दर्जा दिया है। वैश्विक जोखिम, वृहद आर्थिक जोखिम और वित्तीय बाजार जोखिम को परिमाण में 'मध्यम' प्रभाव वाला माना जाता था, लेकिन इसमें कुछ घटक (जैसे, वैश्विक और घरेलू विकास, घरेलू मुद्रास्फीति; राजकोषीय घाटा; कॉर्पोरेट कमजोरियाँ; बुनियादी ढांचा विकास; और इक्विटी मूल्य में अस्थिरता) अधिक बने रहते हैं (चित्र 2)।

3. यह सर्वेक्षण अप्रैल 2020 के एसआरएस सर्वेक्षण से एक स्पष्ट बदलाव का प्रतिनिधित्व करता है, जो महामारी के शुरुआती महीनों के दौरान आयोजित किया गया था और सभी प्रमुख समूहों के लिए जोखिम को 'उच्च जोखिम' के रूप में मूल्यांकित किया गया था। इसके अलावा, पिछले सर्वेक्षण के दौरान आर्थिक वृद्धि (वैश्विक और घरेलू) और राजकोषीय घाटा जोखिम का आकलन 'बहुत अधिक' किया गया था, परंतु इस अवधि में उत्तरदाताओं द्वारा किसी भी जोखिम को 'बहुत अधिक' जोखिम के तहत श्रेणीबद्ध नहीं किया गया।

चित्र 1: प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण में चिह्नित किए गए प्रमुख जोखिम समूह (अक्टूबर 2020)

प्रमुख जोखिम समूह	अक्टूबर -20	अप्रैल-20	जोखिम धारणा में परिवर्तन
ए. वैश्विक जोखिम			कमी
बी. समष्टि-आर्थिक जोखिम			कमी
सी. वित्तीय बाजार जोखिम			कमी
डी. संस्थागत जोखिम			कमी
ई. सामान्य जोखिम			कमी

स्रोत : भा.रि.बैं., प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (अप्रैल 2020 और अक्टूबर 2020)।

टिप्पणी :
जोखिम श्रेणी

बहुत अधिक	अधिक	मध्यम	कम	बहुत कम
-----------	------	-------	----	---------

¹ अप्रैल 2020 के एसआरएस के लिए प्रतिक्रियाएं अप्रैल-मई 2020 के दौरान प्राप्त की गईं और अक्टूबर 2020 के लिए अक्टूबर-नवंबर 2020 के दौरान प्राप्त हुए।

² कृपया पिछले सर्वेक्षण के परिणामों के लिए देखें: <https://www.rbi.org.in/Scripts/PublicationReportDetails.aspx?UrlPage=&ID=1150>

चित्र 2. : प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण में चिह्नित किए गए विभिन्न जोखिम (अक्तूबर 2020)*

जोखिम की मद		अक्तूबर-20	अप्रैल-20	जोखिम धारणा में परिवर्तन
अ. वैश्विक जोखिम	वैश्विक वृद्धि			कमी
	राष्ट्रिक जोखिम/संक्रमण			कमी
	फंडिंग जोखिम (बाह्य उधार)			कमी
	पण्य मूल्य जोखिम			कमी
	अन्य वैश्विक जोखिम			कमी
आ. समष्टिआर्थिक जोखिम	घरेलू वृद्धि			कमी
	घरेलू मुद्रास्फीति			वृद्धि
	चालू खाता घाटा			कमी
	पूँजीगत अंतर्वाह/बहिर्वाह (एफआईआई का लौटना, एफडीआई में कमी)			कमी
	राष्ट्रिक रेटिंग में कमी			कमी
	राजकोषीय घाटा			कमी
	कॉर्पोरेट क्षेत्र का जोखिम			कमी
	आधारभूत संरचना के विकास की गति			कमी
	रियल एस्टेट कीमतें			कमी
	पारिवारिक इकाइयों की बचत			कमी
	राजनैतिक अनिश्चितता/शासन/नीति का कार्यान्वयन			कमी
	अन्य समष्टि-आर्थिक जोखिम			वृद्धि
	इ. वित्तीय बाजार संबंधी जोखिम	विदेशी मुद्रा दर का जोखिम		
इक्विटी मूल्य में उतार-चढ़ाव				कमी
ब्याज दर जोखिम				कमी
चलनिधि जोखिम				कमी
बाजार संबंधी अन्य जोखिम				कमी
ई. संस्थागत जोखिम	विनियामक जोखिम			कमी
	आसित गुणवत्ता में कमी			कमी
	बैंकों की अतिरिक्त पूँजी संबंधी आवश्यकता			कमी
	फंडिंग तक बैंकों की पहुंच			कमी
	क्रेडिट वृद्धि का स्तर			कमी
	साइबर जोखिम			वृद्धि
	परिचालन जोखिम			कमी
	संस्थागत अन्य जोखिम			कोई परिवर्तन नहीं
उ. सामान्य जोखिम	आतंकवाद			वृद्धि
	प्रकृति से संबंधित जोखिम			वृद्धि
	सामाजिक अशांति (बढ़ती असमानता)			कमी
	अन्य सामान्य जोखिम			वृद्धि

स्रोत : भा.रि.बैं., प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण - (अप्रैल 2020 और अक्तूबर 2020)

टिप्पणी :
जोखिम श्रेणी

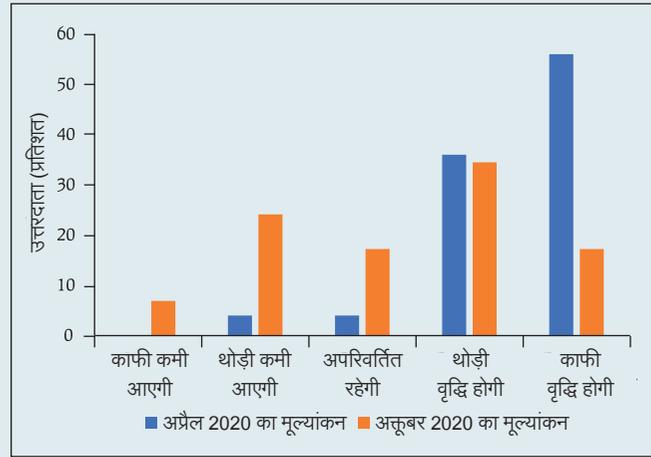
बहुत अधिक	अधिक	मध्यम	कम	बहुत कम

* समय-समय पर किए गए (अप्रैल और अक्तूबर अर्ध वार्षिक आधार पर) प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण से यह ज्ञात होता है कि जोखिम संभावनाएं एक जोखिम श्रेणी से दूसरी श्रेणी में अंतरित (कमी/वृद्धि) हो सकती हैं जिसे रंग में परिवर्तन द्वारा दर्शाया गया है। किंतु समान जोखिम श्रेणी (अर्थात्, समान रंग में दर्शाए गए बॉक्स) में भी जोखिम संभावना बढ़/घट सकती है या अपरिवर्तित रह सकती है।

वित्तीय प्रणाली की संभावना

4. एक तिहाई से अधिक उत्तरदाताओं को आय पर नकारात्मक प्रभाव, शुद्ध ब्याज मार्जिन में कमी, आस्ति गुणवत्ता को बढ़ाये जाने के कारण चिंता और प्रावधान आवश्यकताओं में संभावित वृद्धि के कारण अगले एक साल में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र की संभावनाओं में मामूली गिरावट की उम्मीद है। दूसरी ओर, लगभग 24 प्रतिशत उत्तरदाताओं का मानना है कि संभावनाओं में मामूली रूप से बेहतरी का उम्मीद है (चार्ट 1)। यद्यपि उन उत्तरदाताओं की संख्या ज्यादा है जो यह मानते हैं कि अगले एक साल में स्थिति में और गिरावट आएगी उसके वावजूद भी समग्र प्रतिक्रियाएं यह संकेत देती हैं कि पिछले सर्वेक्षण की तुलना में इस बार स्थिति में बेहतरी की उम्मीद है।

चार्ट 1: अगले एक वर्ष में भारतीय बैंकिंग क्षेत्र में संभावनाएँ



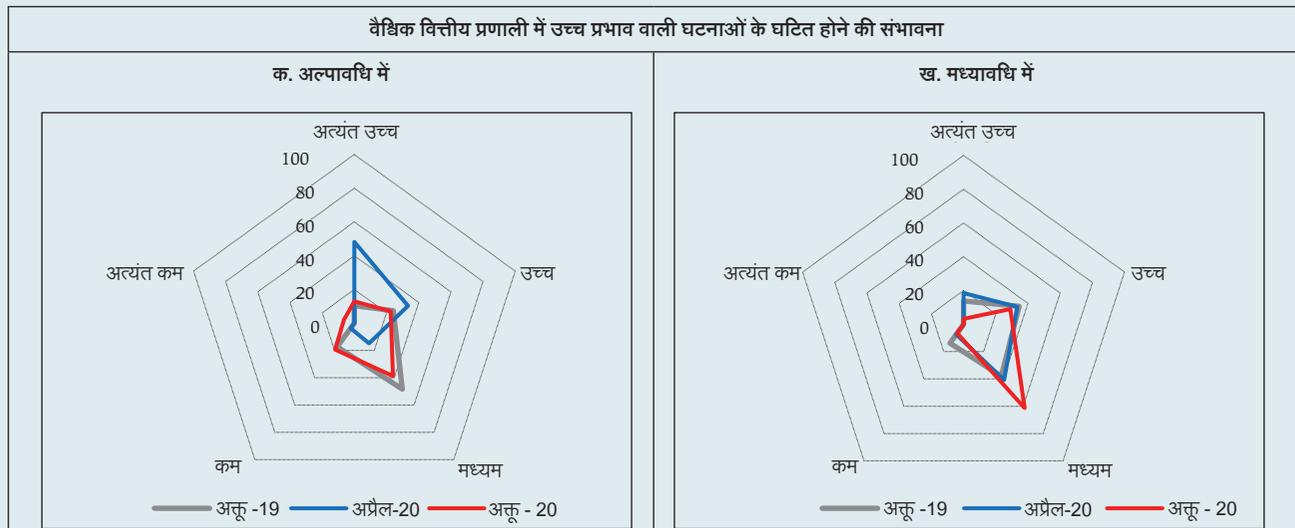
स्रोत : भा.रि.बैं., प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (अप्रैल-2020 और अक्टूबर 2020)

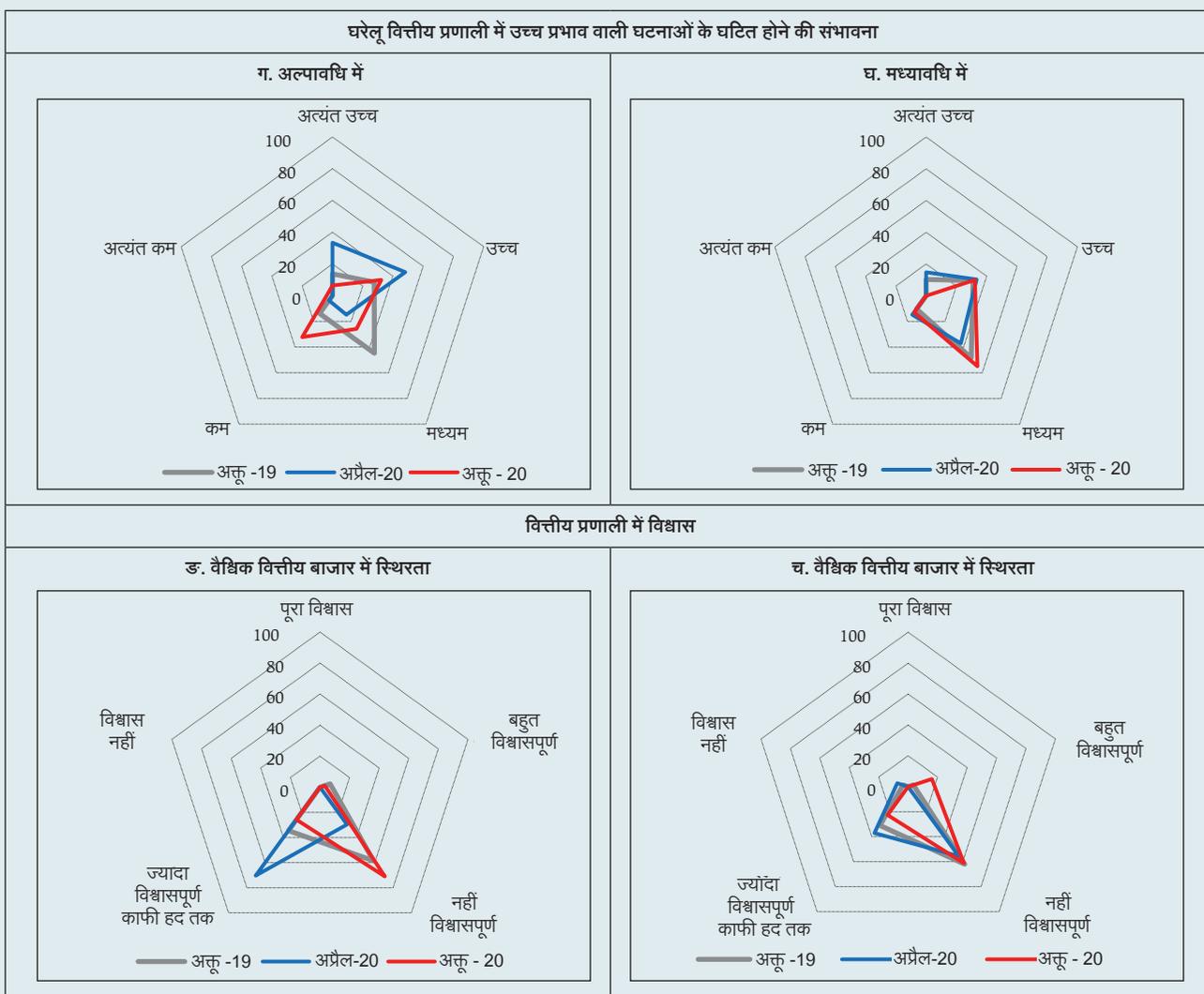
5. अधिकांश उत्तरदाताओं को भारत सहित वैश्विक स्तर पर वित्तीय प्रणाली में मध्यम अवधि (एक से तीन वर्ष) में एक उच्च प्रभाव वाली घटना होने की 'मध्यम' संभावना की उम्मीद है। अल्पकालिक (एक वर्ष तक) में, भारत में उच्च प्रभाव वाली घटना के घटित होने की संभावना को कम और वैश्विक स्तर 'मध्यम' के रूप आकलन किया गया था। ये आकलन पिछले दौर के सर्वेक्षण से विपरीत थे जिसमें अल्पावधि में भारतीय / वैश्विक वित्तीय प्रणाली में एक उच्च प्रभाव वाली घटना घटने के लिए एक उच्च / बहुत उच्च संभावना प्रकट की गई थी।

6. उत्तरदाताओं ने पिछले दौर की सर्वेक्षण के तुलना में वित्तीय स्थिरता के बारे में उच्च विश्वास भी व्यक्त किया। उत्तरदाताओं का प्रतिशत क्रमशः 71 प्रतिशत और 61.3 प्रतिशत था जो वैश्विक और भारतीय वित्तीय प्रणाली की स्थिरता के बारे में 'काफी आश्चस्त' थे (चार्ट 2)।

चार्ट 2: उच्च प्रभाव वाली घटनाओं के घटित होने का बोध एवं वित्तीय प्रणाली में विश्वास

उत्तरदाता (प्रतिशत)





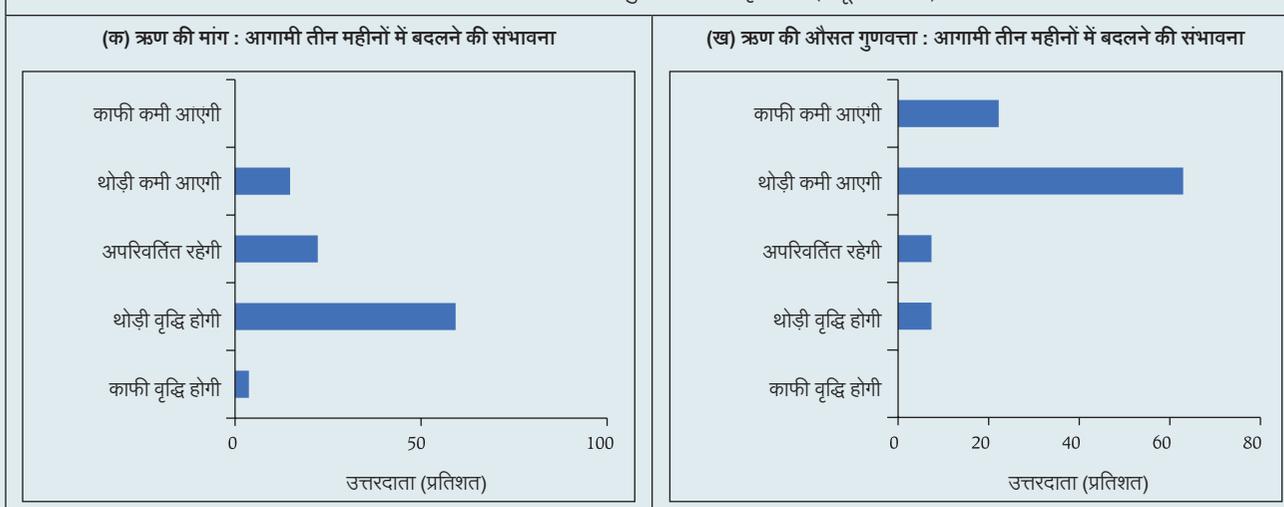
स्रोत : भा.रि.बैं., प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (अक्तूबर 2019, अप्रैल 2020 एवं अक्तूबर 2020)

7. अगले तीन महीनों में ऋण की मांग में होने वाले संभाव्य परिवर्तन के मामले में अधिकांश उत्तरदाताओं का मानना था कि इसमें मामूली वृद्धि होगी। इस अवधि के दौरान ऋण की औसत गुणवत्ता के संबंध में अधिकांश उत्तरदाताओं ने यह व्यक्त किया कि बैंकों की बहियों से लॉकडाउन व अधिस्थगन का प्रभाव अभी भी पूरी तरह से खत्म नहीं होने के कारण इसमें मामूली कमी आएगी (चार्ट 3)। कई क्षेत्रों में उधारकर्ताओं की कमजोर चुकौती क्षमता, स्थानीय लॉकडाउन के कारण संग्रह दक्षता में गिरावट की वजह से बही निम्न गुणवत्ता में भी तब्दील हो सकती है।

कोविड-19 महामारी : प्रभाव और आर्थिक बहाली

8. सर्वेक्षण के उत्तरदाताओं का मत है कि पर्यटन और आतिथ्य, निर्माण और स्थावर संपदा, विमानन, ऑटोमोबाइल और खुदरा क्षेत्र कोविड-19 महामारी से प्रतिकूल रूप से प्रभावित थे (सारणी 1)। पिछले सर्वेक्षण दौर की तुलना में, अधिक उत्तरदाताओं ने पर्यटन और आतिथ्य, विमानन और ऑटोमोबाइल क्षेत्रों में बहाली की संभावनाओं की उम्मीद प्रकट की। महामारी की अवधि के बारे में विलंबित अनिश्चितता तथा समग्र आर्थिक सुधार की धीमी गति, यात्रा, पर्यटन और आतिथ्य क्षेत्रों की पुनरुत्थान

चार्ट 3: ऋण की मांग तथा उसकी गुणवत्ता संबंधी दृष्टिकोण (अक्तूबर-2020)



स्रोत : भा.रि.बैं., प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (अक्तूबर-2020)

संभावनाओं को धीमा कर सकते हैं। स्थावर संपदा क्षेत्र (विशेषकर आवासीय और खुदरा उप-क्षेत्रों के लिए) की मांग और मूल्य निर्धारण दबाव अगले छह महीनों तक बने रहने की प्रत्याशा है। अन्य क्षेत्रों में, महामारी संबंधी प्रतिबंधों में धीरे-धीरे कमी से थोड़ा सुधार हो सकता है।

सारणी 1: कोविड-19 महामारी द्वारा प्रतिकूल रूप से प्रभावित क्षेत्र और उनके संबंध में भावी संभावनाएं

(उत्तरदाताओं का प्रतिशत)

क्षेत्र	आगामी 6 महीने में बहाली का प्रतिशत			
	अच्छा	ठीक	कोई परिवर्तन नहीं	क्षीण
पर्यटन और आतिथ्य		29	16.1	54.8
निर्माण और स्थावर संपदा	5	30	35	30
विमानन	5.3	36.8	10.5	47.4
आटोमोबाइल		71.4	14.3	14.3
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम		66.7	16.7	16.7

स्रोत : भा.रि.बैं., प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (अक्तूबर-2020)

सारणी 2: कोविड-19 महामारी के बाद मजबूत आर्थिक बहाली में मुख्य बाधाएं

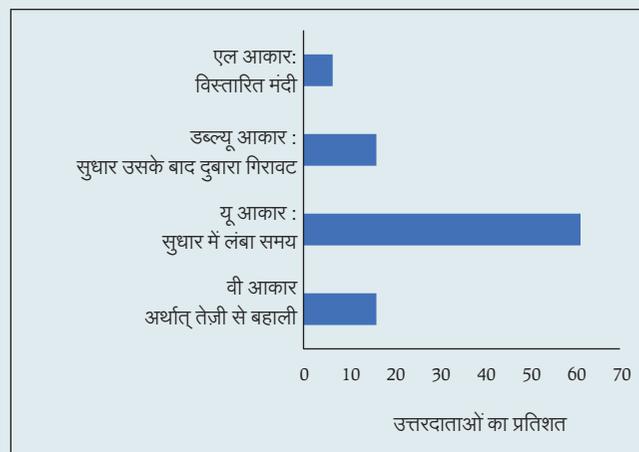
चिंताएं	श्रेणी
निजी क्षेत्र निवेश में मजबूती का अभाव	1
घटता हुआ उपभोक्ता विश्वास/व्यय	2
आपूर्ति श्रृंखला अवरोध	3
कार्यों पर और/या चलनिधि एवं पूंजी पर वित्तीय प्रभाव	4
कार्यबल में कमी/कर्मचारियों पर दबाव	5
निर्णय लेने में सूचनाओं का अभाव	6
कर एवं व्यापार मामलों पर प्रभाव	7
न्यून उत्पादकता	8

स्रोत : भा.रि.बैं., प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (अक्तूबर -2020)

9. प्रतिभागियों से यह पूछा गया था कि कोविड-19 महामारी से आगे चलकर उत्पन्न होने वाली प्रमुख वित्तीय स्थिरता संबंधी चिंताओं को किस श्रेणी में रखेंगे (सारणी 2)। निजी क्षेत्र निवेश में मजबूती का अभाव सबसे बड़ी चिंता के रूप में उभरी, इसके बाद दूसरी बड़ी चिंता घटता हुआ उपभोक्ता व्यय/ विश्वास थी।

चार्ट 4: आर्थिक बहाली का संभावित आकार (अक्तूबर 2020)

10. 60 प्रतिशत से अधिक उत्तरदाताओं का अनुमान है कि कोविड-19 के बाद की बहाली यू- आकार की होगी अर्थात् तुरंत गिरावट होगी और उसके बाद सुधार आने में लंबा समय लगेगा (चार्ट 4)। जो पिछले सर्वेक्षण के निष्कर्षों के समान था। दूसरे 16 प्रतिशत उत्तरदाताओं को एक त्वरित वी-आकार की बहाली की उम्मीद थी, जो पिछले सर्वेक्षण के दौर में किसी भी उत्तरदाता द्वारा अपेक्षित नहीं था।



स्रोत : भा.रि.बैं., प्रणालीगत जोखिम सर्वेक्षण (अक्तूबर-2020)

घरेलू वित्तीय स्थिरता के जोखिम

11. सर्वेक्षण के प्रतिभागियों ने घरेलू वित्तीय स्थिरता के लिए जोखिम के रूप में निम्नलिखित प्रमुख कारकों का उल्लेख किया:

- कम जीडीपी वृद्धि के साथ-साथ मुद्रास्फीति दबाव से दर में कटौती संबंधी नीतिगत संभावना सीमित हो सकती है जिससे प्रतिफल पर दबाव बना रह सकता है।
- नकदी प्रवाह में कमी, कम मांग, श्रमशक्ति की कमी और पूंजी की कमी के कारण एमएसएमई क्षेत्र पर निरंतर प्रतिकूल प्रभाव बनने से क्षेत्र में दीर्घकालिक दबाव बन सकता है और इससे बड़े पैमाने पर स्थायी रूप से इकाइयों की बंदी सकती है जिससे रोजगार पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।
- काम करने के मॉडल में परिवर्तन के कारण, वाणिज्यिक स्थावर संपदा में स्थावर संपदा की कीमतें और नकदी प्रवाह प्रमुख संरचनात्मक संशोधन हो सकता है, जिसके परिणामस्वरूप स्थावर संपदा डेवलपर्स पर और और इस क्षेत्र को दिए जाने वाले ऋण पर अधिक दबाव पड़ सकता है।
- सेवा अर्थव्यवस्था के विशिष्ट क्षेत्रों जैसे- होटल, मनोरंजन, यात्रा, पर्यटन और टैक्सी सेवाओं में चल रहे दबाव के कारण, वित्तीय प्रणाली में कॉर्पोरेट और खुदरा संपत्ति पर क्रेडिट दबाव पैदा हो सकता है।
- आवास और वाहन वित्त के लिए निम्न दृष्टिकोण से निकट भविष्य में एनबीएफसी संवृद्धि की संभावनाएं प्रभावित हो सकती हैं, विश्वास संवेदनशील परिदृश्य और चूक बढ़ने की प्रत्याशा से हामीदारी मानकों में सख्ती से विशेषकर निम्न दर्जा प्राप्त एनबीएफसी को निधीकरण में चुनौतियां रहेंगी।
- जिन देशों की बड़े ऋण संकट से गुजरने की संभावना है, उनमें निवेशकों द्वारा भारत को शीर्ष तीन देशों में रखा गया है। ईएम परिसंपत्तियों के प्रति वैश्विक जोखिम विमुखता से बड़े पैमाने पर पूंजी बहिर्वाह हो सकता है जिससे रुपये के साथ-साथ बांड प्रतिफल पर दबाव बन सकता है। इस संदर्भ में, नियामकों द्वारा उठाए गए अपरंपरागत उपायों से रूपरेखा पर अनिश्चितता से निवेशकों का विश्वास प्रभावित हो सकता है।

अनुबंध 2

कार्यप्रणालियां

2.1 अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक

बैंकिंग स्थिरता मानचित्र और संकेतक

बैंकिंग स्थिरता मानचित्र और संकेतक किसी दी गई अवधि के दौरान बैंकिंग क्षेत्र की स्थिरता पर प्रभाव डालने वाली स्थितियों और जोखिम घटकों में होने वाले परिवर्तनों का समग्र अनुमान प्रदर्शित करते हैं। बैंकिंग स्थिरता मानचित्र और संकेतक में पांच संयुक्त सूचकांकों का प्रयोग किया गया है जिनके पांच आयाम हैं – मजबूती, आस्ति गुणवत्ता, लाभप्रदता, चलनिधि और कार्यकुशलता। प्रत्येक संयुक्त सूचकांक बनाने में जिन अनुपातों का प्रयोग किया गया है उन्हें सारणी 1 में दिया गया है:-

सारणी 1 : बैंकिंग स्थिरता मानचित्र और संकेतक बनाने के लिए प्रयुक्त अनुपात

आयाम	अनुपात			
मजबूती	सीआरएआर #	टिआर II पूंजी के प्रति टिआर-I पूंजी #	पूंजी और आरक्षी के प्रति कुल आस्ति के रूप में लीवरेज अनुपात	
आस्ति-गुणवत्ता	कुल अग्रिम की तुलना में निवल एनपीए	कुल अग्रिम की तुलना में सकल एनपीए	सकल एनपीए के प्रति अवमानक अग्रिम #	मानक अग्रिमों की तुलना में पुनःसंचित- मानक- अग्रिम
लाभप्रदता	आस्तियों पर प्रतिफल #	निवल ब्याज मार्जिन #	लाभ में वृद्धि #	
चलनिधि	कुल आस्तियों की तुलना में चलनिधि आस्तियां #	कुल आस्तियों की तुलना में ग्राहक जमा राशियां #	ग्राहक की जमाराशियों की तुलना में गैर-बैंक अग्रिम	कुल जमाराशियों की तुलना में 1 वर्ष की अवधि के भीतर परिपक्व होने वाली जमाराशियां
कार्यकुशलता	आय की तुलना में लागत	स्टाफ खर्च की तुलना में व्यवसाय (क्रेडिट + जमाराशि) #		कुल खर्च की तुलना में स्टाफ व्यय

नोट: # जोखिम से प्रतिलोम संबंध है।

प्रत्येक संयुक्त सूचकांक जो बैंक की कार्यप्रणाली के आयाम का प्रतिनिधित्व करता है, वह शून्य और 1 के बीच का मान लेता है। प्रत्येक सूचकांक इसके निर्माण के लिए प्रयुक्त नमूना अवधिके दौरान एक संबंधित पैमाना होता है जिसमें उच्च मान का अर्थ होता है कि उस आयाम में जोखिम अधिक है। अतः किसी विशेष आयाम में सूचकांक का मान बढ़ना यह दर्शाता है कि उस आयाम में अन्य अवधियों की तुलना में संबंधित अवधि में जोखिम में वृद्धि हुई है। किसी आयाम के लिए प्रयोग में लाए गए प्रत्येक अनुपात द्वारा बैंकिंग क्षेत्र के लिए एक भारित औसत निकाला जाता है जिसमें भारों को बैंकिंग प्रणाली की कुल आस्तियों की तुलना में किसी बैंक की व्यक्तिगत आस्तियों के अनुपात के रूप में निरूपित किया जाता है। किसी नमूना अवधि के लिए प्रत्येक सूचकांक का सामान्यीकरण निम्नलिखित फार्मूले के आधार पर किया जाता है :

$$\frac{(X_t - \min(X_t))}{(\max(X_t) - \min(X_t))}$$

जिसमें X_t अनुपात के मूल्य को t समय पर प्रदर्शित करता है। प्रत्येक आयाम के संयुक्त सूचकांक की गणना, उस आयाम के लिए प्रयुक्त सामान्यीकृत अनुपातों के भारित औसत के रूप में की जाती है जहां भार, सीएएमईएलएस रेटिंग के अनुमान हेतु निर्धारित अंकों पर आधारित होते हैं। इन पांच संयुक्त सूचकांकों के सामान्य औसत के रूप में बैंकिंग स्थिरता संकेतक का निर्माण किया जाता है।

समष्टि-दबाव परीक्षण

समष्टि-आर्थिक आघातों के प्रतिबैंकों की आघात-सहनीयतापता करने के लिए, मैक्रो दबाव परीक्षण क्रेडिट जोखिम के लिए किया गया। इसमें, बैंकों (सिस्टम एवं बड़े बैंक समूह स्तर पर) के जीएनपीए अनुपात पर एवं अंततः उनकी पूंजी पर्याप्तता (बैंकवार एवं सिस्टम स्तर पर 46 बैंकों के नमूनों के लिए) पर मैक्रो आघात का प्रभाव देखा गया।

जीएनपीए अनुपात का प्रभाव

यहाँ, गिरावट अनुपात (एसआर)¹ को समष्टि-आर्थिक चरों के एक फंक्शन के रूप में नमूने के तौर पर लिया गया था जिसमें विविध अर्थमितीय मॉडल का प्रयोग किया गया जिसमें चुनिंदा बैंकिंग प्रणालियों का समग्र समष्टि-आर्थिक चरों के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया। जबकि प्रयुक्त बैंक समूह-वार गिरावट अनुपात मॉडल हैं: (i) मल्टीवेरिएट रिग्रेशन और (ii) वेक्टर ऑटोरिग्रेशन (वीएआर), नमूना प्रणाली स्तरीय गिरावट अनुपात की तुलना में (i) मल्टीवेरिएट रिग्रेशन (ii) वीएआर और (iii) क्वान्टाइल रिग्रेशन। समग्र बैंकिंग प्रणाली में गिरावट अनुपात के मौजूदा और पिछले मान शामिल होते हैं जबकि समष्टि-आर्थिक चरों में आधार कीमत पर सकल देशी उत्पाद (जीडीपी), भारत औसत उधार दर (डब्ल्यूएलआर), सीपीआई (संयुक्त) मुद्रास्फीति, जीडीपी अनुपात की तुलना में निर्यात, जीडीपी अनुपात की तुलना में चालू खाता शेष, और जीडीपी अनुपात की तुलना में सकल राजकोषीय घाटा शामिल होते हैं।

जहां मल्टीवेरिएट रिग्रेशन, बैंकिंग प्रणाली की जीएनपीए पर चुनिंदा समष्टि-आर्थिक चरों के प्रभाव का मूल्यांकन करने की अनुमति देता है, वहीं वीएआर मॉडल फीडबैक प्रभाव को भी संज्ञान में लेता है। इन पद्धतियों में, गिरावट अनुपात के सशर्त मध्यमान का अनुमान लगाया जाता है जबकि यह माना जाता है कि क्रेडिट गुणवत्ता के स्तर में परिवर्तन होने के बावजूद क्रेडिट गुणवत्ता पर समष्टि-चरों का प्रभाव समान रहेगा, जो कि हमेशा सत्य नहीं रह सकता है। इस अनुमान में छूट देने के लिहाज से क्रेडिट गुणवत्ता का अनुमान लगाने के लिए क्वान्टाइल रिग्रेशन को अपनाया गया, जिसमें सशर्त मध्यमान के स्थान पर सशर्त क्वान्टाइल का अनुमान लगाया जाता है और इस प्रकार यह सामान्यतर जोखिमों का सामना कर सकता है और यह समष्टि-आर्थिक आघातों के गैर-रैखिक प्रभावों का भी ध्यान रखता है।

गिरावट अनुपात (एसआर) पर समष्टि-आर्थिक आघातों के प्रभावों का अनुमान लगाने के लिए निम्नलिखित अर्थमितीय मॉडल अपनाए गए :

प्रणाली स्तरीय मॉडल

प्रणाली स्तरीय जीएनपीए का अनुमान लगाने के लिए तीन भिन्न परंतु आपस में सम्पूरक अर्थमितीय मॉडल यथा – बहुविचर रीग्रेशन, वीएआर और क्वान्टाइल रीग्रेशन का उपयोग किया गया। अंतिम अनुमान इन तीन मॉडलों पर आधारित अनुमानों के औसत से उत्पन्न होता है।

• बहुविचर रीग्रेशन

निम्नलिखित बहुविचर रीग्रेशन मॉडल का प्रयोग समग्र एससीबी के गिरावट अनुपात अनुमान के लिए किया गया।

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} - \beta_2 \Delta NGDP_{t-2} + \beta_3 RWALR_{t-2} - \beta_4 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-3} + \beta_5 \left(\frac{GFD}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_6 Dummy$$

where, $\alpha_1, \beta_1, \beta_2, \beta_3, \beta_4, \beta_5$ and $\beta_6 > 0$

• वेक्टर ऑटोरिग्रेशन (वीएआर) मॉडल

नोशनल/अंकन रूप में, ऑर्डर पी मध्यमान-समायोजित वीएआर (VAR(p)) को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

$$y_t = A_1 y_{t-1} + \dots + A_p y_{t-p} + u_t; t=0,1,2,3,\dots$$

जहां, $y_t = (y_{1t}, \dots, y_{Kt})'$ समय t पर वेरिएबल / चर का एक वेक्टर ($K \times 1$), A_i ($i=1,2,\dots,p$) निर्धारित ($K \times K$) कोएफिशिएंट मैट्रिक्स हैं और $u_t = (u_{1t}, \dots, u_{Kt})'$ एक K-आयामी व्हाइट न्वाइज़ या नवोन्मेषी प्रक्रिया है।

¹ एक अवधि के दौरान एनपीए में हुई अभिवृद्धि स्लिपेज कहलाती है। स्लिपेज अनुपात = नए एनपीए / अवधि के आरंभ में मानक अग्रिम।

वीएआर मॉडल का अनुमान लगाने के लिए, गिरावट अनुपात, वास्तविक डब्ल्यूएलआर, सांकेतिक जीडीपी संवृद्धि, जीडीपी अनुपात के प्रति वार्षिक खाता संतुलन, जीडीपी अनुपात की तुलना में सकल राजकोषीय घाटे का चुनाव किया गया। न्यूनतम सूचना दृष्टिकोण आधार पर और अन्य उपचारों के साथ ही वीएआर के उपयुक्त क्रम का चुनाव किया गया और इसके लिए क्रमांक 2 उचित पाया गया। चुने गए वीएआर के संवेग अनुक्रिया प्रणाली का उपयोग करते हुए विभिन्न प्रकार के समष्टि आर्थिक आघातों के प्रभावों का निर्धारण किया गया।

- **क्वान्टाइल रीग्रेशन**

निम्नलिखित क्वान्टाइल रीग्रेशन मॉडल का प्रयोग 0.8 पर गिरावट अनुपात के सशर्त क्वान्टाइल का अनुमान लगाने के लिए किया जाता है :

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} - \beta_2 \Delta NGDP_{t-2} + \beta_3 RWALR_{t-2} - \beta_4 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-3} + \beta_5 \left(\frac{GFD}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_6 \text{Dummy}$$

बैंक समूह स्तरीय मॉडल /पद्धति

बैंक समूह-वार गिरावट अनुपात का अनुमान दो भिन्न परंतु आपस में सम्पूरक अर्थमितीय मॉडल: बहुविचर रीग्रेशन, वीएआर और क्वान्टाइल रीग्रेशन का उपयोग किया गया। इन दो मॉडलों पर आधारित अनुमानों के औसत से अंतिम अनुमान उत्पन्न होता है।

- **बहुविचर रीग्रेशन**

विभिन्न बैंक समूहों के गिरावट अनुपात का मॉडल बनाने के लिए निम्नलिखित बहुविचर रीग्रेशन का उपयोग किया गया: सरकारी क्षेत्र के बैंक (पीएसबी)

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} + \beta_2 RWALR_{t-2} - \beta_3 \Delta NGDP_{t-2} + \beta_4 \left(\frac{GFD}{GDP}\right)_{t-3} - \beta_5 \left(\frac{CAB}{GDP}\right)_{t-3} + \beta_6 \text{Dummy}$$

निजी क्षेत्र बैंक (पीवीबी) :

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} + \beta_2 RWALR_{t-3} - \beta_3 \Delta NGDP_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_5 \text{Dummy}$$

विदेशी बैंक (एफबी):

$$SR_t = \alpha_1 + \beta_1 SR_{t-1} + \beta_2 \Delta^2 CPI_{t-4} + \beta_3 \Delta \left(\frac{GFD}{GDP}\right)_{t-3} - \beta_4 \Delta \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_5 \text{Dummy}$$

- **वीएआर मॉडल**

विभिन्न बैंक समूहों के गिरावट अनुपात का मॉडल बनाने के लिए, विविध क्रमों के विभिन्न वीएआर नमूनों के अनुसार अनुमान लगाया गया जो निम्नलिखित समष्टि चरों पर आधारित थे:

सरकारी क्षेत्र के बैंक: एनजीडीपी, आरडब्ल्यूएलआर, जीडीपी अनुपात की तुलना में सीएबी और क्रम 1 के जीडीपी अनुपात की तुलना में जीएफडी।

निजी क्षेत्र के बैंक: एनजीडीपी, आरडब्ल्यूएलआर और क्रम 1 के जीडीपी अनुपात की तुलना में निर्यात।

विदेशी बैंक: जीडीपी, सीपीआई, जीडीपी अनुपात की तुलना में निर्यात और क्रम 1 के जीडीपी अनुपात की तुलना में जीएफडी।

गिरावट से जीएनपीए का अनुमान

ऊपर उल्लिखित नमूनों के माध्यम से जब एक बार गिरावट अनुपात का अनुमान लगा लिया जाता है उसके बाद निम्नलिखित तादात्म्य के आधार पर जीएनपीए का अनुमान लगाया जाता है:

$$GNPA_{t+1} = GNPA_t + Slippage_{(t,t+1)} - Recovery_{(t,t+1)} - Write-off_{(t,t+1)} - Upgradation_{(t,t+1)}$$

गिरावट अनुपातों से निकाले गए जीएनपीए, जिनका अनुमान ऊपर उल्लिखित क्रेडिट जोखिम अर्थमितीय मॉडलों द्वारा प्रक्षेपित किया जाता था, निम्नलिखित अनुमानों पर आधारित थे: दिसंबर 2020, मार्च 2021, जून 2021 और सितंबर 2021 को समाप्त तिमाहियों के दौरान ऋण संवृद्धि क्रमशः 5.8 प्रतिशत, 6.3 प्रतिशत, 6.7 प्रतिशत और 7.6 प्रतिशत: बहाली दर क्रमशः 3.3 प्रतिशत, 2.6 प्रतिशत, 2.5 प्रतिशत और 2.5 प्रतिशत : बड़े खाते में डालने संबंधी दर क्रमशः 6.0 प्रतिशत, 7.3 प्रतिशत, 5.2 प्रतिशत और 4.3 प्रतिशत : उन्नयन (अप-ग्रेडेशन) दर क्रमशः 1.2 प्रतिशत, 1.2 प्रतिशत, 1.4 प्रतिशत और 1.1 प्रतिशत रही।

पूंजी पर्याप्तता पर प्रभाव

बैंक में पूंजी पर्याप्तता पर समष्टि आघातों का प्रभाव निम्नलिखित चरणों के जरिए निकाला गया:

- भावी पूंजी संचयन पर प्रभाव को कल्पित समष्टि परिदृश्य के तहत लाभ का अनुमान कर किया गया, यह मानकर कि केवल 25 प्रतिशत कर पश्चात लाभ (पैट) (जो कि न्यूनतम विनियामक अपेक्षा है) बैंक की पूंजी में जाता है।
- भविष्य में अतिरिक्त पूंजी की आवश्यकता और समष्टि दबाव परिदृश्य का अनुमान आंतरिक मूल्यांकन आधारित (आईआरबी) सूत्र का उपयोग कर जोखिम-भारित आस्तियों (आरडबल्यूए) का आकलन कर किया गया।

निम्नलिखित सूत्र का उपयोग किया गया:

$$CRAR_{t+1} = \frac{Capital_t + 0.25 * PAT_{t+1}}{RWAs(credit\ risk)_{t+1} + RWAs(others)_{t+1}}$$

$$Common\ Equity\ Tier\ 1\ Capital\ Ratio_{t+1} = \frac{CET1_t + 0.25 * PAT_{t+1}}{RWAs(credit\ risk)_{t+1} + RWAs(others)_{t+1}}$$

जहां पैट का पूर्वानुमान सेटेलैडिट नमूनों का उपयोग कर किया गया है जिनकी विशदीकरण आगे के खंड में की गई है। कुल आरडबल्यूए में से क्रेडिट जोखिम आरडबल्यूए को घटाकर मिले आरडबल्यूए (अन्य) का अनुमान पिछले एक वर्ष के दौरान देखी गई औसत वृद्धि दर पर आधारित पर था। नीचे दिए गए आईआरबी सूत्र का उपयोग करते हुए आरडबल्यूए (क्रेडिट जोखिम) का आकलन किया जाता है:

आईआरबी सूत्र: क्रेडिट जोखिम के लिए बैंकवार आरडबल्यूए आकलन निम्नलिखित आईआरबी सूत्र के आधार पर किया गया।

$$RWAs(credit\ risk) = 12.5 \times \left(\sum_{i=1}^n EAD_i \times K_i \right)$$

जहां EAD_i बैंक के सेक्टर i (i = 1,2,.....n) का डिफ़ॉल्ट जोखिम है।

K_i क्षेत्र i के लिए न्यूनतम पूंजी आवश्यकता है जिसकी गणना निम्नलिखित सूत्र का उपयोग करते हुए की गई है:

$$= \left[LGD_i \times N \left[(1 - R_i)^{-0.5} \times G(PD_i) + \left(\frac{R_i}{1 - R_i} \right)^{0.5} \times G(0.999) \right] - PD_i \times LGD_i \right] \\ \times (1 - 1.5 \times b(PD_i))^{-1} \times (1 + (M_i - 2.5) \times b(PD_i))$$

जहां LGD_i क्षेत्र i की दी गई डिफ़ॉल्ट हानि है, PD_i क्षेत्र i के डिफ़ॉल्ट की संभाव्यता है, N (...) मानक सामान्य वितरण का संचयी वितरण फंक्शन है, G (...) मानक सामान्य वितरण के संचयी वितरण फंक्शन का व्युत्क्रम है, M_i क्षेत्र (इस मामले में सभी क्षेत्र के लिए 2.5 ली गई है) के ऋण की औसत परिपक्वता है, b(PD_i) सुस्पष्ट परिपक्वता समायोजन है और R_i अर्थव्यवस्था की सामान्य स्थिति के साथ क्षेत्र i का सह-संबंध है। b(PD) और R दोनों की गणना PD पर निर्भर है।

ऊपर आईआरबी सूत्र के लिए तीन प्रमुख इनपुट की आवश्यकता होती है, यथा क्षेत्र की PD, EAD और LGD। यहाँ बैंक डाटा का उपयोग कर संबंधित क्षेत्र की वार्षिक गिरावट से क्षेत्र की PD ली गई है। PD क्षेत्र विशेष में प्रत्येक के लिए चयनित 46 बैंकों के समान (अर्थात् प्रणालीगत आघात) नमूने से लिए गए थे, जबकि, EAD क्षेत्र विशेष के लिए बैंक का उस क्षेत्र विशेष में कुल बकाया ऋण था। इसके अतिरिक्त, LGD पर पूर्वानुमान इस प्रकार लिया गया था: आधाररेखा परिदृश्य के अंतर्गत, LGD = 60 प्रतिशत (मोटे तौर पर पूंजी पर्याप्तता पर आरबीआई दिशा निर्देशों के अनुसार - ऋण जोखिम के लिए पूंजी की आवश्यकता की गणना के लिए आईआरबी पद्धति) जो माध्यम समष्टि अर्थशास्त्र जोखिम परिदृश्य में बढ़कर 65 प्रतिशत और गंभीर समष्टि अर्थशास्त्र जोखिम परिदृश्य में 70 प्रतिशत हो जाता है।

चयनित क्षेत्र : निम्नलिखित 17 क्षेत्र (और अन्य) दबाब की जांच के लिए चयनित किए गए।

सारणी 2: चयनित क्षेत्रों / उपक्षेत्रों की सूची

क्र.सं.	क्षेत्र	क्र.सं.	क्षेत्र
1	इंजिनियरिंग	10	मूलभूत धातु और धातु उत्पाद
2	ऑटो	11	खनिज
3	सीमेंट	12	कागज
4	रसायन	13	पेट्रोलियम
5	विनिर्माण	14	कृषि
6	कपड़ा	15	रिटेल - हाउसिंग
7	खाद्य प्रसंस्करण	16	रिटेल - अन्य
8	रत्न और आभूषण	17	सेवाएँ
9	बुनियादी संरचना	18	अन्य

क्षेत्रगत वार्षिक गिरावट अनुपात (अर्थात् क्षेत्रगत पीडी) का समष्टि परिवर्ती के साथ प्रसंभाव्य संबंध का अनुमान लगाने के लिए प्रत्येक क्षेत्र के लिए मल्टीवेरिएट रिग्रेशन का उपयोग किया गया था। इन अनुमानित रिग्रेशन का उपयोग कर प्रत्येक क्षेत्र के क्षेत्रगत पीडी की गणना कल्पित आधार-रेखा के साथ-साथ दो प्रतिकूल परिदृश्यों, यथा, मध्यम दबाब और गंभीर दबाब के अंतर्गत अगली चार तिमाहियों के लिए की गई थी। क्षेत्रगत रिग्रेशन के नमूने आगे के खंडों में प्रस्तुत किए गए हैं।

निम्नलिखित चरणों का उपयोग कर बैंकवार पैट की गणना की गई:

- प्रत्येक बैंक-समूह के लिए पैट के घटकों (अर्थात् निवल ब्याज आय(एनआईआईआई), अन्य परिचालन गत आय(ओओआई), परिचालन गत व्यय(ओई) और प्रावधान तथा बड़े खाते डालना) की गणना आधार रेखा और प्रतिकूल परिदृश्यों के अंतर्गत आगे के खंडों में वर्णित विधि द्वारा की गई।
- प्रत्येक बैंक के पैट के घटकों के अंश (आयकर को छोड़कर) की गणना उनके संबंधित बैंक-समूह में की गई।
- संबंधित बैंक-समूह के पैट के घटक के अनुमानित मूल्य और पैट के घटक विशेष में उस बैंक के अंश की गणना कर प्रत्येक बैंक के पैट (आयकर को छोड़कर) के प्रत्येक घटक का अनुमान लगाया गया।
- अंत में, बैंकवार पैट का पूर्वानुमान पिछले चरण में अनुमानित उनके घटकों को उपयुक्त रूप से जोड़ते अथवा घटाते हुए लगाया गया और आयकर का दर 35 प्रतिशत प्रयोग में लिया गया।

उपर्युक्त सूत्रों, मान्यताओं और इनपुट का प्रयोग करते हुए, बैंक स्तर पर पूंजी पर्याप्तता पर कल्पित समष्टि परिदृश्यों के प्रभाव का अनुमान लगाया गया और अंतिम वास्तविक तथ्यात्मक आंकड़ों से बेसलाइन के अंतर्गत भविष्य में पूंजी पर्याप्तता में बदलाव तथा बेसलाइन से प्रतिकूल समष्टि दबाव तक बैंक की पूंजी पर्याप्तता में बदलाव की गणना की गई। अंत में, इन बदलावों को समुचित रूप से अंतिम तथ्यात्मक पूंजी पर्याप्तता (मानकीकृत दृष्टिकोड) पर लागू किया गया।

क्षेत्रगत पीडी का अनुमान

1. इंजीनियरिंग

$$\Delta PD_t = \alpha + \beta_1 \Delta PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-2} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} - \beta_4 \Delta GVA(Industry)_{t-3} + \beta_5 Dummy$$

2. ऑटो

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-1} + \beta_3 WALR_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} + \beta_5 \Delta CPI_{t-2} + \beta_6 Dummy$$

3. सीमेंट

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-2} + \beta_3 \Delta WALR_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} + \beta_5 Dummy$$

4. रसायन और रासायनिक उत्पाद

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 \Delta GDP_{t-1} + \beta_4 Dummy_t$$

5. विनिर्माण

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-1} - \beta_4 \Delta GDP_{t-1} + \beta_5 Dummy_t$$

6. कपड़ा

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-1} + \beta_3 \Delta WALR_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} + \beta_5 \Delta CPI_{t-3} + \beta_6 Dummy$$

7. खाद्य प्रसंस्करण

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-3} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-1} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 Dummy_t$$

8. रत्न और आभूषण

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-3} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 Dummy_t$$

9. बुनियादी संरचना

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-2} + \beta_3 WALR_{t-1} + \beta_4 \Delta CPI_{t-1} + \beta_5 Dummy_t$$

10. मूलभूत धातु और धातु उत्पाद

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-3} + \beta_3 WALR_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_5 Dummy_t$$

11. खनिज और उत्खनन

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-2} + \beta_3 \Delta CPI_{t-1} - \beta_4 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} + \beta_5 Dummy_t$$

12. कागज और कागज उत्पाद

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-4} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-1} + \beta_5 Dummy_t$$

13. पेट्रोलियम और पेट्रोलियम उत्पाद

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-2} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 Dummy_t$$

14. कृषि

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-1} + \beta_5 Dummy_t$$

15. सेवाएँ

$$\Delta PD_t = \alpha + \beta_1 \Delta PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-1} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-2} - \beta_4 \Delta GDP_{t-2} + \beta_5 \Delta CPI_{t-1}$$

16. रिटेल - आवास

$$\Delta PD_t = \alpha + \beta_1 \Delta PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-2} - \beta_3 \Delta GDP_{t-1}$$

17. रिटेल - अन्य

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-2} - \beta_3 \left(\frac{EXP}{GDP}\right)_{t-1} + \beta_4 Dummy_t$$

18. अन्य

$$PD_t = \alpha + \beta_1 PD_{t-1} + \beta_2 \Delta WALR_{t-2} - \beta_3 \Delta GDP_{t-1} + \beta_4 Dummy_t$$

बैंक-समूहवार पैट का अनुमान

प्रमुख बैंकों-समूहों (यथा पीएसबी, पीवीबी, एफबी) के पैट के कई घटक होते हैं, जैसे कि एनआईआई, ओओआई, ओई और प्रावधान तथा बट्टे खाते। इन घटकों का विभिन्न समय श्रृंखलाओं पर आधारित अर्थमितीय नमूनों (जैसा कि नीचे दिया गया है) के आधार पर अनुमान लगाया जाता है। अंत में निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग करते हुए पैट का अनुमान लगाया जाता है।

$$\text{पैट} = \text{एनआईआई} + \text{ओओआई} - \text{ओई} - \text{प्रावधान तथा बट्टे खाते} - \text{आयकर}$$

जहां, एनआईआई- निवल ब्याज आय, ओओआई- अन्य परिचालनगत आय और ओई- परिचालनगत खर्च है।

निवल ब्याज आय (एनआईआई): ब्याज से आय और ब्याज पर खर्च के बीच का अंतर एनआईआई होता है, उसे निम्नलिखित रीग्रेशन मॉडल का प्रयोग कर निकाला जाता है:

$$LNII_t = -\alpha_1 + \beta_1 LNII_{t-1} + \beta_2 LNGDP_SA_{t-1} + \beta_3 Adv_Gr_{t-1} + \beta_4$$

एलएनआईआई, एनआईआई का लॉग है। एलएनजीवीए_एसए सांकेतिक जीवीए का मौसमी रूप से समायोजित लॉग है। एडीवी जीआर अग्रिमों में वर्ष-दर-वर्ष होने वाली संवृद्धि दर है। स्प्रेड, ब्याज कमाने वाली आस्तियों पर कमाए गए औसत ब्याज दर और ब्याज देने वाली देयताओं पर दिए गए औसत ब्याज के बीच का अंतर है। $Spread_t$

अन्य परिचालनगत आय (ओओआई): अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों की ओओआई को निम्नलिखित रीग्रेशन मॉडल का प्रयोग करते हुए अनुमानित किया गया:

$$LOOI_t = -\alpha_1 + \beta_1 LOOI_{t-1} + \beta_2 LNGDP_SA_t$$

एलओओआई, ओओआई का लॉग है

परिचालनगत खर्च (ओई): अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के ओई को स्वतःपरावर्तित संचरित औसत (एआरएमए) मॉडल का प्रयोग कर अनुमानित किया गया।

प्रावधान (बट्टे खाते को शामिल करके): अपेक्षित प्रावधानों का अनुमान निम्नलिखित रीग्रेशन का उपयोग कर दिया गया:

$$P_Adv_t = \alpha_1 + \beta_1 P_Adv_{t-1} - \beta_2 \Delta GDP_{t-2} + \beta_3 GNPA_{t-1} - \beta_4 Dummy$$

पी एडीवी, कुल अग्रिमों के अनुपात की तुलना में किया गया प्रावधान है। जीडीपी वास्तविक जीवीए की वर्ष-दर-वर्ष संवृद्धि दर है। जीएनपीए कुल अग्रिमों के अनुपात की तुलना में सकल गैर-निष्पादन आस्तियां हैं और इसलिए कल्पित समष्टि दबाव के अंतर्गत आस्तियों की गुणवत्ता में हास का आय पर प्रभाव इस समीकरण से निकाला गया। डमी, समयावधि डमी है।

आयकर: लागू आयकर को कर पूर्व आय का 35 प्रतिशत माना गया है, जो कर पूर्व लाभ की तुलना में आयकर के पिछले रुझानों पर आधारित है।

एकल घटक संवेदनशीलता विश्लेषण-दबाव जांच

तिमाही निगरानी के रूप में, क्रेडिट जोखिम, ब्याज दर जोखिम, चलनिधि जोखिम आदि को शामिल करते हुए दबाव परीक्षण किए जाते हैं और इन आघातों के प्रत्युत्तर में वाणिज्यिक बैंकों की समुत्थानशीलता का अध्ययन किया जाता है। यह विश्लेषण व्यक्तिगत अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक के स्तर पर और प्रणाली के स्तर पर भी किया गया।

क्रेडिट जोखिम (संकेंद्रण जोखिम शामिल)

बैंकों की समुत्थानशीलता का पता लगाने के लिए सभी प्रकार के पोर्टफोलियो और कुछेक चुनिंदा सेंक्टरों में जीएनपीए के स्तरों में बढ़ोतरी करके आघात दिया जाता है। क्रेडिट संकेंद्रण जोखिम की जांच करने के लिए मुख्य व्यक्तिगत उधारकर्ता (कर्ताओं) और उधारकर्ता(कर्ताओं) के सबसे बड़े समूह को चूककर्ता के रूप में मान लिया गया। यह विश्लेषण समग्र स्तर पर और व्यक्तिगत बैंक दोनों ही स्तरों पर किया गया। जीएनपीए में मानी गई वृद्धि को मानक से कम, संदेहास्पद और हानि की श्रेणियों में उसी अनुपात में बांट दिया गया जिस अनुपात में एनपीए का मौजूदा स्टाक उपलब्ध था। तथापि, क्रेडिट संकेंद्रण जोखिम (जोखिम पर आधारित) के लिए संभावित आघातों के तहत अतिरिक्त जीएनपीए पर विचार किया गया ताकि उसे केवल अवमानक श्रेणी में रखा जा सके तथा क्रेडिट संकेंद्रण जोखिम (तनावग्रस्त ग्रस्त अग्रिमों पर आधारित) के लिए संभावित आघातों के तहत तनावग्रस्त अग्रिमों पर विचार किया गया ताकि उस के लिए संभावित आघातों के तहत अतिरिक्त जीएनपीए पर विचार किया गया ताकि उसे केवल अवमानक श्रेणी में रखा जा सके हानि श्रेणी में रखा जा सके। विभिन्न आस्ति श्रेणियों के लिए लागू मौजूदा औसत मानदंडों के आधार पर इन दबाव जांचों के लिए प्रावधानीकरण मानदंडों का उपयोग किया गया। अवमानक, संदेहास्पद और हानि अग्रिमों के लिए क्रमशः 25 प्रतिशत, 75 प्रतिशत और 100 प्रतिशत की प्रावधानीकरण आवश्यकताओं को संज्ञान में लिया गया। दबाव की परिस्थितियों के तहत गणना में लिए गए अतिरिक्त जीएनपीए पर इन मानदंडों को ही लागू किया गया। जीएनपीए में मानी गई वृद्धि के परिणामस्वरूप, अतिरिक्त जीएनपीए पर हुई आय की हानि को एक तिमाही के लिए प्रावधानीकरण की अतिरिक्त आवश्यकताओं के अलावा कुल हानियों में भी शामिल किया गया। इस प्रकार प्राप्त की गई अनुमानित प्रावधानीकरण संबंधी अपेक्षाओं को बैंकों की पूंजी में से घटा दिया गया और दबावग्रस्त पूंजी पर्याप्तता अनुपातों की गणना की गई।

क्षेत्रगत जोखिम

एक बैंक के क्षेत्रगत ऋण जोखिम का पता लगाने के लिए क्षेत्र विशेष के जीएनपीए अनुपात को बढ़ा कर उस क्षेत्र के ऋण पोर्टफोलियो को आघात पहुंचाया गया। यह विश्लेषण समग्र स्तर पर और व्यक्तिगत बैंक दोनों ही स्तरों पर किया गया। एक क्षेत्र के जीएनपीए अनुपातों के मानक विचलन पर आधारित क्षेत्र विशेष आघात का प्रयोग व्यक्तिगत बैंक पर हुए प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किया जाता है। यह माना गया कि कल्पित आघातों के तहत अतिरिक्त जीएनपीए अवमानक श्रेणी में ही आएंगे। जीएनपीए में कल्पित वृद्धि के परिणामस्वरूप, एक तिमाही में अतिरिक्त जीएनपीए पर हुई आय में हानि को भी कुल हानियों में शामिल किया गया। इसके अलावा प्रावधानीकरण आवश्यकता में भी वृद्धि की गई। इस प्रकार प्राप्त की गई अनुमानित प्रावधानीकरण संबंधी अपेक्षाओं को बैंकों की पूंजी में से घटा दिया गया और दबावग्रस्त पूंजी पर्याप्तता अनुपातों की गणना की गई।

ब्याज दर जोखिम

भारतीय रुपए के प्रतिफल वक्र में आने वाले अंतर के कारण माने गए आघात के तहत, पोर्टफोलियो की कीमत में होने वाली कमी या आय में होने वाली गिरावट के कारण होने वाली हानियों को संज्ञान में लिया गया। बैंकों की पूंजी में से इन अनुमानित हानियों को कम कर दिया गया ताकि दबावग्रस्त सीआरएआर को प्राप्त किया जा सके।

ट्रेडिंग पोर्टफोलियो (एचएफटी+एएफएस) में ब्याज दर जोखिम के लिए मुद्दत विश्लेषण पद्धति पर विचार किया गया ताकि, कीमत के प्रभाव (पोर्टफोलियो हानियों) की गणना की जा सके। दिए गए आघातों के आधार पर प्रत्येक कालावधि के लिए इन निवेशों पर पोर्टफोलियो हानियों की गणना की गई। इसके परिणामस्वरूप प्राप्त हानियों/लाभों का प्रयोग इससे प्रभावित सीआरएआर पर निकालने के लिए किया गया।

इक्विटी मूल्य जोखिम

इक्विटी मूल्य जोखिम के अंतर्गत इक्विटी मूल्य सूचकांक में निश्चित दशमलव अंकों की गिरावट के आघात का बैंक के पूंजी और लाभ पर प्रभाव का परीक्षण किया गया। पोर्टफोलियो के मूल्य में गिरावट या इक्विटी मूल्य में बदलाव के कारण आय की हानि को कल्पित आघात के कारण बैंक की कुल हानि के लिए लेखाबद्ध किया गया। इस प्रकार निकली हुई कुल हानि को बैंक के पूंजी में से कम किया गया।

चलनिधि जोखिम

चलनिधि दबाव जांच का उद्देश्य यह है कि चलनिधि के अप्रत्याशितरूप से बाहर चले जाने पर, बाहर से चलनिधि की कोई मदद लिए बगैर, बैंक की उसे वहन करने की क्षमता का पता लगाया जा सके। जमाकर्ताओं के अचानक विश्वास खो देने के कारण विभिन्न प्रकार की परिस्थितियां जमाराशि निकासी की विविध प्रकार की संभावनाएं (जमाराशि की प्रकृति के अनुसार) सामने लाती हैं और साथ ही स्वीकृत/प्रतिबद्ध/गारंटीशुदा क्रेडिट (कार्यशील पूंजी की स्वीकृत अप्रयुक्त सीमा, प्रतिबद्ध क्रेडिट और क्रेडिट पत्रों तथा गारंटियों की अप्रयुक्त सीमा को ध्यान में रखते हुए) सीमाओं के अप्रयुक्त हिस्से के लिए मांग उत्पन्न करती है। दबाव परीक्षण इस बात को ध्यान में रखते हुए किया गया कि क्रेडिट के लिए अतिरिक्त और अप्रत्याशित मांग को बैंकों की केवल चलनिधि युक्त आस्तियों की सहायता से पूरा करने की उनकी क्षमता का पता लगाया जा सके।

चलनिधि दबाव परीक्षण की मान्यताएं इस प्रकार हैं:

- यह माना गया कि बैंक केवल चलनिधियुक्त आस्तियों की बिक्री के जरिए जमाराशियों की दबावग्रस्त निकासी या क्रेडिट की अतिरिक्त मांग को पूरा कर लेगा।
- किए गए निवेशों की बिक्री उनके बाजार मूल्य में दस प्रतिशत के हेयरकट पर कर ली जाएगी।
- दबाव परीक्षण "स्टैटिक मोड" के अंतर्गत किया गया।

चुनिंदा बैंकों के व्युत्पन्नी (डेरीवेटिव) पोर्टफोलियो का दबाव परीक्षण

दबाव परीक्षण को शीर्ष 20 बैंकों के प्रतिनिधि प्रतिदर्श समूह के व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो के संबंध में केंद्रित किया गया और इसके लिए व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो की अनुमानित कीमत ली गई। प्रतिदर्श में शामिल प्रत्येक बैंक से कहा गया कि वे अपने संबंधित व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो के संबंध में दबाव परिस्थितियों के प्रभाव का अनुमान लगाएं।

घरेलू बैंकों के मामले में, घरेलू और विदेशी दोनों प्रकार के व्युत्पन्नी पोर्टफोलियो को शामिल किया गया। विदेशी बैंकों के मामले में, इस प्रक्रिया में केवल घरेलू (भारतीय) स्थिति पर विचार किया गया। व्युत्पन्नी व्यापार के लिए जहां हेजिंग की सुविधा उपलब्ध कराई गई थी, उन्हें दबाव परीक्षण से छूट प्रदान की गई, जबकि अन्य सभी प्रकार के व्यापार को इसमें शामिल किया गया।

दबाव परिस्थितियों में चार संवेदनशीलता जांचों को शामिल किया गया जिसमें स्पॉट यूएस डालर/ भारतीय रुपया की दर और घरेलू ब्याज दरें मानकों के रूप में ली गईं।

सारणी 3: डेरिवेटिव पोर्टफोलियो के तनाव परीक्षण के संबंध में आघात

		घरेलू ब्याज दरें
आघात 1	एक दिवसीय	+2.5 प्रतिशत अंक
	1 वर्ष तक	+1.5 प्रतिशत अंक
	1 वर्ष से अधिक	+1.0 प्रतिशत अंक

घरेलू ब्याज दरें		
आघात 2	एक दिवसीय	-2.5 प्रतिशत अंक
	1 वर्ष तक	-1.5 प्रतिशत अंक
	1 वर्ष से अधिक	-1.0 प्रतिशत अंक
विनिमय दरें		
आघात 3	यूएस डालर/ भारतीय रुपया	+20 प्रतिशत
विनिमय दरें		
आघात 4	यूएस डालर/ भारतीय रुपया	-20 प्रतिशत

2.2 अनुसूचित प्राथमिक(शहरी) सहकारी बैंक

एकल घटक संवेदनशीलता विश्लेषण- दबाव परीक्षण

क्रेडिट जोखिम

अनुसूचित शहरी सहकारी बैंकों के संबंध में उनके क्रेडिट जोखिम के बारे में दबाव परीक्षण किया गया। यह जांच एक घटकीय संवेदनशीलता विश्लेषण पर आधारित थी। ऐतिहासिक मानक विचलन (एसडी) का प्रयोग करते हुए निम्नलिखित चार विभिन्न परिदृश्यों के अंतर्गत सीआरएआर पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया था :

- परिदृश्य I: जीएनपीए पर 1 मानक विचलन (एसडी) का आघात (अवमानक अग्रिमों में वर्गीकृत).
- परिदृश्य II: जीएनपीए पर 2 मानक विचलन (एसडी) का आघात (अवमानक अग्रिमों में वर्गीकृत).
- परिदृश्य III: जीएनपीए पर 1 मानक विचलन (एसडी) का आघात (हानि अग्रिमों में वर्गीकृत).
- परिदृश्य IV: जीएनपीए पर 2 मानक विचलन (एसडी) का आघात (हानि अग्रिमों में वर्गीकृत).

चलनिधि जोखिम

1-28 दिन की कालावधि में नकदी के प्रवाह के आधार पर एक चलनिधि दबाव परीक्षण भी किया गया जिसमें बहिर्वाह (नकदी निकासी) के 20 प्रतिशत से अधिक असंतुलन [नकारात्मक अंतर (नकदी बहिर्वाह की तुलना में नकदी प्रवाह का कम होना)] की स्थिति में इसे दबावग्रस्त माना गया।

- परिदृश्य I : 1-28 दिन की कालावधि में नकदी निकासी 50 प्रतिशत तक होना (नकदी जमा आने में कोई परिवर्तन नहीं)
- परिदृश्य II: 1-28 दिन की कालावधि में नकदी निकासी 100 प्रतिशत तक होना (नकदी जमा आने में कोई परिवर्तन नहीं)

2.3 गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां

एकल घटक संवेदनशीलता विश्लेषण-दबाव परीक्षण

क्रेडिट जोखिम

व्यक्तिगत स्तर और प्रणाली स्तर पर एनबीएफसी के क्रेडिट पोर्टफोलियो को मध्यम और उच्च जोखिम वाले परिदृश्यों के तहत 1 एसडी और 2 जीबी द्वारा जीएनपीए अनुपात में वृद्धि करके एक आघात लगाया गया था। मार्च 2020 के अनुसार एनबीएफसी की पूंजी पर्याप्तता की स्थिति के आधार पर बेसलाइन परिदृश्य प्रस्तुत किया गया था। क्रेडिट जोखिम और आरडब्ल्यूए

को पिछले तीन वर्षों में सीएजीआर के 75 प्रतिशत तक बढ़ने का अनुमान लगाया गया था। अतिरिक्त एनपीए को अवमानक अग्रिमों में जोड़ा गया था और मौजूदा जीएनपीए को प्रावधान आवश्यकताओं पर मौजूदा विनियमों के अनुसार समय बढ़ने के प्रभाव के आधार पर वितरित किया गया था। नियामक आवश्यकताओं के अनुसार मार्च 2020 तक प्रावधान आवश्यकताओं के अनुसार मौजूदा समय में अवमानक अग्रिमों के लिए संदिग्ध अग्रिमों का 10% और हानि अग्रिमों के लिए 100% का प्रावधान किया गया। जीएनपीए में वृद्धि के कारण अतिरिक्त प्रावधान आवश्यकताओं और कर पूर्व लाभ (पीबीटी) से पहले नए लाभ की गणना करने के लिए वित्त वर्ष 2019-20 के लिए ईबीपीटी से घटा दिया गया था। कर के बाद लाभ की गणना करने के लिए 22 प्रतिशत की कर दर लागू की गई थी और पूर्ण पीएटी को मौजूदा पूंजी के लिए अर्जित किया गया था जिसमें कोई लाभांश भुगतान धारणा नहीं थी। नई पूंजी और आरडब्ल्यू के आधार पर, अलग-अलग एनबीएफसी के लिए नई पूंजी और जोखिम भारित आस्तियों का अनुपात और पूरे क्षेत्र की गणना मान्य परिदृश्यों के लिए की गई।

2.4 अंतर-संबद्धता- नेटवर्क विश्लेषण

नेटवर्क विश्लेषण के केन्द्र में मूलतः मैट्रिक्स अल्जेब्रा है, जो वित्तीय क्षेत्र में संस्थाओं (इंटीटीज) के बीच द्विपक्षीय एक्सपोजरों का उपयोग करता है। वित्तीय प्रणाली में एक संस्था की सभी अन्य संस्थाओं को दी गई उधारियों अथवा ली गई उधारियों को वर्ग (स्कवायर) मैट्रिक्स में रखा जाता है और तब उन्हें एक नेटवर्क ग्राफ में चिह्नित किया जाता है। प्रणाली में अंतर-संबद्धता के स्तर को मापने के लिए नेटवर्क मॉडल में विभिन्न सांख्यिकीय तरीकों का प्रयोग किया जाता है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण तरीके निम्नलिखित हैं :

संबद्धता : यह एक सांख्यिकी होती है जो एक पूर्ण ग्राफ में सभी संभव श्रृंखलाओं से संबंधित नोड्स के बीच श्रृंखलाओं की सीमा को मापती है। एक निर्देशित ग्राफ में $K = \sum_{i=1}^N k_i$ के बराबर बाहरी अंशों की कुल संख्या दर्शाती है और N नोड्स की कुल संख्या के रूप में है, ग्राफ की संबद्धता $\frac{K}{N(N-1)}$ के रूप में दी गई है।

क्लस्टर गुणांक : नेटवर्क में क्लस्टरिंग यह माप करती है कि प्रत्येक नोड आपस में किस प्रकार अंतर-संबद्ध है। विशेष रूप से, इस बात की प्रबल संभावना होती है कि किसी नोड के दो पड़ोसी (वित्तीय नेटवर्क के मामले में बैंक के प्रतिपक्षी) आपस में भी पड़ोसी होंगे। किसी नेटवर्क के लिए उच्च क्लस्टरिंग गुणांक का अर्थ यह होता है कि प्रणाली में उच्च स्थानिक अंतर-संबद्धता मौजूद है। k_i , निकटवर्ती/पड़ोसियों वाले प्रत्येक बैंक हेतु उनके बीच सभी प्रकार के संभावित जुड़ावों की कुल संख्या $k_i(k_i-1)$ द्वारा दर्शायी जाती है। मान लेते हैं कि E_i एजेंट i बैंक के k_i निकटवर्तियों के बीच वास्तविक संबद्धता को प्रदर्शित करता है अर्थात् जो i के k_i निकटवर्ती हैं वो आपस में भी निकटवर्ती हैं। i बैंक के लिए क्लस्टरिंग गुणांक C_i को इस सर्वसमिका (सूत्र) द्वारा व्यक्त किया है:-

$$C_i = \frac{E_i}{k_i(k_i - 1)}$$

समग्र रूप में नेटवर्क का क्लस्टरिंग गुणांक (सी) सभी C_i का औसत निम्नलिखित है:

$$C = \frac{\sum_{i=1}^N C_i}{N}$$

परतदार नेटवर्क संरचना : विशिष्ट रूप से वित्तीय नेटवर्क में परतदार संरचना की प्रवृत्ति देखी जाती है। परतदार संरचना एक ऐसी व्यवस्था होती है जिसमें विभिन्न संस्थाओं की अन्य नेटवर्क के साथ विविध अंशों पर या स्तरों पर संबद्धता होती है। मौजूदा विश्लेषण में सर्वाधिक संबद्ध बैंक (केंद्रीयता के आईजेनवेक्टर माप के आधार पर) सबसे भीतरी केंद्र में होते हैं। इसके बाद बैंकों को मध्य-केंद्र, बाहरी केंद्र और परिधि में (चित्र में केंद्र के चारों ओर संबंधित संकेंद्रिक चक्रों में) उनकी संगत संबद्धता के आधार पर

रखा जाता है। बैंकों की संबद्धता की रेंज को प्रत्येक बैंक के अनुपात के अंश रूप में परिभाषित किया जाता है और बाह्य अंश को सर्वाधिक संबद्ध बैंक के अंश से विभाजित किया जाता है। जो बैंक इस अनुपात के शीर्ष 10 प्रतिशत में आते हैं वे भीतरी केंद्र का निर्माण करते हैं। 90 और 70 प्रतिशत के बीच आने वाले बैंक मध्य-केंद्र में आते हैं और 40 तथा 70 के बीच प्रतिशत वाले बैंकों की एक तीसरी सतह/परत होती है। 40 प्रतिशत से कम संबद्धता प्राप्त करने वाले बैंकों को परिधि के रूप में श्रेणीकृत/वर्गीकृत किया जाता है।

नेटवर्क चार्ट में रंग संकेत: नेटवर्क चार्ट में नीली और लाल गेंदें क्रमशः निवल उधारदाता और निवल उधारकर्ता को निरूपित करती हैं। परतदार नेटवर्क चित्र में श्रृंखलाओं के रंग संकेत नेटवर्क में मौजूद विभिन्न कतारों/परतों से ली गई उधारियों को निरूपित करती हैं (उदाहरण के लिए हरे रंग की श्रृंखलाएं मूल कोर में स्थिति बैंकों से ली गई उधारियों को निरूपित करती हैं)।

ऋण-शोधन क्षमता संक्रामकता का विश्लेषण

संक्रामकता विश्लेषण एक प्रकार का दबाव परीक्षण होता है जिसमें एक या अधिक बैंकों के असफल हो जाने के कारण उत्पन्न दूरगामी प्रभावों के चलते बैंकिंग प्रणाली को होने वाले सकल घाटे का पता लगाया जाता है। इसके लिए हम राउंड बाई राउंड या अनुक्रमिक (सीक्वेंशियल) अल्गोरिथम का उपयोग करते हैं ताकि अनुरूपता संक्रामकता, जिसे अब फरफाइन् (2003) के नाम से बेहतर जाना जाता है, का पता लगाया जा सके। यदि i बैंक से प्रारंभ करें जो 0 समय पर असफल होता है तो प्रत्येक चक्र या पुनरावृत्ति में जो बैंक परेशानी में आते हैं उन्हें Dq , $q = 1, 2, \dots$ के रूप में निरूपित किया जा सकता है। इस विश्लेषण के लिए, किसी बैंक को दबावग्रस्त तब माना जाता है जब इसका टियर-1 सीआरएआर 7 प्रतिशत से नीचे चला जाए। प्राप्तकर्ता बैंक के लिए निवल प्राप्तियों को घाटे के रूप में माना जाता है।

चलनिधि संक्रामकता विश्लेषण

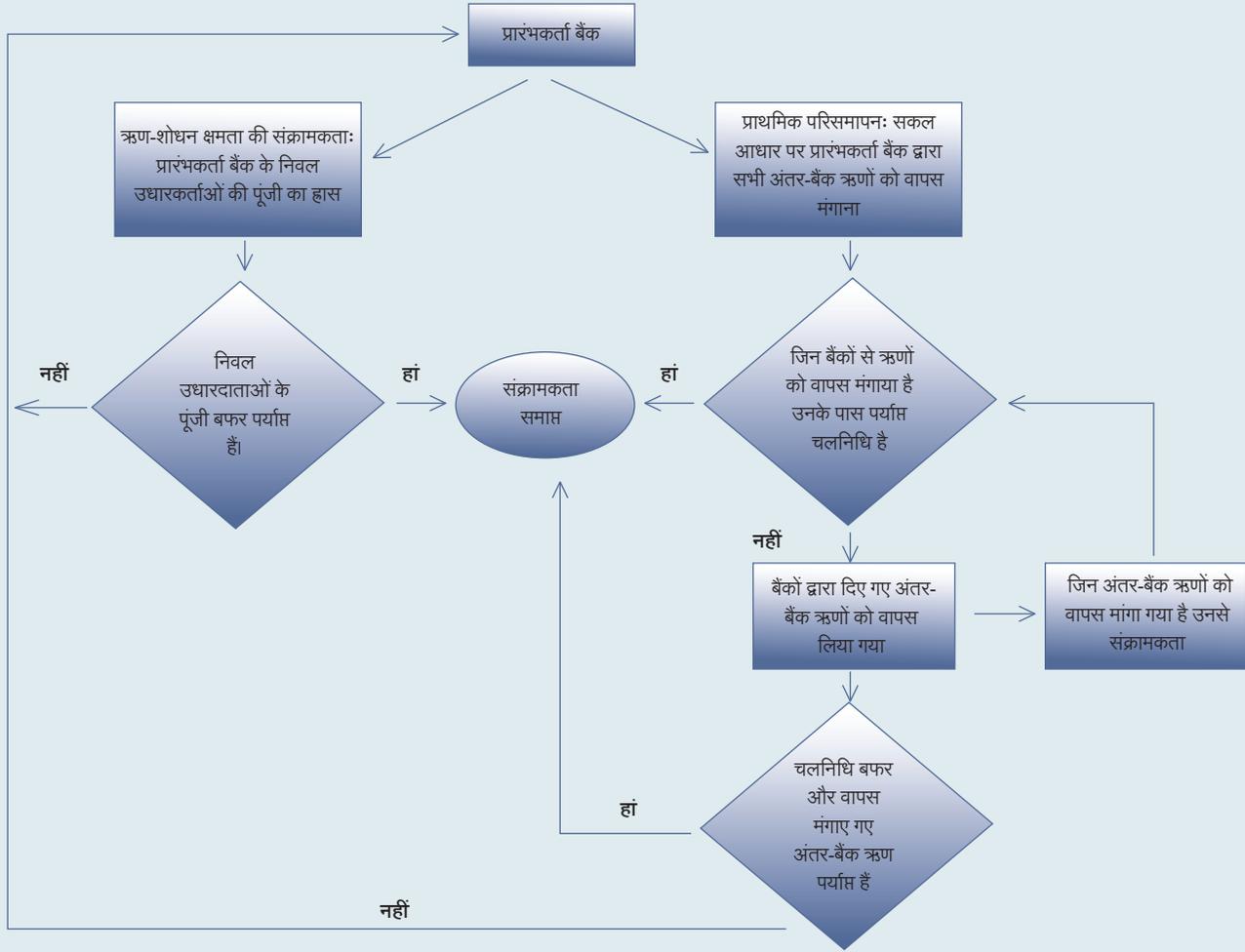
जहां ऋण शोधनक्षमता संक्रामकता विश्लेषण किसी निवल उधारकर्ता के विफल हो जाने की स्थिति में वित्तीय प्रणाली को होने वाली संभावित हानि का आकलन करता है वहीं चलनिधि संक्रामकता विश्लेषण किसी निवल उधारदाता के विफल हो जाने की स्थिति में इस प्रणाली को होने वाली संभावित हानि का अनुमान व्यक्त करता है। यह विश्लेषण बैंकों के बीच होने वाले सकल एक्सपोजर के संबंध में किया जाता है। एक्सपोजर में निधि आधारित और व्युत्पन्नी दोनों प्रकार के एक्सपोजर शामिल होते हैं। इस विश्लेषण का मूलभूत आकलन यह होता है कि किसी बड़े उधारदाता के विफल होने की स्थिति से उत्पन्न होने वाले चलनिधि दबाव से निपटने के लिए (किसी) बैंक की चलनिधि आरक्षित निधि या बफर में पहले तो गिरावट आएगी। चलनिधि आरक्षित निधियों के तहत विचार में ली जाने वाली मदें इस प्रकार हैं : (क) सीआरएआर का अतिरिक्त अधिशेष; (ख) एसएलआर का अतिरिक्त अधिशेष और (ग) निवल मांग और मीयादी देयताओं का 18 प्रतिशत। यदि बैंक केवल चलनिधि बफर की मदद से ही दबाव से निपटने में सक्षम होता है तो ऐसी स्थिति में इसका आगे कोई और संक्रमण नहीं होता है।

तथापि, यदि केवल चलनिधि बफर पर्याप्त नहीं होते हैं तो बैंक को उन सभी ऋणों को वापस लेना होगा जो 'वापस लिए जाने योग्य' हैं, जिसके परिणामस्वरूप संक्रामकता होती है। यदि विश्लेषण करने के लिए देखा जाए तो केवल अल्पावधि की आस्तियां जैसे कि कॉल मार्केट में उधार दी गई राशि और अन्य बहुत ही अल्पावधि के लिए दिए गए ऋणों को ही वापसी योग्य कहा जा सकता है। इसके पश्चात किसी बैंक का अस्तित्व या तो बना रह सकता है अथवा उसका परिसमापन किया जाना होगा। इस मामले में इस प्रकार के उदाहरण हो सकते हैं कि जहां ऋणों की वापसी होने से बैंक का अस्तित्व बच गया हो परंतु इसके परिणामस्वरूप इससे आगे संक्रामकता हो सकती है जिससे अन्य बैंकों की परेशानी बढ़ सकती है। दूसरा आकलन यह किया गया है कि जब किसी बैंक का परिसमापन किया जाता है तो उस बैंक द्वारा उधार दिए गए ऋणों को सकल गणना के आधार पर वापस मांगा जाता है, जबकि परिसमापन किए बगैर जब बैंक द्वारा दिए गए अल्पावधि ऋणों को वापस मांगा जाता है तो ऋण को निवल आधार पर वापस मांगा जाता है (इस अनुमान के अनुसार, प्रतिपक्षी अपने उसी प्रतिपक्षी के प्रति पहले अपनी अल्पावधि देयताओं को कम करना चाहेगा)।

संयुक्त ऋणशोधन-चलनिधि संक्रामकता का विश्लेषण

औसतन किसी बैंक की कुछ बैंकों के प्रति सकारात्मक निवल ऋण प्रदान करने की स्थितियां और कुछ अन्य बैंकों के प्रति ऋणात्मक निवल उधार की स्थितियां -दोनों ही होती हैं। इस प्रकार ऐसे किसी बैंक के विफल हो जाने पर ऋणशोधन तथा चलनिधि संक्रामकता दोनों साथ-साथ उत्पन्न हो जाएंगी। इस प्रक्रिया को निम्नलिखित फ्लोचार्ट द्वारा बताया गया है:

किसी बैंक के दबाव में आने के कारण संयुक्त ऋणशोधन-चलनिधि संक्रामकता संबंधी फ्लोचार्ट



यह माना गया कि प्रारंभकर्ता बैंक कुछ अंतर्जात कारण से विफल हुआ अर्थात यह निश्चित रूप से दिवालिया हो जाता है और इस प्रकार सभी उधारकर्ता बैंकों को प्रभावित करता है। उसी समय, यह अपनी आस्तियों को भी बेचना प्रारंभ करता है ताकि जहां तक संभव हो यह अपने दायित्वों को पूरा कर सके। परिसमापन प्रक्रिया एक चलनिधि संकट उत्पन्न करती है क्योंकि प्रारंभकर्ता बैंक अपने दिए गए ऋणों को वापस मंगाना प्रारंभ कर देता है।

उधारदाता/उधारकर्ता बैंक जो कि भली प्रकार पूंजीकृत होते हैं, वे आघात सहन कर जाते हैं और वे दूसरों को संक्रमित नहीं करते हैं। दूसरी तरफ, वे उधारदाता बैंक जिनकी पूंजी एक निश्चित सीमा से कम हो जाती है वो एक नई संक्रामकता प्रारंभ कर देती है। इसी प्रकार के उधारकर्ता जिनकी चलनिधि बफर पर्याप्त होती है वे भी आगे कोई संक्रामकता फैलाए बिना दबाव सहन कर लेते हैं। परंतु कुछ बैंक ऐसे होते हैं जो चलनिधि दबाव का सामना करने में तभी सक्षम हो पाते हैं जब वो अपनी अल्पावधि आस्तियों को वापस माँगाते हैं। अल्पावधि आस्तियों को वापस मांगने की प्रक्रिया से वे पुनः एक नई संक्रामकता प्रारंभ कर देते हैं।

ऋणशोधन और चलनिधि दोनों ही ओर से संक्रामकता तभी रुक पाएगी/स्थिर हो पाएगी जब, प्रणाली हानि/आघातों को पूर्णतः अवशोषित कर सके और भविष्य में विफलताएं न हों।

अनुबंध 3

महत्वपूर्ण विनियामकीय उपाय

1) भारतीय रिज़र्व बैंक

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
24 जून, 2020	<p>डिजिटल ऋण प्लेटफार्मों पर बैंकों और एनबीएफसी द्वारा मुहैया कराए जाने वाले ऋण : बैंकों तथा एनबीएफसी को जारी प्रमुख अनुदेश निम्नानुसार हैं :</p> <p>(i) एजेंट के रूप में कार्यरत डिजिटल ऋण प्लेटफार्मों के नाम, बैंकों/एनबीएफसी की वेबसाइट पर बताए जाएं</p> <p>(ii) एजेंट के रूप में कार्य कर रहे डिजिटल ऋण प्लेटफार्मों को यह निर्देश दिए जाएं कि वे ग्राहकों से संवाद करते समय यह बता दें कि वे किस बैंक/एनबीएफसी से जुड़े हैं।</p> <p>(iii) संबंधित बैंक/एनबीएफसी के पत्र शीर्ष पर ऋण स्वीकृति पत्र जारी किया जाए।</p> <p>(iv) ऋण की स्वीकृति के समय ऋण समझौते में उद्धृत सभी संलग्नकों सहित ऋण समझौते की एक प्रति सभी उधारकर्ताओं को प्रस्तुत की जाए।</p> <p>(v) शिकायत निवारण तंत्र के बारे में प्रभावी निगरानी और जागरूकता सुनिश्चित की जाए।</p>	डिजिटल ऋण में पारदर्शिता लाना तथा ग्राहकों के हित की सुरक्षा
06 अगस्त, 2020	<p>स्वर्ण ऋणों के लिए मूल्य की तुलना में ऋण (एलटीवी) अनुपात में बढ़ोत्तरी : गैर-कृषि प्रयोजनों के लिए सोने के गहनों और आभूषणों की गिरवी पर ऋण के लिए स्वीकार्य मूल्य की तुलना में ऋण अनुपात (एलटीवी) को 31 मार्च, 2021 तक 75 प्रतिशत से बढ़ाकर 90 प्रतिशत किया गया है।</p>	परिवारों, उद्यमियों और छोटे व्यवसायों पर कोविड-19 महामारी के आर्थिक प्रभाव को कम करना
06 अगस्त, 2020 तथा 14 दिसंबर, 2020	<p>चालू खाता खोले जाने के लिए जारी अनुदेशों की समीक्षा: संशोधित अनुदेशों के अनुसार कोई भी बैंक उन ग्राहकों के लिए चालू खाता नहीं खोलेगा, जिन्होंने बैंकिंग प्रणाली से नकदी ऋण (सीसी) / ओवरड्राफ्ट (ओडी) के रूप में ऋण सुविधा प्राप्त की है और सभी लेनदेन सीसी/ ओडी खाते के जरिए किए जाएंगे। जिन ग्राहकों ने किसी बैंक से सीसी/ ओडी सुविधा नहीं ली है, उनके मामले में बैंक कुछ शर्तों के अधीन चालू खाता खोल सकते हैं। चालू खाता खोलने तथा उसके परिचालन के लिए अतिरिक्त चेतावनियाँ दी गई हैं।</p> <p>कुछ ऐसे विशिष्ट खाते, जो विभिन्न संवैधानिक तथा विनियामकीय अनुदेशों के अंतर्गत आते हैं, उन्हें उपर्युक्त परिपत्र के नियमों में दिए गए सीमाओं से हटाने के लिए उक्त अनुदेशों में दिसंबर 2020 में संशोधन किए गए।</p>	ऋण अनुशासनता को सुधारना

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
06 अगस्त, 2020	कोविड-19-संबंधी दबाव के लिए समाधान ढांचा : यह अनुदेश उधारदाताओं को योग्य कॉरपोरेट एक्सपोजर के लिए समाधान योजना लागू करने की मंजूरी देता है जबकि ऐसे एक्सपोजर निर्दिष्ट शर्तों के अधीन मानक के रूप में वर्गीकृत किए जाएंगे।	वास्तविक क्षेत्र की गतिविधियों को बहाल करने और उधारकर्ताओं पर कोविड -19 के प्रभाव को कम करना
13 अगस्त, 2020	मूल निवेश कंपनियों के लिए संशोधित विनियामक फ्रेमवर्क - मूल निवेश कंपनियों (सीआईसी) के लिए नियामक और पर्यवेक्षी ढांचे की समीक्षा करने वाली कार्यदल (डब्ल्यूजी) की सिफारिशों और हितधारकों से प्राप्त सुझाव के आधार पर मूल निवेश कंपनियों के लिए लागू दिशा-निर्देशों में संशोधन किए गए।	समूह में जटिलताओं तथा एक समूह में कई सीआईसी की लिवरेजिंग का पता लगाना: जोखिम प्रबंधन तथा कॉर्पोरेट गवर्नेंस कार्यप्रणाली को मजबूत करना तथा प्रकटीकरण के माध्यम से पारदर्शिता लाना
01 सितंबर, 2020	एचटीएम श्रेणी में एसएलआर धारिता : बैंकों को एचटीएम श्रेणी के अंतर्गत एसएलआर धारित करने की मंजूरी दी गई। 1 सितंबर 2020 को या इसके बाद ली गई एसएलआर प्रतिभूतियों को एनडीटीएल के 22 प्रतिशत की समग्र सीमा तक 31 मार्च 2021 तक धारित करने की अनुमति दी गई। अक्टूबर 12, 2020 को जारी परिपत्र के माध्यम से इसे मार्च 31, 2022 तक बढ़ाया गया तथा इसके अतिरिक्त यह भी निर्णय लिया गया कि इस बढ़ाई गई एचटीएम सीमा को चरणबद्ध तरीके से 19.5 प्रतिशत तक लाया जाएगा	क्रमबद्ध बाजार की स्थिति को बढ़ाने और अनुकूल वित्तपोषण लागत सुनिश्चित करना। इन निवेशों की स्थिति के बारे में बाजारों को अधिक निश्चितता देना
07 सितंबर, 2020	कोविड -19 संबंधित दबाव के लिए समाधान ढांचा - वित्तीय मापदंड : योग्य उधारकर्ताओं के संबंध में समाधान योजनाओं को अंतिम रूप देते समय ऋणदाता संस्थाएं वित्तीय अनुपातों तथा क्षेत्र विशेष के लिए निर्धारित सीमा पर विचार करें।	वस्तुनिष्ठ मापदंडों के आधार पर COVID-19 संबंधित तनाव से प्रभावित व्यक्तिगत ऋण के अलावा अन्य एक्सपोजर के समाधान को सुविधाजनक बनाने के लिए
07 अक्टूबर, 2020	एमएसएमई के लिए ब्याज अनुदान (सबवेंशन) योजना - सहकारी बैंक : 3 मार्च, 2020 से सहकारी बैंकों को पात्र ऋणदाता संस्थानों के रूप में शामिल किया गया है। इस योजना में पात्र एमएसएमई को दो प्रतिशत प्रति वर्ष की ब्याज राहत प्रदान की जाएगी। योजना का कवरेज सभी सावधि ऋण / कार्यशील पूंजी के लिए रु.100 लाख तक सीमित है। योजना की वैधता 31 मार्च 2021 तक बढ़ा दी गई है।	एमएसएमई क्षेत्र के ऋण को बढ़ावा देना
12 अक्टूबर, 2020	विनियामकीय खुदरा पोर्टफोलियो - जोखिम भार के लिए संशोधित सीमा : किसी प्रतिपक्ष को एकत्रित खुदारा एक्सपोजर की सीमा को ₹5 करोड़ से बढ़ाकर ₹7.5 करोड़ कर दिया गया।	व्यक्तियों और छोटे व्यवसायों (यानी 50 करोड़ रुपये तक के टर्नओवर वाले) के लिए ऋण की लागत को कम करना और बासल दिशानिर्देशों के साथ सामंजस्य स्थापित करना

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
16 अक्तूबर, 2020	वैयक्तिक आवास ऋण - जोखिम भार को तर्कसंगत बनाना : परिपत्र की तारीख को या इसके बाद से लेकर 31 मार्च 2022 तक स्वीकृत किए जाने वाले सभी नए वैयक्तिक आवास ऋणों के लिए जोखिम भार को तर्कसंगत बनाने का निर्णय लिया गया है, चाहे राशि जो भी हो।	एक प्रतिचक्रिय उपाय के रूप में, जोखिम भार को तर्कसंगत बनाना
22 अक्तूबर, 2020	आवास वित्त कंपनियों (एचएफसी) के लिए नियामक ढांचे की समीक्षा : एचएफसी के लिए संशोधित नियामकीय ढांचा जारी करने का निर्णय लिया गया है।	आवास वित्त कंपनियों के प्रमुख व्यवसाय
05 नवंबर, 2020	ऋण की सह-उत्पत्ति (को-ओरिजिनेशन) मॉडल की समीक्षा : संशोधित योजना का नामकरण "सह-उधार मॉडल" (सीएलएम) के रूप में किया गया, जिसके अंतर्गत बैंकों को पूर्व करार के आधार पर सभी पंजीकृत एनबीएफसी (एचएफसी सहित) के साथ सह-उधार प्रदान करने की अनुमति है। सह-उधार देने वाले बैंक अपनी बहियों में व्यक्तिगत ऋणों के हिस्से को बैंक-टू-बैंक आधार पर लेंगे। हालाँकि, एनबीएफसी को अपनी बहियों में व्यक्तिगत ऋणों के न्यूनतम 20 प्रतिशत हिस्से को बनाए रखने की आवश्यकता होगी।	अर्थव्यवस्था के सेवा रहित और अपर्याप्त सेवा वाले क्षेत्र के लिए ऋण प्रवाह में सुधार लाना और बैंकों से मिलने वाले ऋण की कम लागत एवं एनबीएफसी की विस्तृत पहुंच को देखते हुए अंतिम लाभार्थी को किफायती कीमत पर ऋण उपलब्ध कराना
04 दिसंबर, 2020	बैंकों द्वारा लाभांश की घोषणा : बैंकों को यह सूचित किया गया कि वे 31 मार्च 2020 को समाप्त वित्तीय वर्ष से संबंधित मुनाफे से इक्विटी शेयरों पर कोई लाभांश का भुगतान नहीं करेंगे।	अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए पूंजी का संरक्षण करना तथा घाटे का अवशोषण
04 दिसंबर, 2020	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक – मांग/नोटिस/मीयादी मुद्रा बाजार में भाग लेने की अनुमति देना : क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को उधारकर्ताओं तथा ऋणदाता दोनों रूपों में मांग/नोटिस तथा मीयादी मुद्रा बाजार में भाग लेने की अनुमति प्रदान की गई।	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों द्वारा प्रभावी चलनिधि प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए
04 दिसंबर, 2020	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) के लिए चलनिधि सुविधाएं आरंभ करना : अनुसूचित आरआरबी को चलनिधि समायोजन सुविधा (एलएएफ) और सीमांत स्थायी सुविधा (एमएसएफ) दी	क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों (आरआरबी) को चलनिधि प्रबंधन के लिए एक अतिरिक्त मार्ग प्रदान करना
14 दिसंबर, 2020	तत्काल सकल निपटान प्रणाली (आरटीजीएस) की 24x7 उपलब्धता : दिसंबर 14, 2020 से ग्राहकों तथा अंतर-बैंक लेनदेनों के लिए आरटीजीएस की सुविधा चौबीसों घंटे उपलब्ध कराई गई।	भारतीय वित्तीय बाजारों के वैश्विक एकीकरण हेतु समर्थन प्रदान करना, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय केंद्रों को विकसित करने के लिए भारत के प्रयासों के समर्थन करना और घरेलू कॉर्पोरेट्स और संस्थाओं को व्यापक भुगतान सहूलियत प्रदान करना

2) भारतीय प्रतिभूति विनियम बोर्ड

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
05 जून 2020	विनियामक सैंडबॉक्स का ढांचा: सेबी विनियमित संस्थाओं को कुछ सुविधाएं तथा लचीलापन प्रदान किया गया ताकि वे एक लाइव वातावरण में और सीमित समयसीमा के भीतर सीमित वास्तविक ग्राहकों के साथ फिनेटक सॉल्यूशन का प्रयोग कर सकें।	ग्राहकों के हितों की रक्षा करते हुए नवोन्मेष को प्रोत्साहित करना।
12 जून 2020	किसी योजना में प्रायोजक या आरित प्रबंधन कंपनी द्वारा निवेश : प्रायोजक या एएमसी से अपेक्षित है कि वे पचास लाख रुपए या उतनी राशि जो नए निधि प्रस्ताव (एनएफओ) से जुटाई जाने वाली राशि के एक प्रतिशत से कम ना हो, में से जो भी कम हो, उतनी राशि का निवेश करें और जब तक योजना बंद नहीं हो जाती है तब तक ऐसे निवेश का मोचन नहीं किया जाएगा।	यह सुनिश्चित हो सके कि म्युच्युअल फंड के प्रायोजक या एएमसी अपने खुद के फंड में निवेश कर रहे हैं।
23 जून 2020	परिपक्वता तारीख/मोचन तारीख पश्चात चूक ऋण प्रतिभूतियों में लेनदेन हेतु प्रचालनिक ढांचा	चूक ऋण प्रतिभूतियों में ट्रेडिंग पर लगे मौजूदा प्रतिबंधों को उठाने की अनुमति।
24 जून 2020	एल्गोरिथम ट्रेडिंग के लिए ऑर्डर-टू-ट्रेड (ओटीआर) अनुपात के दिशानिर्देशों की समीक्षा की गई और उन्हें संशोधित किया गया।	एल्गोरिथम ट्रेडिंग को युक्तिसंगत बनाना।
1 जुलाई 2020	ऐसे मामले जहां ट्रेडिंग मेंबर (टीएम)/क्लीयरिंग मेंबर (सीएम) द्वारा ग्राहकों को निधि या प्रतिभूतियों की चुकौती करने में चूक की संभावना होती है, उनमें एसई/सीसी/निक्षेपागार के संबंध में मानक प्रचालनिक प्रक्रिया (एसओपी) निर्धारित की गई।	टीएम/सीएम द्वारा चूक की संभावित स्थिति होने पर, किसी टीएम के गैर-चूककर्ता ग्राहकों और /या सीएम के गैर-चूककर्ता ग्राहकों/टीएम के हितों की रक्षा करना।
20 जुलाई 2020	नकद तथा डेरिवेटिव क्षेत्रों में ग्राहकों से मार्जिन की अग्रिम वसूली के सत्यापन को सक्षम करने हेतु ढांचा: स्टॉक एक्सचेंज तथा क्लीयरिंग कॉर्पोरेशन को इस बाबत प्रचालनिक दिशानिर्देश जारी किए गए कि वे एक ऐसे ढांचे को अपनाएं जिससे नकद तथा डेरिवेटिव क्षेत्रों में ग्राहकों से वसूली जाने वाली अग्रिम मार्जिन का सत्यापन सक्षम हो पाए।	नकद तथा डेरिवेटिव दोनों क्षेत्रों में जोखिम प्रबंधन ढांचे को एक समान सरल तथा कारगर बनाना।
21 जुलाई 2020	प्रारंभिक पे-इन वाली पोजीशन के लिए दबाव परीक्षण प्रक्रिया की समीक्षा: कोर निपटान गारंटी निधि से जुड़े मानदंडों और पण्य डेरिवेटिव के क्रेडिट से संबंधित मानकीकृत दबाव परीक्षण की समीक्षा की गई।	प्रारंभिक पे-इन वाली पोजीशन में दबाव हानि की उच्च संख्या की चिंताओं को दूर करना।

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
01 सितंबर 2020	ऋण तथा मुद्रा बाजार प्रतिभूति लेनदेन प्रकटीकरण की समीक्षा: किसी म्युच्युअल फंड योजना में 15 दिनों के समय-अंतराल पर होने वाले ऋण तथा मुद्रा बाजार प्रतिभूतियों के लेनदेन (अंतर योजना अंतरण सहित) के संबंध में दैनिक प्रकटीकरण विवरण निर्धारित किया गया।	ऋण योजनाओं के संविभाग के प्रकटीकरण में पारदर्शिता को आगे और उन्नत करना।
21 सितंबर 2020	पण्य कीमतों के नीयर जीरो तथा ऋणात्मक कीमत होने की स्थिति में लागू वैकल्पिक जोखिम प्रबंधन ढांचे की शुरुआत की गई।	पण्य कीमतों में अत्यधिक अस्थिरता को दुरुस्त करने के लिए जोखिम प्रबंधन ढांचे को सक्षम बनाना।
5 अक्टूबर 2020	म्युच्युअल फंड योजनाओं में उत्पाद लेबलिंग - जोखिम मीटर: किसी योजना में जोखिम स्तर का मूल्यांकन करने के लिए विस्तृत दिशानिर्देश जारी किए, जिसे एक जोखिम मीटर द्वारा प्रदर्शित किया जाएगा और जनवरी 2021 से शुरू करते हुए मासिक आधार पर इसका मूल्यांकन किया जाएगा।	निवेशकों को किए जाने वाले प्रकटीकरण को उन्नत करना ताकि वे सुविज्ञ निर्णय कर सकें।
06 अक्टूबर 2020	शाश्वत गैर-संचयी अधिमानी शेयर (पीएनसीपीएस), नवोन्मेषी बेमियादी ऋण लिखत (आईपीडीआई)/ बेमियादी ऋण लिखत (पीडीआई) के निर्गमन, सूचीबद्ध होने तथा ट्रेडिंग हेतु अतिरिक्त ढांचा निर्धारित किया गया।	इन लिखतों की प्रकृति तथा इनका आकस्मिक प्रभाव और यह तथ्य की कि इनके निर्णय का पूरा अधिकार जारीकर्ता के पास उपलब्ध है, उसे सही रूप में खुदरा वैयक्तिक निवेशकों द्वारा नहीं समझा जाए। इस संबंध में, ऐसे पीएनसीपीएस तथा आईपीडीआई जिनका सूचीबद्ध होना प्रस्तावित है, उनके निर्गमन, सूचीबद्ध होने तथा ट्रेडिंग से संबंधित एक अतिरिक्त ढांचे का निर्धारण किया गया।
13 अक्टूबर 2020	सूचीबद्ध ऋण प्रतिभूतियों द्वारा 'चूक' होने की स्थिति में डिबेंचर ट्रस्टी द्वारा अपनायी जाने वाली मानकीकृत प्रक्रिया अधिसूचित की गई।	प्रतिभूति के प्रवर्तन और/या अंतर ऋणदाता करार संपादित करने हेतु।
03 नवंबर 2020	सूचीबद्ध ऋण प्रतिभूतियों के निर्गमन में प्रतिभूति का निर्माण और डिबेंचर ट्रस्टी द्वारा समुचित सावधानी।	प्रतिभूति निर्माण के प्रयोजन हेतु आस्तियों की पर्याप्तता सुनिश्चित करना।
05 नवंबर 2020/11 सितंबर 2020	मल्टी कैप फंड का आरिस्त आबंटन और इक्विटी योजनाओं के तहत "फ्लेक्जी कैप फंड" के रूप में एक नई श्रेणी की शुरुआत: म्युच्युअल फंड की मल्टी कैप योजनाओं से यह अपेक्षित है कि वे प्रत्येक बड़े, मझौले तथा छोटे स्टॉक में न्यूनतम 25 प्रतिशत का निवेश करें और शेष 25 प्रतिशत निवेश में फंड प्रबंधक को लचीलापन प्रदान किया जाता है। इसके अलावा, म्युच्युअल फंड अपनी वर्तमान योजना को फ्लेक्जी कैप फंड में बदल सकते हैं या फ्लेक्जी कैप फंड के तहत एक नई योजना की शुरुआत कर सकते हैं।	अंतर्निहित निवेश को सभी कैप्स के बीच बांटकर विविधता उत्पन्न करना और साथ ही साथ म्युच्युअल फंड में अधिक लचीलापन लाना।

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
06 नवंबर 2020	ओपेन एंडेड डेट योजनाओं में तरल आस्तियों की धारिता के संबंध में मानदंड और ओपेन एंडेड डेट योजनाओं में दबाव परीक्षण: म्युच्युअल फंडों से अपेक्षित है कि वे सभी ओपेन एंडेड डेट योजनाओं (ओवरनाइट फंड, लिक्विड फंड, गिल्ट फंड तथा 10 वर्ष निरंतर अवधि वाले गिल्ट फंड को छोड़कर) में अपनी निवल आस्तियों का कम से कम 10 प्रतिशत तरल आस्तियों (अर्थात् नकद, जी-सेक, टी-बिल और सरकारी प्रतिभूतियों के रिपो में) में धारित करें और ओपेन एंडेड डेट योजनाओं (ओवरनाइट फंड को छोड़कर) के लिए मासिक दबाव परीक्षण निर्धारित किया गया।	ओपेन एंडेड कर्ज योजनाओं के चलनिधि जोखिम प्रबंधन ढांचे को उन्नत करना।
12 नवंबर 2020	डिबेंचर ट्रस्टी द्वारा निगरानी तथा प्रकटीकरण।	निवेशक इस हेतु सक्षम हो सकें कि वे डिबेंचर ट्रस्टी द्वारा निर्वहन किए जान वाले कर्तव्यों का पता लगा सकें और डिबेंचर ट्रस्टी की जवाबदेही उन्नत हो सके।
21 दिसंबर 2020	कोर निपटान गारंटी फंड, सीमित प्रयोजन क्लीयरिंग कॉर्पोरेशन (एलपीसीसी) के लिए चूक वाटरफॉल तथा दबाव परीक्षण	सभी आकस्मिकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त निधि की उपलब्धता सुनिश्चित करना।

3) भारतीय बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
26 जून 2020	सभी सामान्य तथा स्वास्थ्य बीमाकर्ताओं को दिशानिर्देश जारी किए गए कि वे वैयक्तिक कोविड मानक स्वास्थ्य बीमा जारी करें।	ग्राहकों को एक मानकीकृत बीमा उत्पाद मिल सके जिसमें कोविड-19 से जुड़े खर्च शामिल हों।
25 सितंबर 2020	आईआरडीआई ने प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण घरेलू बीमाकर्ताओं (डी-एसआईआई) की पहचान तथा पर्यवेक्षण के लिए एक कार्यपद्धति विकसित की, और वर्ष 2020-21 के लिए भारतीय जीवन बीमा निगम, भारतीय साधारण जीवन बीमा निगम, और न्यू इंडिया इंसूरेंस कंपनी लिमिटेड की पहचान डी-एसआईआई के रूप में की।	डी-एसआईआई की पहचान और ऐसे बीमाकर्ताओं को उन्नत निगरानी प्रक्रिया के तहत लाना।

4) पेंशन निधि विनियामक और विकास प्राधिकरण

तारीख	विनियामक उपाय	औचित्य
08 जून,2020	डिजिटल समाधान एनपीएस ऑन-बोर्डिंग हेतु आधार आधारित ऑफलाइन पेपररहित केवाईसी सत्यापन प्रक्रिया	पीएफआरडीए ने एनपीएस की पहुंच को बढ़ाने के लिए अभिदाताओं की ऑन-बोर्डिंग से लेकर निकास तक विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु व्यापक तथा डिजिटल समर्थित समाधानों की मंजूरी दी।
15 जून,2020	पेपररहित ऑन-बोर्डिंग हेतु ओटीपी आधारित अधिप्रमाणन	
03 सितंबर,2020	एनपीएस अभिदाताओं के लिए ई-नामांकन सुविधा	
29 अक्तूबर,2020	एनपीएस के लिए वीडियो आधारित ग्राहक पहचान प्रक्रिया (वीसीआईपी)	
24 अगस्त,2020	एनपीएस तथा एपीवाई के तहत शिकायतों के निवारण हेतु लोकपाल : पीएफआरडीए ने पीएफआरडीए विनियमन, 2015 की परिधि के तहत शिकायतों के निवारण हेतु एक लोकपाल की नियुक्ति की।	पेंशन निधि अभिदाताओं की शिकायतों के त्वरित तथा कम मूल्य पर निवारण हेतु
25 सितंबर,2020	कॉर्पोरेट बॉण्ड लेनदेनों के लिए आरएफक्यू प्लेटफार्म की शुरुआत : एनपीएस योजनाओं और पीएफआरडीए द्वारा प्रशासित अन्य पेंशन योजनाओं के तहत प्रतिभूतियों की खरीद/बिक्री के लिए ओटीसी बाजार की तरह कोट हेतु अनोरोध (आरएफक्यू)।	निवेशकों के हित में अधिक पारदर्शिता, केंद्रीकरण और पूलिंग लाना और इस प्रकार, एक अधिक कुशल और तरल माध्यमिक बाजार बनाना

5) भारतीय दिवाला और शोधन अक्षमता बोर्ड

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
30 जून,2020	दिवाला पेशेवर इकाईयों(आईपीई) द्वारा किसी भी आईपी को समर्थन सेवाएँ देने के लिए आईपी विनियम में संशोधन किया गया।	दिवालिया सेवाओं को और अधिक पेशेवर बनाना और विनियमित सहायता सेवाओं तक आईपीएस की पहुंच को सक्षम बनाना ।
05 अगस्त,2020	परिसमापन प्रक्रिया विनियमों में संशोधन किया गया, जिसमें परिसमापक को ऐसी राशि जो प्राप्त हो चुकी हो परंतु वितरित न हुई हो अथवा वितरित हो चुके हो परंतु प्राप्त न हुई हो, पर देय शुल्क को स्पष्ट किया गया।	परिसमापक को देय शुल्क पर स्पष्टता प्रदान करना।
05 अगस्त,2020	स्वैच्छक परिसमापन प्रक्रिया विनियमों में संशोधन किया गया ताकि यह प्रावधान किया जा सके कि एक कॉर्पोरेट व्यक्ति परिसमापक के रूप में किसी अन्य दिवाला पेशेवर को नियुक्त करके परिसमापक की जगह ले सकता है।	स्वैच्छक परिसमापन प्रक्रिया का संचालन करने के लिए परिसमापक के रूप में एक और समाधान पेशेवर की नियुक्ति की सुविधा प्रदान करने के लिए

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
07 अगस्त 2020	सीआईआरपी विनियमों में संशोधन किया गया ताकि अधिकृत प्रतिनिधियों तथा उस श्रेणी के लेनदार जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं के बीच समन्वयन तथा संचार को सुगम बनाया जा सके और समाधान योजनाओं में मतदान की प्रक्रिया सुव्यवस्थित हो सके।	दिवालियापन प्रक्रिया की सुविधा प्रदान करना।
24 सितंबर 2020	न्यायनिर्णयन प्राधिकारी को दिए जाने आवेदन के नियमों में संशोधन किया गया ताकि यह सुविधा मिल सके कि जब कोई वित्तीय लेनदार किसी कॉर्पोरेट देनदार (सीडी) के विरुद्ध सीआईआरपी की शुरु करता है, तब वह न्यायनिर्णयन प्राधिकारी के पास आवेदन दाखिल करने से पहले सीडी के पंजीकृत कार्यालय और बोर्ड में आवेदन की एक प्रति मुहैया कराए।	ऐसे सीडी जिनके विरुद्ध आवेदन दाखिल की गई है, उन्हें सीआईआरपी शुरु होने के संबंध में समय पर सूचना मिल सके और आईबीबीआई द्वारा प्रभावी तरीके से डेटा प्रबंधन तथा प्रसार की सुविधा मुहैया हो पाए।

6) अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकारी (आईएफएससीए)

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
19 अक्टूबर, 2020	विनियामक सैंडबॉक्स: "विनियामक सैंडबॉक्स" हेतु एक ढांचे की शुरुआत की गई।	पूंजी बाजार, बैंकिंग, बीमा तथा वित्तीय सेवाओं में कार्य कर रहे संस्थाओं को इस हेतु सक्षम बनाना कि वे खुद से कुछ सुविधाओं तथा लचीलेपन का लाभ उठा सकें ताकि वे एक सीमित समयसीमा के भीतर लाइव वातावरण में सीमित वास्तविक ग्राहकों के साथ फिनेटक सॉल्यूशन का प्रयोग कर पाएं।
21 अक्टूबर 2020	भूसंपदा निवेश न्यास (आरईआईटी) तथा इन्फ्रास्ट्रक्चर निवेश न्यास (आईनवीआईटी): इन संस्थाओं को जीआईएफटी आईएफएससी में स्टॉक एक्सचेंज पर सूचीबद्ध होने की अनुमति दी गई।	जीआईएफटी आईएफएससी में स्टॉक एक्सचेंज पर किसी एफएटीएफ अनुमत क्षेत्राधिकार में निगमित आरईआईटी तथा आईनवीआईटी के सूचीबद्ध होने से संबंधित एक विनियामक ढांचे का निर्धारण।
28 अक्टूबर, 2020	निक्षेपागार रसीदें: निक्षेपागार रसीदों के सूचीबद्ध होने से संबंधित विनियामक ढांचा निर्धारित की गई।	आईएफएससी में वैश्विक निक्षेपागार रसीदों के सूचीबद्ध होने से संबंधित एक ढांचा उपलब्ध कराना।
13 नवंबर 2020	आईएफएससीए (वैश्विक आंतरिक केंद्र) विनियम, 2020: आईएफएससीए (वैश्विक आंतरिक केंद्र) विनियम, 2020 अधिसूचित की गई।	आईएफएससी में वैश्विक आंतरिक केंद्र के लिए एक विनियामक ढांचा उपलब्ध कराना, और वैश्विक वित्तीय संस्थाओं के लिए एक ऐसे अवसर का निर्माण, जिसमें वे जीआईएफटी- आईएफएससी में अपनी वैश्विक बैंक-एण्ड गतिविधियां संपादित कर सकें।
20 नवंबर 2020	आईएफएससीए (बैंकिंग) विनियम, 2020: आईएफएससीए (बैंकिंग) विनियम, 2020 अधिसूचित की गई।	सिद्धांत-आधारित विनियम उपलब्ध कराना, और जोखिम न्यूनीकरण के उद्देश्य तथा वित्तीय नवोन्मेषण में संतुलन स्थापित करना।

तारीख	विनियामकीय उपाय	औचित्य
11 दिसंबर, 2020	अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण (बुलियन एक्सचेंज) विनियम, 2020: बुलियन एक्सचेंज, समाशोधन निगमों, जमाकर्ताओं और वाल्टों के लिए विनियामक ढांचा निर्धारित किया गया। बुलियन में स्पॉट ट्रेडिंग की शुरुआत की गई।	आईएफएससी में बुलियन स्पॉट मार्केट के लिए विनियामक ढांचा उपलब्ध कराना।